आर्य-ब्राह्मण
हम मूलनिवासी नाग-द्रविडों के धोखेबाज सेवक थे

किताब का दूसरा हिस्सा शुरु !

मौजूदा वेबसाईट की वेब-होस्टींग कंपनी व्दारा फाईल साईज की अधिकतम सीमा 2 एम.बी. तय की होने से हमें मूल किताब को दो हिस्सों में तोडकर अपलोड करना पडा है। इसलिये पूरी किताब पढने के लिये कृपया दोनों हिस्से डाउनलोड करें!

प्रस्तूत किताब पूरे एक ही हिस्से में हमारी दूसरी वेबसाईट **www.bluemarchorg.wordpress.com** से आप डाउनलोड कर सकते है। क्योंकि **wordpress.com** की अधिकतम फाईल सीमा के भीतर हमारी किताब है। असुविधा के लिये खेद है।

ब्राह्मणों का स्वर्ण-युग,

मूलनिवासी जनता का घोर काला युग है !

[Infgormation for this chapter is synthesized from material from folling sources : http://apworldhistory101.com/Gupta Dynasty Indian History AP World History. htm; http://answers.yahoo.com/How did gender shape Indian society during the Gupta period - Yahoo! Answers.htm; Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html]

गुप्त साम्राज्य भारत का सुवर्णयुग होने का झूठा प्रचार !

गुप्त साम्राज्य को {ब्राह्मणवादियों व्दारा} भारत का सुवर्णयुग करार दिये जाने पर कई संशोधकों तथा विव्दानों ने जबर्दस्त आपत्ति की है। उनके व्मुताबिक 1) गुप्त काल में सिर्फ {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों तथा विशेष तबकों का ही विकास हुआ। जबकि किसान, व्यापारी, कलाकार और आम बहुसंख्यक जनता की मुश्किलें और ज्यादा बढ गई। आम जनता का दमन शोषण बहुत ज्यादा बढ गया। 2) गुप्त काल में कई कुप्रथाओं ने जन्म लेकर विकराल रुप धारण किया। बाल विवाह तथा सति प्रथा की शुरुआत गुप्त काल से हुई। 3) गुप्त काल में महिलाओं पर बहुत ज्यादा बंधन लादे गए और उनका दर्जा कम हुआ। 4) गुप्त काल में वर्ण तथा जातियों के बीच के फर्क को प्रखर किया गया। इसी काल में अछूतों का निर्माण किया गया। 5) नये नये कर लगाये जाने, किसानों से जबरन मजदूरी करवाने से तथा ब्राह्मणों को करमुक्त जमीनें देने और मनमानी शर्तो पर अपनी जमीनें किसानों को जोतने देने से किसानों के अधिकार कम हुए और उनका दमन-शोषण बढ गया। 6) गुप्त काल में सामंतवाद की क्रूरता चरम सीमा पर पहुंची। 7) {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने समुद्र यात्रा को धर्मविरोधी करार देने से विदेश व्यापार खत्म हुआ जिससे कारीगर तथा किसान लगभग तबाह बर्बाद हुए। (http://www.halfmantr. com/The Age Of Guptas. htm; http://www.preservearticles.com/Why would you consider the Gupta period as the 'golden age' of ancient India.htm) गुप्त साम्राज्य भारत की बहुसंख्यक मूलनिवासी जनता, औरतों तथा दलित-पीछडी जातियों के लिये भारत के इतिहास का सबसे काला और शर्मनाक काल रहा है। अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय के लिये यह सुवर्ण काल है। बहुसंख्यक मूलनिवासी जनता पर अल्पसंख्यक ब्राह्मणों की निरंकुश सत्ता इसी काल में कायम हुई और लोग अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के गुलामों के स्तर पर पहुंच गए।

गुप्त राजाओं ने लोकतांत्रिक राज्यों को खत्म किया !

शिलालेखों के अध्ययन से स्पष्ट है कि भैरशिव नागों की सत्ता कुशान साम्राज्य के पतन के बाद स्थापित हुई। पदमावति के भव नाग के कई सिक्के उपलब्ध है। पुराणों में नौ नागों का नामों सहित उल्लेख किया गया है। मथुरा के शक्तिशाली राजा वीरसेन भी शायद नाग ही थे। नाग राजवंश गणतंत्र थे और संपूर्ण भारत भर में फैले थे। यह बात साहित्यिक, शिलाओं पर लिखे इबारतों, उत्खनन में प्राप्त सिक्कों इ. के अध्ययन से स्पष्ट हो चुकी है। पुराणों के मुताबिक विदिशा, कांतिपुरी, मथुरा, पदमावति इ. सभी नाग गणतंत्र थे। गुप्त राजा नाग राजकन्याओं से विवाह करके ही ताकतवर हुए थे। उन्होने गणपति नाग, नागसेन तथा कई नाग साम्राज्यों को ध्वस्त कर दिया।(Mahajan, Ancient India, p. 406 ff.) लोगों व्दारा अपने राजा को चुने जाने की लोकतांत्रिक परंपरा के ब्राह्मणवादी शासक विरोधी है इसलिये उन्होने लोकतांत्रिक राज्यों को {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों की धार्मिक तानाशाही वाली राजसत्ता में बदल दिया। समुद्रगुप्त ने जनजातियों के गणतंत्र खत्म किये। जैस्वाल के मुताबिक ईसवी 400 में गणतंत्रों का खत्म होना गुप्त राजाओं की बदौलत था। जैस्वाल के मुताबिक समुद्रगुप्त ने देश के मुक्त मानस की हत्या कर दी। समुद्रगुप्त ने मालवा और यौध्येया (Yaudheyas) को ध्वस्त किया जो स्वतंत्रता की पाठशाला थे। डॉ. अल्टेकर (Altekar) के मुताबिक समुद्र गुप्त के बाद भी मालवा, योध्देया, मद्रास तथा अर्जुनायाना के लोगों ने अपना अस्तित्व और स्वनियंत्रण कायम रखा

हालांकि उनपर गुप्त साम्राज्य का नियंत्रण था। गुप्त साम्राज्य में गणतंत्र खत्म होकर 'ब्राह्मणधर्म व्दारा नियंत्रित राजवंश' इकलौता सामान्य नियम बन गया। (Mahajan, "Ancient India", p. 201) संडासवीर जैसी उपाधी से अलंकृत ब्राह्मणवादियों ने इस बात पर पर्दा डालने के लिये कि गुप्त काल में भारतीय राष्ट्र का विघटन हुआ उल्टे यह प्रचारित किया है कि गुप्त साम्राज्य ने देश का जोडने का काम किया। देश के राज्यों को एकसंघ करने की बात तो दूर ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं ने ब्राह्मण शुंग राजाओं से युध्द किया। ब्राह्मण शुंग राजाओं का तख्ता ब्राह्मण कण्वों ने षडयंत्र से पलटा। ब्राह्मण खुद को ही देश समझते है। गुप्त साम्राज्य ने सिर्फ {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों को ताकतवर बनाया है।

गुप्त साम्राज्य ने मूलनिवासी जनता को कमजोर किया !

{अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों के कलिवर्जा (Kalivarjya) का मुख्य कानून यह है कि समुद्र प्रवास प्रतिबंधित है। विदेश में जाति के नियमों का पालन नही किया जा सकता इसलिये वे भ्रष्ट हो जाएंगे इस सबब पर {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने समुद्र प्रवास बंद करा दिया। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों के इस कानून को गुप्त साम्राज्य में लागू किये जाने की बदौलत समुद्र के व्यापार से लाभ उठाने वाले पहलव तथा चोल प्रांतों को बहुत नुकसान हुआ। इस कानून का नुकसान उठाने वाले लोग जहाजों का निर्माण करने वाले कर्मचारी जो लकडी तथा धातु के कारीगर थे। इसके बाद कपास, रेशिम, वुलन पैदा करने वाले किसान, कलात्मक वस्तूओं के कारीगर इ. लोग बुरी तरह से प्रभावित हुए। गांव की अर्थव्यवस्था पर बुरा असर हुआ। बौध्द राजाओं के काल में ये समुदाय खुशहाल बन गए थे लेकिन गुप्त काल में बर्बादी की कगार पर पहुंच गए। इन सब मेहनतकश लोगों का समावेश {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों के मुताबिक शुद्र वर्ण में होता है। बौध्द धर्म के विकास पर बहुत बडी रोक रोम-चीन व्यापार के संपर्क-सुत्र कट जाने की वजह से लगी। बौध्द व्यापारी वर्ग इससे बुरी तरह से प्रभावित हुआ। उन्हे स्थानीय राजाओं की मेहरबानी पर रहना पडा जो ब्राह्मणों की मदद करते थे। कलिवर्जा नियम का मकसद बौध्द धम्म को कुचलना तथा ओबीसी समुदाय के आर्थीक विकास को भी खत्म करना था। (http://www.paklinks.com/Investigation Did Muslims drive Buddhists out of India.htm)

गुप्त राजाओं ने मनुस्मृति के कानून को लागू किया !

नारद स्मृति का निर्माण इसवी चौथी शताब्दी यानि गुप्त राजाओं के काल में किया गया। नारद स्मृति का हवाला देते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा है कि नारद इस बात को जानता था कि सुमति भार्गव ने मनुस्मृति लिखने का काम किया। मनुस्मृति लिखने का काम ईसापूर्व 170 से ईसापूर्व 150 के दौरान किया गया। ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने मनुस्मृति के लिखे जाने में तथा उसे प्रचारित करने में पूरी रुची ली ताकि इससे ब्राह्मण-धर्म को मजबूत कर बौध्द धम्म का उन्मूलन किया जा सके। मनुस्मृति बौध्द तथा दिगर धर्मो के सामाजिक बहिष्कार का ऐलान करती है तथा अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय को सबसे ज्यादा ताकतवर बनाती है। मनुस्मृति ने अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय को सर्वोच्च स्थान पर लाकर खडा किया है। विजयी ब्राह्मणवाद के कारनामों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :- 1) अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय को राज्य करने तथा राजाओं की हत्या करने का अधिकार मिला, 2) अल्पसंख्यक ब्राह्मणों को सबसे ज्यादा सुविधा संपन्न वर्ण के रुप में स्थापित किया, 3) वर्णो को असंख्य जातियों में बदल दिया गया, 4) जातियों

में संघर्ष और असामाजिकता की भावना पैदा की गई। 5) कथित शुद्रों तथा औरतों को हीनतम स्तर पर पहुंचाया गया, 6) जातियों के बीच श्रेणिबध्द असमानता पैदा की गई। तथा 7) जातिव्यवस्था को कानूनी मान्यता देकर उसे बहुत ज्यादा सख्त बनाया गया।

मनुस्मृति ब्राह्मण-धर्म की धार्मिक तथा सामाजिक कानून की किताब है। मनुस्मृति के मुताबिक शुद्र के पास दौलत इकट्ठी होते देखकर {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय को कष्ट होता है। शुद्र व्दारा ज्ञान हासिल करना गुनाह है। कोई शुद्र धर्मग्रंथों को सुनता भी है तो उसके कानों में पीघला हुआ सीसा उंडेला जाये। वह धर्मग्रंथों की बातों का उच्चारण करता है तो उसकी जीभ काटी जाये। वह धर्मग्रंथ की बातों को याद रखता है तो उसके शरीर को बीच से चीर दिया जाये। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों को यह अधिकार है कि वह शुद्र का अपमान करे, उसे मारे या अपना गुलाम बनाये। शुद्र की हत्या करना किसी कीडे-मकौडे, कुत्ते-बिल्ली इ. जानवरों की हत्या करने जैसा है। कोई शुद्र किसी ब्राह्मण का अपमान करता है तो {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों को यह अधिकार है कि वे उसकी जीभ काट दें।(Manu Reloaded ! Brahminism Yesterday, Hindutva Today ? By Subhash Gatade 18 March, 2013 Countercurrents.org)

मनुस्मृति के अनुसार :– ➲ सेना तथा सरकार के सर्वोच्च पद {अल्पसंख्यक}ब्राह्मणों के लिए है। ➲ {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण अगर तीनों लोकों का विनाश भी करे तो भी वह ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, तथा उपनिषदों को तीन बार पढकर सारे पापों से मुक्त हो जाता है। ➲ अगर कोई राजा या क्षत्रिय {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों पर अत्याचार करता है तो ब्राह्मण के अधिकार में है कि वह खुद उसे दंडित करे। ➲ बाकी वर्ण के किसी व्यक्ति ने झुठी गवाही दी है तो उसे दन्डित करके देश निकाला दे दिया जाए लेकिन ब्राह्मण व्दारा झुठी गवाही देने पर उसे सिर्फ देश-निकाला दिया जाए। ➲ राजा कभी किसी ब्राह्मण को मृत्युदंड नही देगा या उसकी हत्या नही करेगा फिर उस ब्राह्मण ने चाहे जितने अपराध क्यों न किये हो। राजा उसकी संपत्ति के साथ उसे सही सलामत देश-निकाला दे सकता है। ➲ राजा अगर मृत्यु के व्दार पर खडा है तो उसने करों के माध्यम से वसूल की हुई अपनी सारी संपत्ति {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों में वितरित करनी चाहिये, राज्य अपने पुत्र के हाथों में सौंपकर खुद युध्द में अपने प्राण त्यागने चाहिये। ➲ लावारिस संपत्ति के हिस्सेदार वेदों में दक्षता प्राप्त ब्राह्मण होगे। ➲ ब्राह्मण की लावारिस संपत्ति {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों में ही बांट दी जायेगी राजा का उसपर अधिकार नही है। ➲ {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण अपनी सुरक्षा के लिए, फीस वसूल करने के लिए या ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए किसी का कत्ल कर दे तो भी उस पर कोई पाप नही है। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों के मुढ पुत्रों को शुद्र का दर्जा न मिल जाए इस लिए मनुस्मृति ने उपनयन करने का अधिकार आचार्य की बजाय पिता को दिया। प्रत्येक पिता अपने पुत्र का खुद उपनयन करके अपना वर्ण देने के बाद उसे गुरुकुल भेजने लगा। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों को अन्य वर्णो से श्रेष्ठ बनाने के लिए ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने वेदों को पढाने, बलि चढाने तथा सभी दान लेने का एकाधिकार ब्राह्मणों को दिया। विशेष अवसरों के दान, अनेक प्रकार के प्रायश्चित बनाकर उन के निवारण विधी में ब्राह्मणों को दान देना अनिवार्य किया। मनुस्मृति में यह प्रावधान किया कि : – ➲ ब्राम्हण चाहे उच्चशिक्षा प्राप्त हो या बिल्कुल ही मुढ क्यों ना हो वह हर हाल में पूजनीय है।

गुप्त राजा मनु के कट्टर अनुयायी थे। गुप्त राजाओं के संरक्षण में {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने पूरे भारत में मनुस्मृति की समाज व्यवस्था लागू करने की पूरजोर कोशिश की।

इसका मूल मकसद मूलनिवासियों पर आर्य-ब्राह्मणों की धार्मिक तानाशाही लादना था।

ब्राह्मणों ने अपने वर्ण तथा जाति का नाम एक ही रखा जबकि दिगर वर्णो की जातियों के नाम अलग अलग रखे ताकि अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय एक बने जबकि बहुसंख्यक गैरब्राह्मणों को विभाजित किया जा सके। पूरे समाज को अल्पसंख्यक ब्राह्मण ों के अनुकूल ढालने के लिए पुष्यमित्र शुंग ने मनुस्मृति के जरिये कठोर जाति-व्यवस्था की बुनियाद कायम की। मनुस्मृति के अनुसार विवाह केवल समान जातियों के बीच होने चाहिये। कोई सवर्ण अगर शुद्र से विवाह करता है तो वह शुद्र के स्तर पर पहुँच जाता है। मनुस्मृति ने शुद्र के अन्न को वीर्य और मुत्र की तरह अपवित्र करार दिया।

मनुस्मृति ने समाज को हजारों जातियों में बांट दिया और एक जाति का दूसरी जाति में परिवर्तन को खत्म कर दिया। जो जिस जाति में जन्मा है वह उस जाति को कभी नही बदल सकता। मरने के बाद भी उसकी जाति उसके नाम के साथ जुडी रहेगी। गीता में कृष्ण से कहलवाया गया कि ईश्वरीय मर्जी से निर्मित जाति के नियमों को भंग नही करना चाहिये। रामायण में राम ने शुद्र शंभूक का सिर इसलिये काट डाला था क्योंकि उसने जाति के नियमों का भंग कर ज्ञान को हासिल किया था। जैसे ही राम ने शंबुक का सिर काटा सारे आर्य देवताओं ने राम की प्रसंशा में जयघोष किया और उसपर फूलों की वर्षा की। महाभारत में निषाद जाति के एकलव्य का अंगुठा काटा गया क्योंकि उसने जाति के नियमों से बाहर जाकर धर्नुविद्या हासिल कर वह क्षत्रिय अर्जुन से ज्यादा कुशल बन गया था। आर्यो के मन में मूलनिवासी नाग-द्रविडों के प्रति इतनी ज्यादा नफरत है कि पांडवों ने लक्षागृह को आग लगा दी लेकिन उसमें एक निषाद जाति की स्त्री और उसके पांच बेटों को भी जिन्दा जला दिया ताकि कौरवों को भ्रमित किया जा सके कि पांडव और उनकी बिवी द्रोपदी लक्षागृह की आग में जलकर मर गए।

शुद्रो-वैश्यों पर नियंत्रण के लिए मनुस्मृति में प्रावधान किये गये कि :- ➲ अगर नीची जाति का व्यक्ति उँची जाति का व्यवसाय करे तो राजा का कर्तव्य है कि वह उस की सारी संपत्ति जब्त करके उसे देश से निकाल दे। ➲ झुठमुठ ही अपने आप को उच्च जाति का प्रदर्शित करना, राजा को अपराध के बारे में झुठी जानकारी देना, अपने शिक्षक पर झुठा आरोप लगाना यह ब्राह्मण की हत्या जैसे महा-अपराध है। ➲ राजा का कर्तव्य है कि वह शुद्रों और वैश्यों को उनके काम करने के लिए बाध्य करे। वर्ना सारी दुनिया में अव्यवस्था मच जायेगी। ➲ जाति व्यवस्था का पालन न करने पर शुद्र को एक पाना दंड दिया है तो राजा को एक हजार पाना दंड होगा जिसे वह {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों में वितरित करेगा या नदी में प्रवाहित करेगा। (Dr. B.R. Ambedkar Vol. 3 P. 330, 355, 326 -327,329, 414,) विष्णु को ब्राम्हण-धर्म यानी चातुवर्ण्य कि रक्षा के लिये बार बार अवतार लेने पडे। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol. 4, P. 63, 75) भगवत गीता के अठरहवे अध्याय के 41-48 ृलोको में अपने भक्तों को कृष्ण कहता है कि केवल उसकी भक्ति करने मात्र से उन्हे मुक्ति नही मिलेगी बल्कि मुक्ति मिलने के लिये भक्ति के साथ साथ चातुवर्ण्य की व्यवस्था का पालन करना भी जरुरी है। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3, Page 365) भगवत गीता मनु का ही सारांश है। कृष्ण के अनुसार चातुवर्ण्य की व्यवस्था उसने खुद बनाई है। जब भी इस व्यवस्था को खतरा निर्माण होता है वह जन्म लेकर चातुवर्ण्य के विध्वंसकों का विध्वंस करता है।(Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3, P. 81)

मुनस्मृति के मुताबिक राजा का यह कर्तव्य है कि वह अपने अधिकारियों के जरिये इस बात को सुनिश्चित करें कि मनुस्मृति के नियमों के मुताबिक जाति-व्यवस्था का पालन किया जा रहा है। इस व्यवस्था में शासन की मदद से सामाजिक कानूनों को लागू करने का जिम्मा अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय के हाथों में था। वे जाति-नियमों को भंग करने वालों को सजा दे सकते थे। राजसत्ता अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के आगे गौण थी। अल्पसंख्यक ब्राह्मण ही सामाजिक जीवन का नियंत्रण करते थे और लोगों से अनिवार्य ध ार्मिक विधियों से फीस वसूलते थे। जाति के नियमों के मुताबिक ही चीजों का उत्पादन और वितरण होता था।

गुप्त काल में ही ब्राह्मणों ने अस्पृस्यता का विकास किया !

गुप्त काल के स्मृतिकार काटयायना ने सबसे पहले अस्पृस्य शब्द का इस्तेमाल अछूतों के लिये किया। ईसवी तीसरी शताब्दी से अस्पृस्यता का स्वरुप तीव्र हुआ। गुप्त काल में ब्राह्मणों व्दारा बौध्द जनता को सामाजिक बहिष्कार और शस्त्र के बल पर अस्पृस्यों के स्तर पर पहुंचाया गया। मनुस्मृति तथा तमाम ब्राह्मण-धर्मग्रंथों ने बौध्दों के सपने तक में दर्शन होने को पाप करार दिया था। चाणक्य के मुताबिक बौध्दों ने सिर्फ श्मशान के बाहर बसना चाहिये। सौरपुराण के मुताबिक चार्वाक, बौध्द तथा जैनों को अपने राज्य में बसने नही देना चाहिये। कौटील्य / चाणक्य उस व्यक्ति के खिलाफ 100 पाना के भारी दंड की सीफारीश करता है जो बौध्दों, अजिवकों, शुद्रों या निष्काषित किये गए व्यक्ति के साथ भोजन करता है। तमाम ब्राह्मण-धर्म ग्रंथ बौध्दों की छाया तक अपने पर पडने नही देना चाहते। उन्हे दूर से देखना तक पाप करार दिया गया है। ब्राह्मणों ने सत्ता के बल पर बौध्दों को हीन करार दिये व्यवसायों तथा कामों को करने पर मजबूर किया। उन्हे शिक्षा तथा तमाम मानवाधिकारों से वंचित किया गया।

बौध्दों को आबादी से बाहर बहिष्कृत करने की एक वजह यह भी है कि अल्पसंख्यक ब्राह्मणों ने बौध्दों के मोनस्ट्री, चैत्यों, विहारों इ. पर कब्जा जमा लिया था और उन्हे ब्राह्मण धर्मस्थलों में बदल दिया था। ब्राह्मणों को डर था कि कहीं लडाकू बौध्द जनता इन ध ार्मस्थलों को दोबारा अपने कब्जे में न कर ले। इसलिये अल्पसंख्यक ब्राह्मण नही चाहते थे कि बौध्द अपने धर्मस्थलों के करीब भी फटके इसलिये उनको जबरन आबादी से बाहर खदेडा गया। बौध्द धम्म और ब्राह्मण-धर्म परस्पर विरोधी है। इसलिये अल्पसंख्यक ब्राह्मण ों को डर था कि बौध्द अगर सामाजिक रुप से सक्षम रहे तो वे अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के लिये खतरा बन सकते थे। ब्राह्मण-धर्म हर तरह के दमन-शोषण का रक्षक है। जबकि बौध्द धम्म का मकसद समानता और न्यायपूर्ण व्यवस्था को लागू करना है। इसलिये शंकराचार्य तथा कुमारिला भट ने तमाम हिंसा, बेईमानी के रास्तों को अख्तियार करते हुए बौध्द ध ाम्म और बौध्द भिख्खुओं का उन्मूलन करना शुरु किया। बौध्द जनता का बहिष्कार कर बर्बर चार्तुवण्य पध्दति लागू की। एक समय के नरमाँस-भक्षी, गोमाँस-भक्षी {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने गुप्त काल में माँसाहार को घृणित करार दे दिया। ब्राह्मणों ने न सिर्फ गाय खाना छोडा, उसकी पूजा शुरु की बल्कि ब्राह्मण गोबर, गोमुत्र, दुध, दही, तथा घी के मिश्रण को 'पंचगव्य' कहकर खाने लगे। गुप्त राजाओं ने (400 A.D.) गोहत्या को मृत्यु दंड के बराबर का अपराध करार दिया। ब्राह्मणों ने राजाओं को गो-ब्राह्मण प्रति-पालक प्रचारित करके अपना महत्व बढाया। खुद को ब्राह्मणों जैसा साबित करने के लिए वैश्य इ॰ जातियाँ ब्राह्मणों की तरह शाकाहारी बन गई। अनेक जाति-समुदायों ने माँसाहार जारी रखा सिर्फ गाय का माँस खाना छोड दिया। लेकिन मूलनिवासी बौध्द जनता ब्राह्मणवादी

जुल्मों से बदतर हालात में पहुँच चुकी थी। मरे गाय-बैल का माँस ही उनके जिन्दा रहने का मुख्य आधार रह गया था इसलिए बौध्द समुदाय ने गाय का माँस खाना जारी रखा। बौध्दों को ब्राह्मणवादियों ने अछूत करार दे दिया। इस तरह ब्राह्मणवाद और बुध्दीजम के बीच हुए संघर्ष से अस्पृस्यों की निर्मिती सन् 400 A.D. के लगभग हुई है। (Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 7, P. 346, 347, 348, 349). मूलनिवासी दलित बौध्द समुदाय मरी हुयी गाय का माँस खाना बन्द नही कर सके क्योंकी गाँव के मरे जानवरों को ले जाना उनके कामों में शामिल था, दूसरी बात यह थी कि गाय का माँस ही उनके जिन्दा रहने का मुख्य आधार था, तिसरी बात, मरी गाय का माँस खाने से बुध्द धर्म का अहिंसा-सिधान्त भंग नही होता था। इसलिये मूलनिवासी रक्षक समुदाय ने गाय का माँस खाना जारी रखा जिसका परिणाम यह हुवा कि रक्षकों को ब्राम्हणों ने अछूत करार दे दिया।(Dr,Babasaheb Ambedkar writings and speeches vol. 7) चीनी प्रवासी फाहीयान (Fa-Hsien) के मुताबिक गुप्त काल में बौध्द लोगों पर कई तरह के प्रतिबंध लागू किये गए थे। वे गांव के बाहर रहते थे और {मरे जानवरों का} मांस खाते थे। उन्हे गांव की आबादी में आने की मनाई थी क्योंकि ब्राह्मणों ने उन्हे अपवित्र करार दिया था। ब्राह्मण तुलसीदास ने मूलनिवासियों के बारे में लिखा है- जे बरनाधम तेली, कुम्हारा, स्वपच, किरात, कोल, कलवारा। यानि वर्णो में सबसे नीच तेली, कुम्हार, डोम, मेहतर, किरात (कोइरी, कहार), कोलभील और कलवार है। (अम्बेडकर मिशन पत्रिका, मई-जून 2002) ''मनु के अनुसार सुबह तेली, विधवा स्त्री, विधुर पुरुष, लुले लंगडे या अन्धे का मुँह देखना अशुभ है। इसलिये तेली, विधवा, लंगडे लुले इस बात से आतंकित रहते थे कि किसी ने इनको सुबह देख लिया तो अपमानित करके उनकी पिटाई न कर दे।'' (बहुजन संगठक 14 से 20 फरवरी 2001, p.4) मनुस्मृति अध्याय दस में तेलियों का मुंह नही देखना चाहिये ऐसा लिखा है। (तेलि समाज क्रांति, 15 अक्तूबर से 1 नवंबर 2006)

ब्राह्मणवादी भिख्खुओं ने जाति व्यवस्था को स्थापित कर दिया। चीनी प्रवासी फाई-हॅन ने लिखा है कि मूलनिवासी शुद्र राजाओं से ब्राह्मण बौध्द-भिक्षु छूआछूत का बर्ताव करते थे। राजा व्दारा आदर से हाथ छूने के बाद राजा के जाते ही वे फौरन नहा लेते थे। पता होने के बावजूद ''ब्राह्मण भिक्षुओं'' से टकराने का साहस इन राजाओं में नही था। 19 वी शताब्दी में तामिलनाडू के थासन (Iyothee Thasan) नामक कुशल अछूत चिकित्सक के मुताबिक उनके पूर्वज बौध्द थे। सत्ता में आते ही ब्राह्मणों ने जबरन अमानवीय प्रताडना और सामाजिक बहिष्कार के जरिये उन्हे अछूत बना दिया। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक दलितों के पूर्वज बौध्द थे। उन्हे अछूतों के स्तर पर इसलिये पहुंचा दिया गया क्योंकि उन्होने अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय की सर्वोच्चता को कभी मंजूर नही किया। वाल्मिकी समुदाय के एक स्कॉलर का मानना है कि वाल्मिकी समुदाय कभी हिन्दू नही रहा है। वाल्मिकी समुदायों में आज भी कुछ परंपराएं ऐसी है जो तांत्रिक बौध्दों से मिलती है। पितामह फुले के अनुसार महार जाति की उत्पत्ति ''महाअरि'' शब्द यानि ''महान शत्रु'' से हुई। महार जाति पूर्व की शासक जाति थी, उनका धर्म बौध्द था ऐसा मत महर्षि वि.रा. शिंदे ने अपनी किताब ''भारतीय अस्पृष्यतेचा प्रश्न'' में व्यक्त किया है। विदर्भ का नागवंशीय राजा नागार्जुन महार होकर बौध्द धर्मीय था। वेडन पावेल के मतानुसार पश्चिमी भारत का शासन महार जाति के हाथों में था, इसी कारण इस प्रदेश का नाम महाराष्ट्र हुवा।(श्रीनिवास भालेराव, p.9) ज्योति थास (Jyothee Thass, 1845-1914) ने अंग्रेजी, संस्कृत तथा पाली भाषा का ज्ञान हासिल किया और अपने इतिहास की खोज की। उनके मुताबिक चोलों के आने के पहले तामिलनाडू में बौध्द धम्म का व्यापक प्रभाव था।

एक सुनियोजित षडयंत्र के तहत बौध्द धम्म का तामिलनाडू से उन्मूलन किया गया। उनके मुताबिक बौध्दों का सामाजिक बहिष्कार कर उनको प्रताडित करने के बाद ही उनका अछूतों में रुपांतरण हुआ है। ज्योति थास उन हजारों दलितों में एक है जिनके नाम को {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने उपेक्षित रखकर भूलाया है। (From 'Venomous Past.. Ravi Kumar ; http://www.countercurrents.org/Manu Reloaded ! Brahminism Yesterday, Hindutva Today By Subhash Gatade.htm)

ब्राह्मण एक ओर बौध्दों से नफरत करते थे तो दूसरी ओर बौध्द लडाकूओं से घबराते थे। मसलन इसवी 650 में जब सिंध के राजा साहसी की मौत हुई तो उसके ब्राह्मण मंत्री चाच ने उसके राज्य पर कब्जा किया। राजा साहसी बौध्द था और सिंध की जनता भी बौध्द थी। दक्षिण सिंध में जाट तथा लोहाना समुदाय के हाथों में नियंत्रण था। चाच ने उनको परास्त किया। उनके सामाजिक स्तर को कम कर कई प्रतिबंध लागू किये। ब्राह्मण चच ने आदेश जारी किया कि उनके समुदाय अपने साथ शस्त्र नही रख सकते। अपनी जातीय पहचान के लिये उन्होने काले और लाल कपडे पहनने चाहिये। बिना saddle वाले घोडे की ही सवारी करनी चाहिये। अपने सीर पर पगडी नही पहननी है और न ही पैरों में जुते-चप्पल पहनने है। बाहर जाते वक्त उनके पास एक कुत्ता होना चाहिये ताकि उनकी जाति की फौरन पहचान हो सके। उन्हे यह काम सौंपा गया कि वे ब्राह्मणाबाद के सुबेदार के यहां जलाउ लकडियों को अबाधित रुप से पहुंचाते रहेंगे। वे उसके नेतृत्व में जासूसी का काम करेंगे और सुबेदार के प्रति ईमानदार रहेंगे। उपरोक्त आदेशों को चचनामा में पढा जा सकता है। चचनामा में इन समुदायों को लाखा और साम्मा कहा गया है। चच की मौत के बाद इन प्रतिबंधों को उसके उत्तराधिकारियों ने जारी रखा। जब मोहोम्मद बिन कासीम ने इस इलाके पर कब्जा किया तो उसने भी ब्राह्मणों की गुजारीश पर लोहाना और जाट समुदायों के खिलाफ प्रतिबंधों को जारी रखा।(C. V. Vaidya, "madhya yugin bharat", book 2, pp.5-10, 40, quoted by Kosare:1989:265; (FOREIGN INVASIONS AND CASTE Foreigners were assimilated by Buddhist ideals and not the Brahmanic)

गुप्त काल में जातियों तथा उपजातियों की संख्या अनगिनत हो गई। गुप्त काल में विदेशियों तथा जनजातियों को ब्राह्मण-व्यवस्था के दायरे में लाने के लिये शुद्रों को नवनिर्मित पुराण इ. धर्मग्रंथों को सुनने की इजाजत दी गई क्योंकि इन धर्मग्रंथों में तमाम परिवर्तन गैरब्राह्मण समुदायों को ब्राह्मण धार्मिक-व्यवस्था में शामिल करने के मकसद से ही किये गए थे। नये देवता कृष्ण की इन समुदायों के बीच पूजा की जाने लगी और ब्राह्मणों को इनसे भी दक्षिणा की वसूली होने लगी। विभिन्न जनजातियों को ब्राह्मणों ने उनकी ब्राह्मणों के लिये उपयोगिता तथा व्यवसाय के मुताबिक जातियां निर्धारित की।

अल्पसंख्यक ब्राह्मणों व्दारा बौध्द आदिवासियों से प्रतिशोध !

मौजूदा आदिवासी नाग वंश के है। नाग समुदाय बौध्द था। नाग लोग न ही आर्यो के यज्ञों को मानते है न ही उनके किसी कर्मकांड को मान्यता देते थे। वे सिर्फ अरहंत और चैत्यों का सम्मान करते थे। बौध्द धम्म के उन्मूलन के बाद {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों ने आदिवासियों की हालत बदतर कर दी क्योंकि आर्यो की नाग लोगों से पूरानी दूश्मनी थी। आदिवासियों की मुसिबतों की शुरुआत गुप्त साम्राज्य के आरंभ से ही हो चुकी थी। पाल सम्राटों ने बौध्द धम्म को राजाश्रय दिया था और लगातार चार शतकों तक संपूर्ण उत्तरी भारत पर राज किया था। पाल सम्राज्य बौध्द धम्म को मानने वाला आखरी

राजवंश था। पाल साम्राज्य के दौरान बंगाल में कोई ब्राह्मण नही बचा था। इसलिये सेन राजाओं को यज्ञ के लिये ब्राह्मणों को बाहर से आयात करना पडा था। पाल साम्राज्य के अंतर्गत जो नाग लोगों का क्षेत्र था वह अब आदीवासी क्षेत्र है। उत्तर-पूर्व से लेकर नीचे बिहार और बंगाल का कुछ हिस्सा, ओरिसा का कुछ हिस्सा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बस्तर, महाराष्ट्र के गढचीरोली इ. जिले तथा आंध्र का कुछ हिस्सा इसमें शामिल है। इतिहास के शोधकर्ताओं ने पाल साम्राज्य के आदिवासी क्षेत्र के संबंधों को लेकर कोई खास अध्ययन नही किया है। हर्षवर्धन के बाद के काल में मध्यप्रदेश में यह उल्लेख है कि आदिवासी राजा नाग राजा थे। तुंग राजा जयसिंह ने संपूर्ण गोंडामा पर राज किया जिसे 18 वा गोंडामा भी कहा जाता है। गोंडामा का अर्थ गोंड समुदाय से है जो गोंड क्षेत्र को दर्शाता है जो शायद कभी बोनल तथा बर्मा के पर्वतीय क्षेत्र से लेकर उत्तर में जयपुर तथा दक्षिण में विशाखापट्टम जिले तक था।(Imperial Kanauj, p.77) पाल राजवंश के पतन के बाद उनका कोई भी संरक्षक नही बचा। इसलिये संपुर्ण आदिवासी क्षेत्र को ब्राह्मणवादी ताकतों ने प्रताडित किया। महाभारत में नाग-विध्वंस के यज्ञ का वर्णन है। वास्तव में जनमेजय ने किया नाग विध्वंस का क्षेत्र ओरिसा में अग्राहाट (Agrahaut) रहा है। यहां महाभारत की परंपरा राजाओं के चित्रों में दिखाया गया है जो उस यज्ञ में मौजूद नही थे। उसी प्रकार इस क्षेत्र में सर्पपूजा आज भी होती है।(Fergusson, p. 61; http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm)

ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य,
महिलाओं के लिये असहनीय नर्क !

[Information for this subchapter is synthesized from the following sources : http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm; http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm; Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 3; Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal]

गुप्त साम्राज्य ने ब्राह्मण अंधकार युग की
घिनौनी चुडैल-हत्या प्रथा को पूर्नजीवीत किया !

चुडैल-हत्या प्रथा का मूल मकसद गैर-ब्राह्मण स्त्रियों का उन्मूलन करना है। मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक औरतों को चुडैल करार देकर मारने की {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों की खौफनाक परंपरा काफी प्राचीन है। यह प्रथा वेदिक अंधकार युग (1500 BC - 500 BC) में जारी थी जो भारतीय इतिहास में ब्राह्मणों के पौराणिक अंधकार युग (100 AD-1000 AD) में भी जारी रही। ब्राह्मणवादी चुडैल-हत्याओं के सामने युरोप की विख्यात चुडैल हत्याएं भी फिकी पड जाती है। किसी भी औरत को चुडैल घोषित कर उसे क्रूरतम तरिकों से मार डाला जाता है। यह प्रथा वेदिक ब्राह्मण-धर्म व्दारा औरतों को सति के नाम पर मार डालने की प्रथा जैसी ही है। फर्क सिर्फ इतना है कि किसी भी औरत को किसी भी तरिके से मारा जा सकता है। उसे मारने के लिये उसके पति का मरना भी जरुरी नही है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में औरतों को चुडैल करार

देकर मार डालने के वाकये होते रहते है। उन्हे तरह तरह से अपमानित कर अंत में बडे ही क्रूर तरिकों से मार डाला जाता है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

गुप्त अंधकार युग में ब्राह्मण-धर्म ने मंदिरों में देवदासियों से वेश्यावृत्ति कराई !

ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में स्त्रियों को देवदासियाँ, जोगिने बनाकर धर्म के नाम पर उनसे वेश्यावृत्ति कराई जाती रही है। भारत में धार्मिक-वेश्याओं को देवदासी, खुदीकर, मुर्लोई, बसवी, भावीन, देवली, नायकिन तथा जोगीन इ. नामों से जाना जाता है। उन्हे बालअवस्था में ही देवदासी बनाया जाता है। गुप्त साम्राज्य के ब्राह्मणवादी अंधकार युग में मंदीर वेश्यावृत्ति का प्रचार-प्रसार हुआ। ब्राह्मण कालीदास की मेघदूत में उज्जैन के महाकाल में देवदासियों का उल्लेख है। हयुमन राइटस् वॉच के अनुसार दक्षिण के कई राज्यों में हजारों लडकियों को उनकी उम्र के 13 साल से ही वेश्या व्यवसाय में धकेल दिया जाता है। देवदासियाँ शादी नही कर सकती तथा कुछ समय सवर्णो व्दारा वेश्या के रुप में उपयोग किये जाने के बाद उन्हे शहरों तथा महानगरों के वेश्यालयों में निलामी व्दारा बेचा जाता है। (तुटलेले लोक, p.22 अनुवाद प्रा. वामन निंबाळकर)।

देवदासी प्रथा की शुरुआत तिसरी शताब्दी इसवी में हुई है। देवदासी का मतलब ईश्वर की सेविका है। उनका विवाह मंदिर के देवताओं से लगाया जाता है। इसलिये उन्हे नित्य सुमंगली भी कहा जाता है। उसका काम मंदिर के कामों में पूजारियों की मदद करना, मंदिर के पूजारी-पंडों से मुफ्त में शारीरिक संबंध बनाना भी है। धनी परिवार के लोगों व्दारा भी उनका यौन शोषण किया जाता है। अपना पेट भरने के लिये लोगों की भीख पर तथा यौन संबंधों से होने वाली आय पर निर्भर रहना पडता है। ब्राह्मण-धर्म का पूजारी किसी भी दलित-बहुजन के घर जाकर स्वप्न में ईश्वरीय आदेश का हवाला देकर घर की बच्ची को देवदासी बनाने पर मजबूर कर देता है। देवदासी प्रथा मुख्य रुप से कर्नाटक, गोवा के कुछ हिस्सों में, महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है। देवदासी की बेटी को भी देवदासी बनना पडता है।

आंध्र प्रदेश की कुछ देवदासियों को जोगीन के नाम से जाना जाता है। उनका भी बाल अवस्था में देवताओं के साथ विवाह कर दिया जाता है और यौन अवस्था में आते ही उन्हे ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में वेश्यावृत्ति के काम में लग जाना होता है। सन् 1992 में निझामाबाद जिले में 500 जोगीने थी जबकि सारे राज्य में 30 हजार जोगीने थी। आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक के कुछ हिस्सों में बसवी प्रथा कायम है। उन्हे विवाह करने की अनुमती नही है। उनका काम मंदिरों में धार्मिक विधियों को अंजाम देने में मदद करना है। तमाम मनोरंजन के कामों में हिस्सा बटाना होता है। इस काम के लिये उन्हे कोई मुआवजा नही मिलता इसलिये उन्हे वेश्यावृत्ति कर अपना गुजारा करना पडता है।

अल्पसंख्यक आर्य-ब्राह्मणों ने बहुसंख्यक मूलनिवासियों को अपमानित किया !

मनुवाद के सुनहरे युग में ब्राह्मण बहुजनों की दुल्हनों के साथ हनिमुन मनाते रहे है, जब चाहे हुक्म जारी करके बहुजनों को सैकडों ब्राह्मणवादियों को खाना खिलाने को मजबूर करते रहे है। बहुजनों के विद्रोहों को कुचलकर बहुजनों को ही खुशियाँ मनाने, दिये जलाने को मजबूर करते रहे है। बेइज्जत करने के लिये एक-दूसरे का मुँह काला करके गंदी-गंदी गालियाँ देने जैसे जलालत भरे कार्य धर्म के नाम पर करने के लिये

मजबूर करते रहे है। ब्राह्मणों ने शोषितों को अपमानित करने और कमजोर रखने के लिये जो कुछ भी किया वही सब धार्मिक कुप्रथाओं के रुप में बहुजनों को स्विकार करके सदियों से उसका पालन करते रहना पडा है। ऐसी ही एक अनंगदान प्रथा का उदाहरण मान॰ दिनकरराव जवळकर ने अपनी मराठी में लिखी पुस्तक ''देशाचे दुश्मन '' (p.19) में दिया है :- आर्य ब्राह्मणों के मत्स्य पुराण के 70 वे अध्याय के अनुसार हस्त, पुष्प अथवा पुणर्वसु नक्षत्र के रविवार को बहुजन स्त्री ने अच्छी तरह स्नान करके कामदेव के प्रतिक के रुप मे विष्णु की पूजा करने के बाद ब्राह्मण को बुलाकर उसकी पूजा करके उसे एक सेर चावल धृतपात्र के साथ देकर उसे यथाशक्ति श्रेष्ट भोजन कराना चाहिये। कामदेव मानकर उसे अपनी देह अर्पण करना चाहिये। इसी तरह से सतत 13 माह तक अपना देह अर्पण करने के पश्चात उस ब्राह्मण को गद्दा, तकिया, मच्छरदानी इ॰ से सुसज्ज शैया देनी चाहिये; आभूषण देने चाहिये, उसे लक्ष्मी सहित कामदेव की प्रतिक विष्णु की गुड के घडे पर स्थापित की गयी मूर्ति देनी चाहिये। इस व्रत के तहत हर रविवार को रतीसुख के लिये आने वाले ब्राह्मण की हर तरह से सेवा करनी चाहिये। क्षत्रीय राजा बाहर से घर आते ही रानी के पलंग पर से ही भट (ब्राह्मण) 'राणी अनंगदान व्रत से पतिव्रता हुयी है' ऐसी घोषणा करे ऐसी स्थिति कभी कोई स्वतंत्र क्षत्रीय कैसे सहन कर सकता है ? क्षत्रीय ब्राह्मणों के अधिन होने से उन्हे ऐसी धिनौनी प्रथाओं को सहना पडा है।

मालाबार में ब्राह्मणों ने संबंधम विवाह प्रथा का निर्माण किया। इसमें ब्राह्मण शुद्र नायरों की लडकी को रखैल बनाकर रखते है। ब्राम्हण रात के अंधेरे मे आकर संभोग करके चला जाता है। संबंधम विवाह से होने वाली संतान या संबंधम बिबी के प्रती उसकी कोई जिम्मेदारी नही होती। लडकी अन्य जगह विवाह भी नही कर सकती। डॉ. अम्बेदकर ने ऐसे कई उदाहरण पेश किये है।(Dr. B.R. Ambedkar , Vol. 9 , P. 205)

लोडोविको डी वार्थेमा नाम का मुसाफिर सोलहवी शताब्दी के मध्य में भारत के मलबार प्रांत में आया। उसके मुताबिक जब राजा ब्याह करता है तो अपनी रानी के साथ सुहागरात मनाने के लिये वह सबसे प्रतिष्ठित ब्राह्मण को निमंत्रित करता है। राजा ब्राह्मण को फिस के रुप मे चार सौ से पांच सौ डुकाट (रुपये) भी देता है।(Voyage of Varthema - (Hakluyat Society), Vol. I , P. 141.) हॅमिलटन ने अपनी पुस्तक '' Account of the East Indies" में लिखा है कि जब सामोरीन जाति का कोई व्यक्ति ब्याह करता है तो वह अपनी पत्नी के साथ तब तक संभोग नही कर सकता जब तक नंबुद्री ब्राह्मण उसकी पत्नी के साथ सुहागरात नही मना लेता। नंबुद्री ब्राह्मण चाहे तो लगातार तीन रातों के लिये नवब्याहता को अपने पास रख सकता है। (Dr. B.R. Ambedkar,Vol. I , p. 308) बहुजनों को अपमानित करने के ऐसे असंख्य मामले है।

ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य में ब्राह्मणों ने,
औरतों को अशुध्द और गैरभरोसे का प्रचारित किया !

नाग-द्रविडों में मातृसत्ता पध्दति थी जबकि अलबिनो निन्डरथॉल आर्यो में पितृसत्ता पध्दति थी। इसलिये आर्य-ब्राह्मणों ने पुरुषों के वर्चस्व को कायम करने और स्त्रियों के स्तर को बदतर बनाने की हरसंभव कोशिश की। गीता (9/32) के मुताबिक वैश्य, शुद्र तथा औरतों का समावेश पापयोनि में होता है। ऋग्वेद (10/95/15) के मुताबिक स्त्री से कभी मित्रता नही की जा सकती। उसका दिल भेडिये से ज्यादा क्रूर होता है। शतपथ

ब्राह्मणा, पुराण तथा यर्जुवेद (14/1/1/31) की शिक्षा के मुताबिक औरतें शुद्र, कुत्ते, कौवे इ. के श्रेणी की है तथा उनमें झूठ और उदासी का वास करता है। (http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm) तुलसीदास के मुताबिक 'ढोल, गँवार, शुद्र, नारी सबहु ताडन के अधिकारी।' यानि ढोल, गँवार, शुद्र और नारी पीटे जाने के लिये ही बने है।(Sati: From exotic custom to relativist controversy by Francis Jarman (University of Hildesheim) CultureScan Volume 2, No. 5, December 2002) गुप्त दरबार के तुलसीदास ब्राह्मण ने स्त्रियों को जन्मतः अपवित्र करार देते हुए उनके काम को पति की ईमानदारी से सेवा करना और बच्चें पालना बताया है।

रामायण के मुताबिक स्त्रियां जन्म से ही अपवित्र है। वे तमाम गुणों को नष्ट कर देती है। उनके स्वभाव में ही दुष्टता है। वे अप्रामाणिक तथा तीखी जबान वाली होती है। श्रीमद भागवतम (Prabhupada, 1978) तथा भगवत गीता (Prabhupada, 1972) के मुताबिक औरतें मूर्ख, बेईमान, अतिकामुक तथा आध्यात्म के रास्ते का रोडा है। महाभारत के अनुसया पर्व में स्त्रियों के स्वभाव के बारे में बताया गया है कि स्त्रियां सभी बुराई की जड है। वे निर्धारित सीमाओं को हमेशा तोडती है। महाभारत स्त्रियों के खिलाफ विस्तार से शाब्दिक हमले करता है। स्त्रियों को मूर्ख, अतिकामुक, धोखेबाज, बेकाबू होकर खानेवाली, साक्षात मौत, जहर, सांप तथा आग जैसे विशेषणों से उन्हे नवाजते हुए कहा है कि उनका मुख्य काम आदमियों को भ्रष्ट करना है। (Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

भारतीय फिल्मों तक में स्त्री को जहर बताया गया है। ''जवान हो या बुढीया या नन्ही सी गुडिया, कुछ भी हो औरत जहर की है पुडिया ''इस फिल्मी गाने में स्त्री के प्रति ब्राह्मण धर्म समाज की नफरत व्यक्त होती है।

यहूदियों व्दारा रोज सबेरे की जाने वाली प्रार्थना में कहा जाता है कि 'तु महान है, ए हमारे देवता, कायनात के सम्राट, जिसने मुझे औरत नही बनाया' (Hertz, 1959, p. 21; for additional pathogenic aspects of prayers, see Moore, 1999) बॅबिलानियन तलमुद औरतों को गुलामों के समकक्ष रखती है। (e.g. Yebamot 122/A; Nazir 61/A; women, slaves and children in Berakhot 20/A and 45/B; women, slaves and cattle in Kidushin 2/A, 14/B, 25/B); तलमुद औरों के सामने आने से औरतों को मना करती है और घोषित करती है कि 'औरतों की आवाज नंगापन है' (or obscenity, Berakhot 24/A) रॅबी यहूदा कहता है कि औरते गुसैल और ज्यादा बोलने वाली होती है। रॅबी लेवी कहता है कि औरतों में चोरी और व्याभीचारी वृत्ति होती है। (p. 488-489, # 110) यहां तक की औरतों में सबसे सदचरित्र स्त्री भी टोनाटोटका करती है। (p. 489, # 118; Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) चाणक्य नीति के अपने दूसरे अध्याय की शुरुआत में चाणक्य कहता है कि झूठ बोलना, बिना सोचे समझे काम करना, दुस्साहस, धोखेबाजी, मूर्खता, लालच, अशुध्दता और क्रूरता औरतों के मूलभुत गुणधर्म है। (Anritam Sahasam Maya Murkhatramatilubdha Ashochatvam Nirdayatvam Strinam Dosha Swabhavaja) चाणक्य नीति के चौदहवे अध्याय में कहा गया है कि आग, पानी, औरत, मूर्ख, सांप तथा राज घराना इन से बचकर रहे। वे घातक सिध्द हो सकते है। (Agnirapa Striyo Murkha Sarpa Rajkulani Ch Nityam Yatyen Seryani Sadhya Pranharaani Shat) चाणक्य पहले अध्याय में कहता है कि हमने नाखून वाले

जानवरों से, तेज सिंगो वाले जानवरों से, नदियों से, सशस्त्र लोगों से, औरतों तथा राज घराने के लोगों से बचकर रहना चाहिये। चाणक्य के मुताबिक कवि कुछ भी कल्पना कर सकता है जबकि औरतें कुछ भी कर सकती है, जैसे पियक्कड या कौवे कुछ भी बोल सकते है कुछ भी खा सकते है। (Kavaya Kim Na Pashayanti Kim Na Kurvanti Yoshitah. Madhyapa Kim Na Jalpanti Kim Na Bhakshanti Vayasa.; (http://www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm) ग्रीक दार्शनिक साक्रेटस की यह धारणा थी कि स्त्री सारी फसाद की जड है। प्लॅटो के अनुसार दुष्ट व्यक्ति स्त्री के रुप में जन्म लेते है। यहूदियों की धारणा है कि आदम को स्वर्ग से निकाले जाने का मूल कारण इव है इसलिये स्त्री पाप और गलतियों का मूल कारण है। यहूदियों के अनुसार स्त्री ऐसा बिच्छू है जो हमेशा डंक मारने के लिये तत्पर रहता है। ईसाई विश्वास के अनुसार स्त्री को हमेशा पछताने पर विवश करना चाहिये क्योंकि वह सारे फसादों की जड है।(p.18,21-23 Rasheed Ibrahim Khanpuri, Islam & Women;s Honour) ब्राह्मण-धर्म स्त्री को जिन्दा जलाने का समर्थन करता है। शंकराचार्य ने नारी को नरक का व्दार कहा है। (बी.आर. सांपला, p.177)

वेदिक ब्राह्मण-धर्म दहेज और भ्रुण हत्या को मान्यता देता है !

अैतरेया ब्राह्मणा के मुताबिक बेटी सारे दुखों की जड है। अथर्व वेद भी बेटियों के होने के प्रति तीव्र नापसंदगी उजागर करता है।(http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm) पतियों को सलाह दी गई है कि वे ऐसी पत्नियों के साथ संभोग ना करे जो सिर्फ बेटियां पैदा करती है। सोटा (20/A) सीधे तौर पर घोषित करता है कि वह व्यक्ति सुखी है जिसके घर सिर्फ बेटे ही जन्में है। वे सबसे ज्यादा दुखी है जिनके घर बेटियां पैदा हुई है। (Baba Batra 16/B) औरत एक गंदगी, मलमूत्र का ढेर है। उसका मुंह खून से सना है - हर कोई उसके पीछे भागता है। (p. 492, #181; Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

ऋग्वेद के मुताबिक औरतों ने सिर्फ बेटे पैदा करने चाहिये। नई नवेली दुल्हन को आशिर्वाद दिया जाता है कि उसके दस बेटे हो। यहां तक कि बेटे पैदा होने के लिये वेदों में एक विशेष कर्मकांड 'पुनसावन संस्कार' (Punsawan sanskar) को तिन माह के गर्भ की अवस्था में किया जाता है। इस कर्मकांड के दौरान यह प्रार्थना की जाती है कि 'तुमने इस गर्भाशय को पैदा किया है। लडकी किसी और के यहां पैदा कर लेकिन इस गर्भाशय में से सिर्फ बेटे को ही पैदा कर। (Atharva Ved 6/11/3) हे पति होने वाले बेटे की रक्षा करना, उसे बेटी मत बनने देना (Atharva Ved 2/3/23) शतपथ ब्राह्मणा में बिना बेटे की महिला को अभागी करार दिया गया है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मणा में हर्षिहचंद और नारद के बीच के संवाद में नारद कहता है कि 'बेटी दुख पैदा करती है।' (http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm) मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक बेटियों को जन्म से ही मार डालने की खौफनाक प्रथा का पालन बर्बर वेदिक आर्य टोलियां करती थी। इन्ही बर्बर वेदिक आर्यो ने भारत में यह बर्बरता शुरु की है। वेद औरतों के प्रति तीव्र नफरत का इजहार करते है। बर्बर लूटेरी आर्यो की टोलियों की नजर में औरतें एक बोझ जैसी थी। बेटे को पैदा करने की आर्यो की चाहत इतनी ज्यादा तीव्र थी कि बेटे पैदा करने के मकसद से वेदों में कई तरह की प्रार्थनाएं है। अथर्व वेद (6.2.3) के मुताबिक बेटी किसी और जगह पैदा हो यहां सिर्फ बेटे को पैदा

करो। पैदा होने वाली बेटी को मार डालने की प्रथा का वेद समर्थन करते है। इस बर्बर घिनौनी प्रथा की जड में वेदों के खुनी श्लोक/ऋचाएं (verses) है। तैतरिया संहिता (VI.5.10.3) के मुताबिक इसलिये वे (आर्य) बेटी को जन्मते ही त्याग देते है जबकि बेटे को स्वीकार करते है। (Tasmat striyam jatam parasyanti ut pumamsam haranti; (Muir I 26))। वास्तव में वेदिक अंघकार युग (1500 BC- 500 BC) में तथा ब्राह्मणवादी अंधकार युग (1500 BC - 1000 AD) में बेटियों को जन्मतः मारने के कई कारण थे। इन सब कारणों का उगम वेदिक बर्बरता में है। वेदिक लुटेरी टोलियों में औरतों की उपयोगिता न के बराबर थी। इसलिये उनकी तादाद कम से कम रखी जाती थी ताकि लूटेरी आर्य टोली की लडाकू क्षमता में कोई कमी न आ पाये। बेटियों को जन्म से ही मारने की वेदिक परंपरा को सुत्रों के (500 BC - 200 AD), पुराणों के (200 AD - 1000 AD) तथा ब्राह्मणों के (1500 BC - 1000 AD) अंधकार युग में भी जारी रखा गया। राजस्तान में जन्म से ही बेटियों को मार डालने की वजह से बेटियों का अभाव है। राजपूतों में यह कहावत प्रचलित है कि 'मरी औरत का होना नही होने से बेहतर है।' (Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक वेदों का कथन है कि दुल्हन के परिवार ने दुल्हे के परिवार को दहेज देना चाहिये। ऋग्वेद (X.85) के मुताबिक आर्य पिता अपनी बेटी के पति को गायें तथा अन्य भेट वस्तुएं दुल्हे की बारात के साथ ले जायी गई। वेद में काकशिवात (Kakshivat) कहता है कि उसके ससुर ने उसे 10 रथ, नौकरानियां और 1060 गायें शादी समारोह के वक्त दी जिससे वह अमिर हो गया है।(Rg Ved I.126) दहेज को स्त्रीधन के नाम से संबोधित किया गया है। दहेज प्रथा वेदिक आर्यो की प्राचीन परंपरा है। वेदों की कन्यादान प्रथा में पिता बेटी की शादी में बेटी के साथ गहने और कपडे इ. भी देता था। वरदक्षिणा में दुल्हे को नगदी इ. दी जाती थी। दहेज प्रथा के शाप को वेदों का पूरा पूरा समर्थन है। ब्राह्मण धर्मग्रंथों के मुताबिक सीता से ब्याह करते वक्त सीता के पिता ने राम को 100 करोड सोने की मोहरे, दस हजार रथ, दस लाख घोडे साठ हजार हाथी, एक लाख पुरुष सेवक, पचास हजार सेविकाएं, दो करोड गाएं, एक लाख मोती तथा दिगर वस्तुएं दी थी।(Ram.wh 61) वास्तव में ब्राह्मणों ने दहेज के स्तर को इतने विचित्र स्तर तक पहुंचा दिया है कि गैरब्राह्मणों को इस आर्थिक बर्बादी से बचने बेटियों की जन्म होते ही हत्या करना ही एक रास्ता नजर आता है। वेदिक आर्यो की दहेज प्रथा के तथा स्त्री-भ्रृण हत्या को समर्थन देने की बदौलत पिछले पचास सालों में पांच करोड बेटियों की हत्याएं की जा चुकी है। वेदों ने मान्य की हुई दहेज प्रथा हिन्दू समाज के सतिप्रथा, तथा बहुओं को जींदा जलाने की प्रथा का मूल कारण है। वेदों के दहेज प्रथा के समर्थन से बेटियों को सिर्फ आर्थिक बोझ समझा जाता है। ब्राह्मणों व्दारा पैदा किया गया दहेज का पागलपन इतना तीव्र है कि मध्यम वर्ग का परिवार एक बेटी के विवाह में ही लगभग बर्बाद हो जाता है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) मंजुरुल हक्क अंसारी, न्यु येरखेडा, पोस्ट कामठी जिला नागपुर अपने पत्र में लिखते है कि मात्र ''बिहार राज्य में ही हर साल करीबन बीस लाख नवजात बालिकाओं की हत्या कर दी जाती है।'' यु.एन.आई. के एक समाचार के अनुसार दाई सखीयाँ ने बताया कि नवजात बालिका को रीढ की हड्डी तोड कर मार डाला जाता है, काला नमक चटा कर और कंठ में कपडा ठुंसकर मौत तक तडपने के लिए छोड दिया जाता है। ''अगर

बंगाल, उडीसा, राजस्थान इ॰ राज्यों को मिलाकर देखा जाए जहाँ यह घिनौनी हरकत जोर शोर से जारी है तो सोच कर ही सारे बदन में सनसनी दौड जाती है। (लोकमत समाचार, 15-2-2001) पंजाब में कई ऐसे गांव है जहां लड़की को पैदा होते ही मार दिया जाता है। ऐसे ही एक गांव बादलगढ़ के सरपंच का कहना है कि यहां सदियों से लडकी को कलंक मानकर उसे जन्म के तुरंत बाद ही गला घोंटकर मार देने की प्रथा है इसलिये कोई शिकायत नही की जाती। जब महिलाओं को पता चलता है कि लड़की ने जन्म लिया है तो उसे अलग जमीन पर लिटा दिया जाता है। माँ उसे दूध नही पिलाती, जिसके कारण बच्ची तडप-तडप कर मर जाती है। फिर भी न मरे तो गला घोंटकर उसे मार दिया जाता है। बच्ची मायके में पैदा होती है तो वहां भी उसे मारा जाता है। (नवभारत, 12 अगस्त 2003) पंजाब में हर पांचवी लडकी गर्भ में ही मार दी जाती है। पंजाब में वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरुषों के मुकाबले मात्र 874 स्त्रियां है। (दैनिक भाष्कर, 24 फरवरी 2003) खुद ब्राह्मणवादी अटलबिहारी वाजपेयी के अनुसार पिछले दस सालों में 15 लाख से अधिक बालिकाओं की जन्म लेने के पहले ही हत्या कर दी गई। (लोकमत समाचार, 12 अगस्त 2003) योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और बिहार में पिछले दशक में महिलाओं की संख्या में भारी कमी आई है। (लोकमत समाचार, 21 जून 2003) दहेज हत्याओं का प्रमाण भी बहुत ज्यादा है। अकेले दिल्ली में रोज एक से ज्यादा बहुओं को मार डाला जाता है या मारने की कोशिश की जाती है। सन् 1961 में ही दहेज प्रथा को प्रतिबंधित किया जा चुका है। इसके बावजूद बहुओं को मार डालना जारी है। दिल्ली की तिहाड जेल में बहुओं को मार डालने वाली सासों के लिये एक अलग वार्ड बनाया गया है। इसमें पहले से ही उसकी क्षमता से ज्यादा की भीड है। मारवाडी समुदाय में इसका प्रमाण कुछ ज्यादा है।

भारत के भील आदिवासियों में उल्टे लडकी के परिवार को दहेज की रकम देकर शादी तय की जाती है। ब्याही गई लडकी अगर खुद को सुखी नही समझती तो वह अपने मां-बाप के पास लौट आती है। मांबाप को लिये गए पैसे भी नही लौटाने पडते। भील कौमार्य को उतना महत्व नही देते क्योंकि यह मान लिया जाता है कि उम्र होने पर लडका लडकी शारीरिक संबंध कायम कर लेते है। जिसके पहले से शारीरिक संबंध ज्ञात होते है ऐसी लडकियों के परिवार को कम धनराशी मिलती है।(Weinberger-Thomas: 165; Sati: From exotic custom to relativist controversy by Francis Jarman (University of Hildesheim) CultureScan Volume 2, No. 5, December 2002)

वेदिक ब्राह्मण-धर्म के नियमों के मुताबिक गुप्त अंधकार युग में बच्चियों की शादी होती थी !

गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में लडकियों की शादी छह-सात साल में ही कर दी जाती थी क्योंकि वेदिक ब्राह्मण-धर्म का ऐसा आदेश था। इतनी कम उम्र की लडकी से विवाह करने से पति को यकीन होता था कि उसकी बिवी का कौमार्य भंग नही हुआ है। उसे मन के मुताबिक चाहे जैसा ढाला जा सकता है। (http://answers.yahoo.com/ How did gender shape Indian society during the Gupta period - Yahoo! Answers. htm) ब्राह्मण-धर्म ने पांच-छह साल की उम्र में ही बेटियों का विवाह करने का आदेश दिया है। इस आदेश का उल्लंघन करने वाले मां-बाप के लिये शाप निर्धारित किये है।

मनुस्मृति ने विधवा विवाह को अधर्म का दर्जा दे दिया गया। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार जाति व्यवस्था की कठोर बुनियाद डालने के लिए ऐसा किया गया। विधवा का पुर्नविवाह अगर उसकी अपनी जाति में नही हुआ तो वह अन्य जाति में विवाह कर सकती थी इसलिए विधवा समस्या को जड-मूल से समाप्त करने के लिए धार्मिक आधार देकर सती प्रथा शुरु की गई। विधुर पुरुष अन्य जातियों में विवाह न करें इसलिए मनुस्मृति ने विधुर के साथ अबोध बालिकाओं के विवाह को धार्मिक मान्यता दी।(P. 295-301,309 Dr.Ambedkar, Vol. 3) मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक पांच-छह साल की उम्र में ही ब्राह्मण अंधकार-युग में बच्ची की शादी कर दी जाती थी। ब्राह्मणों के धार्मिक कानून के मुताबिक किसी भी पुरुष की आदर्श बिवी वह होती है जिसकी उम्र उसकी उम्र से एक तिहाई है। मनुस्मृति (IX.94) के मुताबिक अगर पुरुष की उम्र 30 साल है तो उसने 12 साल की लडकी से शादी करना चाहिये; 24 साल के व्यक्ति ने आठ साल की लडकी से शादी करना चाहिये। राम ने सोलह साल के उम्र में सीता से विवाह किया था। उस वक्त जो सीता की उम्र बताई गई है वह ब्राह्मणों की धोखेबाजी के सिवा कुछ नही है क्योंकि मनुस्मृति के नियम के मुताबिक सीता की उम्र उस वक्त 5 साल की होनी चाहिये क्योंकि राम मनुस्मृति के नियम के खिलाफ नही जा सकता था।

श्रीक्षेत्र काशी में हुए ब्राह्मण महासंम्मेलन में धर्मगुरुओं ने सवालों के जवाब दिये। उन्होने कहा कि गर्भस्थिति से आठ साल यह उनके विवाह का मुख्य काल है। नौ तथा दस साल मध्यम काल तथा ऋतुदर्शन के बाद का समय विवाह के लिये निंदनीय है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनमें विधवा विवाह तथा तलाक पूरी तरह से निषिध्द है। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 19, p.539-40)

गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में
स्त्रियों को शिक्षा व धार्मिक विधि से वंचित किया गया !

स्मृतियों के काल में औरतों को शुद्रों के समकक्ष रखा गया था इसलिये उन्हे ब्राह्मण-धर्म के वेद इ. पढने की, या वेद मंत्रों का उच्चारण करने की या किसी धार्मिक विधि को संपन्न करने की इजाजत नही थी।(http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm) मंडल स्थित भगवान रुद्र विशेष करके ब्राह्मण क्षत्री के व्दारा ही पूजनीय है, वैश्य और शुद्र के लिये नही। स्त्री का भी उनके रुप में पूजन का अधिकार नही है। स्त्री और शुद्रों को ब्राह्मण के व्दारा शिव की पूजा करने पर फल की प्राप्ति होती है। (लिंग पुराण, p.332)

मनुस्मृति के अनुसार : - ➲ औरतों को वेदों का अध्ययन करने का अधिकार नही है। वेदमंत्रों के उच्चार से पाप नष्ट हो जाते है। स्त्री के संस्कारों में वेद मंत्रों का उच्चारण नही किया जाता इसलिए वे गंदी और पापी है। ➲ मनुस्मुति ने वेद इ॰ ध ार्मिक ग्रंथ पढने तथा बलि इ॰ धार्मिक विधि करने की स्त्रियों को मनाई की है। मनुस्मृति के अनुसार अगर कोई स्त्री बलि इ॰ विधी को खुद अंजाम देती है तो वह नर्क में जायेगी।

स्त्रियों को पढने की आजादी दी गई तो वे ब्राह्मणवाद के खिलाफ विद्रोह कर सकती है। इसलिए मनुस्मृति ने स्त्रियों को शिक्षा से वंचित कर दिया और अत्यंत हीन स्तर पर पहुँचा दिया। ऋग्वेद (8/33/17) के मुताबिक इंद्र देवता ने खुद कहा है कि औरतों में बहुत कम अक्ल होती है इसलिये उन्हे शिक्षा नही दी जानी चाहिये।(http:// mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm)

माधव आचार्य के मुताबिक वे (स्त्रियां और शुद्र) वेदों के अध्ययन करने से प्रतिबंधित किये गए है।(Vedarthaprakasha of Madhava Acharyya on the Taittriya Yajur Veda, quoted in Muir III,p.66) औरतें किसी भी सुरत में वेदों का अध्ययन नही कर सकती।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक औरतें पति की संपत्ति है,
इसलिये उन्हे संपत्ति रखने का अधिकार नही है !

गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में परिवार के पुरुष अपने पिता की संपत्ति में हक पा सकते थे लेकिन औरतों तथा लडकियों को यह अधिकार नही था। वे पुरुषों पर आश्रीत थी।(www.theindianhistory.org/Gupta Empire Women.htm) रामायण, महाभारत, स्मृति-पुराणों में औरत को संपत्ति माना गया है। स्त्री को मन मुताबिक किसी को कुछ समय के लिये किसी वस्तू की तरह उपभोग के लिये दिया जा सकता है। इसलिये ब्राह्मण धर्म के मुताबिक औरतों को पैतृक विरासत में या पति के घर में संपत्ति का अधिकार नही है। स्त्रीधन की संकल्पना सिर्फ उसके गहने-कपडों तक सिमित है। गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में इसी पर अमल कर औरतों को बिना कोई मानवीय अधिकार वाली उपभोग की वस्तु बना दिया गया। (http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm)

मनु ने आदमी को अपनी बिबी छोडने से नही रोका। वह उसे छोड सकता है, उसे बेच सकता है। इसके बावजूद वह अपने पति से मुक्त नही हो सकती क्योंकि उसे खरीदने वाला भी उसका वैध पति नही बन सकता। मनुस्मृति के मुताबिक ➲ पत्नी को बेचा जाए या त्याग दिया जाए उसपर से उसके पति का अधिकार समाप्त नही होता। (यानी वह दूसरे की पत्नी नही बन सकती) मनु ने स्त्रियों को संपत्ति का हक नही दिया।

सभी देश महिलाओं को क्रूर पति को तलाक का अधिकार देते है। इस्लाम भी औरतों को यह हक देता है। लेकिन ब्राह्मण धर्म अपने महिलाओं को पति से अलग होने की किसी भी हालत में इजाजत नही देता। पति चाहे जितना क्रूर क्यों ना हो, वह चाहे जितनी दुर्धर बीमारी से ग्रस्त क्यों ना हो, चाहे वह लैंगिक रुप से अक्षम ही क्यों ना हो, ब्राह्मण धर्म की औरत उसे छोड नही सकती। (Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

यजुर्वेद तैतरिय संहिता(6/5/8/2) के मुताबिक औरतों के संबंध में नियम यह कहते है कि औरतों में कोई शक्ति नही होती। उन्हे संपत्ति में अधिकार नही दिया जाना चाहिये। वे दुष्ट लोगों तक से कमजोरी से बात करती है।(http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm) वैष्णव पंथ के कानूनों के मुताबिक औरत को संपत्ति का अधिकार नही है। मनुस्मृति (VIII.416) के मुताबिक बेटे, और गुलामों ने खुद अर्जित की संपत्ति पर उनका खुद का अधिकार नही है। वह संपत्ति उसकी है जिनके मातहत वे है। ऐसी हालत में औरतों की बदतर हालत को समझा जा सकता है। ब्राह्मण-धर्म के कानूनों के मुताबिक पति को स्वामी या मालक कहा जाता है। पति औरत का स्वामी और ईश्वर है। उसकी हर तरह से सेवा करना ही स्त्री का धर्म है। इसके संबंध में ऋग्वेद (14/45) तथा अथर्ववेद (3/81) में स्पष्ट निर्देश है। तैतरिय ब्राह्मणा (3/8/4) में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि स्त्री संपत्ति की तरह है। (http://mukto-mona.net// Women

in Hinduism by Abul Kasem.htm) यहूदी धर्म के मुताबिक पति अपनी बिवी से जो चाहे कर सकता है। जैसे वह किसी मांस को चाहे तो भूनकर, तलकर या नमक लगाकर खा सकता है, वैसे ही वह अपनी बिबी का कैसे भी उपभोग कर सकता है। जेरुसलेम के योसी बेन योहन्नान के मुताबिक औरत से ज्यादा बात नही करनी चाहिये क्योंकि जब आदमी औरत से ज्यादा बात करता है तो वह खुद को ही नुकसान पहुंचाता है, अपने अध्ययन को नजरंदाज करता है और सीधे नर्क में जाता है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) चाणक्य की नजर में औरत एक उपभोग की चिज है। चाणक्य के मुताबिक हमने मुसिबत के समय के लिये कुछ पैसे बचाकर रखने चाहिये। अगर पैसे खर्च भी हो तो औरत की रक्षा करनी चाहिये लेकिन जहां खुद की रक्षा का सवाल है औरत को त्याग देना चाहिये। (http://www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm)

गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में औरतें घर में कैद होकर रह गई !

मनुस्मृति (V.154) के मुताबिक पति में चाहे जितने दोष क्यों ना हो, उसमें चाहे कोई भी गुण ना हो, वह चाहे कहीं और से अपने सुख को हासिल करता हो, पत्नि का फर्ज है कि वह अपने पति को ईश्वर मानकर उसकी सेवा करे।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) मनुस्मृति (V.164) के मुताबिक बिवी अपने पति के प्रति कर्तव्यों का पालन नही करती तो इस दुनियां में कलंकित होती है और मौत के बाद लोमडी के रुप में जन्म लेती है। उसे अपने इस पाप के लिये बीमारियों से प्रताडित होना पडता है। मनुस्मृति (V.148) के मुताबिक स्त्री अपने बचपन में पिता के अधिन होती है, जवानी में अपने पति के अधिन, पति के मरने के बाद वह अपने बेटों के अधिन रहती है। औरत को कभी स्वतंत्र नही होना चाहिये। मनुस्मृति के अनुसार : -➲ स्त्री को हमेशा नियंत्रण में रखना चाहिये। चाहे वह बालिका हो या तरुणी या फिर वयस्क औरत, उसे घर में भी कोई स्वतंत्रता नही होनी चाहिये। ➲ कमजोर से कमजोर पति का भी यह कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी की निगरानी रखे। ➲ स्त्री स्वभाव पुरुषों से अपनी वासना शांत करना है। इसलिए अपनी माँ, बहन, बेटी के साथ भी एकांत में नही रहना चाहिये। उनकी वासना अत्यंत तीव्र होती है तथा वे विव्दान को भी वश में कर लेती है। ➲ स्त्री के लिए उसका पुरुष होना ही पर्याप्त है इसलिए वे अधिक आयु अथवा कुरुप किसी भी व्यक्ति के सामने समर्पण कर देती है। ➲ उनकी पुरुषों के प्रति तीव्र वासना, अपने चंचल स्वभाव व नैसर्गिक हृदय-हीनता के कारण वे अपने पति के प्रति ईमानदार नही होती। चाहे उनके पति उनकी कितनी भी निगरानी क्यों ना करें।

यहूदी धर्म के मुताबिक स्त्रियों को शिक्षा न दी जाये तथा उनके शब्दों पर भरोसा ना किया जाये। औरते स्वतंत्रता के काबिल नही है, उनका इकलौता काम अपने पति की सेवा करना है। अरण्य कांड के मुताबिक पत्नि का इकलौता कर्तव्य अपने शरीर, मन और वाणी से अपने पति की सेवा करना है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) औरत का पति बाहर गांव गया हो तो उसने किसी महिला रिश्तेदार के साथ सोना चाहिये अकेले कतई नही सोना चाहिये। (DuB. quoting from Vasishta's Padma Purana, DuB.p.349) इंडो-आर्यन साहित्य में स्त्री के लिये अवरोधिका, अवरोधवधु इ. शब्दों का बार बार इस्तेमाल किया गया है। इससे स्पष्ट है कि औरतों के लिये सामाजिक स्वतंत्रता

बिल्कुल नही थी। वाचस्पति स्त्री के लिये कुलवधू शब्द का इस्तेमाल करता है। इस शब्द का अर्थ सुर्य के लिये अदृष्य होता है। इन विशेषणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि औरतें लगभग घरों में जैसे कैद कर दी जाती थी। इसका उदाहरण नंबुद्री ब्राह्मणों की औरतें है जिससे अंदाजा होता है कि आर्य महिलाओं के खिलाफ घर से बाहर निकलने पर कितनी अधिक पाबंदी लगाई गई होगी। शंकराचार्य के मुताबिक ब्राह्मण औरत ने अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरुष की ओर देखना भी नही चाहिये। ब्राह्मण महिला ने घर से बाहर नही जाना चाहिये जबतक उसके साथ कोई सेविका ना हो। ब्राह्मण औरत ने सिर्फ सफेद वस्त्र पहनने चाहिये। जबकि शुद्र करार दी गई महिलाओं को कमर से उपर कुछ भी पहनने की इजाजत नही थी। (Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में बहुपत्निप्रथा को खुब बढावा दिया गया !

गुप्त साम्राज्य में बहुपत्नित्व परंपरा को बहुत बढावा मिला क्योंकि स्त्रियां पुरुष की संपत्ति मानी जाती थी। पुरुष ज्यादा से ज्यादा संपत्ति यानि बिवीयां जमा करने में भरोसा करते थे। राजा तथा उनके अधिकारियों की बिबियों की तादाद और भी ज्यादा होती थी। किसी स्त्री को बच्चे पैदा नही हो रहे, उसे सिर्फ बेटियां पैदा हुई है, वह आकर्षक नही लग रही तो उसका पति एक और शादी कर लेता था। सन् 1956 तक भारत में ब्राह्मण धर्म के पुरुषों की पत्नियों की तादाद को लेकर कोई पाबंदी नही थी।

बहुपत्नित्व के बारे में मुस्लिमों की आलोचना की जाती है लेकिन मुस्लिम कानून में यह शर्त है कि जो पुरुष चारों बिबियों के साथ इन्साफ कर सके यानि उनके साथ वैवाहिक जीवन सुख से निर्वाह कर सकता है ऐसे ही इन्सान को चार तक शादियों की इजाजत है। {स्त्रियों के हक में} ऐसा कोई भी बंधन हिन्दूओं में नही है।

मनुस्मृति (IX.72) के मुताबिक भले ही किसी व्यक्ति ने किसी औरत से विधिवत शादी की हो लेकिन वह उसे जब चाहे तब छोड सकता था अगर उसके खिलाफ आरोप लगे है, अगर उसे किसी बीमारी ने ग्रस लिया है, या उसका कौमार्य भंग हुआ है, या उसकी शादी धोखे से लगाई गई है। ऐसी औरतों की हालत बहुत ज्यादा दयनीय हो जाती थी क्योंकि उन्हे दूसरा पति मिलना असंभव हो जाता है। उन्हे विधवाओं जैसी जींदगी जीने पर मजबूर होना पडता था।

ब्राह्मण-धर्म स्त्रियों पर बलात्कार किये जाने को मान्यता देता है !

ब्रिहदरण्यका (6.4.6 व 6.4.7) के मुताबिक स्त्री किसी पुरुष के साथ संबंध बनाने के लिये राजी नही है तो पुरुष औरत को अपने ताकत के बल पर काबू में कर उससे बलात्कार कर सकता है। आरंभ में पुरुष ने उसे वस्तूएं भेंट कर लुभाना चाहिये। फिर भी वह राजी नही है तो उसपर प्रहार कर इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिये कि 'मै अपनी ताकत और सम्मान से तुमसे तुम्हारा सम्मान छीनता हूं।' जाहिर है कि उपरोक्त वचन लोगों को स्त्री पर बलात्कार की इजाजत देते है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

ब्राह्मण-धर्म राक्षस विवाह और पिसाच विवाह को मान्यता देता है। 1) राक्षस विवाह :– स्त्री को जबर्दस्ती उठाकर बाधा बनने वाले स्त्री के संबंधियों की हत्या करके उसे वधु बनाने को राक्षस विवाह कहते है। 2) पिसाच विवाह :– सोयी हुई, मादक पदार्थो

से मदहोश अथवा मंद बुध्दी अथवा नासमझ से बलात्कार इ॰ से स्थापित संबंध को पिसाच विवाह कहते है। इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इ. ने महिलाओं पर बनात्कार करने के कई उदाहरण अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के धर्मग्रंथों में है।

औरतों के खिलाफ हैवानियत के कानून !

[This whole sub-chapter is synthesized from the Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm]

मनु के मुताबिक बिवी, शुद्र, वैश्य, क्षत्रिय तथा नास्तीक का कत्ल करना मामूली अपराध है। मनु के नियमों में नया कुछ भी नही है। जब से ब्राह्मणवाद का विकास हुआ है, तब से ब्राह्मणों के यही विचार रहे है। मनु के पहले वे सिर्फ सामाजिक सिधान्तों के रुप में मौजूद थे। मनु ने सिर्फ इतना किया है कि जो सामाजिक सिधान्त थे उन्हे राज्य के कानून में तब्दिल कर दिया है। इसका मकसद शुद्रों और स्त्रियों को बौध्द धर्म में जाने से रोककर ब्राह्मणधर्म की रक्षा करना था।(Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 17 (Part II), p. 125-28) औरत के खिलाफ अगर कोई दूराचार इ. का आरोप लगाया जाता है तो इसे साबित करने की जिम्मेदारी आरोप लगाने वाले व्यक्ति की न होकर औरत की मानी जाती थी। मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक इनसायक्लोपीडीया ब्रिटानिका में बताया गया है कि किस तरह हिन्दू पति अपनी पत्नि पर कभी भी दूराचारी होने का आरोप लगा सकता है। बिबी खुद को बेकसूर कहती है तो गांव की पंचायत के सामने उसे अग्नि परीक्षा देकर खुद को निर्दोष साबित करना होता है। अगर वह जलकर नही मरती लेकिन उसकी त्वचा पर जलने का चिन्ह भी पाया जाता है तो उसका दोष साबित हो जाता है और उसे दूराचार की सजा भुगतनी पडती है। दूराचारी स्त्री की सजा यह है कि सबके सामने उसे भूखे कुत्तों को खिलाया जाये। (मनुस्मृति, VIII.371) यानि दोनों ही सुरत में उसकी मौत निश्चित है। इस प्रथा का आदर्श राम व्दारा सीता की अग्नि परीक्षा लिया जाना है। ब्राह्मणों के मुताबिक निर्दोष व्यक्ति आग से बच जाता है जैसे कि सीता अग्नि परीक्षा की आग में जलने से बच गई थी। रामायण के मुताबिक सीता आग में नही जली बल्कि उसे जमीन ने निगल लिया।

ब्राह्मण-धर्म-समाज की क्रूर सजाएं :- सीता अग्रवाल के मुताबिक पतियों व्दारा दूराचार की आरोपित औरतों के नाक और कान काट दिये जाते थे। ब्राह्मण धर्म-समाज के साहित्य में इसके ढेरों उदाहरण है। रामायण में शुर्पनखा के नाक कान राम के भाई लक्ष्मण ने मात्र इसलिये काट दिये थे क्योंकि सुर्पनखा राम पर मोहित हो गई थी। राम ने ताडका को सिर्फ इसलिये मार दिया क्योंकि वह राक्षसी यानि काले रंग की द्रविड कन्या थी। उसने उसके शरीर के टुकडे टूकडे कर दिये।

ओसियन स्टोरी नामक किताब में बेशुमार उदाहरण दिये गए है जिसमें पतियों ने ब्राह्मण धर्म के कानूनों तथा परंपराओं के मुताबिक अपनी पत्नियों के नाक कान काट दिये या क्रूरतम सजाये दी। (Oc. Bk.III,Ch.XIX, Oc.Taw I.p.146-7) इन कानूनों को मनु तथा कौटिल्य ने समाज पर लागू किया था। ओसियन स्टोरी में लिखा गया है कि उजैन के राजा ने एक ब्राह्मण की कालरात्री नामक दूराचारी बिबी के कान काट दिये।(Oc. Bk.IV,Ch.XX; Oc. Bk.IV,Ch.XX; Oc.Taw I.p.161) यह कथा दर्शाती है कि उस वक्त पतियों व्दारा पत्नियों के नाक कान काटने की सजा आम बात थी। राजा अपनी मर्जी

से ऐसा किसी के भी साथ कर सकता था। उसे गवाही की जरुरत नही होती थी। पंचतंत्र की पहली किताब की सातवी कथा में बुनकर की बिबी की कथा दी गई है। इस कथा में बुनकर अपनी बिबी की नाक काट देता है क्योंकि उसने उसकी आवाज को अनसुना कर दिया था। धर्मशील राजा ने बुनकर को धर्म कानूनों के मुताबिक बाइज्जत बरी कर दिया था। इन किताबों के ये सारे वाकये दर्शाते है कि औरतों को जरा जरा सी बात पर क्रूरतम सजाये देना आम बात थी।

ब्राह्मण धर्म में औरतों को क्रूरतम सजाएं देने की बात का अनुमोदन प्राचीन भारत के कई विदेशी मुसाफीरों ने किया है। 9 वी शताब्दी में भारत आये अरब व्यापारी सुलेमान के मुताबिक कोई पुरुष किसी की बिवी के साथ भागकर उससे शारीरिक संबंध बनाता है तो लोग उन दोनों को मार डालते है। यह साबित होनेपर कि औरत को जबरन भगाया गया था तो सिर्फ उस आदमी को मार डाला जाता है।(E.Renaudot, `Ancient Accounts of India and China by Mohammedan Travellers', p.34) ऐसे कई उदाहरण है।

मनुस्मृति (VIII.371) के मुताबिक अगर बिबी को उसके रिश्तेदारों के बडे होने का या खुद पर घमंड है और पति के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा नही कर रही है तो राजा का यह कर्तव्य है कि वह ऐसी बिबी को सार्वजनिक स्थान में भूखे कुत्तों के आगे खाने के लिये डाल दे। मनुस्मृति की यह क्रूरता और कहीं देखने को नही मिलती।

मनुस्मृति (VIII.356) के मुताबिक कोई अगर दूसरे की बिबी के साथ तीर्थस्थल में, गांव के बाहर, जंगल में, नदी के संगम इ. पर बात करता है तो उसे दूराचार का दोषी मानकर सजा दी जाये। मनुस्मृति (VIII.357) के मुताबिक किसी महिला को कोई भेंट वस्तू देना, उसके गहनों को या कपडों को स्पर्श करना, उसके साथ बिस्तर पर बैठना दूराचार के काम है। मनुस्मृति (VIII.358) के मुताबिक कोई व्यक्ति किसी स्त्री के शरीर के उस भाग को स्पर्श करता है जहां उसने स्पर्श नही करना चाहिये और वह महिला उसे स्पर्श करने देती है ऐसी बातें दूराचार है। ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक ऐसी महिला की सजा यह है कि सार्वजनिक रुप से उसे भूखे कुत्तों के आगे डाल दिया जाये। दूसरी कुछ घटनाओं में औरतों के टूकडे कर दिये गए। कौटिल्य के काल में अगर कोई स्त्री दूराचार की दोषी पायी जाती है तो उसके यौन अंगों को काट कर उसे मौत दी जाती थी।(Artha.IV.13 cited in Jain p.164) कौटील्य ने स्त्री के दूराचार की व्याख्या इतनी अस्पष्ट रखी है कि उसे शादी-पूर्व लैंगिक संबंध, विवाह के बाद के लैंगिक संबंध तथा विवाह के बाहर के लैंगिक संबंध इन सब के लिये स्त्री के यौन अंगों को विकृत कर उसे मौत दी जाती थी। कौटिल्य के ये कानून सिर्फ किताब तक ही सिमित नही थे बल्कि समाज में इनका पूरा पूरा पालन किया जाता था। इसलिये ब्राह्मणों के साहित्य में पंचायतों के ऐसे क्रूर निर्णयों के ढेर सारे उदाहरण है जिस में स्त्री के यौन अंगों को विकृत कर उन्हे मार डाला गया है। ओसियन स्टोरी नामक किताब में ऐसे कई उदाहरण है जिसमें पति ने अपनी पत्नि को अपनी जरा सी सनक में मार डाला है। राजा योगनंदा ने अपनी रानी को इसलिये मार डाला क्योंकि वह दूसरे मर्द के साथ बात करती हुई पायी गई थी। नैशादचरिता नामक किताब में राजा के आदेश पर दूराचारी स्त्री के शरीर के टूकडे टूकडे कर उनको चील-कौवों को खिलाया गया। (Naishadacarita XXI.66) वेदिक काल में दूराचारी स्त्री को पुरुषमेध यज्ञ में बलि चढाकर उसे सामुहिक रुप से खाया जाता था। कट्टर ब्राह्मणवादी लेखक सुधीर बिरोडकर लिखता है कि हालांकि वेदिक काल के टोली युध्द लगातार जारी रहे इसकी एक वजह यह भी थी कि दूसरी

टोली के लोगों को पकड कर उन्हे बाद में खाया जाता था। पुरुषमेध यज्ञ से यह स्पष्ट है कि इन्सानों का मांस खाने की प्रथा आर्यो में थी। दूसरी टोली के बंदी बनाये गये लोगों को यज्ञ में मारकर उन्हे पकाकर खाया जाता था। भले ही इन्सानी मांस खाने की बात खौफनाक लगती हो लेकिन यह सच्चाई है कि यह प्रथा आर्यो में एक अवस्था में थी। मार डाली गई औरत के मांस को खाने की बात को वेद पूरी तरह से मान्य करते है। यर्जुवेद (Yajur Veda XXX) में प्रजापति को दी जाने वाली इन्सानी बलि का वर्णन किया गया है। इसलिये औरत को मार डालने के बाद उसके मांस को खाना वेदिक प्रथा के अनुसार ही है। वेदिक ब्राह्मणा ग्रंथ वधुला अवाख्याना (Vadhula Anvakhyana 4.108; ed. Caland, Acta Orientalia 6, p. 229) में मणुष्यबली देकर उसके मांस को खाये जाने (anthropophagy) को प्रमाणित किया है :- '' प्रजापति को शिकार के तौर पर वास्तव में पेश किया जाता था। जैसे कि कर्नजया। धर्तक्रतवा जातुकर्णी की इच्छा पेश किये गए स्त्री के हिस्से को खाने की नही थी इसलिये देवों ने इन्सानी बलि के बदले घोडे की बलि स्वीकार की। ("one formerly indeed offered a man as victim for Praja-pati," for example Karnajaya. "Dhartakratava Jatukarni did not wish to eat of the ida portion of the offered person; the gods therefore exchanged man as a sacrificial animal with a horse.")

ब्राह्मण वंश की कथित शुध्दता के लिये
बंगाल में कुलीन विवाह की प्रथा शुरु की गई !

(प्रस्तुत उप-अध्याय की अधिकतर सामग्री को Kulin System Of Bengal Was Meant For Supremacy Of Brahmins by Dr. K. Jamnadas इनके इंटरनेट पर प्रकाशित वेब पेज से लिया गया है।)

आर्य-ब्राह्मण प्रजाति की कथित वांशीक शुध्दता की रक्षा के लिये ब्राह्मणों ने 1) बच्चियों का विवाह 5-6 साल की बेहद कम उम्र में करना शुरु किया। 2) विधवा विवाह पर पाबंदी आयद की 3) बंगाल में कुलीन प्रथा शुरु की तथा 4) सति-प्रथा को पूर्नजीवीत किया। ब्राह्मणवादी राजा बल्लालसेन ने पाल सम्राटों के बौध्द राज्यों के पतन के बाद ब्राह्मण धर्म की पूर्नस्थापना के लिये कई कदम उठाये। बल्लाल सेन ने बौध्दों का उत्पीडन उन्मूलन शुरु किया। ब्राह्मण जाति की कथित वांशीक शुध्दता कायम रखने मिथिला, काशी, प्रयाग, कनौज इ. स्थानों से कुछ ब्राह्मणों को लाया गया। गायों के गर्भधारण के लिये सांडों को लाया जाता है, इन ब्राह्मणों का काम सारे राज्य में घुमकर हजारों ब्राह्मण, बैद्य व कायस्थ कन्याओं से शुध्द आर्य-ब्राह्मण प्रजाति पैदा करना था। इसे कुलीन विवाह कहा गया। इन ब्राह्मणों की कथित कुलीन बिबियां अपने ही मां-बाप के साथ रहती थी। उनके ब्राह्मण पतियों का काम एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर अपनी दूसरी कुलीन पत्नियों को गर्भवति बनाना था। इस तरिके से आर्य-ब्राह्मणों की 'शुध्द' प्रजाति पैदा की गई जो ब्राह्मण-धर्म का मुख्य आधार थी। मूस्लिम काल में इनका दूसरा काम था कि वे विधवाओं के पूर्नविवाह को रोके तथा सति-प्रथा को कडाई से लागू करें। उत्तर भारत में सति-प्रथा मुख्यतः राजवंश की स्त्रियों तक सिमित था, लेकिन बंगाल में ब्राह्मणों ने इसपर क्रूरता से अमल किया। इसपर इतनी कडाई से अमल करने का एक मुख्य कारण स्त्रियों के उम्रदराज पतियों के जान की रक्षा करना भी था क्योंकि हर पति की सैकडों बिबियां होती थी जिनमें से कोई भी बूढे पति से मुक्त होने के लिये उसे जहर देकर मार सकती थी और दूसरा विवाह कर सकती थी। इसलिये न सिर्फ पूर्नविवाह पर प्रतिबंध

लगाया गया बल्कि पति के मरने के बाद बिबियों को सति के रुप में पति की चिता पर जलाने की प्रथा भी शुरु की गई ताकि हर पत्नि अपनी खुद की जान की खातिर अपने ब्राह्मण पति को अपनी पूरी कोशिशों से मरने ना दे।

एक पुरुष के साथ कई बालिकाओं की शादी की जाती थी। उस वक्त कुलीन विवाह की फीस के रुप में लडकी के मां-बाप को 5 से 500 रुपये तक अदा करने पडते थे। कुलीन पति उनका पालनपोषण नही करता था। कुलीन विवाह कुलिन ब्राह्मणों के लिये कमाई का बडा साधन था। (Benoy Ghose, "Iswar Chandra Vidyasagar", 1965, Publication Division, Govt. of India. p. 112) किसी कुलीन ब्राह्मण की 30 बिबियां है तो वह महिने में एक बार भेंट देकर सारी उम्र भर बिना कोई मेहनत किये ऐश कर सकता है और ससुराल के लोगों से कीमती तोफहे पा सकता है। अस्सी साल से ज्यादा की उम्र वाले बूढे की भी कम से कम दो-तीन दर्जन बिबियां होती थी। कुलीन ब्राह्मण प्रथा ने ब्राह्मणों को अनुत्पादक परजीवीयों की जमात बना दिया था।

रासबिहारी मुखोपाध्याय ने इस प्रथा के खिलाफ काम किया। उसने 1881 में लिखा कि परिवार के दबाव में उसे आठ लडकियों से शादी करनी पडी ताकि परिवार की आर्थिक हालत को सुधार सके। उसकी खुद की मर्जी होती तो वह चंद सालों में कम से कम सौ लडकियों से कुलीन विवाह कर सकता था। वह इसके लिये राजी नही था इसलिये उसे संयुक्त परिवार से जबरन अलग किया गया। उसपर चढे आर्थिक कर्जे से उबरने के लिये उसे छह और कुलिन विवाह करने पडे।(Benoy Ghose, Ibid. p.113 ff.)

एक ब्राह्मण व्दारा एक दिन में तीन से चार कुलीन विवाह किये जाने के उदाहरण है। कई बार सभी बेटियों की शादी एक ही ब्राह्मण के साथ लगा दी जाती थी। सन् 1871 में विद्यासागर ने दो दस्तावेज प्रकाशित किये जिसमें उसने कुलीन ब्राह्मणों व्दारा की हुई शादियों के नाम और उम्र के साथ ब्यौरे दिये। कई कुलीन ब्राह्मणों को यह भी याद नही था कि उन्होने वास्तव में कितनी लडकियों से शादी की है। कुछ कुलीन ब्राह्मण डायरी में अपने बिबियों के नाम और पते, उनसे मिली हुई रकम तथा हर मुलाकात पर मिलने वाले तोहफे इ. का विवरण लिखा होता था। जब कुलीन विवाह किसी बुढे से किया जाता था तो शायद ही कभी पति बिबियों की सुरत देख पाता था। शायद ही तीन चार साल में एक बार उसका अपनी बिबी से मिलना होता हो। (Benoy Ghose, Ibid. p. 121 ff.)

बंगाल में कुलिन विवाह पध्दती है। इस पध्दती के मुताबिक एक व्यक्ति ने 500 स्त्रियों के साथ विवाह किये है। जिस तरह तीर्थस्थलों पर पंडे जजमानों का नाम पता लिखकर रखते है उसी तरह इसने अपनी पत्नियों के नाम पते एक रजिस्टर में लिख रखे थे। उसकी बिवियाँ अलग अलग गांवों में थी। 'पति–पत्नि के रुप में उनके वैवाहिक संबंध भी जरुरी नही थे। यह पति गांव जाकर अपनी बिबी खोज निकालता था और उपर से उनसे दक्षिणा भी लेता था। ऐसे भयानक और दयाशुन्य रिवाज हिन्दूओं में है। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 18-III, p.180)

ये विवाहित लडकियां विवाहित होते हुए भी एक तरह से अविवाहित लडकी की जींदगी जीने पर मजबूर थी और उनकी अवस्था दयनीय होती थी। इसकी बदौलत दूराचार, गर्भपात, भ्रृणहत्या तथा वेश्यावृत्ति के मामलों में भारी बढौतरी हुई। ब्राह्मणों ने खुद अपनी ब्राह्मण महिलाओं की ऐसी दयनीय हालत बना दी थी ताकि ब्राह्मण वंश की कथित शुध्दता को तथा ब्राह्मण धर्म को बरकरार रखा जा सके जो पाल सम्राटों बौध्द शासन में समानता, लोकतंत्र इ. नियमों की वजह से खतरे में पड गई थी।

ब्राह्मण अपनी ही महिलाओं की इतनी दुर्गती क्यों करते है इसके पिछे की दूसरी वजह यह बताई जाती है कि आक्रमणकारी आर्यो की कई लडाकू टोलियों में औरतें नही थी। उन्होने यहां की मूलनिवासी नाग-द्रविड महिलाओं को जबरन अपना गुलाम बनाकर उनसे अपना वंश बढाया। इन टोलियों के आर्यो को डर था कि ये महिलाएं आर्यो के साथ धोखा कर सकती थी इसलिये उन्हे हर अधिकार से वंचित कर लाचार बनाकर रखा गया। यह परंपरा से आज तक जारी है, भले ही इसकी उत्पत्ति की जानकारी शायद आज के अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों तथा मूलनिवासियों को नही है। डी.एन.ए. संशोधनों से यह बात साबीत हो चुकी है कि अधिकतर ब्राह्मण औरतों का मायटोचोन्ड्रीयल डी.एन.ए. मूलनिवासी भारतीय महिलाओं जैसा है।

ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक विधवाओं का विवाह नही हो सकता !

ब्राह्मण धर्म के मुताबिक विधवाओं का विवाह नही हो सकता क्योंकि 1) ब्राह्मण धर्म के मुताबिक पत्नि पति की संपत्ति होती है इसलिये पति के मरने के बाद उसे जींदा रहने का कोई अधिकार नही है। तथा 2) ब्राह्मण धर्म के मुताबिक स्त्री कभी स्वतंत्र नही है वह अपने बारे में कोई निर्णय नही ले सकती। उसके लिये निर्णय लेने का काम घर के पुरुष लेते है। मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक अगर बिबी क्रूर पति के अत्याचारों से बचने के लिये भाग भी जाये तो भी वह ब्राह्मण धर्म के मुताबिक वह दूसरा विवाह नही कर सकती। मनुस्मृति (V.157) के मुताबिक विधवाओं तथा औरतों के लिये दोबारा विवाह करना प्रतिबंधित है। आदीत्य पुराण (XXI.14) के मुताबिक कलियुग में विधवाओं का पूर्नविवाह नही किया जाना चाहिये। अगर किसी गलती से या दबाव में आकर कोई विधवा से विवाह कर लेता है तो उसे प्रायश्चित कर उस विधवा को त्याग देना चाहिये क्योंकि उसके साथ किया गया विवाह अवैध था।(Laghu Ashvalayana XXI.6) अगर इस दौरान उसे कोई बच्चा हो जाता है तो उस बच्चे को भी अवैध करार दिया गया है। मनुस्मृति (V.162) के मुताबिक दूसरे व्यक्ति से हुआ बच्चा वैध नही है। मनुस्मृति ब्राह्मण धर्म की अधिकृत कानूनी किताब है इसलिये उसके आदेशों को ही मान्य किया जाता है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) संविधान के तहत पूर्नविवाह तथा विरासत में संपत्ति पाने का कानून होने के बावजूद स्त्रियों को परिवार के पुरुष सदस्यों के दबाव में उनका हिस्सा नही दिया जाता। पराश्रित होने से यह मुमकिन ही नही है कि वह दोबारा विवाह करे चाहे विधवा कितनी ही युवा क्यों ना हो।

ब्राह्मण धर्म के मुताबिक पति की मौत की वजह औरतों के पाप है !

कौटिल्य के मुताबिक कोई पत्नि पति की मर्जी के बिना उपवास रखती है तो वह अपने पति की उम्र को कम करती है। ऐसी औरत नर्क जाती है और उसे नर्क में भयानक यातनाएं दी जाती है।(http://www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm) विधवा को एक दुष्ट औरत कहा जाता है क्योंकि औरत की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने पति को जीवित रखे। इसलिये अगर पति उसके पहले मरता है तो उसका जींदा रहना अपमानास्पद है। ब्राह्मण धर्म की उपरोक्त दलीलों पर विश्वास करने वाली विधवा अपने विधवा काल में अपराधबोध और शर्म के बोझ तले जींदा रहती है।(Suttee - self-sacrifice or murder _ BBC History Magazine.htm)

यह प्रचारित किया गया है कि पत्नि अगर अपने पति के मरने के बाद सति हो जाती है तो उसके पति के सारे पाप नष्ट हो जाते है और उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। पत्नि सति जाने से मना करती है तो माना जाता है कि वह पति को स्वर्ग में जाने से रोक रही है, उसे नर्क में भेज रही है।(http://curioustendency.blogspot.in/Sati - real love or forced suicide _ Curious Tendency.htm#.UW4X7jebXg0) इसलिये जो विधवा अपने आप को नहीं जलाती, उसे पति-व्देषी मानकर परिवार के लोग उससे घृणा करने लगते है। उसे मोटे वस्त्र धारण करने पड़ते है। उसे सभी गहनों को त्यागना पडता है, उसे मामूली खाना दिया जाता है। (http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm) एक विधवा बिना पति के छत की चार दीवार से घीरी मानी जाती रही, जिसकी इस्मत पर किसी भी समय आँच आ सकती है। इस कारण एक रूढ़ी परम्परावादिता ने विधवा स्त्री को सौन्दर्य तथा आकर्षण से दूर रखने हेतु सर मुंड़वाना, सफेद वस्त्र धारण करना, बिना आभूषण रहना, नंगेपाँव रहना, एकान्तवास का निर्देश, तथा खान-पान में निर्देशों का पालन करना होता है। जैसे विधवा मसूर की दाल नहीं खा सकती। इस दाल में कामुकता पैदा करनेवाले तत्व पाये जाते है, जिससे स्त्री के चरित्रहीन होने की संभावना रहेगी।(http://www.academia.edu//sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm; www.theindianhistory.org/Gupta Empire Women.htm) विधवा को कठोर धार्मिक और स्वप्रताडना भरा जीवन जीना होता है। उसका सिर मुंड दिया जाता है, वह किसी भी सुंदर वस्तु तथा किसी भी सुख का उपभोग नही कर सकती क्योंकि वह अभागी और अशुध्द है। उसे किसी भी पारिवारिक समारोह में हिस्सा नही लेने दिया जाता। वह अपने बच्चों के विवाह तक में शामिल नही हो सकती। वह उपेक्षित दुखी जीवन व्यतीत करती है। उसका अस्तित्व मात्र इतना है कि वह धार्मिक उपवास रखे और ईश्वर के नाम जपती रहे। (http://www.deathreference.com/Widow-Burning - rituals, world, burial, body, funeral, life, customs, history, cause, time.htm) उसे किसी भी समारोह में इसलिये शामिल नही किया जाता क्योंकि माना जाता है कि उसके मौजूद रहने से अपशकुन हो जाएगा। पत्नि को वैसे भी परिवार पर आर्थिक जिम्मेदारी माना जाता है क्योंकि वह परिवार के धन पर जीती है। जब पति के होते हुए पत्नि की यह स्थिति है तो पति मरने के बाद उसकी हालत कितनी दयनीय होगी इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। विरासत में हक के कानून के बावजूद विधवाएं अपना कानूनी हक हासिल नही कर सकती क्योंकि वे परिवार के खिलाफ बिना किसी सहारे अपने अधिकारों के लिये खडी ही नही रह सकती। घर भी उन्हे अपनी जींदगी अकेले ही जीनी पडती है तथा परिवार के किसी पुरुष की लैंगिकता का शिकार होना पडता है। (Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html) युवा विधवा को और भी ज्यादा प्रताडित किया जाता है क्योंकि यह माना जाता है कि उसका विधवापन उसके पिछले जन्मों के पापों का फल है।(http://www.deathreference.com/Widow-Burning - rituals, world, burial, body, funeral, life, customs, history, cause, time.htm) प्राचीन काल में विधवाओं के दर्शन तक को अशुभ माना जाता था इसलिये यह सोच बनाई गई थी कि जीवन भर अपमान और कठनाईयां झेलते रहने से अच्छा है कि एक बार सति जाने की तकलीफ झेलकर हमेशा की तकलीफों से मुक्त हुआ जाये। एक ब्रिटीश निरीक्षक के मुताबिक विधवाओं की हालत इतनी बुरी थी कि वे

ऐसा जीवन जीने की बजाये पति की चिता पर जलकर मरना बेहतर मानती थी।(Eden 1876: 120f.) 11 वी शताब्दी का अरब यात्री अलबरूनी कहता है कि 'यदि स्त्री का पति न रहे तो वह दूसरे पुरूष से विवाह नहीं कर सकती। उसे दो विकल्पों में से एक को चुनना पड़ता है, या तो विधवा नियमों का पालन करे या अपने आप को जला डाले। दूसरी बात को ही अच्छा समझा जाता था, क्योंकि विधवा के रूप में जीती है तो उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है।' (http://www.academia.edu//sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm; www.theindianhistory.org/Gupta Empire Women.htm)

गुप्त साम्राज्य के अंधकार-युग में, सति-प्रथा को पूर्नजिवीत किया गया !

सति-प्रथा की तीव्रता !

सति-प्रथा आर्यो में आरंभ से ही चली आ रही है। आर्यो ने भारत में प्रवेश किया तब यह प्रथा उतनी आम नही रही।(http://www.thisismyindia.com/Woman in Ancient India,Women In Ancient India Culture,Ancient Indian Women.htm) अलेक्झांडर के वक्त कासांड्रेईया (Cassandreia) के भारत भ्रमण पर आये अरिस्टोबुलस (Aristobulus) नामक ग्रीक इतिहासकार ने लिखा है कि तक्षिला शहर में सति प्रथा का प्रचलन था।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सति प्रथा भारत से दक्षिण एशिया के देश खासकर जावा, लोम्बोक तथा बाली में प्रसारित हुई क्योंकि इन देशों में पहली ईसवी शताब्दी से ब्राह्मण धर्म ने अपनी जडें जमा ली थी। भारत में सति-प्रथा लगभग ईसापूर्व चौथी शताब्दी से चली आ रही थी।(http://www.deathreference.com/Widow-Burning - rituals, world, burial, body, funeral, life, customs, history, cause, time.htm) सति प्रथा को गुप्त साम्राज्य के अंधकारयुग में पूर्नजीवित किया गया। ईसवी 510 में मध्यप्रदेश के इरन नामक गांव में सति दिये जाने की घटना का शिलालेख (Bhanugupta's Eran inscripion - 510 AD) मौजूद है। गुप्त साम्राज्य के अंधकारयुग में सति-प्रथा का प्रचलन आम था। कालीदास तथा वात्स्यायन ने सति-प्रथा का उल्लेख अपने साहित्य में किया है। मंदसौर में कुमारगुप्ता के शिलालेख से यह स्पष्ट है कि गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में सति प्रथा आम बात थी। गुप्त काल में सति की याद में पत्थर लगाकर उनपर सति का नाम लिखा जाता था। सबसे पुराने सति पत्थर भारी तादाद में मध्य प्रदेश के सागर में पाये गए है। कई शताब्दियों बाद ऐसे पत्थर राजस्तान में पाये गए। इन पत्थरों को देवली (devli) कहा जाता था। लोग सति पत्थर की पूजा करते थे। वह तीर्थस्थल बन जाता था। पश्चिम भारत में सति पत्थर बहुतायत में पाये जाते है।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सति प्रथा कथित उच्च जातियों में आम थी। भारत की मूलनिवासी जातियों में सति-प्रथा का नही थी। दलित जातियों में इसका प्रचलन बिल्कुल भी नही था।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

कोई स्त्री चुपचाप जलकर मर जाये तो इसका महत्व न के बराबर हो जाता है। इसलिये विधवा को पति की चिता पर जलाने की क्रिया को सामुहिक तौर पर ही अंजाम

दिया जाता है। इस तरह पूरा समाज इस प्रथा का दोषी था। सति-प्रथा मातृहत्या भी थी क्योंकि ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक बाप की चिता को आग लगाने का काम बेटे करते है। मृत पिता के साथ माँ को वे ही जींदा जलाते थे। कई समुदायों में मृत व्यक्ति के शरीर को जलाया नही बल्कि दफनाया जाता था। इसलिये इन समुदायों में विधवा को पति के साथ ही समारोह पूर्वक जिंदा दफनाया जाता था।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

वेदिक ब्राह्मण-धर्म में सति-प्रथा को मान्यता है !

ऋग्वेद तथा अथर्ववेद दोनों में हीसति का उल्लेख हुआ है। सति-प्रथा का पालन बहुत पहले से किया जाता रहा है। ऋग्वेद संहिता (Rig Veda 10.18.7) में सति-प्रथा का समर्थन करते हुए कहा गया है कि 'इन औरतों ने सजधज कर दुख दर्शाये बिना चिता में प्रवेश करना चाहिये। अथर्व वेद के अंतिम क्रिया के लिये बने 18 वे कांड सुक्त 3 के श्लोक (verse) में कहा गया है कि यह औरत अपने पति की दुनियां का चुनाव करते हुए अपने प्राचीन धर्म का पालन करते हुए मृत पति के साथ लेट जाती है ... (http://www.oxbridgewriters.com/The ritual of Sati.htm) महाभारत में भी सति प्रथा को कबूतर के जोडे ओर शिकारी वाली कथा में महीमामंडित किया गया है। भिष्म बताता है कि कबूतर की बिवी कबूतरी यह निर्णय करती है कि पति के मरने के बाद पत्नि को जींदा रहने का हक नही है इसलिये वह अपने पति की चिता में कुदकर मर जाती है। उसके ऐसा करने के बाद वह सीधे अपने पति के साथ दैवी रथ पर सवार होकर स्वर्गलोक पहुंच जाती है। इसतरह महाभारत सतिप्रथा का महीमामंडन करता है, और सति-प्रथा को मजबूत आधार प्रदान करता है।(http://www.oxbridgewriters.com/The ritual of Sati.htm)

व्यास और दक्ष ने सति धर्म को विधवा जीवन का सर्वोत्तम विकल्प स्वीकार किया है, जो स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। ''दक्ष स्मृति भर्तरि या नारी समारोहेदघुताशनम्। सा भवेत शुभाचारा स्वर्गलोक महीयते।।'' कुन्ती छोटी रानी माद्री को उसे स्वर्ग में पति का समागम प्राप्त हो, जैसा आशीष देते हुए सती होने की आज्ञा देती हैं। वासुदेव की मृत्यु पर उनकी चार पत्नियाँ देवकी, भद्रा, रोहिणी तथा मदिरा ने अपने पति केशव के साथ सतीत्व ग्रहण किया था। श्रीकृष्ण की मृत्यु पर अर्जुन ने उनका दाह संस्कार द्वारिका में ही किया था, अपितु उस वक्त उनकी कोई पत्नी सतीत्व न कर पायी, परन्तु इन्द्रप्रस्थ में श्रीकृष्ण की पाँच पत्नियाँ- रूक्मिणी, गान्धारी, शैय्या, हेमवती तथा जाम्बवती ने अग्नि में प्रवेश किया, तथा सत्यभामा और अन्य स्त्रियाँ तपस्या करने हेतु वन में चली गयी।

पौराणिक साक्षों के अनुसार पृथ्वी के प्रथम राजा पृथु की मृत्यु पर उनकी रानी अर्ची, बलराम की पत्नी रेवती और परशुराम की माता रेणुका ने अपने पति जमदग्नि की मृत्यु पर सतीत्व ग्रहण किया था। बाणभट्ट ने हर्षचरित में प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु पर उनकी पत्नियों द्वारा सतीत्व ग्रहण करने की चर्चा की है, जिनमें कुछ रानियों ने अपने पति के मृत्यु की आशंका मात्र से सतीत्व ग्रहण किया व कुछ अन्य रानियों ने मृत्यु के उपरान्त सतीत्व ग्रहण किया। (http://www.academia.edu//sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm)

विष्णु स्मृति में भी सति-प्रथा का पूरजोर समर्थन किया गया है। विष्णु स्मृति के मुताबिक औरत का यह कर्तव्य है कि वह ... पति के मरने के बाद अपने सतित्व की रक्षा

के लिये अपने पति की चिता पर चढ जाये। ब्रहस्पति स्मृति (25-11) में भी सति-प्रथा का पूरजोर समर्थन किया गया है। विष्णु स्मृति तथा ब्रहस्पति स्मृति पहली शताब्दी में लिखी गई है। रामायण में उत्तरकांड में सति प्रथा का उल्लेख है जिसमें कुशध्वज की बिबी सतिप्रथा का पालन करती है। रामायण का तेलगु रुपांतरण रंगनाथ रामायण जो 14 वी शताब्दी में लिखी गई के मुताबिक इंद्रजित की बिबी सुलोचना अपने पति की मौत के बाद उसकी चिता पर चढकर सति बन जाती है। महाभारत में पंडू की दूसरी बिबी माद्री भी सति हो जाती है।

ब्राह्मण-धर्म में क्षत्रियों की बिबियों व्दारा व्दारा सति प्रथा के पालन करने को गौरवपूर्ण काम करार दिया है जबकि ब्राह्मण स्त्रियों को ऐसा करने के लिये पदम पुराण में मना किया गया है। अगर कोई किसी ब्राह्मण स्त्री को सति जाने में मदद करता है तो उसे ब्रह्महत्या का दोषी करार दिया गया है।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ब्राह्मण-धर्म-समाज में सति-प्रथा का गौरव-गाण !

पराशर स्मृति सतिप्रथा का समर्थन और बढ़ावा देने हेतु इन उपलब्धियों की पुष्टि करता है, जिसमें ''पति के साथ सतीत्व करनेवाली स्त्रियों का स्वर्ग में स्वागत है और इतना ही नहीं वो स्वर्ग में साढ़े तीन करोड़ साल सारे सुख और विलास का आनन्द लेती हैं।'' सती को महासती कहकर सम्बोधित करना भी एक ऐसा कारण है, जो जनसामान्य में अपने आप को विशिष्टता प्रदान करता है। (http://www.academia.edu//sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm) पुराण इस बात को सूचित करते है कि पत्नि सति जाने के बाद अपने पति के साथ इतने सालों तक स्वर्ग में रहती है जितने किसी के सिर पर बाल होते है।(Garuda Purana 1.107.29) यह भी कहा गया है कि वह अपने पति के साथ स्वर्ग में 14 इंद्र के काल तक यानि कल्पों तक रहती है।(2.4.93) मान॰ प्रदीप कुमार मौर्य के अनुसार सती प्रथा को दृढ़ करने के लिए यह कहा गया कि पति ने चाहे ब्राह्मण की हत्या की हो चाहे कितना ही बडा पाप किया हो विधवा पत्नी अपने मृत पति के शव के साथ जलकर उसके सारे पापों का भुगतान कर देती है।(प्रदीप कुमार मौर्य, p.145) 17 वी शताब्दी के आखरी सालों में फ्रेंच प्रवासी फ्रँकोईस बर्निया (François Bernier) ने देखा कि एक 12 साल की लडकी को लाहौर में चिता पर रखा था। उसे बार बार समझाया जा रहा था कि उसके सति जाने से उसके परिवार की आने वाली सात पुश्ते तमाम रिश्तेदारों सहित सारे पापों से मुक्त हो जाएंगे और फिर उन्हे कभी अपवित्र स्त्री लिंग में जन्म नही लेना पडेगा। वह भय से कांप रही थी और जोर जोर से रो रही थी। बांधने के बाद ही उसे जीन्दा जलाया जा सका था। (http://www.deathreference.com/Widow-Burning - rituals, world, burial, body, funeral, life, customs, history, cause, time.htm)

मध्यकालीन साहित्यों में सतियों की पुरजोर प्रशंसा की गई है, उदाहरणस्वरूप-राठौर रतनसिंह की रानियाँ जब सती होकर स्वर्ग पहुँची तो उस समय आकाशवाणी हुई, ''महाराजा रतन सिंह ! बधाई, बधाई अग्निस्नान कर सतियाँ भी आ गई हैं।'' ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र तथा उपस्थित देव समूह ने देवांगनाओं से कहा ''महासतियों के स्वागत हेतु उनकी आगवानी करो, धवल, मंगल गीत गाते हुए पुष्प-वर्षा कर उनका स्वागत करो।'' तदनुसार ''सावित्री, पार्वती और लक्ष्मी उनकी आगवानी में प्रस्तुत हो गीत आदि से उनका अभिनन्दन करती हुई उन्हे सुन्दर स्वर्णमय महलों में ले गई, मांगलिक

गीत गाये गए और हर्षोल्लास हुआ। नया-नया स्नेह और भी बढ़ गया। शूरवीर रतनसिंह महलों में सतियों से जा मिला।'' उपर्युक्त उद्धरण तत्कालीन समाज में किस कदर प्रभाव डालती रही होगी, जिसमें आग द्वारा जलकर मरना 'अग्निस्नान' कहा गया है और मृत्योंपरान्त एक अविश्वसनीय वास्तविकताओं का वर्णन किया गया है। संभवतः यह उद्धरण किसी भी विधवा स्त्री या फिर कुंवारी ही क्यों न हो, को सतीत्व ग्रहण करने को प्रेरित करती रही होगी। इसी प्रकार की कई मनोगढ़ित घटनाओं का उल्लेख कर तत्कालीन समाज के कुछ साहित्यकार इस रूढ़ीवादी परम्परा को बढ़ावा दे रहे थे। मध्ययुगीन चारण कवियों ने सती होने वाली स्त्रियों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की एवं सती होने के प्रसंग को उन्होंने खुब उभारा, जैसे ''सती होने वाली स्त्री या स्त्रियों के दर्शन करने हेतु देवता भी अन्तरिक्ष में आ घिरते हैं, एवं उनका यशोगान करते हैं।'' इस प्रकार के आकर्षक वर्णनों से भी सती प्रथा के प्रसार को प्रोत्साहन मिलता रहा होगा। अरब यात्री इब्नेबतूता के यात्रा वृतान्त में उसने लिखवाया है, कि ''जब कोई विधवा अपने आप को जला डालती है, तो उसके घर वालों का सम्मान बढ़ जाता है, और वह पति भक्ति के लिए प्रसिद्ध हो जाती है।'' मध्य काल में सति स्मारकों का निर्माण तथा स्त्रियों के सतीत्व ग्रहण करने की गति तीव्र थी। याद को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए जिस तरह वीर स्मारक का निर्माण किया जाता था, ठीक इसी तरह का प्रभाव सती प्रथा को बढ़ावा देने में सती स्मारकों के निर्माण का रहा होगा। (http://www.academia.edu// sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm)

सति-प्रथा के समर्थक संगठन सति-प्रथा को प्रचारित करने के लिये आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करते है। रानी सति सर्व संघ ट्रस्ट ने पूरे भारत में सति के 105 मंदिर बनाये है। इस संगठन के अधिकांश सदस्य महाजन तथा मारवाडी है। इन सति मंदिरों में हर साल जत्राएं होती है। बनारस, उत्तर प्रदेश तथा ओरिसा के पुरी के मंदिरों के प्रमुखों ने सतिप्रथा न सिर्फ राजपूत संस्कृति का बल्कि यह हिन्दू धर्म-संस्कृति का संभ्रांत घटक घोषित किया है। उन्होने दावा किया कि ब्राह्मण-धर्म के ग्रंथ सतिप्रथा का पूरा पूरा समर्थन करते है। राजस्तान के देवराला के सतिस्थल को इन्होने तीर्थस्थल घोषित किया है जहां हजारों की तादाद में श्रध्दालूओं का तांता लगा रहता है। पार्किग स्थल, यातायात नियंत्रक, नियंत्रण टॉवर की व्यवस्था है। संपूर्ण क्षेत्र में आधुनिक स्पीकर लगाये गए है।

रुपकुंअर के सतिस्थल में सति जाने के 13 वे दिन आयोजित चुनरी महात्सव में तिन लाख लोगों ने जबकि रुपकुंअर को सति बनाने के विरोध में निकले पहले मोर्चे में मात्र 350 लोगों ने हिस्सा लिया था।(Oldenburg, 1994)। सति के समर्थन में निकाले गये मोर्चे में जयपूर में 70,000 लोगों ने भाग लिया था।(Major, 2006) सति-प्रथा विरोध ी मोर्चे से किसी भी अधिकारी ने मुलाकात नही की। कोई महिला अधिकारी भी उनसे मिलने बाहर नही आई। (Oldenburg, 1994) राजीव गांधी की केन्द्र सरकार ने भी चुप्पी साध ली। ओल्डनबर्ग के मुताबिक प्रशासन ने देवराला की घटना को अपना मूक समर्थन दिया हुआ था और सतिप्रथा समर्थक आम जनता के बीच सति का पूरे जोशोखरोश से महीमामंडन कर रहे थे। सतिप्रथा का महीमामंडन करना गैरकानूनी है यह जानने के बावजूद उसके गांव को लगभग 3 लाख लोगों ने भेंट दी।(Journal of Political Studies, Vol. 18, Issue 1, 141- 153 The Sati- a matter of high caste Hindus or a general Hindu Culture: A case study of Roop Kanwar. Syed Hussain Shaheed Soherwordi)

मीडिया की खबरों के मुताबिक रुपकुंअर के सति की घटना के बाद कई सभाएं, जलसे, उत्सव इ. के जरिये लोगों से धन इकट्ठा किया गया ताकि सति स्थान पर विशाल सति-मंदिर बनाया जा सके। आरोपों के मुताबिक 28 अक्तूबर 1987 को जयपुर में धर्म रक्षा समिति के संरक्षण में एक रैली निकालकर रुपकुंअर व्दारा सति जाने की प्रसंशा में नारे लगाये गए। उच्च न्यायालय व्दारा वहां चुनरी समारोह पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद वहां चुनरी समारोह मनाया गया।(http://www.allempires.com/The Hindu tradition of Sati - History Forum ~ All Empires - Page 1.htm) सति धर्म रक्षा समिति का संचालन राजपूत समुदाय के शिक्षित लोग कर रहे है और उनका दावा है कि सति उनकी परंपरा का मूलभूत हिस्सा है। सतिप्रथा को कानूनी मान्यता न देना राजपूतों को दरकिनार करने का जानबूझकर की जाने वाली कोशिश है।

सति बनने के लिये ब्राह्मणवाद-ग्रसित धर्म-समाज के विभिन्न दबाब !

ब्राह्मण धर्म-समाज में स्त्री की लैंगिकता का बहुत ज्यादा खौफ है। ब्राह्मण ध र्म के मंदिरों में लैंगिक विकृत संबंधों के जो शिल्प मुर्तियां इ. बनाई गई है इससे इस लैंगिकता की तीव्रता को समझा जा सकता है। राम मोहन रॉय ने भी अंग्रेजों को बताया था कि ब्राह्मण धर्म-समाज विधवाओं के लैंगिक रुप से भटकने के प्रति कितना ज्यादा खौफजदा रहता था।(Sati: From exotic custom to relativist controversy by Francis Jarman (University of Hildesheim) CultureScan Volume 2, No. 5, December 2002) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक सति-प्रथा, विधवावस्था तथा बच्चियों के विवाह का मकसद महिलाओं की अतिरिक्त तादाद से निपटना था। (http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) यह धार्मिक विश्वास था कि विध वा के सति होने से उसके पिता तथा पति के परिवार के अगले-पिछले जन्मों के सारे पाप धुल जायेंगे। उसके पिता तथा पति का परिवार मरने के बाद अगले 35 मिलियन वर्ष तक स्वर्ग में रहेगा। इन धार्मिक प्रलोभनों से पिता का तथा पति दोनों परिवार विध वा को सती बनाने के लिये हर संबंध दबाव बनाते थे। इसलिये रुपकुंवर के संदेहास्पद हालत में सति जाने को उसके माता-पिता ने नजरंदाज कर दिया। उनका घर देवराला से मात्र दो घंटे की दूरी पर था। फिर भी उन्हे उसके सति जाने की खबर तक नही दी गई थी। आरोपों के मुताबिक रुपकुंवर को गहरा नशा कराकर जबरन जलाया गया था।

सति जाने का एक कारण राजपूतों को युध्द में पराजय की हालत में अपनी महिलाओं की इज्जत लूटी जाने का डर था। जब भी लडाई का नतिजा खिलाफ जाता था तो रात को स्त्रियों तथा बच्चों को सामुहिक रुप से जलाया जाता था। इसे जोहार कहा जाता था। राजपूत औरतों को दूल्हन की तरह सजाकर अपने बच्चों के साथ आकर अग्निप्रवेश कराया जाता था। ब्राह्मण पंडित वेदिक मंत्रोच्चार करते हुए जोहार विधि को अंजाम देता था।(http://www.facebook.com/SAKA & JAUHAR (SATI) TRADITION _ Facebook.htm) जाहिर है कि गहनों से लदी इन औरतों की चिता से ब्राह्मण पंडित को भारी मात्रा में पिघला हुआ सोना चांदी हासिल होता था। सति विधि को अंजाम देने वाले पंडीत को भारी फीस भी प्राप्त होती थी। प्रा. मा. म. देशमुख के मुताबिक विधवा स्त्री को सुहागिन की तरह पूरे गहनों के साथ सजाकर पति के साथ जलाया जाता था। बाद में चिता में से पिघला हुआ सोना चांदी ब्राह्मण पंडित इकट्ठा कर ले जाता था। इस तरह सति-प्रथा ब्राह्मण पंडित को मालामाल करती थी।

मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक जोहार सिर्फ राजस्तान में किया जाता था। अन्य जगहों में औरतों की इज्जत न लूटी जाये इसलिये उन्हे मार कर उनके स्तन और गुप्तांगों को विकृत किया जाता था ताकि दुश्मन की सेना मरी हुई स्त्रियों की इज्जत न लूट सके। यह मनु और कौटिल्य के बताये हुए नियमों के मुताबिक ही था।(Hammiramahakavya canto XIII) यह ब्राह्मण-धर्म के अंधकार युग (500 BC - 1000 AD) की मान्य धर्म समाज की प्रथा-परंपराओं के मुताबिक था इसलिये इन प्रथाओं को विधिसंम्मत अंजाम देने का काम ब्राह्मणों ने किया है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) अक्सर विधवाएं जबरन सति कराई जाती थी। परिवार का सम्मान बढ़ाने के लिए विधवा को जलाया जाता था। सति प्रथा के कारणों में परम्परायें, साहित्यकार, सामाजिक रूढ़ि वादिता, बाल विवाह, बहु विवाह, राजाओं के मध्य युद्ध इ. रहा होगा।इसका एक कारण धन भी था। दायभाग और मिताक्षरा कानून के अनुसार पुत्र के अभाव में मृत पति का सम्पूर्ण धन विधवा को मिलता है। विधवा को जबरन सति चढाकर रिश्तेदार उसके धन को हडप लेते थे। (http://www.academia.edu//sati tradition origin development and decline _ Sachin Tiwary - Academia.edu.htm) बंगाल में विधवाओं को पति की संपत्ति में दायभाग कानून के तहत दिया गया हिस्सा पति के रिश्तेदार उसे नही देना चाहते। इसलिये उसे सति चढाकर उसका हिस्सा हडप जाते है।(http://us.sulekha.com/Sati A tradition that refuses to die.htm) सतिप्रथा एक बहुत बडा व्यवसाय है। सति के परिवार को भारी प्रसिध्दी और सम्मान मिलता है। स्थानीय दूकानदारों की दूकानें चल पडती है। परिवहन कंपनियों को सतिस्थल के लिये ढेर सारे मुसाफिर मिल जाते है। सति स्थल पर चढाये जाने वाले चढावों से ब्राह्मण मालामाल होते है। सति संबंधी वस्तूओं तथा तस्वीरों की भारी बिक्री होती है। वार्षिक जत्रा होती है। मंदिर खडा किया जाता है। चंदा वसूला जाता है। देवराला में 70 लाख रुपये इकट्ठा किये गए थे। ओम कुंवर के स्थल को भी प्रसिध्द तीर्थस्थल में बदला गया है। सति प्रथा को बढावा देने में कुछ समुदाय हमेशा ही आगे नजर आते है :- 1) राजपूत पूरुष इस बात के लिये दोषी है कि वे अपनी महिलाओं की बलि खुद होकर अपने हाथों से चढा रहे है और गौरवान्वित हो रहे है। 2) मारवाडी व्यवसायिक समुदाय सतिप्रथा को बढावा देने का दोषी है क्योंकि सति मंदिरों तथा तीर्थक्षेत्रों में उन्हे अपने व्यवसाय को बढाने का मौका मिलता है। 3) सति प्रथा को बढाने में {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय भी दोषी है। इस प्रथा से उन्हे भारी कमाई होती है। ब्राह्मण धर्म में जकडे लोगों में उनकी सर्वोच्चता अबाधित रहती है। सन् 1980 में नौजवान विधवा ओम कुंवर के साथ ऐसा ही हुआ था। ओम कुंवर की हत्या कर दी गई थी। इस हत्या को छुपाने के लिये उसे सति का रुप दिया गया था। (Sati: From exotic custom to relativist controversy by Francis Jarman (University of Hildesheim) CultureScan Volume 2, No. 5, December 2002) सी.एन.एन. (1996) समाचार संस्था के रिपोर्टस् के मुताबिक भारतीय पुलिस में हर साल दहेज के लिये बहुओं को मौत के घाट उतारे जाने के 2500 मामले हर साल दर्ज होते है। बहुओं को इसलिये मार डाला जाता है ताकि लडके की दोबारा शादी कर और भी दहेज हासिल किया जा सके। यह आंकडा स्पष्ट करने के लिये काफी है कि ब्राह्मण-धर्म समाज में बहुए दहेज के लिये कितनी प्रताडित की जाती होगी। जन्मते ही बच्ची को मार डाले जाने के मामले भी बडे विकराल और भयावह है।(Suttee - self-sacrifice or murder _ BBC History Magazine.htm)

ब्राह्मण-पंडित की मौजूदगी में विधवाओं को जबरन सति बनाया जाता था !

सति मामलों में सामाजिक दबाव इतना ज्यादा होता था कि विधवा के सामने सति जाने के सिवा कोई दूसरा रास्ता ही नही होता था। छह सति के मामलों से स्पष्ट होता है कि :- 1) विधवा को भांग तथा अफीम के नशे में लगभग अर्धमुर्छा की अवस्था में लाया जाता था। 2) इसके बाद उसे मोटी लकडी के साथ बांध दिया जाता था ताकि वह भाग ना सके। 3) आग लगाते ही लोग सति के नाम का जयघोष करते और धार्मिक नारे लगाते थे। ढोल ताशों के शोर में उसकी चीखों की आवाज को दबा दिया जाता था।(http://us.sulekha.com/Sati A tradition that refuses to die.htm) कुछ मामलों में परिवार के सदस्य विधवा को नशे में धूत बना कर चिता की आग में धकेल देते थे।(http://curioustendency.blogspot.in/Sati - real love or forced suicide _ Curious Tendency.htm#.UW4X7jebXg0) नेपाल की महारानी राज राजेश्वरी देवी को जबरन सति बनाया गया था।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) जुल्स वर्ने (1873; Oldenburg, 1994; Fisch, 2005) के मुताबिक अक्सर ही विधवाओं को जबरन सति बनाया जाता है।

भारत में औरतों को कोई महत्व नही दिया जाता था। जब सतिप्रथा के समर्थक यह दलील पेश करते है कि वह अपनी खुशी से सति गई है तो यह सवाल पैदा होता है कि स्त्री अपने पति को नही चुन सकती, अपनी मर्जी की शिक्षा या व्यवसाय नही चून सकती तो उसे यह स्वतंत्रता कैसे हासिल हुई कि वह जियेगी या मरेगी ? (Journal of Political Studies, Vol. 18, Issue 1, 141- 153 The Sati- a matter of high caste Hindus or a general Hindu Culture: A case study of Roop Kanwar. Syed Hussain Shaheed Soherwordi) सति की घटना को हत्या के रुप में देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह {ब्राह्मण पूजारी के नेतृत्व में} पूरे {ब्राह्मणवाद-ग्रसीत धर्म} समाज व्दारा की गई स्त्री-हत्या है क्योंकि वे हजारों की तादाद में सति-स्थल में उपस्थित रहकर यह सब देख-सून रहे थे।(http://www.deathreference.com/Widow-Burning - rituals, world, burial, body, funeral, life, customs, history, cause, time.htm)

स्वतंत्र भारत में सति के मामले मुख्यतः राजस्तान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार में हुए है। जुलाई 1979 में उ.प्र. के बांदा जिले में जावित्री तिवारी नामक ब्राह्मण महिला सति हुई। इसके बाद सोना कंवर नामक 62 साल की महिला को राजस्तान के नागौर जिले में सति बनाया गया। उसके चित्र इलुस्ट्रेटेड विकली नामक पत्रिका में छपे। तिसरी घटना राजस्तान के सिकर जिले में, चौथी घटना 20 साल की वैजंती की थी। इसके बाद म. प्र. की 65 वर्षीय कुट्टी बाई को सति बनाया गया। रुपकुंवर के मामले ने दुनियां भर में प्रसिध्दी हासिल की। किसी भी घटना को रोका नही जा सका। कोई रोकने की कोशिश करता तो धार्मिक भीड उसे भी मार डालती। म.प्र. की कुट्टीबाई को सति बनाये जाने से रोकने की कोशिश करने वाले दो पुलिसवालों को भीड ने लगभग मार डाला था। भीड ने पत्थर मार कर उनका पीछा कर उनको भगा दिया था। म. प्र. के जबलपुर में यह खबर फैला दी गई कि 54 वर्षीय बेतोला बाई सति होने वाली है। बडे सबेरे से ही हजारों धर्माध लोगों की भीड यह नजारा देखने के लिये उनके गांव में इकट्ठी होनी शुरु हुई। सति की तैयारियां पूरी होने के पहले ही बेतोला बाई के चार बेटों ने जो बाहर रहते थे आकर अपनी मां को बचाने में कामयाबी हासिल की। बंगाल प्रेसिडेन्सी के रिकार्ड के मुताबिक 1815 से 1828 के बीच 8134 औरतें सति बनाई गई। राजस्तान के सिकर जिले के देवराला गांव के उसके पति माल सिंह शेखावत की मौत

होने पर 4 सितंबर 1987 को 17 वर्षीय रुप कंवर को सति बनाया गया।

मुस्लिम व अंग्रेज शासकों व्दारा सतिप्रथा रोकने की कोशिशें !

मुस्लिम शासक ब्राह्मण धर्म के सामाजिक मामलों में कभी दखल नही देते थे। लेकिन ब्राह्मण धर्म की हैवानी सतिप्रथा उनसे नही देखी गई। उन्होने इसे रोकने की पूरजोर कोशिश की। 14 वी शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के सुल्तान मुहम्मद तुगलक ने इस प्रथा को रोकने की कोशिश की।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) मुगल सम्राट हुमायूं (1508-1556) ने सतिप्रथा के खिलाफ सरकारी आदेश जारी किया। ब्राह्मणों ने उनके आदेश का पूरजोर विरोध किया। सम्राट अकबर ने भी सतिप्रथा के खिलाफ आदेश जारी करते हुए कहा कि पुलिस प्रमुख के लिखित आदेश के बिना कोई भी स्त्री सति नही हो सकती। पुलिस प्रमुखों को आदेश दिये गये थे कि मामले को ज्यादा से ज्यादा लंबित करें। सति जाने की इच्छुक औरतों को पेन्शन, तथा उसका पूर्नवसन करने संबंधी सहायता का भी प्रस्ताव किया गया। मुगलों ने अपने आदेशों पर कडाई से पालन किया। कई बच्चियों को सति होने से रोका। शाहजहां के काल में टार्वेनियर (Tavernier) ने लिखा है कि विधवाओं को बच्चों सहित सति जाने की कभी भी इजाजत नही दी गई। गवर्नर आसानी से सति होने की इजाजत नही देते थे, हालांकि घूस देकर ऐसा होता था। सम्राट औरंगजेब सबसे ज्यादा सख्त थे। सन् 1663 के दिसंबर में उन्होने आदेश जारी किया कि मुगल राज्य क्षेत्र में कोई भी अधिकारी सति होने की किसी को इजाजत नही देगा। युरोपियन प्रवासियों ने अपने वृतांतों में लिखा है कि औरंगजेब के शासन के अंत तक सति प्रथा लगभग समाप्त हुई या कभी कभार ही होती थी। इसका अपवाद सिर्फ हिन्दू राजाओं की पत्नियां थी। मुस्लिम बहुल सिंध प्रांत जो तथा मुस्लिम शासन में सति का प्रमाण न के बराबर था।(Moon: 577) इस्लाम में सति प्रथा का कोई अस्तित्व नही है।

सन् 1515 में हुक्मरान पुतुर्गिजों ने गोवा में सतिप्रथा पर पूरी तरह से पाबंदी लागू की। भारत के डच तथा फ्रेंच शासकों ने भी सतिप्रथा को चिनसुराह और पांडेचेरी में प्रतिबंधित कर दिया। अंग्रेज जो भारत के अधिकांश हिस्से पर राज्य कर रहे थे ने 19 वी शताब्दी तक ब्राह्मणों के विरोध के चलते सति प्रथा के खिलाफ कुछ नही किया। 18 वी शताब्दी के अंत में ब्रिटेन की चर्चो ने तथा भारत में उनके सदस्यों ने सतिप्रथा के खिलाफ मुहिम छेड दी। मुहिम के नेता विलियम केरे तथा विलियम विल्बरफोर्स (William Carey and William Wilberforce) थे। वे मानवीय भावनाओं से प्रेरित थे। उनकी मंशा भारत के लोगों को ईसाई धर्म का परिचय कराने की भी थी। इनके मुहिम की बदौलत सतिप्रथा पर पाबंदी लगाने का दबाव बढा। ब्रिटीश सुप्रिम कोर्ट के सदस्यों तथा धर्म संबंधी सलाहकारों की बातचीत हुई। सन् 1813 में यह तय किया गया कि ब्राह्मणों के धार्मिक मामलों में दखलंदाजी नही की जाये सिर्फ इन घटनाओं पर नजर रखी जाये। सन् 1829 में सतिप्रथा पर पाबंदी का कानून पारित किया गया। अंग्रेजों में इतना साहस नही था कि वे इसे बंद कर देते। अंग्रेजों को डर था कि ब्राह्मणों का रोष उनकी सत्ता के लिये भारी पडेगा। इसलिये सति प्रथा चलती रही। 20 अप्रैल 1813 के आदेश में स्वखुशी से सति होना मान्य किया गया। सति की घटनाओं में सन् 1815 से 1818 के दौरान जबर्दस्त बढौतरी (378 से 839) हुई क्योंकि अंग्रेज सरकार ने सतिप्रथा को मान्य किया था। धीरे धीरे यह तादाद कम होकर 500 से 600 के बीच स्थिर हुई।(Suttee - self-sacrifice or murder _ BBC History Magazine.htm)

लार्ड विलियम बेंटींग ने बंगाल का गवर्नर नियुक्त होने के बाद 4 दिसंबर 1836 में सत्रहवा सति कानून जारी किया। इस कानून के तहत सति प्रथा पर पूरी तरह से पाबंदी थी और ऐसा करने वालों को दंडीत करने की व्यवस्था थी।(C. A. Bayly, General Editor, The Raj: India and the British 1600-1947. London: National Portrait Gallery Publications 1990) स्थानीय जमींदार, छोटे जमींदार, स्थानीय प्रतिनिधि तथा कर वसूल करने वाले अधिकारियों को जिम्मेदार बनाया गया था कि वे स्थानीय पुलिस को फौरन सूचित करे अगर किसी को सति बनाया जा रहा है। जानबूझकर सूचना न देने वाले पर 200 रुपयों का जुर्माना तथा छह माह की कैद की व्यवस्था की गई थी।(Andrea Major, Sati: a Historical Anthology, Oxford University Press, 2007) आदेश जारी होने के पहले से ही ब्राह्मणों को इसकी खबर हो गई थी। तिन सौ कट्टर ब्राह्मणों ने लार्ड बेंटिक को सति प्रथा पर पाबंदी न लगाने का प्रार्थनापत्र दिया। यह दलील दी कि सति प्रथा न सिर्फ पवित्र धार्मिक कर्तव्य है बल्कि यह सतिप्रथा पर विश्वास करने वालों का धार्मिक अधिकार भी है। बेंटीक पर इसका कोई प्रभाव नही हुआ। तब कट्टर बंगाली ब्राह्मणों ने धर्म सभा कायम की। हायकोर्ट तथा इंग्लंड की प्रिवी काउंसिल में लडने के लिये विशाल राशी इकट्ठा की। सन् 1832 में इंग्लंड की प्रिवी काउंसिल में मामले को सुना गया। ब्राह्मणों ने दलील दी कि ब्रिटेन के राजा जार्ज तृतिय ने अपने 37 वे आदेश में ब्राह्मणों को आश्वत किया था कि वे उनके धार्मिक मामलों में दखलअंदाजी नही करेंगे। सति प्रथा पर पाबंदी लगाने वाले पक्ष का कहना था कि धर्म को मानवता और न्याय के सर्वोच्च सिधान्तों के खिलाफ नही जाना चाहिये। प्रिवी काउंसिल के सात में से 3 सदस्यों ने बेंटीक के सतिप्रथा प्रतिबंधक कानून के खिलाफ जबकि 4 लोगों ने इसके पक्ष में मत दिया और यह कानून मंजूर किया गया।(John Stratton Hawley, Sati, the Blessing and the Curse: The Burning of Wives in India, Oxford University Press US ,1994) इसतरह मात्र एक वोट के फर्क से अंग्रेजों ने सतिप्रथा पर पाबंदी मंजूर की। इससे अंग्रेजों के मन में ब्राह्मणों के प्रति खौफ का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसके बाद मद्रास तथा बाम्बे प्रांत ने भी सतिप्रथा को प्रतिबंधित करने के लिये अपने अपने कानून बनाये। धीरे धीरे जो स्थानीय राज्य अंग्रेजों के अधीन हुए वहां भी इन कानूनों को लागू किया गया। जयपूर के शासकों ने इसपर 1846 में पाबंदी आयद की। (Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html) नेपाल में सतिप्रथा बीसवी शताब्दी में भी जारी रही। इंडोनेशिया के व्दीप बाली में इसे मसात्या (masatya) प्रथा कहा जाता है। सन् 1905 तक राजपरिवारों में इस प्रथा का पालन किया जाता था। बाद में डच शासकों ने इस प्रथा पर पाबंदी लागू कर दी।

ब्राह्मणवादी सरकारों का सतिप्रथा के खिलाफ ढूलमूल रवैया !

देवराला में रुपकुंवर को सति बनाये जाने के खिलाफ उभरे व्यापक नैतिक दबाव में केंन्द्र सरकार ने दि. 1 अक्तूबर 1987 को 'राजस्तान सति प्रतिबंधक कानून 1987' पारीत किया। कमीशन ऑफ सति प्रिवेंशन कानून 1987 भी पारीत किया गया। सतिप्रथा का पालन करना, उसमें मदद करना, जबरन सति बनाना तथा सतिप्रथा को महीमामंडीत करना अपराध माना गया। सति को महीमामंडित करने पर 1 से 7 साल की सजा है। इन कानूनों को मजबूत करने के लिये नॅशनल काउंसिल फॉर वूमेन ने कुछ सुझाव दिये। सति मंदिरों में पूजा इ. पर पाबंदी लगाने की मांग की।(http://en.wikipedia.org/Sati (practice) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सति प्रतिबंधक कानून बनाने के बाद बीस वर्ष बीत चुके है लेकिन इस कानून को मजबूत बनाने के कोशिशों को भारत की केन्द्र सरकार ने त्याग दिया है। (The Times of India, April 23, 2008) सरकार के कॅबिनेट मंत्रिमंडल के कुछ सदस्यों ने इस कानून के कई प्रावधानों पर आपत्ति की। कई कॅबिनेट सदस्यों ने इस कानून को सशक्त बनाने के प्रावधानों का विरोध किया जिसमें कहा गया था कि सति के लिये मजबूर करने वाले के अपराध को गैरजमानती अपराध माना जाये। सत्तापक्ष तथा विपक्ष के कई नेता इस कानून को मजबूत बनाने के विरोधी थे। कई राज्यों के नेता सख्त कानून के खिलाफ राजनीतिक मुहिम चला रहे थे। युपीए सरकार के एक मंत्री ने इस कानून को सख्त बनाने का विरोध किया। राजस्तान का झुंझुनु उसका चुनावी क्षेत्र है और रानी सति मंदिर के लिये प्रसिध्द है। इसे पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनाया गया है। यहां रोज हजारों लोग आते है। यह उसके निर्वाचन क्षेत्र का एक आर्थिक केन्द्र है। किसी भी सभ्य समाज में सति प्रथा को हत्या करार दिया जायेगा। आश्चर्य की बात है कि राज्य सरकारें तथा केन्द्र सरकार सति-प्रथा तथा दहेज प्रथा के खिलाफ कोई कारगर कदम नही उठा सकी है। विधवाओं को प्रतिडित करने वालों ने धर्म को अपना हथियार बनाया हुआ है।(Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html)

महिलाओं को न्याय और अधिकार देने का शुरु से ही विरोध किया गया। हिन्दू कोड बिल के तहत ब्राह्मण धर्म की महिलाओं को परिवार की संपत्ति में हिस्सेदारी मिलने का संघपरिवार तथा सभी ब्राह्मणवादी नेताओं ने पूरजोर विरोध किया और दलील दी थी कि यह कदम ब्राह्मण धर्म-संस्कृति के खिलाफ है। बिल पास न होते देख डॉ. अम्बेडकर ने विरोध में कानूनमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था।(http://www.countercurrents.org/ Manu Reloaded ! Brahminism Yesterday, Hindutva Today By Subhash Gatade.htm)

रुप कुंवर के सति के मामले में सोलह साल बाद 31 जनवरी 2004 को विशेष न्यायालय ने सबूतों के अभाव में सभी 11 लोगों को बरी कर दिया। इनमें भारतीय जनता पार्टी के विधायक तथा राज्य बिजेपी के उपाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह राठौर भी शामिल है। कुल 16 लोगों पर मामला दायर किया गया था। इनमें से पांच की बाद में मौत हो गई। इन लोगों पर सति प्रथा को महीमामंडित करने और सतिप्रथा में मदद करने के आरोप थे। बरी किये गये इन 11 लोगों में युवा मोर्चा का अध्यक्ष प्रताप सिंह खाच्रीयावास (Pratap Singh Khachriyawas) भी है जो भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत का भतिजा है। इनमें राजपूत महासभा का नरेन्द्र सिंह राजावत है। (Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html) कई पुलिस अफसरों ने मुकदमें के दौरान अपने बयान बदले। अतिरिक्त जिला तथा सेशन न्यायाधीश ने सरकारी चिकित्सक मागान सिंह को भी रिहा किया। आरोप था कि उसने धोखाधडी करते हुए सुमेर सिंह को अजीतगढ के जिला अस्पताल में भर्ति हुआ बताया था जिस वक्त सति की घटना हुई।(The Pioneer, "Sati Killers acquitted", dated 13-10-1996) स्पष्ट प्रमाण होने के बावजूद उन्हे रिहा किया जाना सति कानून की सफलता पर सवाल खडे करता है। ट्रायल कोर्ट ने इस मामले में 9 साल लगाये। जबकि कानून के Section 12 (3) के मुताबिक बहुत जल्दी फैसला होना लाजमी था। यह कानून इसे जाने बिना कि विधवा सामाजिक परिवेश तथा दबावों की शिकार होती है उसे आत्महत्या करने वाली अपराधी करार दिया गया है। एक हजार से ज्यादा लोगों ने राजस्तान के झुंझुनु में बने रुप

कुंवर सति मंदिर में मुख्य उत्सव में भाग लिया था जो 1987 में पारित कानून के खिलाफ था। इसके मुताबिक सतिप्रथा को महीमामंडित करने पर 1 से 7 साल तक की सजा हो सकती है। कोर्ट ने इस नौ दिनों के उत्सव पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने इतना ही कहा कि समारोह में सति शब्द का उल्लेख न हो और उत्सव मंदिर के बाहर हो। लोगों ने आदेश का उल्लंघन किया। (Muku; Sharma,1997, Vikas Publication N.Delhi p32; Ahmad, ,,Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html)

ब्राह्मण धर्म समाज के तहत विधवा स्त्री की अंतिम नियति !

कथित संभ्रांत, भद्र बंगाली परिवारों की 16,000 से ज्यादा विधवाएं ब्राह्मण धर्म के मथुरा, वृंदावन, वाराणसी इ. तीर्थ स्थलों में लावारीस जीवन जी रही है। इन ध र्मस्थलों में विधवाओं को जबरन भेजना अंग्रेजों के काल से ही शुरु हो चुका था जो आज तक जारी है। इन विधवाओं में बच्चियों से लेकर बूढी सभी उम्र की विधवाएं है। महिला संगठनों का आरोप है कि पति की मौत के बाद उसके पुरुष रिश्तेदार उन्हे घर से जबरन निकाल देते है ताकि विधवा की संपत्ति पर कब्जा कर सके। उसके खुद के बहु-बेटे उन्हे बोझ मानकर घर में नही रखना चाहते। वे बहाना गढते है कि वह इन तीर्थस्थलों में अपना अंतिम समय बिताना चाहती थी। कौन विधवा इन तीर्थस्थलों पर बिना किसी सहारे रास्तों पर रहना पसंद करेगी ? युवा विधवाएं वेश्यालयों में धकेल दी जाती है। बुढी विधवायें भीख मांगकर अपनी मौत का इन्तेजार करती है।

वृंदावन में घर से त्याग दी गई हजारों खस्ताहाल विधवाओं में से कई भीख मांगती नजर आती है तो कई वेश्यावृत्ति में लिप्त नजर आती है। कई मंदिरों में आठ घंटे भजन गाने के एवज में मुट्ठीभर दाल-चावल अर्जित करती है।(Ahmad, ,,Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html) वृंदावन में आठ से दस हजार विधवाएं है। कई विधवाओं को जिन संस्थाओं ने अपने कथित विधवा केन्द्रों में आश्रय दिया हुआ है उनमें से अधिकतर विधवाओं के नाम पर सरकारी अनुदान तथा लोगों से चंदा उगाहकर नोट बटोरने का काम करती है। इन केन्द्रों में विधवाओं की हालत बेहद दयनीय है। कई विध वाओं की उम्र मात्र दस वर्ष होती है जीन्हे इन आश्रमों के व्यवस्थापक वेश्यालयों या किसी धनी को रखैल के रुप में बेच देते है। अकेले वाराणसी में बीस से साठ हजार विध वाएं ऐसी दयनीय हालत में रहती है। कई उत्तर भारतीय भाषाओं में विधवाओं के लिये रांड शब्द का इस्तेमाल होता है। रांड शब्द का मतलब वेश्या होता है। यानि विधवाएं वेश्याओं के समकक्ष रखी गई है।(Jamanadas, Devadasis; Sati: From exotic custom to relativist controversy by Francis Jarman (University of Hildesheim) CultureScan Volume 2, No. 5, December 2002) अमलन चौधरी के अनुसार तीन लाख पचास हजार विधवाएं वाराणसी, काशी, मथुरा इ॰ धर्म स्थलों में गरिबी, बीमारी और यौन उत्पीड़न की शिकार है। उन्हे या तो पंडों की रखैलों या वेश्याओं के रुप में अपना जीवन गुजारना पड रहा है। इन विधवाओं की इतनी बुरी हालत है कि पुलिस, कर्मचारी, नेता कोई भी इनपर बलात्कार करता है। इनकी कोई सुनवाई नही होती। टि.बी, कँन्सर इ॰ बिमारियों से लगभग 7000 विधवाएं हर साल दम तोड देती है। उनके शवों को कार्पोरेशन के कर्मचारी लावारिस शवों की तरह ठिकाने लगाते है। उनका कोई अंतिम संस्कार नही

किया जाता। इन विधवाओं में 70% से अधिक विधवाएं उच्च ब्राम्हण-बनिया समाज से होती है। इनमें से 59% धनी और 'कथित' संभ्रांत परिवारों से होती है। इन्हे उन्ही के ''सुसंस्कृत'' रिश्तेदारों ने यहां छोडा है ताकि वे इन विधवाओं की पारिवारिक संपत्ति को हडप सके। दीपा मेहता ने अपनी फिल्म ''वाटर'' में इन्ही विधवाओं की समस्या की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की थी लेकिन विश्व हिन्दु परिषद, बजरंग दल इ॰ संघ परिवार के ब्राह्मणवादी संगठनों ने गुंडागर्दी करके इस फिल्म की शुटिंग नही होने दी। भारत में कही भी शुटिंग होने पर बुरे परिणामों को भुगतने की धमकी दी।

विधवाओं की समस्या का हल क्या है ?

विधवाओं की पूरानी मांग है कि उनकी अपनी रहने की स्वतंत्र जगह होनी चाहिये। चाहे वह जगह पिता के घर में हो या पति के। खेत, कुएं, पानी तथा खेती के साहित्य पर उसका भी स्पष्ट अधिकार हो। परिवार की मिल्कियत के साधनों में उसकी हिस्सेदारी हो तो वे आत्मनिर्भर बन सकती है। राज्य सरकारें तथा केन्द्र सरकार सुनिश्चित करें कि उनके कानूनी अधिकार उन्हे वास्तव में हासिल हो सके। तभी उनके खिलाफ अत्याचार नही हो पाएंगे। स्त्रियों में शिक्षा का होना भी जरुरी है। उन्हे उनके अधिकारों की जानकारी होनी चाहिये। ये अधिकार दिलाने पर ही इन अत्याचारों को रोका जा सकेगा।(Ahmad, „Sati Tradition - Widow Burning in India: A Socio-legal Examination , [2009] 2 Web JCLI http://webjcli.ncl.ac.uk/2009/issue2/ahmad2.html)

यह सबसे बडी जरुरत है कि ब्राह्मण-धर्म के महिला-विरोधी चरित्र को लोगों के बीच बेनकाब कर ब्राह्मण-धर्म की तमाम गैरकानूनी प्रथा-परंपराओं तथा इन कुप्रथाओं को उकसाने वाले धर्मग्रंथों पर सख्ती से पाबंदी लागू की जाये।

ब्राह्मण-नेतृत्व के महिला संगठनों का ढोंग-पाखंड !

मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक भारतीय महिलाओं की दुर्दशा की असली वजह वेदिक ब्राह्मण धर्म के कानून है जिसे संयुक्त रुप से ब्राह्मणवाद के नाम से जाना जाता है। हिटलर व्दारा यहूदियों का या दक्षिण अफ्रिका के वंशवादी गोरों ने किया काले लोगों के जनसंहार को सबसे बडा माना जाता है। लेकिन मानव इतिहास का सबसे बडा जनसंहार ब्राह्मणों व्दारा औरतों को धर्म के नाम पर किया हुआ स्त्रीसंहार है। इस स्त्रीसंहार को अंजाम देने का काम ब्राह्मणों की हजारों सालों की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रूरता के दौरान हुआ है। आधुनिक युग में भी ब्राह्मणों व्दारा लादे गये कानूनों की वजह से इतने लोग मारे जा रहे है जितने लोग हिटलर व्दारा व्दितीय विश्वयुध्द में मारे नही गये। (Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

इसाई धर्म का इतिहास बताता है कि असंख्य स्त्रियाँ बेवजह मार डाली गई। अरब देशों में इस्लाम आने के पहले बच्चे जनने का समय आता तो गर्भवती स्त्री को वे उसे एक गढडे के पास ले जाते। लडकी हुई तो उसे उसी गढडे में जीन्दा दफना देते थे। स्त्रियों को कोई अधिकार नही थे उन्हे गुलामों की तरह रखा जाता था।(p.18,21-23 Rasheed Ibrahim Khanpuri, Islam & Women;s Honour) ब्राह्मण-धर्म, ईसाई तथा यहूदी धर्म ने महिलाओं पर हैवानियत की सारी सीमाएं पार कर जूल्म ढाये। स्त्रियों को नर्क का व्दार कहने वाले भेदभाव और विषमता कायम करने वाले ब्राम्हण-धर्म के सारे

धर्मग्रंथों को नष्ट कर दिया जाये तभी इस देश में नारी की सच्ची आजादी की और सच्ची राष्ट्रीय एकात्मकता की बात सोची जा सकती है। समान नागरिकता कानून की दूहाई देने वाले ब्राह्मणवादी महिला संगठन बहुजन समाज की बहू-बेटियों की बजाय अपनी बहु-बेटियों को मंदिरों में देवदासी, जोगीनें बनाकर उन से वेश्या व्यवसाय क्यों नही कराते ? तब समान नागरिक कानून कहाँ चला जाता है ? राजस्थान में कई गांव ऐसे क्यों है जहाँ जन्म लेते ही मार दिये जाने के कारण उन गांवों में कन्यायें है ही नही इसलिए वहाँ सदियों से कभी किसी दुल्हे की बारात ही नही आयी ? इनके खिलाफ ब्राह्मणवादी क्यों कुछ नही करते ? तामिलनाडु में मातायें अपनी नवजात बेटियों को सरकार के हवाले करने पर क्यों मजबूर है ? कानून के खिलाफ जाकर सती प्रथा को गौरवशाली बताकर सती मंदिर बनाने के प्रयास क्यों किये जाते रहे है ? देश के 300 सती मंदिरों को राष्ट्रीय स्मारक बनाने की मांग ब्राह्मणवादियों व्दारा क्यों की जाती है ? विधवाओं को ब्राह्मण-धर्म के तीर्थस्थलों में लावारिस क्यों छोड दिया जाता है ? दीपा मेहता को इन परित्याग की गई विधवाओं की समस्याओं पर ''वाटर'' नामक फिल्म बनाने से क्यों रोका गया है ? किसी ब्राह्मणवादी महिला संगठन के पास इसका जवाब नही है।

मुस्लिम महिलाओं की बुनियादी जरुरत उनके परिवार का अपने पैर पर खडे होना है। मुस्लिम महिलाओं को उनकी जनसंख्या के अनुसार भागीदारी हासिल कराना उनके विकास का मार्ग है, लेकिन मुस्लिम महिलायें तो दूर ब्राह्मणवादी जिन्हे अपने धर्म का कहते है, 33% महिला आरक्षण में, उन ओबीसी, दलित आदिवासी महिलाओं का आरक्षण बेशर्मी से नकारकर सारे पद ब्राह्मण-बनियें अपनी महिलाओं के लिए सुरक्षित करना चाहते है। ब्राह्मणवादियों की शिक्षित स्त्रियाँ, हिन्दु-मुस्लिम समाज के बीच घृणा फैलाने में जुटी है। एक तथाकथित 'मुक्त' ब्राह्मणवादी प्राध्यापिका ने अपने भाषण में मुस्लिम स्त्रियों की हालत पर घडीयाली आँसु बहाये। भाषण के अंत में जब उससे सवाल करने की कोशिश की गई तो वह भाग खडी हुई। उसने जवाब नही दिया कि उसके सामने ''मुक्त स्त्री'' का कैसा आदर्श है ? वह मनु व्दारा बताई गई स्त्री के आदर्श को मानती है या पश्चिम के देशों की स्त्री का आदर्श उसके सामने है ? स्त्री-पुरुषों को परस्पर पुरक समझकर परिवार में पति-पत्नी के बीच विश्वास बढाने की बजाय उन्हे एक दूसरे के विरोधी बताकर उनके परिवारों में जहर क्यों घोला जा रहा है ? स्त्री-मुक्ति के नाम पर बहुजन परिवारों का शांती-संतुलन नष्ट कर के क्या वे यह सुनिश्चित नही कर रही है कि मूलनिवासी बहुजन परिवार विदेशी आर्य-ब्राह्मण परिवारों के आगे कभी न बढ सके ? वे इसे क्यों छुपा रही है की बहुजन स्त्रियों की सारी समस्यायें मनुवादी शोषण-व्यवस्था की देन है।

गरीब बहुजन स्त्रियों की मूलभुत समस्यायें है ब्राह्मणवादी मालिकों, ठेकेदारों व्दारा किया जाने वाला उनके श्रम का और शरीर तक का शोषण। उनकी समस्या है कि वे अपनी दो जून की रोटी ''इज्जत'' से कैसे कमाये ? उनकी समस्या है कि वे अपने बच्चों को कैसे पढाये ? अगर वो पढ भी ले तो नौकरी या रोजगार कैसे हासिल किया जाए ? उनकी कुछ समस्याये ऐसी है जिनको वे भुगत तो रही है लेकिन समझ नही पा रही है जैसे :- ब्राम्हणवादी साजिश के तहत बेची जा रही शराब जैसी नशीली चीजों के दुष्परिणामों से अपने परिवार के सदस्यों को कैसे बचाये ? आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रुप से कमजोर करने वाली ''ब्राह्मण-धर्म'' की कुप्रथाओं के भँवर जाल से उनका परिवार बाहर कैसा निकले ? धार्मिक शोषण से कैसे बचे जिनके परिणाम दंगों के रुप में आते है और उनके पति और बच्चों को खा जाते है। स्त्रियों की सारी समस्याओं का

ताल्लुक मनुवादी शोषण-व्यवस्था से है। बहुजन स्त्रियों की बाकी समस्यायें जिनका स्त्री-पुरुष समानता असमानता से संबंध है उनकी जड भी मनुवाद में ही है। मनुस्मृति ने ही स्त्रियों को ''ताडन का अधिकारी'' बताया है। इन समस्याओं को सुलझाने का तरिका यही है कि स्त्री-पुरुषों को आर्थिक रुप से सक्षम और शिक्षित बनाकर उनमें समानता पर आधारित जीवन मूल्यों को विकसित करना। जो सिर्फ बौध्द धम्म और इस्लाम में मुमकिन है। मनुवाद के होते हुए बहुजनों के जीवन में समता मूल्यों के फुलों का खिलना नामुमकिन है। इसके बावजूद ये ब्राह्मणवादी ''मुक्त-महिलायें'' ब्राह्मण-धर्म ग्रंथों की जहरीली शिक्षा के खिलाफ आन्दोलन चलाना तो दूर उल्टे इस अमानवीय ''मनु-संस्कृति'' के गुण इसलिए गा रही है क्योंकि ब्राह्मणवादी मुक्त स्त्रियाँ ''चाहे जैसे भी'' हो आर. एस.एस. के ओबीसी, दलित, मुस्लिम विरोधी मनुवादी एजेंडे को लागू करना चाहती है।

मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक इस ब्राह्मणवादी स्त्रीसंहार को रोकने के लिये भारतीय महिलाओं ने अपने अपने प्रांतों की हालातों के मुताबिक उन सभी ब्राह्मणवाद विरोधी ताकतों से हाथ मिलाने चाहिये जो सचमुच ब्राह्मणवाद के खिलाफ लडना चाहती है।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में बौध्दों तथा जैनों का बर्बर दमन-उत्पिडन !

[Information for this chapter is synthesized from the following sources : Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy Sri Lanka; Aspects of Buddhism in Indian History By L. M. Joshi, Ph.D. Reader in Buddhist Studies Punjabi University, Patiala Buddhist Publication Society Kandy , Sri lanka ; Bhagwan Das http://www.frontlineonnet.com/fl2726/st ... 610800.htm; Were Buddhists persecuted by Hindus? Written by Mushafiq Sultan on 13 December 2012http://www.islamhinduism.com/Were Buddhists persecuted by Hindus - Islam and Hinduism Initiative.htm; The History of Persecution of the Buddhist Faith Korean Minjok Leadership Academy International Program Son, Bo KyungTerm Paper, Medieval History Class, June 2011http://www.zum.de/whkmla/WHKMLA The History of Persecution of the Buddhist Faith.htm; TECHNIQUES IN CAUSING FALL OF BUDDHISM Decline and fall of Buddhism; The History of Persecution of the Buddhist Faith Korean Minjok Leadership Academy International Program Son, Bo KyungTerm Paper, Medieval History Class, June 2011http://www.zum.de/whkmla/WHKMLA The History of Persecution of the Buddhist Faith.htm; http://rupeenews.com//How Adi Shankara destroyed Buddhism and founded 'Hinduism' in the 8th century _ Rupee News.htm; http://www.milligazette.com/Hinduism and Talibanism, The Milli Gazette, Vol. 2 No. 8.htm; http://www.milligazette.com/Hinduism is a violent faith.htm; http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Decline of Buddhism in India.

htm; http://rupeenews.com//How Adi Shankara destroyed Buddhism and founded 'Hinduism' in the 8th century _ Rupee News.htm; http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm;]

ब्राह्मणों की बौध्द धम्म के प्रति नफरत !

सम्राट अशोक ने धर्मो के सहअस्तित्व की नीति का पालन किया। {सिर्फ समाजविरोधी प्रथा परंपराओं पर रोक लगाई} दूसरे धर्मो को सहन करने की सम्राट अशोक की नीति दूसरी शताब्दी में ब्राह्मणों में कहीं नजर नही आई। पातंजली के मुताबिक श्रमण और ब्राह्मणों के बीच सांप-नेवले की दूश्मनी थी। ब्राह्मणवादी व्याकरणकार भट्टोजी दिखीता (Bhattoji Dikhita) के मुताबिक सम्राट अशोक ब्राह्मण ज्ञान से विहीन परम मूर्ख है।(vide Tattvabodhini and Balamanorama) भट्टोजी का यह नजरिया ब्राह्मणों की बौध्द धम्म के प्रति गहरी नफरत की अभिव्यक्ति थी। ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म को लोगों के बीच बदनाम करने के लिये नीचले स्तर की तीकडमों का उपयोग किया। उन्होने बौध्द धम्म की शब्दावली का मतलब तोडमरोडकर लोगों के सामने पेश किया। ब्राह्मणों ने प्रचारित किया किया जो भी कोई बौध्द धम्म के रास्ते पर चलेगा उसे नर्क मिलेगा। शंकराचार्य ने प्रचारित किया कि बुध्द मानसिक बीमारी से ग्रस्त था और बुध्द ने अनाकलनीय बातें बताकर लोगों को सिर्फ भ्रमित किया। लोगों ने खुद की खुशी के लिये बुध्द को नकार देना चाहिये।(Shankar Bhashya on Brahmasutra 2/2/32)

बौध्दों का उपहास करने बुध्दु शब्द प्रचलित किया गया। बौध्दों तथा उनके धर्मस्थलों को बदनाम करने के लिये बौध्द स्थलों को गालीगलौच भरे गंदे और अश्लील नाम दिये गए। ब्राह्मणों ने बौध्द भिक्षुओं का सामान्य जनजीवन में मखौल उडाकर उन्हे तरह तरह से प्रताडित करना शुरु किया। महाभारत और पुराणों में लिखा गया कि स्तुपों तथा चैत्यों का आदर करना कलीयुग की निशानी है। smratyarthasara के मुताबिक बौध्द अछूत है। आरंभिक मध्ययुगीन साहित्य में बौध्दों तथा जैनों के प्रति बेहद नफरत है। मट्टविलास प्रहसन (Mattavilasa Prahsana) पल्लव के शासक महेन्द्रवर्मन ने सातवी शताब्दी में लिखा। इसमें बौध्दों को नैतिक रुप से भ्रष्ट, बेईमान, और धरती की गंदगी कहा है। सौरपुराण के मुताबिक चार्वाकपंथी, बौध्द तथा जैन लोगों को अपने राज्य में बसने नही देना चाहिये। कौटील्य के अर्थशास्त्र में लिखा है कि गैर वेदिक समुदायों को गांव के बाहर स्मशान घाट के पास बसाना चाहिये। जो अपने पुरखों के श्राध्द इ. में किसी बौध्द, अजिवक या शुद्र को निमंत्रित करता है तो उसपर सौ पाना का दंड लगाना चाहिये।

मगध के धर्मभद्र नाम के बौध्द भिक्षु ने 14 वी शताब्दी में अपनी यात्रा के वृतांत में लिखा है कि दक्षिण के शैव राज्य में राजा ने अपमानित करने के लिये उसे नंगी सेविकाओं के साथ तालाब में नहाने पर मजबूर किया। मारने के लिये हत्यारे भी लगाये। इसकी खबर मिलते ही वह रात में ही भाग गया। जालंधर के रास्तें को ब्राह्मणों के डर से त्याग दिया। अयारंगसुत्तम के मुताबिक दिन में बौध्द भिख्खु कहीं छुपकर रहते थे और रात में ही सफर करते थे। धर्मस्वामीन नामक तिब्बती बौध्द भिख्खु के मुताबिक उसने बिहार को भेंट दी। उसने पाया कि क्वचीत दिखाई दिये बौध्द भिख्खु बौध्दगया में बुध्द की मूर्ति के साथ शिवलींग भी रखते थे ताकि ब्राह्मण उन्हे प्रताडित न करे। बौध्दों के सारे धर्मस्थल ब्राह्मणों के कब्जे में थे। अंग्रेजी सत्ता ने बौध्द गया के धर्मस्थल को श्रीलंका के बौध्द भिख्खुओं को ब्राह्मण पंडों से हस्तांतरित किया।(http://www.dharmawheel.

net/Dharma Wheel • View topic - Decline of Buddhism in India.htm)

ब्राह्मणों व्दारा बौध्दों का दमन और प्रताडना !

ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग जो बौध्द सम्राट ब्रहद्रथ का सेनापति था ने ईसापूर्व 185 में सम्राट ब्रहद्रथ की हत्या कर दी और बौध्दों के खिलाफ खूनी अभियान छेड दिया। पुष्यमित्र शुंग ने बौध्द भिख्खुओं की हत्याएं की। बडी तादाद में भिख्खु मारे गए। कई विदेशों में भाग गए। उसने घोषित किया कि बौध्द भिख्खु के प्रत्येक सिर के लिये सोने की सौ मोहरे दी जाएगी। उसने पाटलीपुत्र में कुकुतुरामा मोनेस्ट्री को ध्वस्त कर दिया। स्कता (पाकिस्तान के सियालकोट) तक की मोनस्ट्रीज तथा दिगर बौध्द स्थलों को ध्वस्त कर दिया। कई चीनी तथा जापानी इतिहासकारों का मानना है कि पुष्यमित्र शुंग बौध्दों का सबसे बडा उन्मूलक था। बौध्द साहित्य में पुष्यमित्र शुंग को बौध्द धम्म का क्रूर उन्मूलक करार दिया गया है। ब्राह्मण शुंग राजवंश ने 112 सालों तक राज किया। पुष्यमित्र के मुख्य सहायकों में पातंजली तथा मनु उपनाम धारक मनुस्मृति का लेखक था। अशोकवदन तथा दीव्यवदन के मुताबिक पुष्यमित्र ने सम्राट अशोक व्दारा निर्मित 84,000 बौध्द स्तुपों को ध्वस्त कर दिया था। 1) पुष्यमित्र ने नालंदा, बुध्दगया, सारनाथ तथा मथुरा इ. के बौध्द स्थलों को वेदिक ब्राह्मण धर्म के स्थलों में बदल दिया। 2) बौध्द साहित्य के मुताबिक बाद के राजा भी बौध्द धम्म के प्रताडक थे। ब्राह्मणों के खूनी कारनामों को पूरी शिद्दत से छिपाया गया है। लेकिन जो भी जानकारी विदेशों तक पहुंची है उसके मुताबिक भारत में ऐसा कोई भी राजा सुरक्षित नही था जो बौध्द धम्म का समर्थन करता हो।(Dharmatirtha, p.107)

ब्राह्मण शुंग राजवंश के बाद ब्राह्मण कण्व राजवंश ने शुंग साम्राज्य का तख्ता पलट कर राज किया। बंगाल के गौड के ब्राह्मण राजा शशांक ने बौध्द सम्राट राज्यवर्धन की इसवी 605 में हत्या की। वह बौध्द धम्म से बहुत नफरत करता था। शसांक ने कुशीनगर क्षेत्र के हजारों बौध्द भिख्खुओं को मार डाला। चिनी प्रवासी ह्युएन त्सांग ने सन् 637 में बुध्दगया को भेंट दी। उनके मुताबिक शशांक ने बोधी वृक्ष को काट कर जला डाला। बोधी वृक्ष की जगह को पानी लगते तक खोद दिया। उसे बोधी वृक्ष की जडों का अंत नही मिला। उसने बोधी वृक्ष की जडों में गन्ने का रस डाला ताकि बोधी वृक्ष जड से खत्म हो जाये। बुध्द की प्रतिमा की जगह वहां शिव की मूर्ति लगा दी। पाटलीपुत्र में उसने बुध्द के पैरों के निशान बने हुए पवित्र पत्थर को गंगा नदी में फेंक दिया।

रजतरंगानी के लेखक कल्हाना के मुताबिक मिहिरकुल नामक हुन राजा को ब्राह्मणों ने ईसवी 515 में ब्राह्मण धर्म में शामिल किया। कल्हाना के मुताबिक मिहिकुल की क्रूरता का वर्णन करते हुए किसी की भी जीभ गंदी हो जायेगी। (Rajatarangini I, 289,290 and 304; Translated by M. A. Stein) मिहिरकुल बडे गर्व से खुद को तिन करोड लोगों का संहारक कहता था। कल्हाना (verse 290 in book 1) के मुताबिक मिहिरकुल की सेना के आगे कौवे तथा दिगर मांसाहारी पक्षी उडते थे ताकि मारे गये लोगों की लाशों को नोंचकर खा सके। मिहिरकुल ने बौध्दों को बहुत क्रूर तरह से प्रताडित किया। उसके उकसावे पर बौध्दों की हत्याएं की गई। ह्युएन त्सांग के प्रवास वर्णन सी-यु-की के मुताबिक उसने बौध्द राजाओं के परिवारों का तथा उनके मंत्रियों का कत्लेआम किया, मिहिरकुल ने पंजाब तथा कश्मीर के बौध्द मोनेस्ट्रीज को ध्वस्त करने का अभियान छेड दिया। स्तुपों का विध्वंस किया, संघरामाज का विध्वंस किया, कुल मिलाकर उसने एक

हजार छह सौ बौध्द निर्माण स्थलों की बुनियादें तक ध्वस्त कर दी।(Si-Yu-Ki. Buddhist Records of the Western World Tr. Samuel Beal, 1969; Book iv, Page 171) मिहिरकुल ने ब्राह्मण धर्म के विकास में बहुत बडी भूमिका निभाई।(Rajatarangini I, 306; M. A. Stein) कश्मीर में बौध्दों के उन्मूलन के बारे में ई. एम. हुसैनियन ने लिखा है कि वह नारा था जिसने बौध्द धम्म के विध्वंस की प्रक्रिया शुरु की। इससे कश्मीर से बौध्द धम्म विलुप्त हो गया। उसने बौध्द स्थलों को जला डाला और बौध्दों को भागने पर मजबूर किया। उनकी जमीनें जब्त कर ब्राह्मणों में वितरित कर दी। कश्मीर में जो कुछ हुआ वह सारे भारत भर में चलाये जा रहे बौध्द उन्मूलन का एक हिस्सा था।

इसी राजवंश के तोरामाना ने कौसंबी की घोसीतारामा मोनेस्ट्री को ध्वस्त किया। कश्मीर के शासक कलसा क्षेमगुप्त तथा ब्राह्मणवादी हर्षा (यह हर्षा बौध्द सम्राट हर्षवर्धन नही है।) ने भी बौध्दों का उन्मूलन जारी रखा। इफथालाईटस् ने आक्रमण किया और ब्राह्मणों ने बौध्दों की प्रडाडना का दौर शुरु किया। ब्राह्मणों ने बौध्दों के कत्लेआम में तथा बौध्द स्थलों के विध्वंस में हाथ और दास्तानों जैसी भूमिका अदा की।

मान॰ बी.आर. सांपला के अनुसार शंकराचार्य के जीवनी ग्रंथ 'शंकर दिग्विजय' में स्पष्ट उल्लेख आता है कि उनके साथ सशस्त्र योध्दा रहते थे। शंकराचार्य ने स्वँय भी संन्यासियों का सशस्त्र संगठन तैयार किया था। यह संगठन नास्तिक यानि वेदों को न मानने वालों को दन्ड देने के लिये बना था। शंकराचार्य ने केरल के राजा सुधन्वा के सैनिकों को ब्राह्मणों के रुप में पाला पोसा। जहाँ भी बौध्दों के साथ शास्त्रार्थ हुये और शंकराचार्य हारने लगा तब ब्राह्मणों का रुप लिये हुये सैनिकों ने बौध्द विव्दानों का गला काटा और खुद को विजयी घोषित किया। ब्रम्हसुत्र में लिखा है कि यदि कोई अछूत शुद्र पढकर विव्दान बने तो उसका गला काट दिया जाये। '(बी.आर. सांपला, p.134-135) शंकराचार्य ने माधव तथा रामानुज के साथ ब्राह्मण धर्म को भारत में हिंसक तरिको से फैलाने का काम किया। तिब्बती साहित्य के मुताबिक शंकराचार्य के अपने सशस्त्र दलबल के साथ आने का समाचार सुनते ही बौध्द भिख्खु उस क्षेत्र से भाग जाते थे।

शंकर दिग्वीजय में इस बात का वर्णन है कि गैर ब्राह्मण धर्म-पंथों के लोगों को जलाकर मारने में शकराचार्य को किस तरह मजा आता था। विवेकानंद ने भी शंकराचार्य की हिंसा का वर्णन करते हुए लिखा है कि शंकर का दिल ऐसा {क्रूर} था कि उसने अनगिनत बौध्द भिख्खुओं को चर्चा में परास्त कर जींदा जला दिया; शंकर के इस कार्य को धार्मिक अतिवाद के सिवा क्या कहा जा सकता है।(Complete works of Swami Vivekananda, Vol. III, p. 118, Calcutta, 1997) बौध्द भिख्खु अकेले ही सफर करते थे। उनकी हत्याएं की गई। ब्राह्मण शंकराचार्य ने बौध्द भिक्षुओं को चर्चा का आव्हान देकर उन्हे बुध्द धर्म छोडने पर या निर्वासित होने पर मजबूर करना शुरु किया। शंकराचार्य की तथाकथित चर्चा में ब्राह्मणों की उदंड उपस्थिति में चित भी मेरी और पट भी मेरी की नीति अपनाई जाती थी। शंकर दिग्वीजय ग्रंथ के मुताबिक नव नियुक्त राजाओं को आदेश दिया गया था कि वे आदेश जारी करें कि लोग हर बौध्द बच्चे तथा बूढे को मौत के घाट उतार दें। जो ऐसा करने से इनकार करेंगे उन्हे मौत के घाट उतार दिया जाएगा। महात्मा फुले के अनुसार शंकराचार्य (700/750 ईसवी) के समय बौध्दधर्मीय लोगो को तेल निकालने के कोल्हु में निचोडकर मार डाला गया। अधिकांश बौध्द धर्मग्रंथों को जलाकर नष्ट कर दिया। उसमें से अमरकोष नामक ग्रंथ अपने उपयोग के लिए रख लिया।(p.166 महात्मा फुले) प्रबोधनकार ठाकरे के अनुसार शंकराचार्य ने शुध्दीकरण करके सीथीयनों को

राजपूत क्षत्रिय बनाकर उनकी सहायता से बौध्दों के बर्बर कत्लेआम करवाए। विहारों को नष्ट किया। बौध्दों को देश छोडने पर मजबूर किया। लाखों बौध्दों के मानव अधिकार छीनकर उन्हे अस्पृस्य बनाया। (प्रबोधनकार ठाकरे, p.7-9) सातवी शताब्दी में कुमारिला भट ने उजैन के राजा सुधानवन को बौध्दों के कत्लेआम के लिये उकसाया। माधव आचार्य ने अपनी किताब शंकर दिग्वीजयम में लिखा है कि सुध्दानवन ने आदेश जारी किया कि रामेश्वरम से लेकर हिमालय तक बौध्दों को उनके बच्चों तथा बुजुर्गो के साथ कत्ल किया जाये, जो भी बौध्दों का कत्ल नही करेगा मेरे हाथों से मारा जायेगा। बौध्दों का बडी तादाद में जनसंहार हुआ। (Madhava-Vidyaranya, Sankara Digvijaya Sarg 1; shlokas 93-95) सुधानवन व्दारा बौध्दों के कत्लेआम का वर्णन शंकराचार्य के दो चरित्रों में जैसे कि शंकराचार्य के शिष्य आनंदगीरी व्दारा लिखी शंकरविजय तथा माधव व्दारा लिखी शंकर दिग्वीजयम में किया गया है। सुद्रका व्दारा लिखी म्रच्छकट्टिका (Mricchakatika) में लिखा है कि किस तरह उजैन के राजा के साले ने अमानवीय तरिकों से बौध्द भिख्खुओं को यातनाएं दी। उनकी नाक में रस्सी डालकर उन्हे बैलगाडी में जोतकर गाडी खींचने पर मजबूर किया। केरालोलपथी दस्तावेजों में बताया गया है कि किस तरह कुमारीला भट ने केरल से बौध्दों का उन्मूलन किया।

शंकाराचार्य ने खुद आंध्र प्रदेश के नागार्जुनकोंडा में सैंकडों बौध्दों को मार डाला। ए. एच. लोंघुर्स्ट (A.H. Longhurst) के मुताबिक उसने वहां के तमाम बौध्द विहारों को ध्वस्त किया। डॉ. जयप्रकाश के मुताबिक नागार्जुनकोंडा में बुध्द की मूतियों तथा बौध्द स्मारकों के विध्वंस में शंकराचार्य की भूमिका शैतानी है। ए. एच. लोंघुर्स्ट (A.H. Longhurst) ने नागार्जुनकोंडा में उत्खनन किया था। अपनी महत्वपूर्ण किताब ''Memoirs of the Archaeological Survey of India No. 54, The Buddhist Antiquities of Nagarjunakonda (Delhi, 1938, p. 6)'' में सारी जानकारी दर्ज की। उन्होने लिखा कि जिस क्रूरता से नागार्जुनकोंडा की इमारतों को ध्वस्त किया गया है, यह काम खजाना ढुंडने वालों का नही हो सकता क्योंकि अनगिनत स्तंभ, मूर्तियां, तथा अन्य शिल्प तूकडे तूकडे किये गए है। परंपरागत स्थानीय सोच है कि शंकराचार्य अपने सशस्त्र दलबल के साथ पहुंचा और तमाम बौध्द स्थलों का विध्वंस किया। इस क्षेत्र की जमीन जबरन शंकराचार्य को धार्मिक दान के रुप में दे दी गई। इसपर ब्राह्मण खेती करते है। बौध्द तथा जैन धर्मस्थलों पर जबरन कब्जा जमाकर ब्राह्मण धर्म के मंदिर बनाये गए। बौध्द तथा जैन साहित्य को भारत में पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया था। मूल पुराणों में इन लूट तथा विध्वंसों का जिक्र है।(http://karthiknavayan.wordpress.com/How the Buddhists and Jains were Persecuted in Ancient India. _ ???????? ??????.htm) गोपीनाथ राव (East & West Vol 35) के मुताबिक ह्युएन त्सांग के रिकार्डो के मुताबिक जगन्नाथ पुरी के पूराने बौध्द स्थल पर वैष्णवों ने जबरन कब्जा किया। वहां के सभी बौध्दों को मार डाला। इस स्थल की दीवारों पर बौध्दों के जनसंहार के खौफनाक दृष्य के चित्र बनाये गए है जो आज भी देखे जा सकते है। यह भी दर्ज है कि गैरब्राह्मण धर्मो के साहित्य को बडे पैमाने पर नष्ट किया गया। नागार्जनकोंडा में स्थित विशाल बौध्द संकुल को ध्वस्त किया गया। नारावर्मा के पिता सिंहवर्मा जिसने ईसवी 404 में राज किया तथा त्रिलोचन राजा ने बौध्द स्थलों को ध्वस्त किया। वहां ब्राह्मण धर्म के मंदिर बनाने का लोगों को आदेश जारी किया। चालुक्य राजा बौध्द स्थलों को ध्वस्त करने के लिये प्रसिध्द थे। नागार्जून युनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर हनुमंथ राव के मुताबिक मल्लिकार्जुन तथा सोमानंधा नामक ब्राह्मणों ने गर्व से घोषित किया था कि आंध्रदेश में

बौध्दों को तेल निकाले के कोल्हु में पीस कर मार डाला गया। पूजारी वर्ग ने ब्राह्मण पूजारियों को उत्तरी भारत से आयात किया। उन्होने नायनार तथा अलवार लोगों के साथ मिलकर बौध्द भिख्खुओं को प्रताडित किया। बौध्द तथा जैन दोनों का ही उन्मूलन किया। बसवा नामक ब्राह्मण मंत्री ने बिज्जला कालुचुरी नामक राजा को सन् 1156 में मारकर सत्ता पर कब्जा किया तथा बडे ही हिंसक तरिके से जैन धर्म का उन्मूलन किया। मैसूर राज्य में जैन धर्म की समृध्दी के काल में गोमतेश्वर की मूर्ति स्थापित की गई थी जो नष्ट की गई।

यह उल्लेख है कि ब्राह्मण-धर्म को मानने से इन्कार करने वाले लगभग आठ हजार जैनों को मार डाला गया। ब्राह्मणों ने इस वाकये का जश्न मनाने के लिये तथा उसकी याद को हमेशा बनाये रखने के लिये मदुराई के मंदिर में उत्सव का आयोजन शुरु किया जो आज तक जारी है।(K.A.N. Sastri - History of South India) Epigraphica India Vol XXIX P 141-144 में दर्ज है कि दक्षिण भारत के राजा वीरा गोग्गी देवा ने खुद को 'जैन धर्मग्रंथों की आग, जैन धर्म के अनुयायी जानवरों को मौत के घाट उतारने वाला शिकारी, तथा बौध्द सिधान्तों को ध्वस्त करने में माहिर' ऐसी उपाधी ग्रहण की।

63 ब्राह्मण सन्यासियों की मूतियां है जिन्होने जैन धर्म के हिंसक विध्वंस की अगुवाई की थी। इस हिंसा के चिन्ह आज भी तामिलनाडू के कुछ मंदिरों में देखे जा सकते है। संपूर्ण तामिलनाडू में ध्वस्त किये गये जैन मूर्तियों के अवशेष तथा त्यागने पर मजबूर किये गए जैन धर्मस्थलों और जैनों के रहने की जगहों को देखा जा सकता है। मदुराई के मीनाक्षी मंदिर के निकट के गोल्डन तालाब के निकट की दीवारों पर जैन राजाओं की तस्वीरें देखी जा सकती है। मीनाक्षी मंदिर में जो 12 वार्षिक उत्सव मनाये जाते है, कुमारस्वामी अय्यंगार (p. 78-79) के मुताबिक उनमें से 5 उत्सव जैन लोगों के कत्लेआम का जश्न मनाने को लेकर है। (http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm) पेरियार ई.वी. रामासामी (Man and Religion, page 27) के मुताबिक मदुराई में एक ही दिन में 8000 तामिल जैनों को तमिल ब्राह्मण थीरुगुना संबंधा ने इसवी 600 में मार डाला। इन हत्याओं को याद रखने के लिये एक उत्सव का निर्माण किया गया जिसे मीनाक्षी मंदिर में तथा दिगर मंदिरों में मनाया जाता है। कांचिपुरम के वैकुंठ पेरमाल मंदिर कई मंदिरों में ऐसा इकलौता मंदिर है जहां तमिल बौध्दों तथा जैन लोगों की हत्याओं तथा उन्हे दी गई यातनाओं से संबंधित शिल्प है।

तामिलनाडू के तिरुनेलवेली जिले के सबसे पूराने जैन गुफा मंदिर का रुपांतरण शिव मंदिर के रुप में सातवी शताब्दी में किया गया। इस दौरान हुई हिंसा की तस्वीरें कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर तथा मदुराई के मिनाक्षी मंदिर के निकट गोल्डन सिटी तालाब के मंडपम पर चित्रित है। इनसे बौध्दों तथा जैनों का तमिलनाडू में किस हिंसक तरिकों से उन्मूलन किया गया इसका पता चलता है। बसवा के जीवनचरित्र से जैन लोगों के कत्लेआम के सबूत मिलते है। सारे कर्नाटक में जैन लोगों के मंदिरों को ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में बदले जाने के तथा जैन तस्वीरों को नष्ट विकृत किये जाने संबंधी दस्तावेज उपलब्ध है।(Looking for a Hindu Identity Dwijendra Narayan Jha) सिर्फ राजस्तान के कुछ क्षेत्रों में ही जैन धर्म के स्थल आज भी पाये जाते है क्योंकि यह माना जाता है कि राजपूत राजाओं ने इन्हे इसलिये संरक्षण प्रदान किया क्योंकि एक जैन मुनि ने राज्य में अकाल को आने से रोक दिया था। (http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Decline of Buddhism in India.htm) सातवी शताब्दी से आगे

तमिलनाडू में शैव पंथियों ने जैन धार्मिक स्थलों पर हमले किये। जैन श्रमणों को भगा दिया। कर्नाटक में वीरासैवा यानि लिंगायतों ने जैन धर्म के जैन आकृतियों को नष्ट कर दिया। मणिपुर में जब मैथिली राजा पामहेईबा (Pamheiba) को ब्राह्मण धर्म में शामिल किया गया। (Gharib Nawaz,1709-1748) उसने ब्राह्मण धर्म को राजधर्म बनाया। बाकी धर्मो का क्रूरता के साथ दमन किया। व्यापक रुप से निष्काषित करने या मार डालने की वजह से लोगों को मजबुरन ब्राह्मण धर्म कबुल करना पडा।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) बौध्द तथा जैनों को इतना अधिक प्रताडित किया गया कि जैनों ने 14 वी शताब्दी में विजयनगर के सत्तानशीन राजघराने को हस्तक्षेप के लिये बिनती की जिसका कोई असर नही हुआ। इसकी पुष्ठी 16 वी शताब्दी के आंध्र प्रदेश के श्रीसैलम क्षेत्र के शिलालेखों से होती है। उनमें से एक से पता चलता है कि ब्राह्मण धर्म के एकलिंगा नाम के प्रमुख श्वेतांबर जैनों की गर्दनें उडाने में गर्व का अनुभव करता था। ब्राह्मण धर्म-पंथों के सैनिकिकरण तथा मंदिरों में बडी तादाद में धार्मिक सैनिक खडे करने से गैरब्राह्मण धर्म-पंथों के दमन और प्रताडना में तेजी आई। इस दौरान कर्नाटक में एकांतदा रामय्या की विजय के बाद जैनों पर अत्याचार ढाये गए और बडे पैमाने पर जैनों को जबरन ब्राह्मण धर्म में शामिल किया गया। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) बौध्द धम्म के उन्मुलन के लिये सम्राट कनिष्क को उनके बिस्तर में दम घोंटकर मारने की कोशिश हुई। ब्राह्मणों के हत्यारों ने सम्राट हर्षवर्धन को मारने की कोशिशें की। राजपूत शासकों ने सिंध और कोटा की सत्ता का तख्ता पलटा। गृहवर्मन मौखारी ने सम्राट हर्षवर्धन की बहन से शादी की थी। उनको बंगाल के ब्राह्मण राजा शशांक ने धोखेबाजी से मार डाला। रजतरंगानी (IV/112) के मुताबिक कश्मीर के बौध्द राजा चंद्रदीप की ब्राह्मणों ने सन् 722 में हत्या कर दी। उनके उत्तराधिकारी तारपिडा की दो साल बाद हत्या कर दी गई।

ह्युएन त्सांग ने 629 से 645 के दौरान भेंट दी। उनके मुताबिक दक्षिण भारत के एक राज्य की ब्राह्मण रानी के कहने पर राजा ने कई हजार बौध्दों का कत्लेआम किया जिसमें से 8000 बौध्दों को अकेले मदुराई में मार डाला गया। कई स्थानीय राजाओं ने ब्राह्मणों से खुद के लिये क्षत्रिय दर्जा हासिल किया। ब्राह्मणों ने इन राजाओं का इस्तेमाल बौध्द स्थलों को ध्वस्त करने और बौध्दों का कत्लेआम मचाने के लिये किया। कई नेपाली दस्तावेजों के मुताबिक बौध्द धम्म के अनुयायियों को क्रूरतापूर्वक मार डाला गया। कईयों को जबरन ब्राह्मण धर्म में शामिल किया गया। कईयों को देश छोडने पर मजबूर किया गया। शामिल किये गए लोगों की ब्राह्मण धर्म के प्रति इमानदारी को परखने के लिये उन्हे जानवरों की अपने हाथों से बलि चढाने, बौध्दों के खिलाफ हिंसा में हिस्सा लेने इ. काम कराये गए। बौध्द साहित्य के 84000 ग्रंथों को ढूंढकर जलाया गया। मल्लिकार्जुन पंडिताराध्या बौध्द धम्म से बेहद नफरत करता था। उसने एक बौध्द भिख्खु के हाथों चर्चा में शिकस्त मिलने के बाद षडयंत्र कर उनकी हत्या कर दी। बौध्द स्थल को जला दिया। पंतिराध्या की उग्र हिंसक मुहिम ने आंध्रदेश से बौध्द धम्म को लगभग नष्ट कर दिया।

सैंकडों बौध्दों को अलुआ नदी के किनारे मार डाला गया। अलुवा यह शब्द अलावाई शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ त्रिशुल है। त्रिशुल से बौध्दों को मारा गया था। तामिलनाडू के वैगई नदी के किनारे वैष्णव संत संबंथार (Sambanthar) ने हजारों बौध्दों को मार डाला। थेवाराम नामक ग्रंथ में इन बौध्दों के जनसंहारों का उल्लेख है।

बौध्दों ने बडे पैमाने पर अपना विस्थापन किया। बडी तादाद में बौध्द भिख्खु तथा बौध्द अनुयायी चीन तथा दक्षिण एशिया के देशों में भाग गए। {ब्राह्मणवादी} जवाहरलाल नेहरु के मुताबिक ऐसा ही एक व्यापक बौध्दों का पलायन 526 ईसवी में हुआ जब बोध ीधर्मा नामक भिख्खु के नेतृत्व में बौध्द भिख्खुओं ने तथा बौध्द अनुयायियों ने दक्षिण भारत से चीन के कॅन्टन के लिये पलायन किया। {ब्राह्मणवादी} नेहरु के मुताबिक चीन के अकेले लाओ यांग प्रांत में ही उस वक्त 3000 बौध्द भिख्खु तथा 10,000 भारतीय बौध्द परिवार रह रहे थे। ब्राह्मणवाद की प्रताडना के शिकार बौध्द चीन, तिब्बत, कोरिया तथा जापान चले गए। ब्राह्मणवाद ने उनके अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया था। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, बामीयान तथा काबूल में ब्राह्मण मंत्री काल्लार या कालुशा ने बौध्द धम्म तथा बौध्द प्रांतों को ध वस्त करने का काम 9 वी शताब्दी के अंतिम वर्षो में किया। उसने षडयंत्र से विद्रोह को अंजाम देकर बौध्द राजा लागातुरमन का तख्ता पलटकर ब्राह्मणराज कायम किया। शंकराचार्य की रणनीतिक सूचनाओं के मुताबिक कुलुशा ने हजारों बौध्दों का कत्लेआम किया। बौध्द स्थलों को जमीनदोस्त कर दिया। ब्राह्मण राज के दौरान ही बामीयान, गारडेझ, लाघमन तथा दिगर जगहों के बौध्द स्थलों को ध्वस्त किया गया।

ब्राह्मणों के अधिन क्षत्रियों की श्रमण-संहार सेना !

आर्यो के भारत में विस्थापन तथा आक्रमण के बाद से इस्लाम के पहले तक भारत में शक, पार्थियन, कुशान, हुन, गुज्जर, मंगोज इ. कई मध्य एशिया की टालियों ने बडी तादाद में पाकिस्तान के पंजाब तथा अन्य जगहों पर विस्थापन तथा आक्रमण किया। अंतिम दो जनजातियों हुन तथा गुज्जरों ने ईसवी 5 वी शताब्दी में विस्थापन तथा आक्रमण किया। उस वक्त गुप्त साम्राज्य के संरक्षण में ब्राह्मण धर्म मजबूत हो चुका था। लेकिन ब्राह्मण धर्म बौध्द धम्म को कुचलने में कामयाब नही हो पाया था। हुन आक्रमणों के चलते गुप्त साम्राज्य कमजोर होकर अंततः बिखर गया। इससे ब्राह्मणों में जबर्दस्त निराशा तथा खौफ का माहौल छा गया। ब्राह्मणों ने हुणों को क्षत्रियों का ओहदा देकर ब्राह्मण-धर्म में मिलाने की पेशकश की। हुणों को ब्राह्मणों की षडयंत्रकारी ताकत का पता था। अपने राज्य की स्थिरता के लिये हुणों ने क्षत्रियों रुप में राज चलाना तथा ब्राह्मणों को अपना प्रधान मंत्री बनाना कबुल किया। ब्राह्मण-क्षत्रियों के गठबंधन ने अपने लिये उच्च जबकि औरों के लिये नीचले स्तर घोषित किये। ऐसी स्थिति बौध्द धम्म को कभी कबुल नही थी। इसलिये ब्राह्मण-क्षत्रियों के नापाक गठबंधन ने बौध्द धम्म के उन्मूलन के लिये हिंसक मोर्चा खोल दिया ताकि उनकी निरंकुश सत्ता को बौध्द धम्म के समानता के सिधान्तों से कोई खतरा न पैदा हो सके। ब्राह्मणों ने क्षत्रिय करार दी हुई जातियों को राजपूत नाम देकर उन्हे श्रमण-संहार सेना के तौर पर इस्तेमाल किया। बौध्द सम्राट हर्षवर्धन की मौत से लेकर भारत में मुस्लिमों के आगमन तक के काल को राजपूत काल कहा जा सकता है। ब्राह्मणराज का यह काल भारत के इतिहास का सबसे अंधकारमय काल था। इस काल में जहां भी राजपूत सत्ता कायम हुई बौध्द धर्मस्थलों का व्यापक रुप से विध्वंस किया गया। बौध्द भिख्खुओं की हत्याएं की गई। तमाम गैरब्राह्मण धर्म-पंथों के साहित्य को नष्ट किया गया। बौध्द स्थलों को ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में रुपांतरित किया गया। 10 वी शताब्दी के अंत तक बौध्द धम्म का नामो-निशान मिट गया। बचे खुचे बौध्द धम्म के अवशेषों को {ब्राह्मणों ने} मुस्लिम आक्रमण के जरिये पूरा किया।(R.C.Dutt, Epochs of Indian History, quoted by Swami Dharmatirtha, p. 108) पहले भील खुद राज

करते थे। राजपूतों ने 6 वी शताब्दी में भीलों पर हमला किया। कई राजपूत राजा जिसमें मेवाड का राणा भी शामिल है ने राज कायम करते ही अपने माथे पर भील के खून का टीका लगाया था। (Stella Kramerish, "Selected writings of Stella Kramerish", Philadelphia Museum of Art, 1968, p. 90; fn:- Koppers, "Die Bhil", p.14)

दक्षिण एशिया में बौध्द धम्म का विध्वंस और उन्मूलन !

ब्राह्मणों व्दारा बौध्दों की कई शतकों तक लगातार क्रूर प्रताडना से नेपाल में बौध्द धम्म लगभग खत्म हो गया। प्रताडना के दौरान हजारों बौध्द स्थलों को ध्वस्त किया गया। बौध्द पुस्तकालयों को जलाया गया। सशस्त्र आर्य समुहों ने मंगोल लोगों का कत्लेआम मचाया। औरतों पर बलात्कार किये। बौध्दों की खेती में आग लगाई गई। उनके तालाबों, कुओं में जहर डाला गया ताकि संपूर्ण आबादी का उन्मूलन किया जा सके। बौध्द स्थलों को ध्वस्त कर उनकी जगह ब्राह्मण धर्म के मंदिर खडे किये गए। कई बौध्द स्थलों को ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में बदला गया। नेपाल के कई तथाकथित हिंदू मंदिरों में बौध्द निर्माण आज भी मौजूद है। आर्यो के भारत पर आक्रमण के समय से ही नेपाली इतिहास कत्लेआम, बलात्कार, विध्वंस और लूट से भरपूर है। पूरे नेपाल को विशाल कैदखाने में बदला गया। बौध्द जनता को लाचार बनाकर उन्हे उनकी संपत्ति तथा जमीन से वंचित किया गया। बौध्दों की जमीन और संपत्ति पर ब्राह्मणों ने कब्जा किया। मनु तथा कौटील्य के हैवानी नियमों को लोगों पर जबरन लाद दिया गया।(`India of the Vedic Age with Reference to the Mahabharata', Vol. I of `The History of India', J. Talboys Wheeler, 1973 reprint Cosmo Publns. Delhi 1973, p.147 http://www.paklinks.com//Persecution Of Buddhists.htm) ब्राह्मणों ने घूसपैठ के जरिये श्रीलंका, भूतान, बर्मा, कंबोडिया लाओस, विएतनाम इ. में बौध्द धर्म को बुरी तरह से विकृत किया। ब्राह्मणों ने बौध्दों की प्रताडना का सिलसिला दक्षिण एशिया के देशों में भी जारी रखने की पूरी कोशिश की है।(http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee News.htm) {ब्राह्मणवादी} जवाहरलाल नेहरु ने अपनी किताब ''Glimpses of World History'' में लिखा है कि भारतीयों {पढिये ब्राह्मणवादियों} ने इसवी पहली शताब्दी से ही विभिन्न देशों में अपनी वसाहतें बनाई। वे संपूर्ण मलाया, जावा तथा सुमात्रा व्दीपों में बस गए। वे कंबोडिया तथा बोर्नियों में भी बस गए। वहां उन्होने अपनी {ब्राह्मण} धर्म-संस्कृति कायम की। बर्मा, सीयाम तथा इंडोचायना में बडी तादाद में भारतीय वसाहतें है। वहां की जगहों के नाम अयोध्या, हस्तिनापुर, तक्षिला, गांधार इ.रखे। इसमें कोई शक नही कि वे जहां भी गए उन्होने वहां के लोगों से बूरा बर्ताव किया। अवश्य ही वहां के मूलनिवासियों का शोषण किया और उनपर अपनी सत्ता कायम की। इन पूर्वी व्दीपों पर ब्राह्मण धर्म के राज्य कायम किये गए। इसके बाद बौध्द शासक आये। ब्राह्मण और बौध्द शासकों के बीच अपने प्रभुत्व को लेकर संघर्ष हुए। यह एक लंबी कहानी है ... विशाल अवशेष अभी भी हमें बताते है कि वहां बडी इमारतें थी, वहां शहर थे .....''(http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

ब्राह्मण अंधकार युग में ब्राह्मणों व्दारा बौध्द तथा जैन धर्म-स्थलों पर कब्जा-रुपांतरण !

[Information for this chapter is synthesized from following sources : Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy Sri Lanka; http://www.milligazette.com/Hinduism and Talibanism, The Milli Gazette, Vol. 2 No. 8.htm; Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum; http://en.wikipedia.org/Taxila - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; Were Buddhists persecuted by Hindus? Written by Mushafiq Sultan on 13 December 2012http://www.islamhinduism.com/Were Buddhists persecuted by Hindus - Islam and Hinduism Initiative.htm; http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Decline of Buddhism in India.htm; http://karthiknavayan.wordpress.com/How the Buddhists and Jains were Persecuted in Ancient India. _ ???????? ??????.htm; http://en.wikipedia.org/History of Buddhism in India - Wikipedia, the free encyclopedia.htm]

संपूर्ण भारत में बौध्द धम्म फैला था !

मान. बी.आर. सांपला के अनुसार पाकिस्तान में की गई खुदाई से तख्तेशाही के स्थान से जो मूर्तियाँ निकली है उससे पाकिस्तान के अजायब घर भरे पडे है। 16-22 फुट लंबी बुध्द प्रतिमायें भी तख्तेशाही से मिली है। कभी यह बौध्दों की गतिविधियों का एक महान केन्द्र था। यह नगर कुशन राजाओं ने बसाया था। इसे ब्राम्हणवादी राजा मिहिरकुल ने नष्ट कर दिया था। खुदाई में बहुत से बौध्द विहार जली हुयी, नष्ट भ्रष्ट स्थिति में मिले है। तक्षशिला तथा पेशावर इ॰ प्राचिन बौध्द नगरों के अवशेष प्रचुर मात्रा में पाकिस्तान में है। धर्मराज का स्तूप, गलिनगिरी, कुमल, मोहरा मुरादू, और जैलिया के स्तूप उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बौध्द धर्म के प्रत्यक्ष प्रमाण है। सिंध में मोहेंजोदारो और हरप्पा के बौध्द अवशेष सारे संसार में प्रसिध्द है। कंजुर और नवाबशाह के सुधीर रंगढाढु के स्तुप भी बहुत शानदार थे। पाकिस्तान के पूर्व सैन्य-शासक अयुब खान ने अपनी पुस्तक 'Friends not Masters" में इसका उल्लेख बडे गौरव के साथ किया है कि जिस जगह पर पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद बनी है वहाँ के लोग किसी समय बौध्द थे।'(बी.आर. सांपला, p.144) मान॰ देवारे के अनुसार बुध्द धर्म सारे एशीया में फैला था। पर्शीया (इरान) में बौध्द धर्म अत्याधिक लोकप्रिय हुवा और ईरान के प्रसिध्द पूजारी परिवार बुध्द धर्म के अनुयायी बन गये। बौध्द धर्म अरेबीया तथा सायली (Sieily) तक फैल गया था इसके कई उदाहरण है। अरेबीया मे ''बुत'' अथवा ''बुड'' तथा ''मुहमिरा'' (Muhmira यानी लाल रंग का परिधान करने वाले) शब्द के प्रचलन से बौध्द धर्म के अरेबीया मे अस्तित्व का पता चलता है। (Dr. T.N.Devare, P. 4)

इस बात को सभी स्कॉलर मानते है कि दक्षिण भारत में बौध्द धम्म को फैलाने का काम महिन्द्रा ने खुद किया था। चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग दक्षिण भारत कांचीपरम में ईसवी सन 640 में आये। उनके मुताबिक यहां एक **100** फीट उंचा बौध्द स्तुप था। पांडया राज्य में बौध्द स्थलों तथा स्मारकों के बारे में ह्युएन त्सांग ने लिखा है कि मदूरा शहर के करिब सम्राट अशोक के भाई महिन्द्र थेरा ने एक बौध्द मोनेस्ट्री बनाई है। इस

मोनेस्ट्री के पुरब में एक बडा स्तुप है जिसका निर्माण सम्राट अशोक ने किया था। उस वक्त ये निर्माण कार्य बहुत बूरी हालत में थे। भाष्यकार धर्मपाल थेरा लिखते है कि सम्राट अशोक व्दारा भ्रदतीर्थ पर बनाई गई मोनेस्ट्री में वह रह चुका है। सम्राट अशोक व्दारा इस्तेमाल की गई ब्राह्मी निपि का उपयोग यहां के शिल्पलेखों में भी हुआ है। ऐसी ही एक गुफा पांडया देश में अरित्तपट्टी में है। यह नाम भिख्खु अरिमम्हा के नाम पर पडा है जो इस गुफा में रहकर बौध्द धम्म के प्रचार-प्रसार कामों को संपन्न करते थे।

सर वाल्टर इलियट (Sir Walter Elliot) के मुताबिक नागपाम्मानम के उत्तर में समुद्र में एक बडा गोपुरम (temple tower) 1836 में था। वह नाविकों के लिये लाईहाउस था। सन 1867 में ब्रिटिश-भारत की सरकार ने ईसाई मशिनरियों को बौध्द निर्माण का ध्वस्त कर अपनी इमारतें बनाने की इजाजत दे दी। मद्रास की म्युजियम में कई तरह की बुध्द आकृतियां तथा बौध्द शिल्प देखे जा सकते है। इन सब बातों से इस बात का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नागपन्नमनम बौध्द धम्म का मजबूत केन्द्र भारतीय बौध्दों के लिये सदियों तक फक्र का सबब था। बुध्दकुई नामक गांव जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है बौध्दों का गांव था। उरायकर को उस वक्त उरागपुरा कहा जाता था। वहां बुध्ददत्ता नामक बौध्द भाष्यकार का घर भी था। यह शहर भी बौध्द धम्म का केन्द्र था। कुवाम आरंभ से ही बौध्द धम्म का केन्द्र था। वहां एक बहुत बडी बुध्द की मूर्ति प्राप्त हुई है। यह मूर्ति मद्रास की म्युजियम में है। आज भी संघमंगाई को बौध्द गांव के रुप में जाना जाता है। इसके नाम में का संघ शब्द उसके बौध्द संघ से संबंध को स्पष्ट करता है।

तिरुप्पदिरीपुल्लियुर बौध्द अध्ययन का केन्द्र था। कहा जाता है कि यहां एक बौध्द युनिवर्सिटी हुआ करती थी। कांचीपुरम का स्थान दक्षिण भारत के बौध्द इतिहास में महत्वपूर्ण है। वहां की अधिकांश जनता बौध्द थी। ह्युएन त्सांग ने इस जगह को 7 वी शताब्दी में भेंट दी थी। उनके मुताबिक सम्राट अशोक ने वहां एक स्तुप का निर्माण किया था। तमिल मनीमखलाई नामक ग्रंथ में लिखा है कि राजा किल्लीवलवन ने बुध्द के सम्मान में यहां एक चैत्य बनाया था। राजा ने तारुमदवन नामक उपवन बौध्द संघ को भेंट कर दिया। इस उपवन में बुध्द के पैरों के निशान वाला पत्थर था।

ह्युएन त्सांग (640 AD) के मुताबिक यहां लगभग 100 बौध्द मोनस्ट्रीज थी जिसमें लगभग एक हजार बौध्द भिख्खु रहते थे। कांचीपुरा में पल्लव राजाओं ने भी राज किया उनमें राजा बुध्दवर्मा बौध्द धर्मीय थे। उन्होने बौध्द मोनेस्ट्रीज बनाई और संरक्षण दिया।

मौजूदा तिरुमली वैष्णव धर्मस्थल पूर्व का बौध्द केन्द्र था। यहां बडी तादाद में पत्थर की गुफाएं मिली है। इन गुफाओं में सम्राट अशोक व्दारा इस्तेमाल की हुई ब्राह्मी लिपि के अक्षर प्राप्त हुए है। वी. आर. रामाचंद्रा का मानना है कि यहां बौध्द भिख्खु और जैन मुनि रहते थे। पांडया राज्य में भी बौध्द नगर तथा गांव थे। यह क्षेत्र चारीया धम्मपाल, वजीरा बोधी तथा अन्य बौध्द स्कॉलर्स का जन्मस्थल था। यहां कई गुफाएं है जिनमें कभी बौध्द भिख्खु रहते थे। मनीमेखलाई ग्रंथ के मुताबिक कोलावलन के परदादा ने वांची में बौध्द स्तुप बनाया था। उसे पदपंका जमालाया नामक बौध्द भिख्खु ने बौध्द धम्म की दीक्षा दी थी। बौध्द धम्म कबुलने के बाद उसने अपनी सारी दौलत बौध्द ध म्म के प्रचार-प्रसार में लगा दी। दूसरी शताब्दी में यह चैत्य तथा दिगर बौध्द स्थल वांची में कायम थे।

मलयालम क्षेत्र में ब्राह्मण-धर्म के कई मंदिरों के नामों में सत्तन कवू (Sttan Kvu) तथा अय्यपन कोविल (Aiyappan Kovil) नाम पाया जाता है। ये सभी मंदिर पहले के

बौध्द धर्मस्थल है क्योंकि बुध्द को सत्तन भी कहा जाता था। कवू मोनेस्ट्री या उपवन को कहा जाता था। इसलिये सत्तन कवू का अर्थ बौध्द मोनेस्ट्री होता है।

तमिल साहित्य में पोडियाकांडा का उल्लेख है। वह बौध्द प्रचार-प्रसार का केन्द्र था। तंजोर जिला प्राचीन काल में तांचाई कहा जाता था। वहां पहले बौध्द बसते थे। मानवकर और तुईतापूरा बौध्द धर्मस्थल थे। वहां असंख्य बौध्द विहार, स्तुप, चैत्य इ. थे। तमिल कविता यक्का यगप्परानी (Yakka ygapparani) में बुध्दपूरा नामक शहर का जिक्र है। यह स्थल कौनसा है इसे तय नही किया जा सका है। प्रचुर मात्रा में पाये गए अवशेषों से यह स्पष्ट है कि सारे दक्षिण भारत में बौध्द धम्म फैला था। ब्राह्मण-धर्म के ग्रंथ पेरियापुर्णम के लेखक सेक्कीलर (Sekkilr) ने लिखा है कि सातवी शताब्दी शैव पंथ लगभग नही था जबकि बौध्द का प्रचार-प्रसार जोरों पर था। केरल में उत्तर-दक्षिण थ्रीकनामथीलकम (Thrikanamathilakam) के कोडूंगालोर के मेथाला गांव के बौध्द स्तुप प्राचीन बौध्द स्थल है। महिसमाथी चेरा (केरल) राजा सत्यपुत्रन की राजधानी थी जो चेरा देश यानि केरल का बौध्द धम्म से संबंध दर्शाती है। मनीमेखलाई में केरल में चैत्य होने उल्लेख है।

कोल्लाम, अलाप्पुझहा, मावेलिकारा, पाल्लीकल, कारुमाडी तथा अन्य क्षेत्रों में बुध्द की मूतियाँ पाई गई है। त्रिसूर के वडाक्कुमनाथ मंदिर तथा कोडूंगॅलोर के कुरुंबा मंदिर पहले के बौध्द विहार थे। थीरुवाडी मंदिर में मानसिक रुग्नों तथा थाकाझई मंदिर में क्षय रोगियों का इलाज किये जाने से यह स्पष्ट है कि वे पहले के बौध्द विहार थे क्योंकि ऐसी मानवीय सेवा ब्राह्मण धर्म में कतई नही है। ब्राह्मण धर्म में ऐसे रोगों को उसके पूर्वजन्म के पापों का फल माना जाता है जो उसे हर हाल में भोगना है।

विदर्भ के कौंडिण्यपुर, पवनार, टाकलघाट तथा पवनी इ॰ महाश्मकालिन (Megalithic) संस्कृती के स्थल है। पवनी के उत्खनन में सबसे निचले की पहिली पर्त में मौर्यपूर्व काल के बौध्दस्तुप का पता चला है। मौर्यपूर्व काल के बौध्द स्तुपों का विशेष महत्व यह है कि बुध्द के दांत, हडडी इ॰ पर निर्माण किया जाता था। श्री एच. एल. कोसारे के अनुसार महाश्म काल के नाग लोगों ने बुध्द के जीवनकाल में ही बौध्द धर्म को अपना लिया था क्योंकी पाये गये शिलालेख के अनुसार इस स्तुप को बनाने में जीन व्यक्तियों ने आर्थिक सहकार्य दिया वे सारे सामान्य आदमी थे उनमें किसी भी राजा का नाम नही है। इसलिये यह भी स्पष्ट होता है कि नागभूमि के इस केन्द्रस्थल नागपुर में गणतंत्र था। अशोकपूर्व काल से लेकर सातवाहन के पश्चात भी नाग समूदाय बौध्द संस्कृती से संबंधीत रहे है। (एच. एल कोसारे, p.94-96,)

सम्राट अशोक के स्तंभ तथा शिलादेशों के स्थल !

सम्राट अशोक के मुख्य स्तंभादेश स्थल :- कंदहार, अफगानिस्तान (स्तंभादेश 7 के अवशेष; bilingual Greek-Aramaic); रानीघाट (Shahbazgarhi), खैबर पख्तुनखवा, पाकिस्तान (in Kharosthi script); मानसेहरा शिलादेश, मानसेहरा, खैबर पख्तुनखवा क्षेत्र, पाकिस्तान (खरोष्ठी लिपि में); दिल्ली-मेरठ, दिल्ली पहाडी, दिल्ली (Pillar Edicts I, II, III, IV, V, VI moved from Meerut to Delhi by Feroz Shah); दिल्ली-टोपरा, फिरोजशाह कोटला, दिल्ली (Pillar Edicts I, II, III, IV, V, VI, VII; moved from Topra to Delhi by Feroz Shah); वैशाली, बिहार (स्तंभ पर इबारत नही है।); रामपूर्वा, चंपारन बिहार (Pillar Edicts I, II, III, IV, V, VI); लौरिया-नंदनगढ़, चंपारन, बिहार (Pillar Edicts I,

II, III, IV, V, VI); **लौरिया-अराराज, चंपारण, बिहार** (Pillar Edicts I, II, III, IV, V, VI); **सारनाथ, वाराणसी के पास, उत्तर प्रदेश** (Pillar Inscription, Schism Edict); **अलाहाबाद, उत्तर प्रदेश** (originally located at Kausambi and probable moved to Allahabad by Jahangir; Pillar Edicts I-VI, Queen's Edict, Schism Edict); **सांची, भोपाल के पास, मध्य प्रदेश** (Schism Edict); **अमरावती, आंध्र-प्रदेश; कलसी, चक्रता के पास, देहरादून जिला, उत्तराखंड; गीरनार, जुनागढ के पास, गुजरात** (Ashoka's Major Rock Edict); **सोपारा, जिला थाने, महाराष्ट्र** (fragments Rock Edicts 8 and 9); **घौली, भुवनेश्वर के पास, आरिसा** (includes Kalinga Edict, excludes Rock Edicts 11-13); **जाउगाडा, जिला गंजम, ओरिसा** (includes Kalinga Edict, excludes Rock Edicts 11-13), **सन्नाटी, जिला गुलबर्गा, कर्नाटक** (separate Rock Edicts 1 and 2, fragments Rock Edicts 13 and 14); **येर्रागुडी, गुटी के पास, जिला कर्नुल, आंध्र प्रदेश** (Major Rock Edicts and Minor Rock Edict)

सम्राट अशोक के गौण स्तंभादेश स्थल :- कंदहार, अफगानिस्तान; लामपाका, अफगानिस्तान; लुंबिनी (रूम्मीनदेई), जिला रूपनदेही, नेपाल (the upper part broke off when struck by lightning; the original horse capital mentioned by Hsuan Tsang is missing); **निगाली सागर (निगलिवा), लुंबीनी के पास, जिला रूपनदेही, नेपाल** (originally near the Buddha Konakarnana stupa); **बाहापुर, दिल्ली; बैरट, जयपुर के पास, राजस्तान; भाब्रु, बैरट की दूसरी पहाडी पर, राजस्तान; गुज्जर, झांसी के निकट, जिला दतिया, मध्य प्रदेश; रुपनाथ, जबलपुर के पास कैमुर पहाडी पर, मध्य प्रदेश; पंगुरारिया, जिला सिहोर, मध्य प्रदेश, सोहगौरा, जिला गोरखपुर, उत्तर प्रदेश; साहसराम, जिला रोहतास, बिहार; बाराबार गुफाएं, बिहार** (donatory inscriptions to the A-ji-vika sect); **महास्तान, जिला बोगरा, बंगला देश; राजुला-मंदागीरी, येर्रागुडी के पास, जिला कर्नुल, आंध्र प्रदेश; गाविमथा, जिला कोप्पल, कर्नाटक; पालकीगुंडू, जिला कोप्पल, कर्नाटक; सुवर्णगीरी (कनकगीरी), जिला कोप्पल, कर्नाटक; ब्रह्मगीरी, जिला चित्रदुर्ग, कर्नाटक; जतिंगा-रामेश्वरा, ब्रह्मगीरी के पास, कर्नाटक; सिद्दापुर, ब्रह्मगीरी के पास, कर्नाटक; मस्की, जिला रायचूर, कर्नाटक।**(http://en.wikipedia.org/List of Edicts of Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सम्राट अशोक व्दारा निर्मित बौध्द विहार, चैत्य, मोनेस्ट्रीज इ. !

सम्राट अशोक ने बौध्द धम्म के प्रचार-प्रसार और सम्मान के लिये बहुत बडी तादाद में बौध्द स्तुपों, संघरामों (Sangharama), **विहारों, चैत्यों, स्तंभों इ. का निर्माण किया। भिख्खुओं के रहने के आवासों की व्यवस्था संपूर्ण दक्षिण एशिया तथा मध्य एशिया में की। उन्होने विहारों तथा मठों को चंदा दिया। अशोक ने शैक्षणिक कार्यकलाप चलाने वाले नालंदा तथा तक्षिला बौध्द विहारों को विकसित किया। सम्राट अशोक ने सांची स्तुप तथा महाबोधी विहार का निर्माण कराया। सांची का स्तुप मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के निकट है। सांची के स्तुप का सतत विस्तारिकरण किया गया। उसके नक्काशीदार प्रवेश व्दार जिसे तोहन्स कहा जाता है बौध्द शिल्पकला का उत्कृष्ठ उदाहरण है। अशोक स्तंभ पर बैठे हुए शेर की मूर्ति तथा धम्म चक्र होता था। लेकिन अशोकस्तंभ पर लगे धम्मचक्र तथा शेर की मूर्ति अधिकांश जगहों पर शायद नष्ट हुई। थायलंड में बने अशोकस्तंभ में धम्मचक्र भी बना दिखाई देता है। स्तंभ पर चार शेर चार दीशाओं में है। अशोकस्तंभ में लगे ये शेर अब सारनाथ म्युजियम में है। इन शेरों के शिल्प** (Lion Capital) **को भारत**

की राजमुद्रा का स्थान दिया गया है। अशोक चक्र को भारत के राष्ट्रध्वज पर केन्द्र में अंकित किया गया है। सम्राट अशोक ने बनाये हुए कुछ स्थल नीचे दिये मुताबिक है :- 1) सांची स्तुप मध्य प्रदेश, 2) धामेक स्तुप सारनाथ, उत्तर प्रदेश, 3) महाबोधी विहार, बिहार, 4) बाराबार गुफाएं, बिहार 5) नालंदा विश्वविद्यालय के सारीपुत्र स्तुप इ. हिस्से, बिहार 6) तक्षिला विश्वविद्यालय के हिस्से जैसे कि धर्मराजिका स्तुप तथा कुनाल स्तुप, पाकिस्तान 7) भीर माउंड पूर्ननिर्मित, तक्षिला पाकिस्तान, 8)भारहट स्तुप, मध्य प्रदेश 9) देओरकोथार स्तुप मध्य प्रदेश, 10) बुटकारा स्तुप, स्वात पाकिस्तान, 11) सन्नाती स्तुप, कर्नाटक इ. है जो ज्ञात है। (http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great.htm)

चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग के मुताबिक बुध्द ने बंगला देश के कई भागों में भेंट दी थी। उनके मुताबिक सम्राट अशोक ने बंगाल तथा ओरिसा में कई जगहों पर बुध्द की स्मृति में उन जगहों पर स्तुपों का निर्माण किया। शिलालेखों के मुताबिक सम्राट अशोक के कार्यकाल में तथा मौर्य वंश के बाद में भी बंगाल में बौध्द धम्म का गहरा प्रभाव था। महास्थानगढ जिला बोगरा में ब्राह्मी लिपि में पुन्द्रानगर नाम अंकित किया आलेख, कई मौर्यकालीन सिक्के तथा दिगर वस्तूएं मिली है। इससे पता चलता है कि गंगा का डेल्टा क्षेत्र मौर्य साम्राज्य के अधिन था। चीनी प्रवासी ई-त्सींग (I-tsing) ने अशोक के स्तुपों को ताम्रलिप्ती (Tamluk) तथा कर्णसुवर्णा (आधुनिक बर्दवान तथा मुर्शीदाबाद जिले प. बंगाल), पुन्द्रावर्धन (उत्तर बंगाल) तथा समताता (बंगला देश में) इ. स्थलों में देखा था। अशोक के शासनकाल में भागीरथी-हुगली नदी पर बना बंदरगाह ताम्रलिप्ती महत्वपूर्ण स्थान रखता था। महांसा के मुताबिक यहीं से ही बौध्द धम्म का प्रसार-प्रचार करने बौध्द समूह श्रीलंका तथा अन्य देशों की ओर समुद्र मार्ग से गए।(http://www.experiencefestival.com//Buddhism in Bangladesh - History - Encyclopedia II _ Global Oneness.htm) सम्राट अशोक ने अपने संपूर्ण साम्राज्य में कुल मिलाकर 84,000 स्तुपों का निर्माण किया है।(http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great.htm) सम्राट अशोक के गौण स्तंभादेश के मुताबिक 'अपने राज्याभिषेक के 20 साल बाद देवप्रीय सम्राट प्रीयदर्शी ने इस स्थल को भेंट दी और उसकी पूजा की क्योंकि यहां बुध्द का जन्म हुआ था। उन्होने यहां एक शिल्प तथा एक स्तंभ कायम किया क्योंकि यहां लुंबिनी गांव में बुध्द का जन्म हुआ था। इस गांव को करों से मुक्त किया जाता है और उसे सिर्फ अपनी उपज का आठवा हिस्सा देना होगा।(Minor Pillar Edict Nb1 (S. Dhammika), http://en.wikipedia.org/Edicts of Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ब्राह्मण अंधकार युग में बौध्द तथा जैन धर्मस्थलों का विध्वंस !

कर्नाटक के हुबली के जैन मंदिर में पांच जीनाओं की मूर्तियां थी। इस मंदिर पर ब्राह्मणों ने कब्जा करने के बाद मूर्तियों को काटकर उसे शिवलिंगों में बदल दिया। नारा के शासन में हजारों बौध्द मोनेस्ट्रीज को जला दिया गया। हजारों गांव जो इन मोनेस्ट्रीज को मदद करते थे ब्राह्मणों के कब्जे में दिये गए। कम से कम दो पल्लव शासक सिंहवर्मा तथा त्रिलोचन बढ चढकर श्रीपर्वत तथा धन्यकटका के बौध्द स्थलों के विध्वंस में लगे थे। बौध्द धर्मस्थलों पर कब्जा करने के बाद उन्हे शिव तथा विष्णु के मंदिरों में बदल दिया गया। ध्वस्त किये गए बौध्द स्थलों पर ब्राह्मण धर्म के मंदिर खडे किये गए।

बुर्ध्दाकपा के आधार पर 12 वी शताब्दी की इबारत तमिल में लिखी पाई गई। यहां

नागापम्मनम में अब ब्राह्मणों का गांव है। एस. कृष्णमूर्ति अय्यंगर के मुताबिक बौध्द मोनेस्ट्री को ध्वस्त करने के बाद उसकी जगह पर यह ब्राह्मणों का गांव खडा किया गया।

पांडया राजाओं की राजधानी माधूर बौध्दों का केन्द्रस्थल था। मधुराईकुंची नामक ग्रंथ जो तमिल साहित्य के संगम के अंतिम काल में तमिल में लिखा गया था के मुताबिक शहर में कई बौध्द मोनेस्ट्रीज थी। ह्युएन त्सांग ने यहां सातवी शताब्दी में भेंट दी थी। उन्होने देखा की सम्राट अशोक व्दारा निर्मित मोनेस्ट्री ध्वस्त हालात में थी। इसके पास ही महिन्द्र थेरा व्दारा निर्मित विहार के ध्वस्त अवशेष पडे थे। तामिल साहित्य में इन मोनेस्ट्रीज के बारे में कोई उल्लेख नही है।

पत्थर की गुफाओं के भीतर जहां बौध्द भिख्खु रहते थे, ब्राह्मी अक्षरों से लिखी इबारतें पाई गई है। पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में रावलपिंडी जिले में तक्षिला एक महत्वपूर्ण नगर था। यह नगर पुरातत्व विभाग की दृष्टी से भी बेहद महत्वपूर्ण है। बाद में लिखे गये साहित्यों में प्राप्त उल्लेखों से पता चलता है कि तक्षिला कम से कम ईसापूर्व पांचवी शताब्दी के पहले से बसा था। डी.डी. कौसंबी के मुताबिक तक्षिला का संबंध प्राचीन भारत के प्रसिध्द तक्षक नाग वंश के लोगों से है। तक्षिला के बारे में जातक कथाओं में भी बताया गया है। ह्युएन त्सांग ने तक्षिला को 630 तथा 643 ईसवी में भेंट दी और इस शहर का ताचाशिलों के नाम से उल्लेख किया है। उस वक्त यह शहर विध्वंस की हालत में था।

लगभग इसवी 460–470 में हेफथलाईटस् लोगों ने गांधार तथा पंजाब पर आक्रमण कर व्यापक पैमाने पर तक्षिला के तमाम बौध्द विहार, स्तुप, बौध्द मोनेस्ट्रीज इ. को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद इनका कभी पूर्ननिर्माण नही किया जा सका।

लखनपाल के बदायु शिलालेख के मुताबिक वेडामयुटा आने के पहले वरामसीवा नामक शैव पंथ के ब्राह्मणवादी साधू ने दक्षिण की (Dakshinapatha) एक बुध्द की मूर्ति का विध्वंस किया।(Epigraphia Indica vol.1, Page 63) चालुक्य राजाओं की 1184 ईसवी में लिखे शिलालेख के मुताबिक महामंडलेश्वर विरुपरसदेवा नामक बडे जमींदार को उसने परियालिगे, अनिलेवड,उनुकाल्लु, संपागडी, इब्बालुरु, मारुडिगे, अनामपुर, काताहाडा , केम्भावी, बाम्माकुरु इ. जगहों पर जैन तथा बौध्द धम्म के खिलाफ चलाये हिंसक अभियानों से उसे 'जैन-धर्म के जंगल की आग', 'बौध्द धम्म का विध्वंसक', 'जैन धर्मस्थलों का विध्वंसक' तथा 'शिव-लींग का स्थापनकर्ता' कहा गया।(Annual report of the archaeological survey of India 1929-30 Page 171)

मान. जयप्रकाश के मुताबिक केरल के अंबालापुझहा, कारुनागपल्ली, पाल्लीक्कल, भरानिक्कवू, मावेलिकारा तथा नीलमपेरुर इ. जगहों पर बडी तादाद में बुध्द की मूर्तियां प्राप्त हुई है। ये मूर्तियां तोड दी गई है और विहारों से बाहर फेंक दी गई है। साबरीमाला का भगवान अय्यपा तथा थीरुवनंतपूरम का भगवान पदमनाभ् जिसकी विष्णु के रुप में पूजा की जाती है वे मूर्तियां वास्तव में बुध्द की मूर्तियां है।

मिहिरकुल ने गांधार, पंजाब तथा कश्मीर में 1600 विहारों, स्तुपों तथा मोनेस्ट्रीज का विध्वंस किया। 9 कोटी बौध्दों को मार डाला। पुष्यमित्र इ. ब्राह्मणवादी राजाओं व्दारा बौध्द धर्मस्थलों के विध्वंस बहुत बडी तादाद में पुरातत्वीय सबूत मौजूद है। आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के पी. के. जोशी के मुताबिक ऐसा लगता है कि पुष्यमित्र श्रंग ने देवरकोथार (Deorkothar) स्तुप का विध्वंस किया। स्तुप की तिन स्तरीय बाड (railing) स्तंभ छोटे छोटे तुकडों में टूटे हुए है। यह नैसर्गिक विध्वंस नही है।

(SOURCE: http://www.archaeology.org/online/news/deorkothar/index.html; A Guide To The Sculptures In The Indian Museum, Pt.I N. G. Mazumdar, 1937 Ed., Page 13) सांची तथा कौसंबी बौध्द स्तुपों का विध्वंस पुष्यमित्र शुंग के काल का है।(The Penguin History of Early India from the origins to AD 1300, Romila Thapar, 2002 Edition, Pg. 210) डॉ. जयप्रकाश के मुताबिक पुष्यमित्र शुंग ने सम्राट अशोक व्दारा निर्मित 84,000 बौध्द स्तूपों को ध्वस्त कर दिया था। इसके बाद मगध के बौध्द स्थलों का विध्वंस किया गया। राजा जलालुका ने इस बहाने राज्य के बौध्द विहारों को ध्वस्त किया कि बौध्द प्रार्थना से नींद में खलल पडता है। कश्मीर में राजा किन्नर ने ब्राह्मणों को खुश करने हजारों बौध्द स्थलों को ध्वस्त किया और बौध्द गांवों पर कब्जा कर लिया। (http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

यह बताया गया कि उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में मौजूद ध्वस्त अवशेष बौध्द शहरों के है। इन्हे ब्राह्मणों ने बौध्दों को परास्त करने के बाद जलाकर नष्ट कर दिया था। उत्तर भारत के कुछ शिलालेखों, दस्तावेजों तथा पुराणों के उध्दहरणों से बौध्दों के दमन के सबूत प्राप्त होते है। तिब्बती पारंपारिक विश्वास के मुताबिक कालाचुरी राजा कर्ण ने 11 वी शताब्दी में मगध के बौध्द विहारों तथा मोनेस्ट्रीज को ध्वस्त कर दिया था।

13 वी शताब्दी के अल्वर (Alvar) के दस्तावेज के मुताबिक ब्राह्मणवादी कवि संत तिरुमायेकाई (Tirumaekai) ने नागापट्टिनम स्तुप की बुध्द की बहुत बडी सोने की तस्वीर चुराई तथा उसे पिघला कर उसका इस्तेमाल ब्राह्मण धर्म स्थल के लिये किया।

कर्नाटक में शिलालेख के तथा चेन्नबसव पुराण (Cennabasava Purana) के उल्लेख के मुताबिक 1160 इसवी में अब्लुर (Ablur) में एकांटडा रमैय्या ने जैनों को कथित चर्चा में परास्त करने के बाद जैन धर्म स्थल को ध्वस्त कर दिया।

काच्चिक्कुनयानर कोविल के बौध्द विहार को इतनी बुरी तरह से ध्वस्त किया गया कि उसके सारे अवशेष नष्ट कर दिये गए। यह शिलालेख मौजूद है कि वहां की जमीन बौध्द विहार के लिये दान में दी गई थी। बुध्द मूर्तियों को तोडा गया, विहारों को ध्वस्त किया गया, तथा वहां के पत्थरों तथा शिल्पों का इस्तेमाल निजी घरों तथा इमारतों की बुनियाद तथा दीवार बनाने में किया गया।

सैंकडों बुध्द मूर्तियों को, स्तुपों को तथा विहारों को इसवी 830 तथा 966 में ब्राह्मण धर्म के पूर्नरुत्थान के नाम पर ध्वस्त किया गया। इसके ढेर सारे पुरातत्वीय सबूत है। विदेशी साहित्य में इनका उल्लेख है। शंकराचार्य सहित तमाम ब्राह्मणवादी राजा, संत इ. बौध्द धर्मस्थलों के विध्वंस में तथा बौध्दों के उन्मुलन में गर्व अनुभव करते थे।

डॉ. जयप्रकाश के मुताबिक केरल में सैकडों जगह है जिनके नाम के आगे या पिछे पल्ली (palli) लगा हुआ है। मसलन करुनागपल्ली, कार्थिकापल्ली, पल्लीक्कल, पल्लीपुरम, इडापल्ली इ. इन जगहों के चंद उदाहरण मात्र है। पल्ली शब्द का अर्थ बौध्द विहार होता है। केरल में 1200 सालों की बौध्द परंपरा रही है। केरल में ईसाई तथा मुसलमान पल्ली शब्द का इस्तेमाल अपनी चर्च तथा मस्जिद के लिये करते है। बौध्द विहार शिक्षा के केन्द्र होते थे इसलिये शायद केरल में मलयालम भाषा में स्कूलों को इझहुथुपल्ली (Ezhuthupalli) या पल्लीकुडाम (Pallikoodam) कहा जाता था।

ईसवी 900 तक तामिलनाडू से बौध्द धम्म तथा जैन धर्म का लगभग सफाया किया जा चुका था। कर्नाटक और केरल ही ऐसे दो राज्य थे जहां बौध्द तथा जैन धम्म अबतक

जींदा था। पांडया राजाओं ने ईसवी 900 में केरल में ब्राह्मणों को बसाया। शायद ऐसा इसलिये किया गया था ताकि इन बचे हुए क्षेत्रों से बौध्द धम्म और जैन धर्म का पूरी तरह से उन्मूलन हो जाये। प्रोफेसर बदरुद्दिन के मुताबिक बहुत कम लोग जानते है कि केरल में इसवी 1200 तक बौध्द तथा जैन धम्म मौजूद थे। 15 वी शताब्दी के बाद खासकर युरोपियन लोगों के आने के बाद बौध्द धम्म के अवशेष गायब हो गये।

बौध्द तथा जैन धर्मस्थलों का ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में जबरन रुपांतरण !

(इस उप अध्याय में काफी सामग्री Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum के वेब पेज से भी ली गई है।)

ब्राह्मणों ने बौध्द भिख्खुओं को उनके बौध्द विहारों तथा मोनेस्ट्रीज इ. से भगा दिया और इनको ब्राह्मण धर्म के स्थलों में जबरन रुपांतरित कर दिया। ब्राह्मणों ने लोगों को बताया कि मुस्लिम हमलों से बचने के लिये ब्राह्मण देवि-देवताओं की स्थापना करना जरुरी है। अयोध्या, साबरीमाला, तिरुपति, बद्रीनाथ, तथा पूरी में ही कम से कम 1000 बौध्द धार्मिक स्थलों को ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में रुपांतरित किया गया। बुध्द गया के महाबोधी बौध्द विहार तथा कुशीनगर में बुध्द के स्तुप को ब्राह्मणों ने अपने धर्मस्थलों में तब्दिल कर दिया। कुशीनगर में बुध्द का महापरिनिर्वाण हुआ था जिसके उपलक्ष में यह स्तुप बना था। ब्राह्मणों ने वहां रंभार भवानी का मंदिर बनाया। ब्रिटिश पुरातत्व वैज्ञानिक कनिंघम ने इस स्थल को 1860-61 इसवी में खोजा। बुध्द की मूतियों, तस्वीरों को तोड कर, विद्रुप कर बौध्द धर्मस्थलों को ब्राह्मण धर्म के स्थलों में बदलने का सिलसिला 16 वी शताब्दी तक बदस्तुर चलता रहा। पुरी का प्रसिध्द जगन्नाथ मंदिर भी बौध्द विहार था। गया का विष्णुपद मंदिर भी बौध्द विहार था। इन बातों का उल्लेख राजेन्द्रलाल मित्रा ने अपने 1878 ईसवी में लिखे प्रसिध्द साहित्य में किया है। गया में बुध्द के पद चिन्हों को विष्णु के पद चिन्ह करार देकर विष्णुपद मंदिर नाम दिया गया। (http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee News.htm)

मानिमेखलाई नामक बौध्द भिख्खुणी अपने जीवन के आखरी वर्षो में तिरुप्पडीरीप्पुलियुर (Tiruppdirippuliyur) शहर में रहती थी। आज भी वहां एक मनिमेखाली अम्मान कोविल नामक ब्राह्मण धर्म का मंदिर है जो वास्तव में बौध्द विहार था।

मान. डॉ. के. जमनादास के मुताबिक भगवान वेंकटेश्वर का मंदिर पूर्व का बौध्द स्थल है :- 1) मूर्ति वास्तव में बौध्द मूर्ति है जिसपर बाद में हथियार बनाये गए। यह मूर्ति विष्णु की आकृतियों से मेल नही खाती बल्कि यह पदमपानी से मिलती है। 2) यह क्षेत्र आदिवासी बौध्दों व्दारा आबाद था। 3) मामुलनार के समय में यह मूर्ति वहां नही थी लेकिन पर्वत पर श्रावण में उत्सव होता था जो कि एक बौध्द परंपरा थी। 4) परंपरागत रुप से 'मौनी गुरु' तथा 'स्वँय निर्मित' बहाने गढकर ब्राह्मणों ने इस बौध्द स्थल पर कब्जा किया। 5) थिरुमलाई के आरंभिक विष्णु मंदिरों की सूचि में इस स्थल का नाम नही है जबकि इससे चंद मिलों की दूरी पर स्थित मंदिरों के नाम शामिल है। 6) थिरुमलाई उस वक्त ब्राह्मण धर्म के लिये जरा भी महत्वपूर्ण नही था। 7) अल्वरों व्दारा उसकी विष्णु के रुप में पूजा करने मात्र से वह विष्णु की मूर्ति नही बन जाती। 8) थिरुमलाई में किये जाने वाले मुंडन बौध्द परंपरा की अभिव्यक्ति है। 9) रथयात्रा भी बौध्द परंपरा है। 10) मंदिर के भीतर शुद्रों की मौजूदगी इस बात को स्पष्ट करती है कि यह पिछडी जातियों का धर्मस्थल था। 11) पिछडी जाति के देवता अलमेल मांगाई

के रुप में विष्णु से काफी देर बाद इसे संबंधित करने की कोशिश की गई। 12) इस धर्मस्थल का जिर्णोध्दार अगम नियमों के मुताबिक किया गया।(Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum)

विवेकानंद के मुताबिक पुरी का जगन्नाथ मंदिर पूराना बौध्द विहार था। हमने इसके सहित दिगर बौध्द स्थलों पर कब्जा किया और उन्हे ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में रुपांतरित कर दिया। हमें और भी ऐसा ही करना बाकी है। (Joshi L. M.: 1977: 351) इस मंदिर के भीतर भगवान नारायण पदमासन में बैठे है और उसके दो हाथ योग मुद्रा में है। यह 3 फीट उंची प्रतिमा काले सालिग्राम पत्थर से बनी है। एल. एम. जोशी के मुताबिक यह प्रतिमा वास्तव में बुध्द की प्रतिमा है।(Joshi: 1977: 351) यशेमतिमालिका नामक ग्रंथ से स्पष्ट है कि मुकुंददेव के 41 वर्ष के राज के अवसर तक जगन्नाथ को बुध्द ही माना जाता था। लामा तारानाथ के मुताबिक मुकुंददेव बुध्द का बडा अनुयायी था। पुरी के जगन्नाथ मंदिर के पिछे विशाल पत्थर पर बुध्द की प्रतिमा भूमिस्पर्श मुद्रा में है। इस प्रतिमा के आगे एक बडी दीवार बनाई गई है ताकि लोगों को जगन्नाथ मंदिर की बौध्द स्थल के रुप में असलियत उजागर ना हो। शायद उसी समय से जगन्नाथ को गुप्त बुध्द समझने की परंपरा शुरु हुई।

बौध्द और जैन दोनों ही धर्मो का ब्राह्मणों ने क्रूरता से उन्मूलन किया। शंकराचार्य ने बौध्द मोनेस्ट्री की जगह पर श्रंगेरी मठ की स्थापना की। आज के प्रसिध्द ब्राह्मण ध र्म के तिरुपति बालाजी, महाबलिपुरम, सोमनाथ, जगन्नाथ पुरी, अमरनाथ इ. मंदिर मूलतः बौध्द धर्मस्थल है जिन्हे जबरन ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में रुपांतरित किया गया। रुपांतरित किये गये कई धार्मिक स्थल जैनों के भी थे। ब्राह्मणों ने पंढरपुर के बौध्द स्थल पर जबरन कब्जा कर उसे विठोबा मंदिर घोषित कर दिया।(reference; see "History of Buddhism" by Brahmin scholar Mr. Apte) महाराष्ट्र के पंढरपुर का विठोबा बुध्द है। 1950 के वर्षो में बच्चों को पढाने की अंकों तथा अक्षरों की किताब में ब्राह्मणों के दस अवतारों के चित्र भी दिये होते थे। इसमें बुध्द को नौवा अवतार कहा गया था। बुध्द को दर्शाने के लिये पंढरपुर के विठोबा का चित्र होता था। लोग पंढरपुर के विठोबा को बुध्द मानते थे। आर सी ढेरे (Dhere: 1984: 231) के मुताबिक प्रिंटींग प्रेस पर पंचांग छापे जाते थे। बुध्द के नौवे अवतार के रुप में विठोबा की तस्वीर छापी जाती थी और उसके निचे बुध्द लिखा जाता था। उनके संग्रह में ऐसा एक पंचांग है। उसके बाद की राम सहस्त्र नाम नामक किताब में विट्ठल तथा रुक्मिणी का चित्र गरुड और हनुमान के साथ छापा है और उसके निचे बुध्द लिखा है। वे ऐसे शिलालेखों को जानते है जिनमें विट्ठल को दसवे अवतार के रुप में बुध्द करार दिया गया है। ऐसा एक शिलालेख सांगली जिले में तासगांव के गणेश मंदिर में है। दूसरा शिलालेख कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर में है।

बुध्द के अवतार के रुप में रत्नागिरी के राजापूर में तस्वीर है। भले ही वह जीर्ण अवस्था में है लेकिन उसे विट्ठल के रुप में पहचाना जा सकता है। डॉ. अम्बेडकर ने भी विठोबा को बुध्द साबित करने के लिये एक किताब लिखनी शुरु की थी। ब्राह्मण ों ने पुंडलिक तथा विट्ठल के बीच संबंध जोडने के लिये काल्पनिक कथाएं गढ ली। (Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum) शंकराचार्य ने बडे पैमाने पर बौध्दस्थलों को ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में बदला है। आंध्र प्रदेश का चेझराला तथा तेर के चैत्य है अब क्रमशः शिव तथा विष्णु मंदिर बनाये गए है। आसाम के गोहाटी के साल कुसा में माधव मंदिर एक समय प्रसिध्द बौध्द धर्मस्थल था।(http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee

News.htm) शंकराचार्य के अधिन सशस्त्र हमलावर दल होता था। उसने इनकी मदद से गया के महाबोधी बौध्द विहार पर कब्जा किया। बडी तादाद में बौध्द विहारों, मोनेस्ट्रीज तथा स्तुपों का विध्वंस किया। शंकराचार्य ने अपने समर्पित ब्राह्मणों के हमलावर दल के साथ हिमालय में ब्रद्रिनाथ के बौध्द धर्मस्थल को कुच किया। शंकराचार्य की हिंसा का इतना ज्यादा खौफ था कि उसके आने की खबर सुनते ही वहां के बौध्द फौरन तिब्बत भाग गए। शंकराचार्य ने इस तरह बडी आसानी से बद्रीनाथ बौध्द धर्मस्थल पर कब्जा किया। बद्रीनाथ के ऐतिहासिक महत्व से शंकराचार्य ने उसे ब्राह्मण धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र प्रचारित किया। यही काम पुरी के जगन्नाथ मंदिर, श्रंगेरी तथा तिरुपति के बौध्द स्थलों के साथ प्रचारित किया गया। शंकराचार्य ने देश भर में घुमकर बौध्द स्थलों का विध्वंस किया तथा बौध्द स्थलों को ब्राह्मण धर्म के मठ, मंदिर, इ. स्थलों में रुपांतरित किया। उसने उत्तर में बद्रिनाथ, श्रंगेरी तथा कांचिपुरम को दक्षिण में, पुरी को पूर्व में तथा पश्चिम में व्दारका को अपने हिंसक अभियान के मुख्य केन्द बनाये। ब्राह्मणों के अंधकार युग में क्रूर हिंसा से बौध्द धम्म का उन्मूलन किया गया। शंकराचार्य व्दारा बौध्द धम्म के हिंसक उन्मुलन से स्थापित ब्राह्मण धर्म संस्कृति को ब्राह्मण जवाहरलाल नेहरु ने भारत में 'सांस्कृतिक एकता' और 'सामान्य भारतीय चेतना' का उदय करार दिया है, क्योंकि अब भारत ब्राह्मण राज्य में तब्दिल हो गया था। (http://shaheed-khalsa.com/ shaheedkhalsa.com.htm)

आठवी शताब्दी में राजा हिमासिताला बौध्दों का समर्थक था। कांची में कमक्रियाम्मन नामक महायान बौध्द धम्म का स्थल था जो तंत्रयान की देवता तारा को समर्पित था। भारत के पुरातत्व वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्राह्मणों ने इसे ब्राह्मण धर्म के मंदिर में तब्दिल किया। आज भी कोविल में बुध्द की प्रतिमायें है। वहां बुध्द की सत्तन नामक खडी आकृति है। सत्तन यह शब्द पाली के 'सत्तह' शब्द का अपभ्रंष है। सत्तह का अर्थ शिक्षक है जो कि कि बुध्द है। बौध्द प्रार्थना में भी 'सत्तह देव मणुष्यानम' इ. उल्लेख है। लेकिन ब्राह्मणों ने यह कहानी गढ ली कि सत्तन यह उनकी ब्राह्मण देवी कमुरीयम्मन का बेटा था। कांचीस्वरा कोविल, इकमबारेश्वरा कोविल तथा कुरुकनिल अमारांडी कोविल एक समय के बौध्द स्थल थे। यहां की बुध्द आकृतियों को भी हिन्दू देवताएं करार दिया गया।

जावा के 14 वी शताब्दी के एक प्रसिध्द कवि के मुताबिक कांची में 13 बौध्द मोनेस्ट्रीज थी। {बुध्द को विष्णु का अवतार प्रचारित किये जाने से} बौध्द धम्म तथा वैष्णव धर्म को इस कदर मिला दिया था कि उन्हे अलग करना कठिन था। इसी के चलते बडी तादाद में बौध्द धम्म के स्थल वैष्णव धर्म के स्थलों में जबरन बदले गए और बुध्द की तस्वीरों तथा मूर्तियों को बेशर्मी से काल्पनिक हिन्दू देवताओं के नाम दिये गए। जोशी के मुताबिक शंकराचार्य ने श्रंगेरी मठ को बौध्द मोनेस्ट्री पर बनाया है।(Joshi: 1977)

ब्राह्मणों ने बौध्द मोनेस्ट्रीज पर कब्जा करने के बाद उन्हे 'लांजा डेब्बालू' यानि वेश्याओं की पहाडी ऐसा नाम दिया। इक्शावकु राजवंश के चांटा मुल्लुडू ने बौध्द मोनेस्ट्रीज को ब्राह्मण कर्मकांडों के मंदिरों में तब्दिल कर दिया। यही काम पल्लव राजाओं ने किया। उन्होने विजयपुरी की बौध्द मोनेस्ट्रीज को ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में रुपांतरित कर दिया। आज के अधिकांश ब्राह्मण धर्म के मंदिर, मठ इ. पूर्व के तमिल बौध्द तथा जैन लोगों के धर्म-स्थल थे। पुरातत्वीय सबूत उपलब्ध है कि कांचिपुरम का वरदराजा मंदिर पूर्व का बौध्द धर्मस्थल था जिसे अरुलाला पेरुमल के नाम से बुध्द को समर्पित किया गया था। अंदर के बौध्द मूर्तियों के शिल्पों को दीवार का निर्माण कर छुपा दिया गया है और ब्राह्मण देवताओं की स्थापना पहली मंजील पर की है। कांचीपुरम के कामाक्षी मंदिर

और इकांबरेश्वर मंदिर भी बौध्द अथवा जैन धर्मस्थल थे। इसका पता पेरीयार ई. वी. रामासामी नायकर लगा रहे थे।(Man and Religion by Periyar, p. 36)

बौध्द धर्मस्थलों पर ब्राह्मणों के कब्जे को पुख्ता करने के लिये पुराणों में झूठी कहानियां गढी गई। तिरुपति, अैहोले (Aihole), उन्डावल्ली, एल्लोरा, बंगाल, पुरी, बद्रिनाथ, मथूरा, अयोध्या, श्रींगेरी, बुध्दगया, सारनाथ, दिल्ली, नालंदा, गुडीमल्लाम, नागार्जनकोंडा, श्रीसैलाम, तथा साबरीमाला के मंदिर पूर्व के बौध्द तथा जैन धर्म स्थल थे, जो कि चंद उदाहरण मात्र है। अहीर के मुताबिक 'बुध्द के ज्ञान-प्राप्ति की जगह पर सन 1952 तक ब्राह्मण महंतों का कब्जा था। कुशीनारा जहां बुध्द का महापरिनिर्वाण हुआ, का बौध्द स्तुप ब्राह्मण धर्म के मंदिर में बदला गया है। उपर रंभार भवानी का मंदिर बना है। इस बौध्द स्थल की खोज कनिंघम ने 1860-61 इसवी में की।(http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

ई. एस. ओकले (in his 'Holy Himalaya') तथा रिस डेविस (in 'Buddhist India') तथा डेनियल व्राईट (Daniel Wright) ने अपनी किताब '' (History of Nepal) में कई नेपाली तथा कुमाउं के दस्तावेजों के हवाले से कहा है कि भारत के हिमालय के संपूर्ण क्षेत्र में बौध्द धम्म मुख्य धम्म था तथा बद्रिनाथ, केदारनाथ बौध्द धम्म के केन्द्र स्थल थे। शंकराचार्य (88 -820 AD) ने उनपर जबरन कब्जा किया। उन्हे ब्राह्मण धर्म के शिव तथा विष्णु मंदिरों तथा मुख्य केन्द्रों में रुपांतरित किया। श्री के. ए. एन. सास्त्री के मुताबिक अैहोले का दुर्गा मंदिर पूर्व में बौध्द चैत्य था। (Sastri:1966:451) के. आर. श्रीनिवासन के मुताबिक अनंतसायनगुडी का गुफा-मंदिर बौध्द धर्मस्थल है। एलोरा की गुफा क्रमांक 15 बौध्द धर्म का स्थल था। ब्राह्मणों ने उसे अपने धर्मस्थल में रुपांतरित कर दिया।(Sreenivasan:1971:72) यझदानी के मुताबिक गुफा क्रमांक 15 जिसे अब दसावतारा कहा जाता है वास्तव में बौध्द विहार था। वहां की बुध्द प्रतिमा को भले ही विद्रुप करने की कोशिश की गई है लेकिन कई हिस्सों में बुध्द की आकृतियों को देखा जा सकता है।(Yazdani :1960 :754) आंध्र प्रदेश के अमारमा (Amaravati) के बौध्द धर्मस्थल को विष्णु के अवतार के रुप में पूजा जाता रहा है। अन्य 4 क्षेत्र भीमापुरा, डाकारेमी, पालाकोलानु तथा ड्राकश्रमा बौध्द धम्म के प्रसिध्द केन्द्र थे। उन्हे ब्राह्मण धर्मस्थलों में रुपांतरित कर दिया गया।(Yazdani :1960 :500) बुध्द की प्रतिमाओं को दोबारा छील कर ब्राह्मण देवि-देवताओं की शक्ल देना ब्राह्मणों की बौध्द धर्म स्थलों को हडपने की व्यापक तकनीक थी। वैष्णव तथा शैव दोनों ने एक होकर यह काम किया जबकि बाकी मामलों में इन पंथों में तीव्र मतभेद थे। एलोरा की 1115 क्रमांक की गुफा में एक दीवार पर वैष्णवों ने जबकि दूसरी दीवार पर शैवों ने कब्जा किया है। बंगाल के कई प्रांतों में आज भी बुध्द की प्रतिमाओं को शिव तथा विष्णु के रुप में पूजा जाता है।(Majumdar R.C.: 1966: 402)

मथुरा स्थापित प्राचीन बौध्द केन्द्र था जहां 9 वी शताब्दी तक बौध्द धम्म समृध्द था। वह बौध्द धम्म का इतना महत्वपूर्ण केन्द्र था कि बौध्द प्रतिमाएं बनाने की बौध्द कला को मथुरा बौध्द कला के नाम से जाना जाता था। बुध्द ने मथूरा को भेंट दी थी। मिलिन्द प्रश्न में मथुरा को बेहद महत्व दिया गया है। उपगुप्त मथुरा में रहता था और वहां उसने बहुत बडी बौध्द मोनेस्ट्री कायम की थी जो 7 वी शताब्दी तक कायम थी। मथुरा में उपगुप्ता ने 18 हजार लोगों को बौध्द भिख्खु बनाया था। प्रसिध्द नर्तकी वासवदत्ता ने बौध्द धम्म कबुल किया था। वह मथुरा की थी। फाहीयान (Fa-Hein)

मथुरा को मोरों का नगर कहता था जहां बौध्द धम्म खूब फलफूल रहा था। ह्युएन त्सांग के मुताबिक मथुरा 20 ली के दायरे में था। वहां अशोक ने तिन स्तुप बनाये थे। वहां 20 बौध्द मोनेस्ट्रीज थी। वहां दो हजार बौध्द भिख्खु थे। (Dave: 1970: 88)

भूतेश्वर महादेव का मंदिर बुध्द के शिष्य सारीपुत्त के नाम से बौध्द स्तुप था। केशव देव मंदिर यश विहार नामक बौध्द मोनेस्ट्री थी।(Dave: 1970: 90) अयोध्या तथा बंसी में शिव लिंग के हिस्से बुध्द शिल्पों से बनाये गये यह बात विख्यात है। एल. के. शर्मा के मुताबिक भुवनेश्वर के पास बुध्दीस्ट धौली (प्राचीन तोसाली, कलींग की राजधानी) के निकट एक शिवलींग है। यह भास्करेश्वर नामक शिवलिंग असामान्य रुप से उंचा है। इसकी उंचाई पौने तीन मीटर उंची है जबकि उसका तल पर दायरा 3.70m इतना है। उत्खनन के बाद पाया गया कि वह जिस आधार पर रखा है उसे सम्राट अशोक के स्तंभ के उपरी हिस्से के रुप में पहचाना गया है। अशोक स्तंभ पर बिठाई गई सिंह की मूर्ति करिब के एक गढढे से मिली। अशोक स्तंभों से संबंधित कई शिल्प जैसे कि घंटी की आकृति, यक्ष आकृति इ. भी मिले जिन्हे भुवनेश्वर के राज्य संग्रहालय में रखा गया है।

अशोक की घंटाकृति को ही अयोध्या के नागेश्वरनाथ मंदिर के शिवलिंग का आधार बनाया गया था। पत्थर की घंटाकृति पर मौर्य काल का पॉलिश लगा हुआ था।(Sarma I. K.: 1988: 10) सारनाथ के पास बुध्द की प्राचीन आकृति है जो शिव-संघेश्वर यानि शिव जो संघ का ईश्वर है के नाम से प्रसिध्द है। दिल्ली के पास की एक बुध्द आकृति को बुध्द माता के नाम से पूजा जाता है।

आय. के. सर्मा के मुताबिक महानागर्वत ने बौध्द केन्द्र के रुप में दोबारा ख्याति पहली शताब्दी में हासिल की। कई नये बौध्द गुफा-विहारों (nos. 36, 3, 38 and 39) को कायम किया गया। बाद के शिलालेखों के मुताबिक इनका संबंध महायान-तंत्रयान बौध्द धम्म से था। महानागपर्वत प्राचीन वेंगी (Vengi) देश में 11 वी शताब्दी तक बौध्द केन्द्र बना रहा। उसे शैव धर्म का स्थल बनाया गया। प्राचीन गोलाकार चैत्य को धर्मलींगेश्वर नाम दिया गया और उसके आगे नंदी की मूर्ति स्थापित की गई। इस स्थल को जागृत स्थल करार देकर शिवरात्री के दिन यहां यात्रा का आयोजन किया जाता है।(Sarma: 1988: 85; Some examples of Brahmanic usurpation http://www.ambedkar.org//Chapter 2 - Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine - By Dr. K. Jamanadas.htm)

अयप्पा का मंदिर भी बौध्द स्थल था। केरल में कई मंदिर धर्म सस्ता (Dharma Sasta) के नाम से समर्पित है। आज भी बुध्द को प्रार्थनाओं में सस्ता के रुप में जाना जाता है। इसे अमरकोश में भी कहा गया है कि यह बुध्द का एक नाम है। भले ही देवता बदल दी गई हो उनका नाम कायम रहा है। आरंभिक ब्राह्मणों के धर्म साहित्य में अयप्पा का कहीं नाम नही है। टी. ए. गोपीनाथ राव के मुताबिक यह देवता द्रविड देश के लिये बडी विचित्र है उसे उत्तर गोदावरी में कोई नही जानता। किसी भी आरंभिक संस्कृत किताब में इसके बारे में कोई उल्लेख नही है। शब्दकोषों में भी यह नाम नही है। (Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum)

प्रबोधनकार ठाकरे के मुताबिक बौध्द विहारों में रखी वस्तुएं तथा बौध्द मूर्तियाँ नष्ट की गई और उसकी जगह शंकर के शिवलिंगों की स्थापना की। विहारों में बुध्द मूर्ति में थोडा बहुत परिवर्तन करके उन्हे शंकर की मूर्ति का रुप दिया गया। शंकराचार्य व्दारा रक्तपात से पुर्नरुजीवित की हुई पंडेशाही जैसी जैसी बढने लगी उसी अनुपात में जातिभेद और मंदिरों की संख्या बढने लगी। लोणावला की बौध्द कार्ला लेणी (गुफा) में

एकविरा नामक देवी की स्थापणा की गई। उसे बेहरे की देवी ऐसा भी कहा जाता है। उसके बारे में कहानी गढी गई कि वह पांडवों की बहन है। भीम ने उसके लिए रातों रात यह लेणी तराशी है। दूसरी कहानी में यह परशुराम की माँ रेणुका है। शंकराचार्य के बौध्द धर्म का विध्वंस तथा प्रतिशोध का दंश इतना अधिक जहरीला व खूनी था की आज भी बौध्द धर्म का सरेआम अपमान हो रहा है। बौध्द लेणीयों (गुफाओं) में देवी तथा उग्र देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित की गई और वहाँ जानवरों की बलि चढाकर बौध्द धर्म के करुणा, प्रेम, मैत्री के सिधान्त की धज्जियाँ उडायी जाती रही। (प्रबोध ानकार ठाकरे, p.7-9)

मान॰ कोलते के अनुसार लिंग-पूजा में वैदिक रुद्राध्याय का उपयोग करके भारत के प्रायः सभी लिंग-मंदिरों में शुद्र पूरोहितों की जगह ब्राम्हणों ने जबर्दस्ती हथिया ली। वैदिकेत्तेर देवों, मूर्तियों के तीर्थस्थल भी ब्राह्मणों ने आत्मसात कर लिए। ब्राह्मणों ने अपने देवताओं को फकीरों तक का वेश दिया। (वि.भी. कोलते, p.58, 59, 62, 65,67,88)

जिस वक्त भारत में मुस्लिमों का प्रवेश हुआ तबतक ब्राह्मणों ने बौध्द स्थलों का लगभग सफाया किया था। बहुत कम बौध्द भिख्खु थे। कोई बौध्द धम्मग्रंथ नही बचा था। कोई मूल पाली साहित्य उपलब्ध नही था। बौध्द धम्म के संबंध में कोई दस्तावेज मौजूद नही थे। प्रसिध्द बौध्द भिख्खुओं तक की यादें मिटा दी गई थी। हर तरफ ध वस्त बौध्द धर्मस्थलों के अवशेष बिखरे थे। इसके पत्थर, शिलाएं इ. को निजी निर्माण कामों में धडल्ले से इस्तेमाल किये जाते थे।(http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Brahmayana Buddhism.htm) नालंदा इ. अंर्तराष्ट्रीय सहयोग से चलने वाले विश्वविद्यालय किसी तरह से इस विध्वंस से बचे थे लेकिन वे भी बहुत खस्ता हालत में चल रहे थे।

आज बौध्द स्थलों के इतिहास को तोडा मरोडा गया है। इन बौध्द स्थलों को ब्राह्मण-ध र्म के साथ जोडने के लिये रामायण महाभारत इ. पात्रों के मिथक गढे गए है। ब्रिटीश भारत के और आधुनिक भारत के पुरातत्व वैज्ञानिक सुत्त पीठकों से तथा विनय पिठकों से वाकिफ नही है। इनमें बुध्द तथा बौध्द स्थलों का बुध्द के संपूर्ण जीवन के काल के अनुसार वर्णन है। अपने 45 साल के धम्मप्रचार के दौरान बुध्द भारत में अपने पैरों से चलकर गये। इसका उल्लेख पहली, दूसरी तथा तिसरी बौध्द संगति में भी हुआ है। इनसे अनजान होने से ये पुरातत्व वैज्ञानिक ब्राह्मणों व्दारा आसानी से गुमराह किये गए है। राज्य सरकारें, भारत का पर्यटन विभाग, भारत का पुरातत्व विभाग इन विकृतियों को ठिक करने में रुची नही रखता। भारत तथा श्रीलंका की महाबोधी सोसायटी जो स्वतंत्र संगठन है की भी इन गलतियों को सुधारने में कोई रुची नही है। इसलिये ब्राह्मणों व्दारा विकृत किये गये मनगढंत किस्से ही इन बौध्द स्थलों का इतिहास बनकर ये बौध्द स्थल ब्राह्मण-धर्म का हिस्सा बन गए है। कई बौध्द स्थलों पर तो उसके नाम के फलक तक नही है। (The distorted heritage of Buddhist sites by Rohan L. Jayetilleke.)

ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में ब्राह्मणों ने बेशुमार दौलत इकट्ठा की !

ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में ब्राह्मणों ने बेशुमार दौलत इकट्ठा की। इसे जनता का जीवन खुशहाल बनाने, देश की रक्षा के लिये सुरक्षा-यंत्रणा कायम करने इ. की बजाय ब्राह्मण इन मंदिरों के धन का भौंडा प्रदर्शन करते रहे है। इस धन की प्रसिध्दी विदेशों तक में फैल गई। मंदिरों में पाये जाने वाले विशाल खजानों की कल्पना तिरुपति, पदमनाभन

इ. मदिरों की संपत्ति को देखकर लगाया जा सकता है। इन मंदिरों में रोज भारी तादाद में नगदी, सोना, चांदी जेवरात इ. का चढावा चढाया जाता है।(www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm) भारत के मुसलमान बडी तादाद में अरब देशों में काम करने गये हुए है जो अपनी कमाई की रकम अपने परिवारों को भेजते है जिससे देश को भारी तादाद में विदेशी मुद्रा हासिल हासिल होती है। यह रकम राज्य के बजट के लगभग बराबर होती है। इसलिये मुस्लिम इ. समुदायों के मन में यह सवाल पैदा होता है कि जब उनका इतना बडा आर्थिक सहयोग है तो ब्राह्मण धर्म के मंदिरों में पडी विशाल संपत्ति का सामाजिक उपयोग क्यों नही है ? पदमनाभन मंदिर के खजाने का पूरा ब्योरा अबतक तैयार नही हो पाया है क्योंकि खजाने के और कुछ महत्वपूर्ण विशाल कमरों को अबतक नही खोला गया है। कई लोगों का मानना है कि केरल के थिरुवंनंतपुरम के पदमनाभन मंदिर में जमा दौलत राजा ने इस मंदिर में छुपाई थी। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इस संपत्ति की देखरेख करने के लिये एक अधिकारी नियुक्त किया है। (http://vikashnanjappa.wordpress.com/Temple Wealth _ vikashnanjappa.htm) अकेले इस मंदिर की संपत्ति इतनी विशाल है कि इससे देश विदेशी कर्ज से न सिर्फ पुर्णतः मुक्त होगा बल्कि इस संपत्ति से खुशहाल भी बन सकता है। ब्राह्मण धर्म के बाबा लोग विदेशों में जमा काले धन को लेकर तो बडा शोर मचाते है लेकिन मंदिरों में जमा खरबों रुपयों के बारे में एक शब्द भी सूनना उन्हे बर्दाश्त नही है।

ब्राह्मण-धर्म के राजाओं ने भी मंदिरों की बेशुमार दौलत को लूटा है !

छटवी शताब्दी के धार्मिक ग्रंथ ब्रहतसंहिता में राजा, ईश्वर तथा मंदिर के बीच के संबंध को स्पष्ट किया गया है कि अगर किसी मंदिर का शिव लींग, मूर्ति या चित्र तोडा जाता है, उसे चुराया जाता है, उसे पसीना आता है, या वह बोलता है तो यह राजा तथा उसके राज्य पर आने वाली भारी विपत्ति का संकेत है।(http://www.flonnet.com/Temple desecration in pre-modern India.htm) राज्य के संरक्षित धार्मिक स्थल राजा की राजकीय, आथिक तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतिक थे। लोगों में यह भी मान्यता थी कि मंदिर का देवता राजा तथा उसके राज्य की हिफाजत करता है। मंदिर के विध्वंस से यह स्पष्ट हो जाता था कि राजा की सत्ता को पूरी तरह से खत्म कर दिया गया है।(http://www.flonnet.com/Temple desecration in pre-modern India.htm)

इसलिये परमार राजाओं ने अपने राजनीतिक सैनिक अभियान के दौरान सौराष्ट्र के जैन मंदिरों को ध्वस्त कर दिया। उसने चालुक्य व्दारा अरब व्यापारियों के लिये बनाई मस्जिद भी तोड डाली। जैन तथा अरब व्यापारी चालुक्य राज की आर्थिक सत्ता के लिये महत्वपूर्ण थे। उनके धार्मिक स्थलों का विध्वंस कर गुजरात के लोगों को यह संदेश दिया कि उसमें गुजरात की आर्थिक रीढ को तोडने की ताकत है। (www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm) ईसवी 1752-1753 में त्रावणकोर के मरथंदा वर्मा ने पाथिल्लाथिल पोट्टीमार (Pathillathil Pottimar) के मंदिर पर कब्जा किया और उसकी सारी संपत्ति को लूट कर थिरुवनंतपुरम ले गया।(http://en.wikipedia.org/Sreevallabha Temple - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) ब्राह्मण धर्म के सबसे आरंभिक मंदिर पांचवी इसवी शताब्दी में कश्मीर में बनाये गए। जब भी आर्थिक संकट पैदा होता था तो राजा अपने अधिकारियों को सेना के साथ भेजकर

मंदिरों की दौलत को लूटने का काम करता था। अगर उसे मंदिर का विध्वंस भी करना पडे तो ऐसा किया जाता था। 11 वी शताब्दी में राजा हर्षदेव ने बाकायदा एक मंत्रालय बनाया था जिसके अधिकारियों को 'देव-उत्पातन-नायक' (Deva-Utpatana-Nayakas) कहा जाता था। इनका काम मंदिरों का विध्वंस करना था। कश्मीर के इतिहासकार काल्हाना के मुताबिक राष्ट्रकुट राजा ने प्रतिहारों के खिलाफ कामयाबी हासिल की और अपने विजय पर अधिकारिक मुहर लगाने हाथियों को भेजकर राज्य के मुख्य मंदिरों के हिस्से तुडवा दिये।(www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm) इसवी 642 में पल्लव राजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्य की राजधानी वाटापी से गणेश की प्रतिमा लूटी। इसके पचास साल बाद चालुक्यों ने उत्तरी भारत पर सैनिक कार्रवाई की। वहां के शासक को पराजित किया और गंगा तथा यमूना की प्रतिमाएं लूटकर दक्षिण ले आये। आठवी शताब्दी में बंगाली सैनिकों ने कश्मीर के राजा ललितादित्य के राज्य की देवता विष्णु वैकुंठ की तस्वीर को लूट लिया। पांडया राजा श्रीमारा श्रीवल्लभ ने श्रीलंका पर आक्रमण कर राज्य के महल में स्थापित बुध्द की सोने की तस्वीर लूट ली। 10 वी शताब्दी के आरंभ में प्रतिहार राजा हेरांबपाला ने ठोस सोने की विष्णु वैंकुठ की प्रतिमा कांगरा के राजा को परास्त कर लूट ली। दसवी शताब्दी के मध्य में प्रतिहारों से इसी प्रतिमा को चंदेला राजा यशोवर्मन ने छीना और उसे खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर में स्थापित कर दिया। 11 वी शताब्दी के आखीर में कश्मीर के राजा हर्षा ने मंदिरों को सतत रुप से लूटने की यंत्रणा कायम की। 12 वी शताब्दी के अंत में तथा 13 वी शताब्दी के आरंभ में परमार राजवंश के राजाओं ने गुजरात के जैन मंदिरों को ध्वस्त करने और लूटने का काम किया। ईसवी 1460 के वर्षो में ओरीसा के गजपति सुर्यवंशी राजवंश के संस्थापक कपीलेन्द्र ने कावेरी त्रिभूज प्रदेश में शैव तथा वैष्णव मंदिरों को लूटने का काम किया। ईसवी 1514 में कृष्णदेवराय ने बालकृष्ण की प्रतिमा को उदयगीरी से लूटा। छह साल बाद उसने पंढरपुर पर नियंत्रण कायम किया जहां से उसने विट्ठल की प्रतिमा को लूटा और उसे विजयनगर ले गया। 10 वी शताब्दी के आरंभ में राष्ट्रकुट के राजा इंद्र तृतीय ने अपने दूश्मन प्रतिहारों के कल्पा के निकट यमूना नदी के पास स्थित कालप्रिया के मंदिर को न सिर्फ ध्वस्त किया बल्कि इस घटना को बाकायदा इतिहास में दर्ज करवाया। ईसवी 1579 में मुराहरी राव ने कुतुब शाही के क्षेत्र पर कब्जा किया। प्रसिध्द अहोबिलम मंदिर को लूटकर उसकी रुबी इ. रत्नों से सजी प्रतिमा को गोलकोंडा में लाकर अपने सुल्तान को युध्द के तोहफे के रुप में पेश किया। मुरहरी राव एक मराठी ब्राह्मण था।(http://www.flonnet.com/Temple desecration in pre-modern India.htm) पुरी के जगन्नाथ मंदिर पर 18 बार हमले हुए और उसे लूटा गया क्योंकि इस मंदिर में भारी तादाद में दौलत इकट्ठा होती थी।(Invasions on the Temple of Lord Jagannath, Puri Abhimanyu Dash) सोमनाथ के मंदिर को इसके पहले भी लूटा गया था। ईसवी 722 में सिंध के सुबेदार जुनामाड ने उसपर पहली बार हमला किया और बेशुमार दौलत लूटी। (http://www.shaivam.org/SSomnath Temple History (??????) - Somanath JyotiLing in Veraval Gujarat - Stories.htm) कल्हाना के मुताबिक ब्राह्मण ों को बौध्द धम्म के विनाश के लिये धन की जरुरत थी तो कई राजाओं ने शाही तथा कटोच के मंदिरों के खजानों को लूटा और उन मंदिरों को जला दिया। यह मोहम्मद गजनी के भारत आने के बहुत पहले ही हुआ।

हिन्दू राजाओं ने ब्राह्मण धर्म के मंदिरों की संपत्ति लूटने के लिये मंदिरों का विध्वंस

किया। इसका उदाहरण कश्मीर के राजा हर्षदेव है। विजयी राजाओं ने पराजित राजाओं के मंदिरों को ध्वस्त किया। विशेष समुदाय को मंदिर में आने दिया गया। कुछ जाति-समुदायों को मंदिरों में आने से प्रतिबंधित किया गया। मंदिर किसी खास समुदाय के वर्चस्व का प्रतिक भी थे। (http://www.india-seminar.com/521 Romila Thapar, In defence of history.htm) यह समझना जरुरी है कि औरंगजेब जैसे सम्राट ने एक ओर ब्राह्मणों को मंदिर बनाने के लिये आर्थिक मदद दी वहीं दूसरी ओर उसने दूश्मन राज्यों के मंदिरों को ध्वस्त भी किया। औरंगजेब कोई मनोविकृत नही था जिसे यह नही मालुम था कि उसे मंदिर बनाने है या ध्वस्त करने है। बल्कि यह राजनीति है जिसमें दूश्मन राजाओं के मंदिरों को ध्वस्त कर उसके राजसत्ता के खात्मे पर मुहर लगाई जाती है जबकि खुद के राज्य में मंदिरों का निर्माण कर अपनी प्रतिष्ठा को मजबूत किया जाता है। (www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm)

मुस्लिम राजाओं ने भी मंदिरों की बेशुमार दौलत लूटी है !

सोमनाथ मंदिर अपनी बेशुमार दौलत के लिये मशहूर था। इस मंदिर के पूजारियों की तादाद एक हजार थी। सैंकडों नृत्यांगनाएं {तथा देवदासियां इ.} थी। तरह तरह के रत्नों से जडा शिवर्लीग था। महमूद ने इस मंदिर की बेशुमार दौलत लूटी। मंदिरों की बेशुमार दौलत की ख्याति सुनकर ही मुहम्मद गझनी ने हर साल मंदिरों को लूटने के सैनिकी अभियान चलाये। इसवी 1001 तथा 1026 में मुहम्मद गझनी ने भारत के मंदिरों वाले नगरों पर 17 बार आक्रमण किया। 1026 इसवी में सोमनाथ मंदिर की लूट में उसे 2 करोड दिनार के मुल्य की लूट हासिल हुई। आरंभिक गझनी के शासकों ने भी भारतीय शहरों तथा मंदिरों को लूटा। महमूद गझनी ने हिमाचल प्रदेश के कांगडा के बाजेश्वरी मंदिर को 11 वी शताब्दी में लूटा और मंदिर को ध्वस्त कर दिया। रोमिला थापर के मुताबिक महमूद गझनी को युध्द के लिये दौलत की जरुरत थी और भारतीय मंदिरों में बेशुमार दौलत थी। नगरकोट का मंदिर भी अपनी बेशुमार दौलत के लिये प्रसिध्द था। इसलिये महमूद गझनी ने नागरकोट पर भी हमला किया और उसे लूटा। इस लूट में उसे इतनी ज्यादा बेशुमार दौलत हासिल हुई कि जब वह अपनी राजधानी पहुंचा तो लोग इतनी बेशुमार दौलत देखकर भौंचक्के रह गए। महमूद ने जब थानेसर के मंदिरों की दौलत की ख्याति सुनी तो उसने इसवी 1014 में थानेसर पर हमला किया। उसकी सेना ने तमाम मंदिरों को लूटा। जब महमूद मथूरा पहुंचा तो मंदिर और उनकी दौलत देखकर हैरान रह गया। उसने अनगिनत दौलत लूटी। उसने 1019 इसवी की जनवरी में कनौज पर हमला किया। कनौज का राजा राजपाल प्रतिहार भाग गया और महमूद ने बेशुमार दौलत लूटी। पर्शियन तुर्को ने भी दक्षिण एशिया के मंदिरों की बेशुमार दौलत को लूटा और अपने साथ अफगानीस्तान ले गए। (http://nirmukta.com//Legacy Of Ancient Religions Of India _ Nirmukta.htm; http://www.flonnet.com/Temple desecration in pre-modern India.htm; Mahmud Ghaznavi's 17 Invasions of India [Work in Progress].htm) इसवी 1297 में अल्लाउद्दीन खिलजी ने सरदार अल्ताफ खान को सोमनाथ मंदिर लूटने भेजा। सोमनाथ मंदिर को ईसवी 1478 में मोहोम्मद बेगाडा ने, इसवी 1503 में मुजफ्फर शाह व्दीतिय ने तथा इसवी 1701 में औरंगजेब ने लूटा।(http:// www.shaivam.org/SSomnath Temple History (??????) - Somanath JyotiLing in Veraval Gujarat - Stories.htm) ब्राह्मणी के मुस्लिम शासकों ने 1347 में गोवा के मंदिर

की बेशुमार दौलत लूटी। 14 वी शताब्दी में फिरोज शाह ने भी मंदिरों की संपत्ति लूटी।

भारत से बौध्द धम्म के उन्मुलन के अन्य कारण !

देश विदेश में हैरानी थी कि भारत भर में फैले बौध्द धम्म का भारत से ही नामों निशान कैसे मिट गया ? मुस्लिम आक्रमण के दौरान भ्रष्टतम ब्राह्मण धर्म तो बाकायदा जीवित रहा लेकिन बौध्द धम्म ही क्यों खत्म हुआ ? डॉ. अम्बेडकर ने बौध्द धम्म को समाप्त होने के तिन मुख्य कारण दिये है :- 1) {हर प्रकार के दमन-शोषण का रक्षक होने के नाते} ब्राह्मण धर्म को तमाम शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ, 2) बौध्द भिख्खुओं का एक बार कत्लेआम होने के बाद भिख्खु निर्माण करना मुमकिन नही था क्योंकि बौध्द भिख्खु काफी प्रशिक्षण के बाद तैयार होता है। जबकि ब्राह्मणों को जन्म से ही पूजारियों के कामों का प्रशिक्षण होता है। 3) ब्राह्मण धर्म की प्रताडना से बचने के लिये बौध्द जनता ने इस्लाम तथा ईसाई धर्म कबुल किया।(Dr Ambedkar W&S, vol.3, p.230)

ब्राह्मणों के साथ हुये गुप्त समझौते के तहत बख्तीयार खिलजी ने (सन 1199) ब्राह्मण ों के मार्गदर्शन में निहथ्थे बौध्द भिक्षुओं का कत्लेआम मचाया। बौध्द विहारों, स्तुपों, चैत्यों व पुस्तकालयों को चुनचुनकर नष्ट किया। ''तबाकत ए नासरी'' के अनुसार मुगलों ने ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में नालंदा विश्वविद्यालय, उसके ग्रंथालय तथा बौध्द विहार, स्तुप इ॰ को ध्वस्त किया। बख्तीयार खिलजी ने औदांदापुरी विश्वविद्यालय को नष्ट करके उसके पुस्तकालय को जला दिया। निहथ्थे बौध्द भीख्खुओं का कत्लेआम मचाया। किसी तरह नालंदा विश्वविद्यालय का नौ मंजीला रत्नबोधी का विशाल पुस्तकालय इस विध वंस से बच गया। ब्राम्हणों ने एक यज्ञ करके उसकी चिंगारियों से पुस्तकालय में आग लगाकर इस पुस्तकालय को नष्ट किया। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार नालंदा, विक्रमशिला, जगद्दला, ओदांतापुरी इ॰ के बौध्द विश्वविद्यालयों को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। बौध्द भिख्खु हजारों की संख्या में अपनी जान बचाने के लिये नेपाल, तिब्बत इ॰ जगहों में भाग गये। बौध्द भिख्खुओं की एक बहुत बडी संख्या को मुस्लिम सेनापतियों ने जगह पर ही कत्ल कर दिया। बौध्द भिख्खुओं की हत्या के साथ ही मुसलमान शासकों ने बौध्द धर्म को भारत से समाप्त कर दिया। क्योंकि भिख्खुओं के मरने के बाद बौध्द ध र्म के प्रचार का कार्य पूरी तरह से समाप्त हो गया। भिख्खुओं की दूसरी फौज तुरंत नही बन सकती थी। आक्रमणकारी मुसलमान राजाओं और ब्राह्मणों के डर से किसी ने ऐसी कोशिश भी नही की। (P. 232, Vol. 3) भारत में बौध्द धम्म के विलुप्त होने के गौण कारण कई है। अपनी किताब 'Studies in Buddhistic culture in India' में लाल मनी जोशी ने चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग, ई त्सींग, कश्मीर के इतिहासकार काल्हाना इ. के दस्तावेजों से उदाहरण दिये है। वे कहते है कि बौध्द धम्म कोई एकसंघ समुदाय नही था बल्कि वह आपस में संघर्ष करने वाले अलग अलग बौध्द पंथों का समुच्चय था। बौध्द भिख्खुओं के पंथों में दूश्मनी के स्तर तक विवाद थे। भिख्खुओं के बीच विवाद बुध्द के काल से ही पाये जाते थे। बौध्द भिख्खुओं तथा भिख्खुणियों में भारी पैमाने पर नैतिक पतन हुआ। आरंभिक बौध्द भिख्खु ऐशो-आराम तथा भ्रष्टाचार की ओर झुकाव रखते थे। भिख्खु जादूई टोने-टोटकों से निजी अथवा संघ के नाम पर पैसा कमाने में लगे थे। उनका नैतिक पतन हो चुका था। यह बहुत बडी कमजोरी थी। (http://www.indiatva.com//Buddhism Origin, Spread and Decline _ Indiatva.com.htm) इस कमजोरी की मुख्य वजह भिख्खु संघ के पास भारी संपत्ति तथा साधनों का पैदा होना है। बुध्द के

जीवनकाल में ही भिख्खु संघ को जमीने, फलों के बगीचे तथा इमारतें इ. राजाओं व्दारा दान में दी गई थी। इनकी उपज भिख्खुओं के लिये ऐशो-आराम का साधन थी। संघ के नाम पर दान स्वीकार करने की इजाजत खुद बुध्द ने दी हुई थी, जो कि भिख्खुओं के विलासिता की प्रमुख वजह बन गई। संपन्न भिख्खुसंघ डॉ. अम्बेडकर की उम्मीदों के विपरित है क्योंकि संपन्न भिख्खुसंघ आम लोगों के हितों लिये निरुपयोगी ही नही बल्कि घातक होता है।

मुस्लिम राज की असली वजह
ब्राह्मण-धर्म नियंत्रित निरंकुश ब्राह्मण-राज !

मान॰ आर.एल. चन्दापूरी के अनुसार समानता और एकता पर आधारित बौध्द धर्म के ऱ्हास के साथ ही विभाजित भारत में ब्राह्मणों का अंधकार युग शुरु हुवा।

ब्राह्मणों ने भारत की जनता तथा भारतीय शासकों को विभाजित रखा !

भारत के इतिहास में कभी कोई एकसंघ हिन्दूराष्ट्र यानि ब्राह्मण-राष्ट्र नही रहा है। ब्राह्मणवादी राजाओं में एकिकृत भारत की कभी सोच ही नही थी। इसकी वजह खुद परजीवी ब्राह्मण है जो अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिये एक राजा को दूसरे राजा से लडाने की हालातों को हमेशा कायम रखना जरुरी समझते थे। जो भी राजा ब्राह्मण धर्म के कानूनों पर अमल करने में कोताही बरतता तो दूसरे राजा को उकसाकर इस राजा का तख्ता पलट दिया जाता था। ब्राह्मण धर्म के विरोधी राजा का तख्ता पलटने के लिये ब्राह्मणों ने विदेशी ताकतों तक को भारत पर आक्रमण के लिये आमंत्रित किया है। ब्राह्मणों के लिये अपना वर्चस्व कायम रखना ही सबकुछ है। राष्ट्रीयता, हिन्दूराष्ट्र, इ. बातें सिर्फ ढोंग-पाखंड है। संपूर्ण देश को एकिकृत करना तो दूर खुद ब्राह्मण राजा भी एक-दूसरे के खिलाफ लडते रहे है। शुंग राजाओं ने ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं से लडाईयां की है। ब्राह्मण शुंग साम्राज्य का तख्ता पलटने का काम उन्ही के ब्राह्मण मंत्री कण्व ने किया और ब्राह्मणों का कण्व राजवंश कायम किया।

सिंध पर आक्रमण करने के लिये ब्राह्मणों ने अरबों की किस तरह से मदद की यह एक धोखेबाजी की दास्तान है। इसकी हकीकत अली कुफी व्दारा ईसवी 1216 में लिखे चचनामा में पढने को मिलती है। इस किताब को अरबी से पर्शियन भाषा में रुपांतरित किया गया। इसका अंग्रेजी में भाषांतर मिर्झा कालिचबेग फ्रेडंगबेग ने सन 1900 में किया। आरंभ के भारत पर मुस्लिम आक्रमण कामयाब नही हुए। लेकिन जैसे ही ब्राह्मणों ने अरबों से हाथ मिलाया तो हालत एकदम बदल गए। राजा चच के पहले तथा उसके बाद में भी ब्राह्मण उच्च पदों पर काबिज थे। उन्होने अरबों के गुप्तचरों के तौर पर काम किया और भविष्यवाणियां की कि इस्लामी सेना जीतने वाली है इसलिये पहले ही आत्मसमर्पण कर दिया जाये। इस तरह ब्राह्मण अरबों के अग्रीम दस्ते के तौर पर कार्य करते रहे।(http://www.indiadivine.org/Scriptures CORRUPTED in 800 Ad.htm)

ब्राह्मणवादी कभी किसी देश के वफादार नही रहे है। अपने स्वार्थ के लिए उन्होने देश को बेचने में कभी हिचक नही दिखाई है। ब्राह्मणवादियों ने अपने स्वार्थ के लिए भारत पर हर विदेशी को आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया है। मुहम्मद गौरी को भारत पर हमला करने के लिए जयचन्द ने बुलाया। डॉ. राम नाथ के अनुसार ब्राह्मणवादी राजा हेमु ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था। सम्राट बाबर का सलाहकार भी हिमुशी नामक हिन्दु था। (डॉ. राम नाथ, p.39, 46) ब्राह्मणवादी महाराजा राणा सांगा ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया और बाबर भारत के राज सिंहासन पर आसीन हुआ। नन्दवंश के सम्राट महा परमनन्द का सर्वनाश करने के लिए चाणाक्य ब्राह्मण ने सिकन्दर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था। वल्लभी नामक गुजरात के एक धनपति सेठ ने मोहम्मद बिन कासिम से संकर्प करके उसे गुजरात के शहरों पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया था। 725 ईसवी से 735 ईसवी के मध्य कासिम ने गुजरात में तबाही फैलायी। (प्रदीप कुमार मौर्य, भूमिका तथा p.155) अम्बेदकर मिशन पत्रिका के अनुसार चाणक्य ब्राह्मण ने सिकंदर को, जयचंद क्षत्रिय ने मुहम्मद गौरी को, राणासांगा क्षत्रिय ने अपने मंत्री लालचन्द ब्राह्मण के कहने पर बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया था। जामोरिन ब्राह्मण ने पुर्तगालियों को, अभीचन्द वैश्य ने अंग्रेजों को, राजा दहीर (ब्राह्मण) ने मुहम्मद बिन कासिम को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था। चितौड का राजा रतन सिंह (क्षत्रिय) के ब्राह्मण मंत्री रागेंय राधव ने राजा की रुपवती पत्नी पद्मणी के सौंदर्य की प्रसंशा अल्लाउद्दीन खिलजी के राजदरबार में की और रतनसिंह के राज पर आक्रमण करने का निमंत्रण भी दे डाला। रांगेय राधव की शह पाकर अल्लाउद्दीन ने रतन सिंह पर चढाई की और उसकी हत्या करके पद्मण ी सहीत 16 हजार क्षत्राणियों को अपने हरम में डाल दिया। हिन्दुराष्ट्र (ब्राह्मण-राष्ट्र) के हिमायती अटल बिहारी बाजपेयी ने ''अंग्रेजों भारत छोडो'' आन्दोलन में ब्रिटिश सेना के समक्ष गवाही में बयान दिया था कि उसने स्वाधिनता सेनानी होने का गुनाह नही किया है। 1857 के संग्राम में ब्राह्मण अंग्रेजों की जी हुजूरी कर रहे थे और बहुजन अंग्रेजों के खिलाफ लड रहे थे। 1857 के जंग में पूरे भारत के मंदिरों में अंग्रेजों की विजय के लिए ब्राह्मण पुरोहितों ने पूजा-अर्चना और यज्ञ किया। लक्ष्मीबाई और बिठूर के पेशवा ने लिखा समझौता पत्र गद्दारी के सिवा कुछ नही था। उस जंग में कोरी जाति की झलकारीबाई लक्ष्मीबाई के भेस में बहादूरी से लडते हुए शहीद हुई। (अम्बेदकर मिशन पत्रिका, जून 2003) जबकि ब्राह्मण लक्ष्मीबाई भंडारी गेट से भागते हुए मारी गई।

भारत पर आज तक हुए विदेशी आक्रमण का कारण यह है कि रिश्वत लेकर ब्राह्मणों ने विदेशी हमलावरों का साथ दिया। (दलित व्हाईस, 16-31 जुलाई, 2001, p.4) मान॰ वि.टी. राजशेखर के अनुसार हुन, ग्रीक, पोर्तुगीज, मुस्लिम, अंग्रेज, और फ्रेंच इन सभी को अपने लाभ के लिए ब्राह्मणों ने भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया है। ब्राह्मण अपने जाति के लाभ के लिए भारत को बेच देने में पल भर भी नही हिचकिचाते। (वि.टी. राजशेखर, p.14, Who is Ruling India, 1982) मान. सीता अग्रवाल के मुताबिक ब्राह्मण कौटील्य ने भारत पर ग्रीक आक्रमण को आमंत्रित किया। हुनों, पार्थियनों, मुस्लिमों तथा सिथियनों के आक्रमणों को निमंत्रित करने वाले ब्राह्मण ही थे। अपनी इसी धोखेबाजी की परंपरा का पालन करते हुए ब्राह्मणों ने अंग्रेजों से हाथ मिलाया ताकि भारतीयों को गुलाम बनाया जा सके। अंग्रेजों ने ब्राह्मण जमींदारों को मलयाली मोपलाओं का दमन-शोषण करने की पूरी छूट दे रखी थी जिसकी बदौलत मोपलाह

विद्रोह हुआ था। ब्राह्मणों व्दारा लागू की गई इस प्रथा ने गैर-ब्राह्मणों के जीवन की जैसे आत्मा ही खत्म कर दी।(Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk//Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm)

मुस्लिम आक्रमण के पहले से भारत में इस्लाम का फैलना शुरु हो चुका था !

भारत के अधिकांश इतिहासकार अब इस बात को मान रहे है कि भारत में मुस्लिम शासकों के आक्रमण के बहुत पहले से ही भारत में इस्लाम फैलना शुरु हो चुका था। इस्लाम का भारतीय लोगों से परिचय कराने का काम सबसे पहले अरब व्यापारियों ने मलबार में किया। एच. जी. रॉवर्लीसन (H G Rawlinson) ने अपनी किताब 'Ancient and Medieval History of India' में लिखा है कि 7 वी शताब्दी में भारत के समुद्र किनारों पर अरब मुस्लिमों ने बसना शुरु किया। उन्होने भारतीय महिलाओं से विवाह किया और उन्हे पूरा पूरा सम्मान दिया। इस का गैरमुस्लिमों पर बडा प्रभाव हुआ। बी. पी. साहू के मुताबिक भारत में पहली मस्जिद का निर्माण एक अरब व्यापारी ने केरल के कोडुंगल्लूर में ईसवी 629 में किया था। उस वक्त इस्लाम के नबी मुहम्मद जीवित थे। (http://timesofindia.indiatimes.com/'Trade, not invasion brought Islam to India' - Times Of India.htm) अरब लोगों का आपस में भाईचारा, एक ही थाली में सबका एक साथ खाना खाना, एक-दूसरे से गले मिलना इ. व्यवहार ब्राह्मण धर्म के शिकार मूलनिवासी भारतीयों को अचंभित करता था।

ब्राह्मणों की प्रताडना के शिकार बौध्द अवाम स्थानीय सुफी संत इब्न करामी के अनुयायी बन गए थे और उन्हे करामी-पंथी कहा जाता था। करामी पंथ इस्लाम तथा बौध्द धम्म का मध्य बिंदू था। इस पंथ ने घुर (Ghur), गझनी, तथा कुसदार (Qusdar) में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया था। अलबेरुनी के मुताबिक ईसवी 950 में जब ब्राह्मण ावादी शाही राज अपने चरम उत्कर्ष पर था तब भी काबुकी क्षेत्र मुस्लिम था। यह स्थिति सुल्तान मुहम्मद गजनी के भारत पर आक्रमण के पचास साल पहले की है। मुहम्मद गजनी का सेनापति टीलाका बौध्द था। कहा जाता है कि गजनी के मुहम्मद ने सोमनाथ, जवालामुखी, मथूरा इ. जगहों के मंदिरों पर इसलिये भी हमला किया था और यहां के मंदिरों को ध्वस्त किया था क्योंकि ब्राह्मणों व्दारा बौध्द धर्म-स्थलों के विध्वंस की भयानक यादें उनके दिमाग को बेचैन करती थी। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) अरबों और बौध्दों के बीच आपसी संपर्क था। ह्युएन त्सांग के मुताबिक पर्शिया, मोसूल तथा खोर्सान में, इराक (मेसोपोटेमिया) से लेकर सिरीया तक में बौध्द मोनेस्ट्रीज थी। बौध्दों ने देखा कि उनके जीवन मुल्य इस्लाम में भली भांति प्रतिबिंबित होते है।(http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm)

ब्राह्मण-धर्म ही भारत में विदेशी राज की असली वजह है !

महाभारत का आदेश है कि 'राज्यार्थी बलवंत्तर, राष्ट्राणि हतवीर्याणिवा पुनः प्रत्युदगम्याभिपुज्यः स्यावेतदन्न समुत्रितम् भूयांस लभसे क्लेश या गौर्भवति दुर्दहाए अथ या सुदुहा राजन् नैव तां वितुदन्तयाणि' (महाभारत, शांतिपर्व 67/6-7) अर्थात यदि किसी कमजोर राजा को कोई अधिक बलवान राजा हमला करे तो सबका कर्तव्य है कि आगे बढकर उसका स्वागत किया जाए। आक्रमक के आगे घुटने टेकने वाले का ही कल्याण होता है। इसलिए जब महमूद गजनवी वरन (आधुनिक बुलंदशहर) पहुंचा तो वहाँ के

राजा हरदत्त ने अपने घुटने टेक दिये और अपने दस हजार साथियों के सहित मुसलमान हो गया था। जब महमूद ने मथुरा पर हमला किया तो उसके रक्षक अपने पवित्र शहर को हमलावर के हाथों में सौंप भाग गए। जब वह वृंदावन पहुँचा तो वहाँ का हिन्दु राजा भाग गया। इसी प्रकार जनवरी, 1019 ईसवी में महमुद ने कनौज पर चढाई की, वहाँ के राजा जयपाल ने घुटने टेक दिये। राजपूत सैनिकों के सामने ब्राह्मण-धर्म आडे आ गया क्योंकि कठोर जाति नियमों के कारण वे युध्दक्षेत्र में ही कूछ खा-पीकर तरोताजा नही हो सकते थे। कुतुबुद्दीन ऐबक की सेना रात के अंधेरे में आगे बढती और चालुक्य सेना जब शौच और वंदना में लिप्त रहती, तभी उसे घेर कर मार डालती थी। इस प्रकार तुर्को ने अभूतपुर्ण सफलता प्राप्त की थी। (प्रदीप कुमार मौर्य, p.165-167) पंजाब के ब्राह्मण शासक चाहते तो सन् 951 ईसवी में मूलतान से अरब तुर्को को भगा सकते थे, लेकिन उनका ब्राह्मण-धर्म आडे आ गया। इतिहासकार अलइस्तरवरी ने लिखा कि मूलतान में एक मूर्ति है जिसकी पूजा के लिए दूर दराज के लोग आते है। यह धमकाते ही कि अरब उस मूर्ति को तोड देंगे हिन्दु हमलावर खामोशी से वापस आ जाते थे। विदेशी हमलावर कई बार अपनी सेना के आगे गौओं के झुंड चलाते थे जिससे गौओं को चोट लगने के भय से हिंदु सेना बिना प्रतिकार किये हार जाती थी। मुसलमानों का पलडा जरा सा भी भारी होते देख कर हिंदु सैनिक भाग जाते थे। जो हिंदु सैनिक या राजा बंदी हो जाते थे वे आमतौर से इस्लाम कबूल करते थे। (प्रदीप कुमार मौर्य, p.156-157)

ब्राह्मणों के दमन से बचने श्रमण धर्म-पंथों ने इस्लाम कबुल किया !

मुस्लिम सत्ता पूरे भारतीय उपमहाव्दीप में कैसी फैली इसे मौजूदा इतिहासकारों ने छुपा लिया है क्योंकि वे ब्राह्मणवादी है। ब्राह्मण इतिहासकारों ने दी हुई यह दलील एकदम खोखली है कि भारत में इस्लाम तलवार के बल पर फैला है। हकीकत यह है कि मूलनिवासी जैन, बौध्द इ. श्रमण परंपरा के धर्म-पंथों की आबादी ने ब्राह्मणों के अमानवीय दमन शोषण से बचने के लिये मूस्लिम शासकों की मदद की और इस्लाम कबुल किया था। भारत की सत्ता मुस्लिमों के हाथों में जाने की वजह ब्राह्मणों व्दारा बौध्द धम्म का भारत से हिंसक तरिकों से उन्मूलन करना है।(FOREIGN INVASIONS AND CASTE Foreigners were assimilated by Buddhist ideals and not the Brahmanic)

निरंकुश ब्राह्मण शासन में बौध्दों यानि दलितों की तथा औरतों की हालत जानवरों से भी बदतर थी। दलित औरतों को उच्च तबका अपनी संपत्ति के तौर पर इस्तेमाल करता था और जब मर्जी आये उनपर बलात्कार किये जाते थे। ऐसे नियम बनाये गये थे कि शादी की पहली रात गांव के ब्राह्मण उसके साथ सुहागरात मनाएंगे। लोग इन अत्याचारों को ब्राह्मणों की क्रूर निरंकुश शासन में सहने पर मजबूर थे। इसलिये जैसे ही बौध्दों को मौका मिला तो उन्होने न सिर्फ इस्लाम कबुल किया बल्कि मुस्लिम शासकों की हर संभव मदद की।(http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm) चचनामा के मुताबिक मुहम्मद बिन कासीम के सिंध की ईसवी 710 के अभीयान में बौध्दों ने मदद की। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) सिंध, बंगाल इ. क्षेत्रों में आबादी तो बौध्द थी लेकिन उसपर ब्राह्मण राजवंशों की सत्ता थी। इन ब्राह्मण धार्मिक निरंकुश सत्ता में बौध्द जनता नर्क जैसा जीवन जीने पर मजबूर थी। इसलिये जब ब्राह्मण राजा दहीर से अरबी मुस्लिम शासकों ने देवल बंदरगाह पर कब्जा किया तो जनता ने इसका स्वागत किया और सिंध में व्यापक पैमाने पर लोगों ने

इस्लाम कबुल किया। बंगाल की जनता ने भी इस्लाम कबुल किया।(http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm) बंगला देश में ब्राह्मण सेन राजाओं के शासन में बौध्द इतने प्रताडित किये गए कि ब्राह्मण राज से वे त्रस्त्र हो चुके थे। ब्राह्मणों व्दारा बौध्दों को 'नेडे नेडे' यानी मुंडे हुए सिर वाले कहकर उनका उपहास उडाया जाता था। त्रस्त बौध्दों ने मुस्लिम आक्रमण को आमंत्रित किया और बंगाल एक मुस्लिम राष्ट्र बन गया। मात्र 18 मुगल घुडसवारों ने बंगाल पर कब्जा कर लिया और राजा लक्ष्मण सेन को पिछले दरवाजे से भागना पडा।

भारत के बौध्दों को जिनके तमाम मानवीय अधिकार ब्राह्मणों ने खत्म कर दिये थे और जिनका जीवन नर्क से बदतर बना दिया गया था उन्होने इस्लाम कबुल करने में देर नही की क्योंकि बौध्द धम्म भी समानता और भाईचारे में भरोसा करता था। इस्लाम में उन्हे बौध्द धम्म की झलक नजर आई। यही वजह है कि पंजाब, सिंध, कश्मीर सहित संपूर्ण उत्तर-पश्चीमी भारत में इस्लाम तेजी से फैला। यही बात बिहार और बंगाल में हुई जो मजबूत बौध्द धम्म के केन्द्रस्थल थे। गंगा क्षेत्र के सरकारी दस्तावेजों के मुताबिक मुहम्मद गौरी के आने से पहले ही 10 वी तथा 11 वी शताब्दी में वहां मुस्लिम समाज मौजूद था।(http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm)

प्रो. बदरूद्दीन के मुताबिक तामिलनाडू में बडी तादाद में जैन लोगों ने ब्राह्मणों के दमन से तंग आकर इस्लाम अपनाया। कई जैन तामिलनाडू से भागकर कर्नाटक के श्रावणबालागोला, तथा गोमातेश्वरम में बस गए। जो भाग नही पाये उन्होने इस्लाम कबुल किया। इस्लाम मानवता की सीख पर आधारित है इसलिये जैनों तथा बौध्दों को उसे कबुल करने में कोई दिक्कत नही हुई। दक्षिण भारत में 650-750 ईसवी में जैनों ने बडी तादाद में इस्लाम कबुल किया। तमिलनाडू में मुस्लिमों को अंचुवान्थार (Anchuvanthar), लब्बा, राउथार, माराकर या जोनाकन कहा जाता है। अंचुवनम कारागीरों तथा व्यापारियों का रिहाईशी क्षेत्र है। सारे तामिलनाडू में अंचुवन वामसागर, अंचुवान्थार इ. नामों से मुस्लिम मोहल्ले है। ये लोग मुख्यतः बुनाई का काम करते है। ये पहले जैन धर्मीय थे। उनकी शारीरिक रचना, उनके अन्न, भाषा, लिबास, जेवर, प्रथा परंपराएं इ. से स्पष्ट हो जाता है वे पहले जैन धर्मीय थे। वे अंधेरा होने के पहले ही दिन में एक बार ही भोजन करते थे। यह पुरानी जैन आदत का हिस्सा था। उनके गांव में ओडुक्कम नाम की स्वतंत्र जगह होती थी जहां जैन मुनी बैठकर प्रार्थना करते थे। महिने के आखरी बुधवार को ओडूक्काथाई बुधवार कहा जाता था। इस दिन सभी मुसलमान इकट्ठा होकर धार्मिक गीत गाते है जो कि एक जैन परंपरा है। मौजूद, रथीफ इ. धार्मिक रिवाज जब घरों में मनाये जाते है तो कमल के फूल वाला सफेद कपडा बांधा जाता है। इसे मेकेट्ट कहा जाता है। यह भी जैन परंपरा है। मस्जिदों की बनावट भी जैन मंदिरों जैसी है। आरंभिक मस्जिदों के खंबे भी जैन मंदिरों के खंबों की प्रतिकृति थे। वे जैन थे तब व्यापारी थे। इस्लाम कबूल करने के बाद उन्होने बुनने का अहिंसक व्यवसाय अपनाया।(http://www.milligazette.com/Hinduism and Talibanism, The Milli Gazette, Vol. 2 No. 8.htm) इस्लाम के मूलभुत समानता के नियमों तथा शरीयत कानूनों का ब्राह्मणों के न चाहते हुए भी धर्मातरितों को फायदा मिला। हॅवेल (Havell) के मुताबिक जिन लोगों ने इस्लाम कबुल किया उन्हे न्यायालयों में मुसलमान नागरिक के तमाम अधिकार हासिल हुए जहां कुरान के मुताबिक मसलों को सुलझाया जाता था। यह बात भारत की पिछडी जातियों में इस्लाम के प्रसार में बेहद कारगर साबित हुई। (http://www.marxists.org/Historical

Role of Islam.htm) इस बात से ब्राह्मण बहुत अधिक तिलमिलाये हुए थे। ढाका विश्वविद्यालय के प्रो. रमेशचंद्र मजुमदार के मुताबिक यह बात दस्तावेजों में दर्ज है कि पूर्वी भारत के ब्राह्मणों ने उन गैर-ब्राह्मणों का कत्लेआम किया जिनके क्षेत्र से मुस्लिम बिना किसी प्रतिरोध के आगे बढ गए थे। ब्राह्मणों ने अपने धार्मिक ग्रंथों के आधार पर प्रचारित किया कि ईश्वर ऐसे गैरब्राह्मणों का उन्मूलन चाहते है।(Oxford University Essays on Hinduism, 1965)

ब्राह्मणों ने यह झूठ प्रचारित किया है कि मुस्लिम शासकों ने तलवार के बुते लोगों को मुसलमान बनाया। प्रो. सेन के मुताबिक पूर्व बंगाल में भारी तादाद में आबादी का मुस्लिम बनना सबको चकित करता है। इनकी मुस्लिम शासकों से कोई भी वांशिक समानता नही है। ब्राह्मणों के दमन और उत्पीडन से खुद को बचाने उत्तर व पूर्व बंगाल, बिहार शरीफ इ. क्षेत्रों में बौध्द आबादी ने खुद होकर इस्लाम कबुल किया है। जहां मुख्य मुस्लिम आबादी है वे मजबुत बौध्द केन्द्र थे। (Dr Ambedkar, W&S, vol.3, p.236) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक भारत में इस्लाम की असली वजह ब्राह्मण धर्म व्दारा बौध्दों का दमन और प्रताडना है। भारत में मुस्लिम धर्म का मजबूत होना अगर एक आफत है तो इस आफत को लाने के लिये ब्राह्मणों ने खुद को धन्यवाद देना चाहिये। (W&S, vol.3, p.238) ब्राह्मण धर्म आदिवासियों के बीच नही पनप सका क्योंकि उनके समुहों का संगठन इतना ज्यादा मजबूत था कि उसे बाहरी दखल बर्दाश्त नही था।(Nair, p.28; TECHNIQUES IN CAUSING FALL OF BUDDHISM Decline and fall of Buddhism)

मुस्लिम शासकों को लुभाकर ब्राह्मण धर्म की रक्षा !

मुस्लिम शासकों ने मंदिरों की संपत्ति को लूटना शुरु किया। प्रतिरोध करने वाले ब्राह्मण-पूजारियों के सिर काट डाले तो ब्राह्मण बडी संख्या में मुसलमान बनने लगे। मान॰ वी.टी॰ राजशेकर के अनुसार ब्राह्मणों ने मुस्लिम तथा अंग्रेजी हुक्मरानों को अपनी बीबीयाँ, बहने तथा बेटीयाँ, पेश की और उनके विश्वासपात्र बने। (V.T. Rajshekhar, p. 17, Dialogue of the Bhoodevtas) ब्राह्मणों ने मुस्लिम शासकों को हर तिकडमों से लुभाकर ब्राह्मण धर्म के खिलाफ न जाने के लिये राजी किया ताकि वे बौध्दों के खिलाफ दमन जारी रख सके। इसके लिये उन्होने मूगलों को अपनी कन्याएं तक पेश की।(http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee News.htm) औरंगजेब ने जब हिन्दूओं पर जिजया कर लगाया तब ब्राह्मणों को जिजया कर से मुक्त रखा गया। ब्राह्मणों ने कहा कि वे हिन्दू नही वैदिक धर्म को मानने वाले है। उन्होने मुस्लिमों के साथ धनिष्ठ रिश्ते कायम किये। ब्राह्मणों ने मुस्लिम तथा हर किसी शासकों की हर तरह मदद कर {उन्हे अपनी बेटियाँ देकर} हर क्षेत्र में सुविधाएं और उंचे पद हासिल किये। मुस्लिमों के सलाहकार ब्राह्मण ही होते थे। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 23 जूलाई 2006) संत तुकाराम के मुताबिक जिस तरह बाजारों में घोडे बेचे जाते है ब्राह्मण अपनी कुँआरी लडकियों को उसी तरह बाजार में बेचते थे। भट-ब्राह्मण साहुकारी करने में भी आनन्द लेने लगे : ''अठरा यातीचे व्यापार। करती तसकराई विप्र।। अश्वाचीया परी। कुमारी विकती वेदवक्ते।। आवडी पंडीताची। मुसाफावरी बैसली।'' (वि.भी. कोलते, p.58, 59, 62, 65,67,88) मान॰ प्रदीप कुमार मौर्य के अनुसार '' ढोल, गवांर, शुद्र, पशु, नारी, ये सब ताडन के अधिकारी'' कहने वाला ब्राह्मण कवी तुलसीदास अकबर को खुश करने के लिए ''सर्वेगुणा कांचन माश्रयांन्ति'' अर्थात जिसके

पास सोना होता है वह सर्वगुण संपन्न समरथ है तथा ''समरथ को नहीं दोष गुसाई'' को बार बार प्रचारित करता है। सोना और समरथ में ही गुण होते है चाहे वह किसी भी अनैतिक तरीके से प्राप्त किये हो कहकर उसने संपुर्ण समाज को भ्रष्ट बनाया है। (प्रदीप कुमार मौर्य, p.205)

ब्राह्मणों तथा मुस्लिम शासकों की आपसी मिलिभगत का ही नतिजा है कि मुस्लिम शासकों ने ब्राह्मणों की धार्मिक-सामाजिक सत्ता को बिल्कुल भी छेडने की कोशिश नही की। ब्राह्मणों के जुल्मों से त्रस्त बौध्द तथा जैन जनता ने मुस्लिम शासन का न सिर्फ स्वागत किया था बल्कि इस्लाम भी कबूल कर लिया था। इसके बावजूद उन्हे ब्राह्मणों से आजादी नही मिली। मुस्लिम शासन में ब्राह्मण ही मुल्ला-मौलवी और शेख बनकर ध ार्मिक व सामाजिक सत्ता पर काबिज रहे।

चाचमना के अनुसार इब्ने कासिम ने सींध पर 712 इसवी में आक्रमण किया। सिंध की बुध्दीस्ट जनता ने मुस्लिमों का मनपुर्वक साथ दिया। लेकिन जब मुस्लिम सत्ता मजबूती से स्थापित हुयी तो मूलनिवासी नाग-बौध्द जनता को यह देखकर बडी मायूसी हुयी कि मुस्लिम शासकों ने इन्सानियत का खून करने वाली ब्राह्मणवादी व्यवस्था को तथा ब्राह्मणों की शैतानी अमानवीय लूट-खसोट को कायम रखा है। नयी शासन-व्यवस्था में ब्राम्हणों को इज्जत, पद और वरीयता दी गयी। (Dr,Babasaheb Ambedkar , vol. 3, P. 236-237) खलीफा उमर भारत पर हमला करने के सख्त खिलाफ थे। उन्होने उस्मान सुकीफी को भारत पर हमले की तमन्ना करने पर काफी फटकारा और बुरे परिणामों की चेतावनी दी। मुहम्मद बिन कासीम ने खलीफा को बताया की उन्होने भारत पर हमला किया, गैरमुस्लिमों को मुस्लिम बनाया, उनके धर्म–स्थलों और बुतों को तबाह कर दिया तो खलीफा ने उसे फौरन बर्खास्त कर दिया। उसके कारनामों को गैर–इस्लामी करार दिया। ब्राह्मण–धर्म को पहूंचाये गये नुकसान की भरपाई करने को कहा। उसने लोगों को मुआवजा दिया, ब्राह्मण–धर्म के प्रतिनिधियों को उंचे पद दिये और उन्हे अपने धर्म को मानने, मूर्तियों की पूजा करने, नये मंदिर बनाने और अपनी प्रथा–परंपराएं मानने की इजाजत दी। अरब राजाओं ने भारत के ब्राह्मण–धर्म के लोगों को ''किताब के लोग'' मान कर उनपर इस्लाम नही थोंपा और न ही उन्हे बूतपरस्ती से रोका। (Paramesh Chaudhury p.39-40) मुस्लिम राजाओं ने हमेशा ही ब्राह्मण-धर्म की रक्षा की है क्योंकी उन्हे खलिफा ने निर्देश दिये थे कि ब्राह्मणों ने इस्लामी राजाओं के समक्ष आत्म समर्पण करके ''खलिफा'' को नियमित रुप से टॅक्स देना मंजूर किया है, इससे ज्यादा की ब्राह्मणों से अपेक्षा भी नही है। इसलिये ब्राह्मणों को इस्लामी शासन के संरक्षण में समझा जाये। ब्राह्मणों की यह दरख्वास्त भी मंजुर की जाती है कि उन्हे बुध्द के मंदिरों को दुरुस्त करने तथा उसमें पूजा इ॰ करने की अनुमति दी जाये। ब्राह्मण जिस प्रकार से जीना चाहते है उन्हे इसकी इजाजत दी जाये। (S.M. Ikram, p-10) बौध्द धर्म की मूर्तिपूजा मात्र एक निर्जीव छायाचित्र के सिवा कुछ नही है इसके विपरित ब्राम्हण मूर्ति की ''प्राण-प्रतिष्ठा'' करके यह प्रचारित करते है कि वह जागृत है, उसमें आत्मा वास करती है। इसके बावजूद मुस्लिम शासकों ने ब्राह्मणों को बुध्द के विहारों, चैत्यों और स्तुपों पर कब्जा करके मूर्तिपूजा करने की अनुमति देकर ब्राह्मण-धर्म की अनमोल सेवा की है।

ब्राह्मणों के साथ हुये गुप्त समझौते के तहत बख्तीयार खिलजी ने (सन 1199) ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में निहत्थे बौध्द भिक्षुओं का कत्लेआम मचाया। बौध्द विहारों, स्तुपों, चैत्यों व पुस्तकालयों को चुनचुनकर नष्ट किया। ''तबाकत ए नासरी'' के अनुसार मुगलों

ने ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में नालंदा विश्वविद्यालय, उसके ग्रंथालय तथा बौध्द विहार, स्तुप इ॰ को ध्वस्त किया। बख्तीयार खिलजी ने औदांदापुरी विश्वविद्यालय को नष्ट करके उसके पुस्तकालय को जला दिया। निहत्थे बौध्द भीख्खुओं का कत्लेआम मचाया। इसके बावजूद जब नालंदा विश्वविद्यालय का नौ मंजीला रत्नबोधी का पुस्तकालय विध वंस से बच गया तो ब्राम्हणों ने एक यज्ञ करके उसकी चिंगारियों से पुस्तकालय में आग लगाकर पुस्तकालय को जला दिया। नालंदा, विक्रमशिला, जगद्दला, ओदांतापुरी इ॰ बौध्द विश्वविद्यालयों को ध्वस्त किया गया। बुध्द भिख्खु अपनी जान बचाने नेपाल, तिब्बत में भाग गये। बौध्द भिख्खुओं की बडी संख्या को मुस्लिम सेनापतियों ने कत्ल किया। बौध्द धर्म का प्रचार समाप्त हो गया। भिख्खुओं की दूसरी फौज तुरंत नही बन सकती थी। मुस्लिम राजाओं और ब्राह्मणों के डर से ऐसी कोशिश ही नही हुई। बौध्द धर्म भारत से समाप्त हुआ।(Dr. Ambedkar, P. 232, Vol. 3) हिन्दु तथा मुस्लिम राजाओं के मंत्री तथा सेनापति भी ब्राह्मण ही होते थे। वे वर्णव्यवस्था को सुरक्षित रखना अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। सत्ता हथियाने के लिए ब्राह्मण मुसलमान बने। बरार के पाथरी गांव के भैरव कुलकर्णी और उसके बेटे तिलाभट ने इस्लाम धर्म कबुल किया तथा अहमदनगर में निजामशाही स्थापित की। एलिचपुर (बरार) की इमादशाही का स्थापक फतेहअली ब्राह्मण था। मुसलमान बने ब्राह्मण अपने ब्राह्मण-धर्म को तथा सभी ब्राह्मण रिश्तेदारों को फायदा पहुंचाने में माहिर थे। ऐय्याश मुस्लिम शहंशाहों को अपनी बेटियाँ ब्याहकर, हर तरह से उन्हे ''खुश'' रखकर ब्राह्मणवादी उंचे ओहदे पाते रहे है। इसलिए मुस्लिम राजाओं के सलाहकार आमतौर से ब्राह्मण ही बनाए जाते थे। मुस्लिम शासकों ने ब्राह्मणों की सलाह से भारत में राज किया है। मुस्लिम राजाओं के जुल्म का शिकार मूलनिवासी हुये है। हजारों मूलनिवासियों को गुलाम बनाकर विदेश ले जाकर बेच दिया गया।

मुस्लिम राजाओं के सहयोग से ब्राह्मणवादियों ने मूलनिवासियों को अपने शोषण-व्यूह में जकड लिया। ब्राह्मण दोबारा ताकतवर बन गए। जो राजा ब्राह्मणों को सहयोग नही करते थे उन के खिलाफ दूसरे राजाओं को भडका कर, षडयंत्र रचकर उन्हे अपदस्त कर दिया जाता था। इस हकीकत को मुस्लिम शासक जानते थे इसलिए ब्राह्मणवाद के खिलाफ जाने की किसी ने हिम्मत नही की। मूलनिवासी शोषित बहुजनों को इस्लाम में शामिल करने तक का हौसला उनमें नही था। इसलिए मुगल साम्राज्य के अंतिम दिनों में भारत के मुसलमानों की जनसंख्या 1% से भी कम थी।

मान॰ प्रदीप कुमार मौर्य के अनुसार बादशाह अकबर को इस्लाम से चिढ़ थी। अपनी हिन्दु माँ के प्रभाव के कारण अकबर दुर्गा की पूजा करता था और ब्राह्मणों के इशारों पर चलता था। अकबर ने महेशदास (बीरबल) नामक ब्राह्मण को अपना सलाहकार बनाया। एक बार अकबर ने अपने एक मुख्य सलाहकार अब्दुल नबी को एक ब्राह्मण को फाँसी की सजा देने के कारण बर्खास्त कर दिया। उसे प्रायश्चित के रुप में हज के लिए मक्का जाने के आदेश दिये। काजियों ने अकबर को धर्म विरोधी कहते हुए फतवे दिये तथा सन् 1579 से 1580 ई. में विद्रोह किया जिसको अकबर ने कूचल दिया। कई काजियों को कड़ी सजाएं दी। (प्रदीप कुमार मौर्य, p.184-185) अकबर ने इस्लाम की मान्यताओं को नकारकर अपने शहर में मस्जिदों को घोडों के तबेलों तथा भंडार-घरों में बदल दिया।(Will Durant, P. 469, 470) ब्राह्मणों की शह पर अकबर ने 'दिन ए इलाही' पंथ बनाकर गाय की हत्या को मृत्युदंड का अपराध करार दिया। साल में कम से कम सौ दिन शाकाहारी रहना अनिवार्य किया। प्याज और लहसुन खाना, मस्जिदों का निर्माण

करना, रमजान महीने में रोजा रखना, मक्का में हज के लिए जाना इत्यादी को प्रतिबंधित कर दिया। जिन मुसलमानों ने विरोध किया उन्हे देश-निकाला दे दिया। (Will Durant, P. 471) सन् 1580 में अकबर ने सामुहिक प्रार्थनाओं में नबी हजरत महंमद का नाम लेने को प्रतिबंधित किया, उनकी शिक्षा का मखौल उडाया; मुस्लिमों को दाढी काटने के लिए प्रेरित किया, सामुहिक प्रार्थना में रेशमी कपडे, सोने चांदी के आभुषण पहनने पर जोर दिया। मुस्लिमों को अपने आगे सजदा करने पर बाध्य किया। (P. 287-288, J. Allan et. al.) ब्राह्मणों ने अकबर के ''दिन ए इलाही'' धर्म को मान्यता दिलाने ''अल्लाहुपनिषद'' नामक धर्मग्रंथ लिखकर उसे ब्राह्मण धर्म की सातवी दर्शन-शाखा प्रचारित किया। (Dr. Ambedkar, Vol. 9, P. 195)

आशुतोष दीक्षित के लेख के अनुसार अकबर ने सन् 1591 में अपने दरबारी बदायुँनी से वाल्मीकि रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया था। संतों, पंडितों तथा महात्मा अग्रदास से अकबर अपने बाग में रामकथा सुनता था। अकबर के शासन के 50 वे वर्ष में राम और सीता के चित्रों वाले सिक्कें जारी किये गए। शासन के पचास वर्ष के पहले महीने फरवरदिन पर सोने के 'राम-सिय' सिक्कों का प्रचलन किया गया। इसी वर्ष पांचवे महीने (अमरदाद) में अकबर ने चांदी की अठन्नी पर सीता-राम के चित्र अंकित करवाया। अकबर व्दारा जारी सिक्कों के पूरोभाग पर राम और सीता की आकृतियाँ थी तथा दूसरे भाग पर नागरी में राम-सिय शब्द अंकित थे। इसके पूर्व के मुस्लिम शासकों के सिक्कों पर पवित्र कलमा अंकित किया जाता था। बादशाह शहाजहाँ के पुत्र दारा शिकोव ने सुफी संतों और हिंदु महात्माओं से सतसंग करते हुए रामभक्ति आन्दोलन में गहरी रुची ली थी। वह स्वँय राम और हनुमान का भक्त था। मध्यकालिन युग में अनेक मुसलमान कवियों ने रामभक्ति से प्रेरित होकर कविताएं लिखी। अकबर के रत्न कवि अब्दुल रहीम खानखानां की रामभक्ति की कवितायें प्रसिध्द है। अयोध्या में अनेक मुसलमान संतों के रामभक्ति में लीन होने की बात कही गई है। कलंदरशाह सीताराम के भजन गाया करते थे। अकबर के समय में ब्राह्मण धर्म का खुब प्रसार हुआ। अरब से आये मर्द शरीफ भी रामभक्त बनकर अयोध्या मे बसे थे। कई मुस्लिम संत रामभक्त थे। तुलसीदास के रामचरित मानस की जानकारी अकबर को हुई तो उसने बीरबल के माध्यम से एक प्रति प्राप्त करने की कोशिश की। (लोकमत समाचार, 21 अप्रैल, 2002) अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर को तोडकर उसकी जगह अगर बाबरी मस्जिद बनाई गई होती तो इस का जिक्र रामचरित मानस ग्रंथ लिखने वाले तथा अयोध्या के वासी रहे ब्राम्हण तुलसीदास ने अवश्य किया होता। लेकिन उसने कहीं भी ऐसा उल्लेख नही किया है।

टीपु सुल्तान का प्रधान पुर्णिमा पंडीत नामक ब्राह्मण था तथा सेनापति क्रिष्णाराव था। टीपु सुलतान ने 156 मंदिरों के रखरखाव और व्यवस्था के लिए बडी जमीनें दी हुई थी।(Dr. Dawwod Kashmiri, Rabies of Communalism,p.41) मुगल बादशाहों ने हिंदू लडकियों से शादी करने के काफी उदाहरण है। लेकिन इन विवाहों से मुगल बादशाह ही हिंदू बन गये क्योंकि लडकी वालों के घर के प्रभाव से अकबर से लेकर औरंगजेब तक किसी भी मुगल बादशाह का खतना {circumcision} नही किया जा सका था। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 19 (1920-28), p.166)

कासिम रिजवी के अनुसार नवाब वाजिद अली शाह श्रीकृष्ण जन्माष्ठमी के पर्व को बडी धूमधाम से मनाता था। उसने इस पर्व को राष्ट्रीय पर्व की संज्ञा दी। जन्माष्ठमी महोत्सव में हिन्दु और मुसलमान सभी भाग लेते थे। उसकी लिखी सौ पुस्तकों में से पहला हिंदी में लिखा गया नाटक कृष्ण कन्हैया है। (लोकमत समाचार, 31 अगस्त 2002)

भोपाल रियासत के नवाब दरबार में होली मनाते थे। रियासत में हिन्दु-मुस्लिम मिलकर होली मनाते थे। (नवभारत, 17 मार्च 2003) कश्मीर में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शादी ब्याह भी होते थे। दर, भट्ट, ऋषी, कौल तथा ऐसी ही अन्य कश्मीरी उपाधियों से यह नही जाना जा सकता कि व्यक्ति मुसलमान है या हिन्दु। पंडित उपाधि से भी नही। ''पहले के मुसलमान मूर्तिपूजक भी थे।'' मुसलमानों का शासन शुरु होने के 200 वर्ष बाद तक संस्कृत भाषा कश्मीर में राजकाज और न्यायालय की भाषा बनी रही। (p. 16, अशोक सेकरिया, कश्मीर का भविष्य, राजकिशोर (संपादक))

मोगल शासक मोहम्मद शाह (1719-1748) के काल के इतिहासकार काफी खान के अनुसार मुस्लिम कुलीन वर्ग मुस्लिम विधवा के पुर्नविवाह को अपमानजनक मानते थे। विधवा से पुर्नविवाह करने वाले व्यक्ति को लोगों के गुस्से से बचने के लिए किसी दूसरे प्रांत में स्थानांतरित होना पडता था। (Dr. Dawwod Kashmiri, Rabies of Communalism,p.14) ब्राह्मण और राजपूतों से बने मुसलमान भी लडकी को पैदा होते ही मार डालते थे। इस रिवाज को ''दुख्तर-कशी'' कहा जाता था। दुख्तर का मतलब है बेटी और कशी का मतलब है जान से मारना। वृध्दा दादियाँ, परदादियाँ, मातायें या दाईयाँ लडकी पैदा होते ही उसका गला घोट देती थी। नवजात बालिका को पोटली में बांधकर धरती में गाड दिया जाता था। (बी.आर. सांपला, p.181) जनगणना 1901 (बंगाल प्रांत) के सुपरिटेंडेन्ट के रिकार्ड की जानकारी के अनुसार मुस्लिम समाज में उस वक्त निम्नलिखीत स्तरों में असमानता (Graded inequality) थी। अ) अशरफ समुदाय (Ashraf (Better class) Mahomedans) सैयद, शेख, पठान, मोगल, मलिक, मिर्झा समुदाय जिनका सामाजिक स्तर उँचा माना जाता है। ब) अजलफ या पिछडा मुस्लिम समुदाय (Ajlaf or Lower class Mahomedans) 1) पीराली, ठकराई, जैसे समुदाय जो अशरफ समुदाय में प्रवेश हासिल नही कर सके। 2) दर्जी, जुलाहा, फकीर, रंगरेज. 3) बराही, भटियारा, चीक, चुडीहार, दाई, धावा, धुनिया, गडडी, कलाल, कसाई, कुला, कुंजरा, लाहीरी, महिफरोश, मल्लाह, नलीया, निकारी 4) अबदल, बाको, बेदिया, भाट, चांबा, डफली, धोबी, हज्जाम, मुचो, नागर्ची, नाई, पनवारीया, मदारीया, तुन्टीया। क) अरजल या हीन समुदाय (Arzal or degraded Class) मुस्लिम समुदाय में यह सबसे हीन माने जाने वाले समुदाय है। भनार, हलालखोर, हिजरा, कसबी, लालबेगी, मौगता, मेहतर इ॰ समुदाय हमेशा से उपेक्षा के शिकार हुए है। जनगणना सुपरिटेन्डेन्ट के अनुसार मुस्लिम सामाजिक व्यवस्था में ''पंचायत'' प्रथा थी। एक समूह को दूसरे समूह में प्रवेश नही था। किसी ने व्यवसाय भले ही बदल दिया हो लेकिन वह अपनी जाति से ही जाना जाता है। हजारों जुलाहे खटीक है लेकिन उन्हे जुलाहा ही माना जाता है। उच्च जाति के मुसलमानों ने अपने समाज की बुराईयों, बिगाडों को दूर करने का प्रयास नही किया।

जब डॉ. अम्बेडकर बडोदा के राजा के यहा काम कर रहे थे तो एक पारसी ने डॉ. अम्बेदकर को अछूत जानते ही उनका सामान घर के बाहर फेंक दिया। उन्होने वह रात खुले में बिताई। उन्हे किसी भी मुस्लिम ने जगह नही दी इसलिए अंततः उन्होने उस नौकरी को छोड दिया। (दलित वायस, सितंबर 1-15, 2000, p.23)

इकबाल के पुरखे कश्मीरी ब्राह्मण थे। इकबाल को अपने ब्राह्मण होने पर गौरव था। एकबार सैयद से उसकी बहस हुई। उत्तर में इकबाल ने लिखा है :- 'मैं असल का खास सोमनाती, आबा मेरे लाती-ओ-मनाती, तू सैयद हाशमी की औलाद, मेरी काफे खाक बरहमण ज़ाद।' डॉ. इकबाल ने अपने काव्य संग्रह में श्री कृष्ण के बारे में लिखा कि मानवता के मानसिक इतिहास में श्री कृष्ण का नाम सदा आदर और सम्मान से लिया

जायेगा कि इस महापुरुष ने एक अत्यंत मोहक ढंग से अपने देश की दार्शनिक परंपराओं की व्याख्या की। (p. 88, एल.आर. बाली, क्या गांधी महात्मा थे ?) आशुतोष दीक्षित के अनुसार मुस्लिम लीग का अध्यक्ष सर मुहम्मद इकबाल राम के प्रति श्रध्दानत था। इकबाल {ब्राह्मण} ने नया शिवालय, तराना ए हिन्दी, बागे दरा जैसे कविता संग्रहों में राम, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद इ॰ की प्रशस्ति का गुणगान करते हुए कविताएं लिखी है। श्रीराम पर कविता में उसने राम को इमाम ए हिन्द कहा है। कहा है की राम के नाम से ही भारत का नाम दुनियाँ में बुलंद है। इकबाल ने राम को पूर्ण श्रेष्ठ पुरुष कहकर उसको अलौकिक और दिव्य पुरुष स्वीकार किया है। (लोकमत समाचार, 21 अप्रैल, 2002)

मध्यप्रदेश के ठाकूर मुसलमान राजपूत वाली अपनी विरासत से जुडने को संकल्पबध्द है, भले ही इससे उनकी मुस्लिम पहचान प्रभावित हो। सज्जन खान अपने घर में बने मंदिर में हर रोज पूजा करता है। हिन्दू तीर्थस्थलों की यात्रा करता है। खुद को सज्जन ठाकूर कहलाना पसंद करता है। मध्य उत्तर प्रदेश के गांवों के सैकडों मुस्लिम परिवारों के, जिनके राजपूत पूर्वज 600 साल पहले मुसलमान हो गये थे, लोग खुद को ठाकूर साहब कहलाना पसंद करते है। वे केवल जातिसूचक शब्दों तक ही सिमित नही है। मुस्लिम ठाकूरों का पहनावा, रहन सहन और पूजा पध्दति राजपूतों जैसी ही है। 15 वी सदी में तीन तरह के राजपूत - गौतम, बैंस और दिक्खत - मुसलमान होने के बाद फतेहपूर, बांदा और उन्नाव जिलों में बस गये। गौतम ठाकूर और गौतम मुसलमान होली, रामलीला और कीर्तन आयोजित करने में मदद करते है। पूर्व राजपूतों के विवाह समारोहों में कई हिन्दु रितियाँ बदस्तूर जारी है। वे अमूमन अपने ही समुदाय या दूसरे धर्मातरित समुदायों में शादी करते है। (p.54-55, इंडिया टूडे, 17 जुलाई 2002) अधिकतर पाकिस्तानियों के कुलनाम ब्राह्मणों के कुलनाम है। जैसे की बट्ट (butt, bhat), दर (Dar, Dhar), रैना, पंडित (कश्मीर में), दत्त बाली (जम्मू में)। वास्तव में संभ्रांत पाकिस्तानी ब्राह्मण ही है जो अपने मतलब के लिये धर्मातरित हुए है। पाकिस्तानी 20 फीसदी ब्राह्मण है जबकि कश्मीरी 80 फीसदी ब्राह्मण है।(http://www.topix.com/Pakistanis are the Brahmin convert to Musalman. - Topix.htm) मान॰ राजेन्द्र के अनुसार आर.एस.एस. ने मंजुरी देने के बाद ही बी.जे.पी. ने कलाम का नाम राष्ट्रपति पद के लिए घोषित किया। आर.एस.एस. ने कलाम का नाम इसलिए मंजूर किया क्योंकि कलाम रोज गीता पढते है।(Rajendra Muslim Failure to see through brahminical Tricks, p.10) समाचार के अनुसार जम्मू के निकट कटरा स्थित प्रसिध्द वैष्णो देवी मंदिर में पिछले माह देश के राष्ट्रपति एपीजे अब्दूल कलाम और मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद समेत कई लोगों ने वैष्णो देवी के दर्शन किये। (नवभारत, 8 जुलाई 2003) महाराष्ट्र के राज्यपाल मोहम्मद फजल ने रामतीर्थ में डुबकी लगाई। रामतीर्थ पर उनका आचरण किसी पंडित से कम नही था। कुंभ मेला, अखाडों के ''अंडर करंट'' की जानकारी बहुत ही सहजता से बता रहे थे। (भाष्कर, 22 अगस्त 2003) लखनऊ से 30 किलोमिटर दूर मलिहाबाद जैसे मुस्लिम बहुल इलाके में पंडित सैयद हुसैन शास्त्री अपनी अजान संस्कृत में पढते है। वे पिछले 22 वर्षो से रोज सबेरे आठ बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व्दारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर में संस्कृत पढाने पहुँच जाते है। वे वेदों के पंडित है। (नवभारत, 29 अप्रैल 2002) पंजाब के अवन मुसलमान है लेकिन वे अपने हिन्दू पारिवारिक नामों का ही प्रयोग करते है। चौधरी यह पारिवारिक नाम (Sirname) उत्तरी भारत में हिन्दू और मुस्लिम दोनों में ही पाया जाता है। मान॰ वी.टी. राजशेकर के अनुसार खास तौर से उ.प्र. के धनी मुस्लिम अपनी सामंती मानसिकता के कारण न सिर्फ दलितों को नीच समझते है बल्कि

वे गरीब मुस्लिमों को भी नीच मानते है। (दलित व्हायस, जुलाई 1-15, 2002)

मान॰ वि.टी. राजशेखर के अनुसार ब्राह्मणों की सत्ता को कायम रखने के लिये भारत के ब्राह्मणों तथा धर्मातरित मुस्लिम ब्राह्मणों ने न सिर्फ आपसी साजीश से भारत का विभाजन कराया बल्कि भारत के ब्राह्मणवादियों और पाकिस्तान के उच्चवर्गिय शासकों के बीच गुप्त समझौता हुवा है जिसके तहत दोनों देशों के हुक्मरान भारत पाकिस्तान में तनाव, फसादात कायम रखेंगे और दोनों देशों के मूलनिवासीयों को इन फसादातों में हलाक कराते रहेंगे।(V.T. Rajshekhar, p. 74, Dialogue of the Bhoodevtas) ताकि मूलनिवासी जनता एक होकर ब्राह्मण-सत्ता को कभी ध्वस्त न कर सके।

भारत की मूलनिवासी मुस्लिम जनता इन्ही सवर्ण मुस्लिमों की बदौलत उपेक्षित जीवन जीने पर मजबूर है क्योंकि वह उच्चवर्णीय मुस्लिमों को अपना नेता मानती है।

भारत की मूलनिवासी जनता ने इस्लाम भले ही तलवार के जोर पर न भी कबुल किया हो लेकिन इस्लाम को मूलनिवासियों ने पढ समझ कर अपने दिल से कुबुल किया ऐसा बिल्कुल भी नही है। उनके सामने दूसरा कोई रास्ता ही नही था। मूलनिवासी नागों के आदिम जाति-समुह तथा ब्राम्हण-धर्म में पिस रहे मूलनिवासी अलग अलग मान्यतायें रखते थे। इस्लाम कुबुल करने के बाद भी वे अपनी मान्यताओं के अनुसार ही व्यवहार करते रहे। भारत के मुस्लिम समुहों का सामाजिक जीवन मधमुख्खियों के छत्ते की तरह हिन्दु रिवाजों से भरा पडा है। इस्लाम में शामिल लोगों का धर्मातरण अधूरा है इसलिये सामाजिक तथा धार्मिक माईनों में ये समुदाय ब्राम्हण-धर्म की पूरानी पहचान दर्शाते है। (Dr. B. R. Ambedkar, Vol. 8, P. 32-33) हरियाणा का मेव समुदाय धर्म से मुस्लिम है लेकिन अपने रिती रिवाजों और पहनावे में गैरमुस्लिम समाज के ज्यादा करिब है। इस्लाम कुबुल करने के बाद भी मूलनिवासी बहुजन ब्राह्मण धर्म की मान्यताओं के अनुसार ही व्यवहार करते रहे। ''ब्राम्हण-मौलवियों'' ने उन्हे यही बताया। मुगल शासन में ब्राम्हणों को इज्जत और वरियता होने से इस्लाम में बिगाड पैदा करने का ब्राम्हणों को पूरा मौका मिला। शरियत कानून लागू होने के पहले अनेक मुसलमान समुदाय शादी इ. ब्राम्हण-धर्म के अनुसार करते थे और बाद में धर्मातर किये हुए ''ब्राम्हण-मौलवी'' से मुस्लिम रिवाजों के अनुसार। सन् 1935 तक वायव्य सरहद प्रांत में शरियत नही बल्कि हिन्दू कानून लागू था। सन 1937 तक संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत, तथा मुंबई प्रांत के मुस्लिमों के लिए विरासत के हक के संबंध में हिन्दू कानून ही लागू था। उत्तरी मलबार में हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों को ही मरुमक्कातयम कानून लागू है जो पितृसत्ताक न होकर मातृसत्ताक है। खोजा तथा कच्छी मेमन नाम की मुस्लिम जातियाँ कुछ बातों में हिन्दू कानून का ही पालन करती थी। कश्मीर में हिन्दु-मुस्लिमों के अनेक संम्मिलित धार्मिक समारोह आयोजित होते है।

महाराष्ट्र के कोंकण के मुस्लिमों के नाम, उनका पहनावा आदि में हिन्दुओं से इतनी समानता है कि हिन्दु और मुस्लिमों के बीच कौन हिन्दू है और कौन मुस्लिम इसकी पहचान करना कठिन है। (Dr. Dawwod Kashmiri, Rabies of Communalism,p.29) दाउद कश्मीरी के अनुसार ब्राह्मण-धर्म से प्रभावित लोग गणेश की मूर्ति को पंडाल में रखने के बाद पानी में डुबोते है। मुस्लिम भी ताजिए को मुहर्रम के माह में कुछ समय तक रखने के बाद उसे पानी में डुबोते है। (Dr. Dawwod Kashmiri, Rabies of Communalism,p.14)

ब्राह्मण-धर्म के शोषण का प्रतिकार :
बहुजन संतों का मानवता-धर्म !

सभी राजा, शहंशाह या शासक ब्राह्मणवादियों की सलाह से राज करने पर मजबूर थे। सभी राजा, शहंशाह या शासक मूलतः शोषक होने के नाते ब्राह्मणवादियों को वरीयता देते थे और उनकी सलाह से राज करने पर मजबूर थे क्योंकि उन्हे डर था कि कहीं ब्राह्मण अपने षडयंत्रों से किसी और ब्राह्मण-परस्त राजा को गद्दी पर न बिठा दें। चातुवर्ण का पालन न करने वाले राजा की हत्या करने का मनुस्मृति ने आदेश दिया है। इसलिए जनता से हमदर्दी रखने वाले राजा भी ब्राह्मणों के आगे बेबस होकर ब्राह्मण ों को मूलनिवासी जनता का शोषण करने देने पर मजबूर थे।

जहां तक पिछडे अवाम का संबंध था, मुस्लिम राज भी ब्राह्मण राज में तब्दिल हो चुका था।(Brahmins were benefited by Muslim Conquest By Dr. K. Jamanadas / Brahmins were benefited by Muslim Conquest.htm)

बेहतर प्रशासन तथा कार्यक्षमता बढाने के लिए अंग्रेजों के लिए जरुरी था कि वे अपने शुद्र सैनिकों तथा मूलाजिमों के लिए शिक्षा का प्रबंध करे। अंग्रेजों ने शिक्षा के दरवाजे सभी बहुजनों के लिए खोल दिये। शुद्रों पर युगों-युगों से लादी गई शिक्षा की पाबंदी खत्म हुई। सन 1835-1853 के दौरान शुद्रों में शिक्षा का तेजी से फैलाव हुआ। इसमें ब्रिटिश सरकार से ज्यादा ईसाई मशीनरियों का योगदान था। सन् 1757 से अछूतों का अंग्रेजी सेना में शामिल होने का अर्थ अछूतों में आत्मसम्मान का विकास होना, जीने के हालात बेहतर बनना, शिक्षा के दरवाजे अछूतों के लिए खुल जाना, सामाजिक सत्ता का स्थानांतरण होना, आर्थिक पुर्नगठन की प्रक्रिया का तेज होना, नए सामाजिक समीकरण निर्माण होना तथा शुद्रों का शासनकर्ता जमात का हिस्सा बन जाना था।

इस प्रक्रिया के कितने घातक परिणाम हो सकते है यह सोचकर ही ब्राह्मणों के कलेजे काँप उठे। ब्राम्हणों ने तय कर लिया कि ब्राह्मण अंग्रेजों की भी खिदमत करेंगे ताकि अछूतों की मदद करने से अंग्रेजों को रोका जा सके। अपनी सुविधा संपन्नता की खातिर ब्राह्मणवादी हमेशा हर प्रकार के विदेशी शासकों की मदद करते रहे है। मक्कारी और पाखंड की नीति अपनाकर, यहॉ तक की अपना धर्मांतर करके तात्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, तथा धार्मिक व्यवस्था पर कब्जा जमाते रहे है। सभी धर्मो में मनुवाद का जहर घोलकर चातुवर्ण की अमानवीय व्यवस्था को कुटिलता से कायम रखते रहे है। इसलिए ब्राह्मण हारते मुस्लिम शासकों का साथ छोडकर अंग्रेजों से मिलने लगे। आर्य ब्राह्मणों ने युरोपियन अंग्रेजों को अपना आर्य जातभाई करार दिया। सर विलियम जोन्स ने आर्य ब्राह्मणों की संस्कृत भाषा और युरोपियन भाषाओं की समानताओं को उजागर करते हुए इसका और गहराई से अध्ययन करने के लिए **1** जनवरी **1784** को एशियाटिक सोसायटी नामक संस्था कायम की। भारत के ब्राह्मणों को ''इंडो आर्यन'' करार देते हुए 3500 साल पहले भारत आये हुए अपने आर्य भाई जाना गया। दोनों के बीच राय कायम हुई कि अंग्रेज आर्य और आर्य-ब्राह्मण मिलजुल कर भारत की मूलनिवासी जनता को गुलाम बनाकर उनका खुब शोषण करेंगे। परिणाम स्वरुप ब्राह्मण जमींदारों, राजाओं ने अपनी अपनी संगठनाएं बनाकर अंग्रेजों को हर तरह से संरक्षण देना शुरु किया। अंग्रेजों ने ब्राह्मणों के हितों की रक्षा करनी शुरु की। धम्मतीर्थ के अनुसार सन् 1803 में ब्राह्मण ों ने पूरी के जगन्नाथ मंदिर का ट्रस्टी बनाकर उसका प्रशासन अंग्रेजों को सौंप दिया

इससे अंग्रेजों को 1,35,000 रुपयों की आमदानी होनी शुरु हुई। (Swami Dharma Tirtha, History of Hindu imperialism, p-151) विश्वविख्यात कोहिनूर हिरा जगन्नाथ पूरी के मंदिर में था। यह मंदिर पहले सन् 1600 तक बौध्द विहार था। ब्राह्मणों ने यह हिरा अंग्रेजों को देकर उन्हे खुष करने का प्रयास किया ताकि वहां के विशाल खजाने तथा संपदा को छुपाया जा सके। (Gopal Gurung, In quest of Mangol Identity, P.O. Box 2828 Kathmandu) ब्राह्मणों ने अंग्रेजी खेमे में खुद को मजबूती से स्थापित करने के लिये वे सारे तरिके आजमायें जिसमें वे माहिर है। ब्राह्मणों व्दारा चलाये जा रहे मंदिरों में अंग्रेजों को धन तथा देवदासियों को भोगने की सुविधाएं हासिल थी, इसलिये वे उनके लिये सदैव ही आकर्षण के केन्द्र बने रहे।

अंग्रेजी सेना मंदिरों में ब्राह्मणों से युध्द में जीतने का आशिर्वाद प्राप्त करती थी। युध्द में अंग्रेजों की जीत हो इसके लिये ब्राह्मण पूजा-अनुष्ठान करते थे। युध्द में जीत हासिल होने के बाद अंग्रेज दोबारा मंदिरों में जाकर धन्यवाद के रुप में पूजा-अर्चना कर ब्राह्मणों को भरपूर दक्षिणा देते थे। जब ईसाई मशिनरियों ने अंग्रेजी हुक्मरानों के इस रवैये का विरोध किया तब सन् 1840 में अंग्रेजों ने आदेश जारी कर मंदिरों में प्रत्यक्ष भाग लेने के लिये अंग्रेजों को मनाई कर दी। (Dr. Ambedkar Vol. 12, P. 142)

ब्राह्मणों ने अंग्रेजों को अपना आर्य जातभाई करार देकर मुस्लिम शासकों के खिलाफ अंग्रेजों की मदद करनी शुरु की तो मुस्लिम शासकों को अपने अस्तित्व का संकट नजर आने लगा। जो मुस्लिम शासक कथित शुद्रों अतिशुद मूलनिवासियों को नीच मानकर अपने आप को ब्राह्मणों की तरह उंचा दिखाने की कोशिश करते थे, अपनी सत्ता और सियासत खतरे में पडी देखकर मजबूरन उन्होने मूलनिवासियों के सामने इस्लाम के इन्सानियत पर आधारित उसूलों की दुहाई देना शुरु किया। ब्राह्मणों से निराशा हासिल होने के मद्देनजर मुस्लिम राजाओं ने पहली बार मूलनिवासी अछूतों को इस्लाम में शा. मिल करना शुरु किया। बडी संख्या में मूलनिवासी शुद्र अतिशुद्र इस्लाम में शामिल होने लगे और मुस्लिम आबादी बडी तेजी से बढने लगी। मुस्लिम सुफी-संतों की बदौलत 19 वी शताब्दी में भारत में मुसलमानों की जनसंख्या विशालतम बनते चली गयी। मुस्लिम शासकों को शुद्रों की वजह से ताकत और स्थायित्व हासिल होने लगा। यह देख कर ईसाई मशिनरियाँ भी हरकत में आई। उन्होने शुद्र अतिशुद्र करार दिये गए मूलनिवासियों में रुची दिखानी शुरु की। अंग्रेज नही चाहते थे कि मूलनिवासी उनसे पूरी तरह कट कर रह जाये और वे पूरी तरह से ब्राह्मणों के आश्रित बन जाये इसलिये ब्राह्मणों के साथ ही दलित-पिछडों को अपने साथ बहलाये रखना अंग्रेजों की मजबूरी थी। ऐसी राजनीतिक हालातों से संतों के ब्राह्मणवाद के खिलाफ आन्दोलन को मुस्लिम तथा अंग्रेज शासकों को मजबूरी में ही क्यों ना सही कुछ हद तक समर्थन मिला। उस काल में समाज पर धर्म का और उसके पश्चात राजा का प्रभाव होता था। ब्राह्मण-धर्म के अंधविश्वासों से बहुजनों को निकालने का संतों को यही उपाय था कि वे विदेशी आक्रमणकारी अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के शोषण परस्त ''ब्राह्मण-धर्म'' को नकारकर ''मानवतावादी'' मुल्यों को स्वीकार करें। भारत में इस्लाम कथित मुस्लिम राजाओं की बदौलत नही बल्कि मुस्लिम सुफी संतों की बदौलत फैला है। बाबा फरीद, हजरत निजामुद्दीन औलिया, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती इ॰ सैकडों सुफी संतों और फकीरों ने, अल्लाह के समानता के सिधान्त को प्रचारित किया। बाबा फरीद की चलाई शिक्षा की लहर इस कदर समाज पर छा गई कि करोडों दलित लोग इस्लाम के समर्थक बन गये भले ही उन्होने धर्म न भी बदला हो। साई बुल्ले शाह और शाह हुसैन जैसे दलित फकीर पैदा हो गये जिन्होने काजी और मौलवियों के बनाए

अधर्म को कोसकर एक समान मानव की बात की।

भारत में मुस्लिम सत्ता कायम हो जाने के बाद सुफी संत भी मूस्लिम व्यापारियों के साथ ही भारत आये थे। उन्होने ही इस्लाम की विचारधारा को लोगों के बीच में प्रचारित किया था। इस्लाम को प्रचारित करने सुफी संत तथा उनके शिष्य भारत के हर हिस्से में भटकते रहे।(http://www.indianetzone.com/Impact of Islam on Hinduism. htm) ईसवी 950-1200 के दौरान भारत में बडी तादाद में सुफी तथा फकीर जगह जगह भटकते नजर आते थे। वे धार्मिक गीत गाते रहते थे। सारे तामिलनाडू में ये सुफी संत पाये जाते थे। नादीरशाह अपने 500 शिष्यों के साथ त्रिचिनोपल्ली में ईसवी 1000 में बस गया था। अलियारशाह तथा उसके शिष्यों ने मदुरै को अपना केन्द्र बनाया हुआ था। बाबा फकरूद्दीन सारे तामिलनाडू में घूम घूमकर प्रचार करते रहे। दूसरा सुफी केन्द्र नागौर था। इन सुफीयों का धार्मिक साहित्य उस वक्त जैन तथा गैरब्राह्मण संतों के भक्ति आन्दोलन के साहित्य की तरह का था।(http://www.milligazette.com/Hinduism and Talibanism, The Milli Gazette, Vol. 2 No. 8.htm)

बुध्द के बाद दूसरी क्रांति नामदेव, कबीर, रविदास, दादू, गुरु नानक, पलटू , बुल्लेशाह, बाबा रामदेव मेघवाल, सदना कसाई इ. बहुजन संतों-सुफीयों ने पूरे भारत भर में फैलाई। इन बहुजन शुद्र संतों, सुफियों ने बुध्द की विचारधारा को नए रुप में पेश कर दिया क्योंकि उस समय काजी और मौलवी बने ब्राह्मणों की चलती थी।

संत नंदनार अछूत परिवार में पैदा हुए थे। पांचवी शताब्दि के उत्तरार्ध से लेकर छठी शताब्दी के आरंभ तक उनका जीवनकाल था। नन्दनार का जन्म तंजावूर जिले के कोलिडम नदी के करीब मेरकाट आदनूर गांव में हुआ। इस गांव का नाम अब मेलनल्लूर है। तमिल में तिरु का उपयोग श्री के स्थान पर करते है। करुपपन, मुनियन, मुक्कन और काटेरी अछूतों के देवता थे। दक्षिण भारत में संत नंदनार पहले इन्सान है जिन्होने अछूतों को मंदिर में न जाने देने का विरोध किया था। डॉ. अम्बेदकर ने अपनी किताब ''द अनटचेबल्स'' को संत नन्दनार, रविदास और चोखामेळा को अर्पण की थी। (ए. पद्मनाभन, संत नंदनार, पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली - 110 032) संत नंदनार मातंग समाज के थे। मातंग समाज के लोगों को अपने आने की सूचना ढोल बजाकर देनी होती थी ताकि उच्च जाति के लोग दूर हटकर खुद को बचा सके। नंदनार एक ब्राह्मण जमींदार के यहां बंधुआ मजदूर थे। ब्राह्मणों ने चिदंबरम मंदिर के सामने दलित संत नंदनार को जिन्दा जला दिया। ब्राह्मणों ने कहानी गढ ली कि भगवान शिव ने नंदनार को स्वप्न में आकर आदेश दिया कि वे चिता में अग्निस्नान कर पवित्र होकर उनके मंदिर में प्रवेश करे। नंदनार ने चिता में अग्नीस्नान से पवित्र होकर मंदिर में प्रवेश किया और मंदिर में ही विलीन हो गए।

संत कनकदास कर्नाटक के समाज सुधारक संत थे। उनका साहित्य उडूपी क्षेत्र में मशहूर है जहां के श्रीकृष्ण मंदिर में उन्हे प्रवेश करने से प्रतिबंधित किया गया था, क्योंकि वे पिछडी जाति के चरवाहे थे। संत कनकदास जाति-व्यवस्था के घोर विरोधक थे। उन्हे ब्राह्मणों से अमानवीय प्रताडना सहन करनी पडी थी। संत कनकदास में पिछडी जातियों के हितों की तीव्र प्रेरणा थी। वे अपने भजन कीर्तनों में ब्राह्मणों के कर्मकांडों की व्यर्थता को उजागर करते थे। संत कनकदास ने ब्राह्मणों की जाति-व्यवस्था, छुंआछूत इ. हैवानी प्रथाओं का कडा विरोध किया। अपने गीतों में कहते है कि वे (कुटील) ब्राह्मण होने की बजाय किसी चांडाल का नौकर होना पसंद करेंगे। उन्होने लोगों को समझाया कि

पत्थर के देवता की पूजा करना व्यर्थ है।

चक्रधर स्वामी ने महानुभाव पंथ की स्थापना की। उन्होने आर्य-ब्राह्मणों के कर्मकांडों और तीर्थस्थलों का विरोध किया। वेदों और चातुवर्ण का विरोध कर स्त्री-पुरुष और सामाजिक समानता की बात की। मासिक धर्म के समय भी स्त्री को वे पवित्र मानते थे। ब्राह्मणों ने चक्रधर स्वामी को मार डालने के प्रयास किये। ब्रम्हसान ने उनपर दो बार विष प्रयोग किया। पहली बार विष का कोई खास परिणाम नही हुआ। दूसरी बार दिये विष के परिणाम ध्यान में आते ही उन्होने उल्टियाँ कर दी इसलिए वे बच गये। ब्रम्हसान के मित्र महदाश्रम ने चक्रधर स्वामी को मारने के कई प्रयास किये। महदाश्रम ने चक्रधार को आमंत्रित कर एक मंदिर में यंत्रासन पर बैठने का अनुरोध किया। चक्रधर स्वामी को शक हुआ। उन्होने आसन उधाड कर देखा तो नीचे गड्ढे में घातक हथियार थे। महाराष्ट्र में देवगिरी के रामराव यादव के ब्राह्मण प्रधानमंत्री हेमांद्री पंडीत (हेमाड पंत) ने हत्यारे भेजकर चक्रधर का आश्रम लूट लिया। उनको घायल करके खोकर गाँव के पास ले जाकर सन 1274 में उनकी हत्या कर दी। (वि.भी कोलते, p.22-23) हेमाडपंत ब्राह्मण ने आचार विधि कर्मकांडों के 700 प्रकार अपनी किताब में लिखे है। एक साल में 360 दिन होते है तब यह सात सौ विधि किसलिये ? इससे हेमाडपंत ब्राह्मण ने ब्राह्मणों के पेट भरने की व्यवस्था कर दी। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची अतिशय गाजलेली भाषणें, p.88)

केसोबास, लक्ष्मिंद्र भट्ट, दामोदर पंडित, भाष्कर भट्ट, केशवाचार्य, नरेन्द्र पंडित इ॰ ब्राह्मणों ने महानुभाव पंथ में शामिल होकर उसे विकृत किया।

संत नामदेवजी का जन्म सन 1192 में नरसु बामनी नामक महाराष्ट्र के एक गाँव में दर्जी परिवार में हुवा। उनके समसामयिक नरहरी सुनार, सेना नाई, गोरा कुम्हार, सावता माली (माळी), बंका और चोखा महार सभी वारकरी संत मूलनिवासी शुद्र थे। भट-ब्राह्मण मूलनिवासी शुद्रों को अपने मंदिरों से खदेड देते थे इसलिए शुद्रों ने पंढरपुर के विट्ठल को अपना आराध्य देवता माना हुआ था। प्रा. मा.म. देशमुख के अनुसार ''पंढरपुर का मंदिर बौध्द मंदिर तथा विठोबा की मूर्ति वास्तव में बुध्द की मूर्ति है।'' (p.16) वारकरी संतो ने महानुभाव पंथ की तरह ही तीर्थक्षेत्रों को नकार दिया।

संत नामदेव के अनुसार जो पत्थरों के देवताओं की पूजा करते है वे अपनी मूर्खता से अपना सब कुछ खो देते है। पत्थर की मूर्ति बोलती है ऐसा कहने वाला तथा सुनने वाला दोनों ही मूर्ख है। (पाषाण देवाची जे करिती जे भक्ति। सर्वस्वा मुकती मुढपणे। प्रस्तराचा देव बोलतो भक्ताते। सांगते ऐकते मूर्ख दोघे।। (जारुरकर, p.31) वे कहते है - माथे पर तिलक टोपी लगाकर भोले श्रध्दालुओं को लुटनेवाले पाखंडियों का साथ भी नही होना चाहिये क्योंकि इससे व्यक्ति भ्रष्ट हो सकता है। (टिळा टोपी माळा दावी। भोळया भाविकास गोवी। नामा म्हणे यांचा संग। नको चित्ता होय भंग।।) प्रा॰ उषा चौधारी ने अपने निबंध में लिखा है कि संत नामदेव ने जनता को शिक्षा दी कि बहुजन समाज ने ब्राह्मणों के वेद, शास्त्रों को कदापि नही पढना चाहिये बल्कि उनके (नामदेव के) दोहे याद करने चाहिये। (''न पढावे वेद नको शास्त्रबोध। नामाचे प्रबंध पाठ करा।।) नामदेव जी ने कहा तपस्या, तीर्थयात्रा, ब्राह्मणों को दान करना इ॰ व्यर्थ है। (तप तिर्थ दान हे सर्व कुवाड। नाम एक वाड केशवाचे।। (जारुरकर p.94 -96) जब संत चोखोबा महार की हत्या हुई तो संत नामदेव ने पंढरपुर मुख्य व्दार पर उनकी अस्थियों पर उनकी समाधी बनाई। {ब्राह्मणवादियों ने संत चोखामेला को रस्सियों से बांधकर पंढरपुर की गलियों में घसीट कर मार डाला था।} वर्णव्यवस्था, मंदिरों तथा तीर्थस्थलों की आमदानी

को खतरा पैदा होने से ब्राह्मणों ने महानुभावपंथ और वारकरियों के पंथ को विकृत और बदनाम करना शुरु किया। उन्होने ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर और उसके बहन-भाईयों को अपना मोहरा बनाया। ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर का पिता विट्ठलपंत सन्यास लेने के बाद गुरु की आज्ञा से दोबारा गृहस्थ बन गया तो उसको ब्राह्मण जाति के हकों से वंचित किया गया था। विट्ठलपंत को निवृत्ती, ज्ञानेश्वर, सोपान और मुक्ताबाई ऐसी चार संताने थी। विट्ठलपंत और उनके बच्चों को हमेशा अपमानित करके उनका मखौल उडाया जाता था। तत्कालीन ब्राह्मणों ने उनको उपनयन नकारकर अंत्यज (शुद्र) घोषित किया था। विट्ठलपंत ने प्रायश्चित के रुप में नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। डॉ. चारुशिला गुप्ते के अनुसार शंकरशास्त्री के प्रयत्न से ज्ञानेश्वर इ॰ को शुध्दी पत्र प्राप्त हुआ। (डॉ. चारुशिला गुप्ते, p.42) शुध्दी प्राप्त होने के पश्चात सवर्ण विसोबा चाटी को ज्ञानेश्वर आदि ने शुद्र जैसा विसोबा 'खेचर' नाम देकर सोपान का शिष्य घोषित किया। ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर ने अपने ब्राह्मण दल-बल के साथ पंढरपूर में प्रवेश किया।

मनुस्मृति के अनुसार :- ब्राह्मण को मात्र उसके जन्म के आधार पर ही सभी वर्णो ने अपने गुरु के रुप में स्वीकार करना चाहिये।

मुक्ताबाई ने पंढरपुर आकर संत नामदेव की घमंडी, अज्ञानी इ॰ कहकर तीव्र शब्दों में आलोचना की। मुक्ताबाई ने आरोप लगाया कि ब्राम्हणों से गुरुपदेश नही मिलने से भक्ति करने वाला नामदेव ज्ञानी नही था। मुक्ताबाई ने अपने भाईयों की तरह नामदेव को साष्टांग नमस्कार करने से साफ मना किया। मुक्ताबाई की वजह से आळंदी में संतसभा बुलाकर नामदेव की परीक्षा ली गई। (मधुकर जोशी, p.91, 87) ब्राम्हण लेखकों के अनुसार इस सभा में बहुजन संत नामदेव को गोरा कुम्भार के माध्यम से कच्चा घडा कहलाया गया। यह स्पष्ट है कि 'महानुभाव पंथ तथा वारकरियों की शिक्षा में मनुवादी जहर फैलाने की योजना के तहत ही आळंदी के ब्राह्मणों ने ज्ञानेश्वर इ॰ को वारकरी पंथ में योजनापूर्वक रुप से प्रस्थापित किया था' मुक्ताबाई ने नामदेव विरोधी कमान संभाल कर ज्ञान और ब्राह्मण-गुरु के नामपर ब्राह्मणवाद को प्रचारित करना जारी रखा। दूसरी तरफ ज्ञानेश्वर और उनके भाई बहुजन संत नामदेव की प्रसंशा करते रहे। जाउरकर के अनुसार 'संत नामदेव से मैने बहुत कुछ सीखा है और उन्ही के कारण पुर्णत्व प्राप्त हुआ है ऐसी प्रशंसा करके 'ज्ञानेश्वर ने नामदेव को ''संत शिरोमणी'' के नाम से संबोधित किया। (जाउरकर p.74) ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर ने खुद को शुद्र घोषित किये जाने का बहाना लेकर मूलनिवासी बहुजनों की सहानभुति हासिल की। खुद को नामदेव का सहयोगी प्रचारित करके शुद्र जनता के मन में ब्राह्मण-धर्म के जहर को बडी खुबी से फैलाने का काम जारी रखा। ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर महानुभाव पंथ तथा नाथ पंत की आलोचना करता था। उसने वारकरी पंथ को महानुभाव पंथ के खिलाफ खडा करने की कोशिश की। (गेल ऑमव्हेट) ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर ने वेदों पर श्रध्दा तथा चातुवर्ण्य का समर्थन किया। वर्ण धर्मानुसार ईश्वर-पूजा करना, अग्नि को आहुति देना, देवताओं की उपासना करना, यथा-समय ब्राह्मणों को भोजन कराते रहना, इ॰ जो नही करेगा उसे बडा भारी दुख सहना पडेगा, ब्राह्मणों के वेद इ॰ शास्त्र यदि विष पीने का आदेश दे तो शुद्रों ने बेहिचक विष प्राषण कर लेना चाहिये इ॰ शिक्षा ज्ञानेश्वर इ॰ ब्राह्मण-संतों ने दी। चातुवर्ण्य और विषमता की समर्थक गीता को ज्ञानेश्वर ने अपनी टिका में दोहराया। गेल ऑम्वेट के अनुसार ऐसी मान्यता है कि ज्ञानेश्वर ने विठोबा का संबंध कृष्ण के साथ जोडकर उसका ब्राह्मणीकरण करने की कोशिश की। ब्राह्मण संस्कृति से समझौता करने के कारण उसे कुछ हद तक राजाश्रय प्राप्त हुआ ऐसा सन 1273 में राज्य के मंत्री

हेमाद्री पंडित/हेमाड पंत (चक्रधर के हत्यारे) की पंढरपुर भेंट से सूचित होता है। (गेल ऑम्वेट, p.8,9) डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक ब्रह्म यह सत्य और सर्वव्यापी है ऐसा ज्ञानेश्वर कहता है। लेकिन ज्ञानेश्वर ने आखिर चातुवर्ण का ही समर्थन किया है। ज्ञानेश्वर ने भगवत गीता पर ज्ञानेश्वरी नामक ग्रंथ लिखा। उस ग्रंथ का सार यह है कि दुनिया ब्रह्ममय है। सारी दुनिया अगर ब्रह्ममय है तो फिर मांग महारों में भी ब्रह्म होना चाहिये। तब ज्ञानेश्वर महार मांगों के बीच क्यों नही रहा ? ब्राह्मण जाति में उसे दोबारा शामिल किया जाये इसके लिये वह सतत प्रयत्न क्यों करता रहा ? ब्राह्मणों ने उसके परिवार को जाति से बाहर करते ही उसने कहना चाहिये था कि आपने मुझे अपनी जाति से बाहर किया है तो मुझे कोई पर्वा नही, मै अछूतों के बीच जाकर रहूंगा क्योंकि यह दुनियाँ ब्रह्ममय है। उसने ऐसा नही कहा। सर्वसाधारण जनता को बेवकुफ बनाने के लिये उसने ये सारा ढोंग रचा रचा है और आप इस ढोंग के शिकार है। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 18-III, p..408, 364) संत नामदेव व्दारा महाराष्ट्र में की गई जागरुकता को मिट्टी में मिलाकर ब्राह्मणवादी जहर फैलाने की कोशिश ब्राह्मण-संत एकनाथ ने की। एकनाथ का जन्म 1532 में पैठन महाराष्ट्र में हुआ। उसने मूलनिवासी शुद्रों को भोजन परोसकर और उनके बच्चों को गोद में उठाकर मूलनिवासी शुद्रों भ्रमित किया। मान॰ कोलते के अनुसार ब्राह्मण-संत एकनाथ ज्ञानेश्वर का भक्त और वर्णव्यवस्था का समर्थक था। एकनाथ ने शुद्रों को चातुवर्ण्य को अपनाने की सीख दी। विदेशी आर्य-ब्राह्मणों की पूजा करना, उनके पैर का धोया पानी पीना, यथा समय ब्राह्मणों को भोजन कराना इ॰ बातों को ब्राह्मण-संत एकनाथ ने शुद्रों के परम कर्तव्य-कर्म बताए। (वि.भी. कोलते, p.77-78)

ज्ञानेश्वर इ॰ ब्राह्मण संत राजसत्ता, और पंडों की सत्ता के बल पर अपना ब्राह्मणवादी प्रचार चलाते रहे। तीर्थक्षेत्रों, व्रतों, दान इ॰ का महत्व घटने से ब्राह्मणों की आमदानी पर बहुत बुरा असर हुआ। इनकी पुर्नस्थापना करने के लिए ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर ने तीर्थस्थलों की महानता का प्रचार किया। ज्ञानेश्वर ने चातुवर्ण्य और तीर्थस्थलों की सत्यता साबित करना कबुल करके संत नामदेव को साथ चलने की चुनौति दी। तीर्थो की व्यर्थता साबित करने के लिए ही संत नामदेव ने उसके साथ चलना स्वीकार किया। संत नामदेव ने ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों तथा तीर्थस्थलों की व्यर्थता कैसे साबित की होगी यह नीचे दिये कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है।

मान॰ एल.आर. बाली व्दारा 1983 में लिखी पुस्तक के मुताबिक 'जम्मू व कश्मीर के हिन्दू धर्मार्थ ट्रस्ट को 1978-79 में 48 लाख रुपये आमदानी हुई। राधास्वामी सतसंग व्यास (पंजाब) के पास एक हजार एकड से अधिक भूमि है। वाराणसी के विश्वनाथ मंदिर के पास करोडों रुपयों के मूल्य की सोने की प्लेटें है। तिरुपति (आंध्र) के व्येंकटेश्वर (बालाजी) मंदिर के पास 67 क्विंटल सोना है। इस का 82-83 का वार्षिक बजेट 45 करोड 97 लाख रुपये है जो 1978-79 में केवल 10 करोड रुपये था। इसके पास आरक्षित फंड (Reserved Fund) में 20 करोड रुपये जमा है। मंदिर की हजारों एकड भूमि की संपत्ति अलग है। बालाजी का हीरों मोतियों का हार सात करोड रुपयों का है। तंजोर के वृहदेश्वर मंदिर के पास 60 हजार एकड भूमि है। तामिलनाडु में 52 हजार मंदिरों में 59 मंदिर ऐसे है जिन की आमदनी 2 लाख रुपये प्रति वर्ष से अधिक है। रामेश्वरम् के ज्योती लिंग मंदिर में मूर्तियों को ले जाने के लिए चांदी का रथ तथा सोने की पालकी है। (एल॰ आर॰ बाली, p.6-7) सन 1983 से आज तक मंदिरों की संपत्ति तथा जमीन की कीमत धरती से आसमान तक पहुँच चुकी है।

तिरुपति बालाजी मंदिर में रोज लगभग 45000 लोग दर्शन करने आते है। मंदिर का व्यवस्थापन 1400 आदमी करते है। 100 लोग दो शिफ्टों में नोट गिनने का काम करते है। नोट गिनने के इस विभाग में 12 टि.वी. कॅमेरे लगे हुए है। मंदिर में दर्शन के लिए यात्रियों की 40, 50, और 60 रुपयों वाली अलग अलग लाईनें लगायी जाती है। दर्शन में 10-12 घंटे की लंबी प्रतिक्षा करनी पडती है। धनी लोगों के लिए लाईन की जरुरत नही होती क्योंकि उनसे अतिरिक्त धन लेकर उन्हे दर्शन कराए जाते है। इस मंदिर का सालाना टर्नओव्हर 500 करोड है। मंदिर में हर रोज औसतन 2 लाख की कीमत के गहने चढाए जाते है। मुंडन करके इकट्ठा किये गये बालों को केमिकल कंपनियों को बेचकर सालाना 20 करोड रुपयों की आमदानी होती है। मंदिर व्दारा जमा योजनाओं में तथा रकम बँकों के फिक्स डिपाजिट खाते में डाली जाती है। मंदीर में हर रोज 1000 किलो काजु और 400 किलो किसमिश खाये जाते है। कोवेना के अनुसार अकेले तिरुपति मंदिर में 5000 पूजारी है। अगर आप प्रत्येक मंदिर में 4-5 पूजारी औसतन मान ले तो भी देश भर में 30-35 लाख पूजारियों की जगहें है जो हमेशा ही ब्राह्मणों के लिए सुरक्षित रही है। पंडे-पूजारियों की आय देश के खजाने की आय का आधी से ज्यादा रकम है। इन पंडे-पूजारियों में इतनी ताकत है कि वे देश की सत्ता को पलटने की क्षमता रखतें है।

रुद्राक्ष मिनरल के संचालक लिमये (ब्राह्मण) ने घोषणा की है कि वह 8000 करोड रुपये कीमत का गोंदिया रुबी 4 नवंबर को तिरुपति बालाजी देवस्थान को दान करेगा। उसने बताया कि जुलाई 1994 में पोहरा (साकोली) में शासकीय स्तर पर हुई मँगनिज खदान की निलामी के दौरान उन्हे जो रत्नभंडार प्राप्त हुआ है उसका मूल्यांकन कई हजार करोड में (4-5 लाख करोड) किया गया है। (नवभारत, 11 मार्च 2003) गोंदीया रुबी लिमये ने देवस्थान को अब तक नही भेजा गया ऐसा देवस्थान के ट्रस्ट ने कहा है और अपना जांच अधिकारी लिमये से मिलने भेजा है। (7 जुलाई 2003) कर्नाटक में मैसूर के प्रसिध्द श्री लक्ष्मी वेंकटरामनस्वामी मंदिर में 50 लाख रुपये मुल्य का एक मुकुट चढाया गया है जो 23 इंच लंबा तथा 18 किलो वजन का है। इस मुकुट में करीब 1000 हिरे के टुकडे, माणिक, पन्ना, 6 किलोग्राम सोना और 12 किलोग्राम चांदी का इस्तेमाल किया गया है। (नवभारत, 24 अगस्त 2003) ऐसे कीमती चढावे सतत चढाये जाते है।

तिरुमला स्थित देश के सबसे धनी मंदिर भगवान व्यंकटेश्वर मंदिर के दानपात्र में केलिफोर्निया निवासी एक गुमनाम भारतवंशी ने पांच करोड रुपयों (दस लाख डॉलर) का चेक डाला है जो सत्य पाया गया है। इस मंदिर में सालाना 600 करोड रुपयों का चढावा चढाया जाता है। (दैनिक भाष्कर, 29 मार्च 2003) एक लेख के अनुसार इस मंदिर में अगर आप अभिषेक करना चाहते है तो सन 2003 में बुक करने के बाद आपको सन् 2114 की ही टिकट मिल पायेगी। यदि आप भ्रष्ट तरीके अपनाकर अभिषेक नही करना चाहते तो इस जन्म में आपका नंबर आयेगा ही नही। अन्य छोटी पूजाओं के लिए भी आपको कई वर्ष इन्तेजार करना पड सकता है। जुलाई महिने में सबसे कम 1000 रुपए मूल्य वाली टिकट पुष्प-पल्लव की सेवा के लिए मिलती है। वर्ष में पांच दिन तैराने का पर्व होता है जिसकी टिकट 2500 रुपए है। वसंतोत्सवम् अप्रैल महिने में आयोजित होता है, जिसकी टिकट दर 3000 रुपए है। पद्मावती श्रीनिवासुल परिणयम् का आयोजन मई महिने में होता है, जिसकी टिकट दर 5000 रुपए है। जून महीने में आयोजित होने वाले अभिधेयक अभिषेकम् के लिए 2000 रुपए खर्च करने पडते है। उसी तरह अगस्त के परित्रोत्सवम् के लिए 7500 रुपए, नवंबर के पुष्पयज्ञम् के लिए 3500 रुपए और वर्ष में चार बार होने वाले कोलि अल्वर तिरूमंजनम् की टिकट दरे 3000 रुपए है। साप्ताहिक

सेवाओं में सबसे मंहगी टिकट है वस्त्रालंकरण सेवा की, जो दो व्यक्तियों के लिए 12,250 में दी जाती है। उसी दिन होने वाली अन्य सेवाओं की टिकटों में पूर्णाभिषेकम् 750 रुपए में, तथा पुणुगु और कस्तूरी पात्र सेवा के लिए 300 और 150 रुपए में टिकटें उपलब्ध कराई जाती है। दैनिक होने वाली सेवाओं में वसंतोत्सवम् की टिकट 3000 रुपए की है। कल्याणोत्सवम् की टिकट दर 2500 रुपए है। अर्जित ब्रह्मोत्सवम्, डोलोत्सवम्, सहस्त्र दीपालंकरण सेवा की टिकट दरें एक-एक हजार रुपए की है। सुप्रभातम् और एकांत सेवा के लिए आपको 120 रुपए की टिकट खरीदनी होगी। यदि अर्चना या तोलमसेवा कराना है तो इसकी टिकट दरें 220 रुपए है। (लोकमत समाचार, 28 मई 2003) यह दर सन 2003 के है।

ब्राह्मण-धर्म के तथाकथित तिर्थस्थल राजकीय संरक्षण में आतंक के अड्डे बने हुए है। मध्यप्रदेश के चित्रकुट में एक बिघा जमीन की कीमत 30 लाख है तथा यहां स्थित 500 मंदिरों में हर साल 30 लाख भक्त दर्शन के लिए आते है। होने वाली भारी आमदानी तथा प्रतिस्पर्धा के कारण सन्यासी और पंडे-पूजारी बंदूकों से लैस रहते है। चित्रकुट के महंत अनुपदास महाराज अपने कमर में रिवाल्वर और गोलियों का बेल्ट लटकाएं रहते है। जिला प्रसाशन ने पिछले दो सालों में 2000 से अधिक बंदूकों के लायसन्स जारी किये है। म.प्र. के अमरकंटक के साधुओं में एकदूसरे की जमीन हडपने को लेकर खूनी संघर्ष होते रहते है। अयोध्या में 8000 से अधिक मठ है जिनके 109 पंडे-पूजारियों पर हत्याओं तक के आरोप है। सन् 1998 में अयोध्या से 10 कि.मी. स्थित गुप्तार घाट के लोगों पर सशस्त्र साधुओं ने जमीन हडपने के लिए निवासियों पर गोलियाँ चलाकर 4 लोगों को मौत के घाट उतार दिया। 10 साल पहले जानकीघाट मंदिर की 15 करोड की संपत्ति पर कब्जा करने के लिए मंदिर के 70 वर्षीय महंत को तीन साधुओं ने फांसी पर लटका कर मार डाला। अयोध्या के मठ अपराधियों की शरणस्थली बने है। वाराणसी के लोगों का भी यही विचार है। पिछले तीन सालों में 211 लोगों की हत्याएं की गई तथा 58 स्त्रियों पर बलात्कार हुए। बलात्कार की घटनाएं आम है। तीन महीने पहले एक मठ के मुख्य पूजारी ने एक टुरिस्ट महिला पर बलात्कार किया लेकिन उस महिला को अपनी पुलिस शिकायत वापस लेने पर मजबूर किया गया क्योंकि वह पूजारी राजनीतिक रुप से अत्यंत शक्तिशाली था। एक जर्मन महिला को उसके गेस्ट हाउस में ही गेस्ट हाउस के मालक सहीत दो व्यक्तियों ने बलात्कार किया। 1998 में स्विटजरलँड की डायना नामक महिला पर सामुहिक बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी गई, जिसकी सडी लाश 6 माह बाद पुलिस ने बरामद की। साधुओं के उच्चस्तरीय राजकीय संबंधों के कारण पुलिस मूकदर्शक बनी रहती है। (The Week, 19 Jan 2003) 22 अगस्त 2003 की रात बाबरी मस्जिद के आधे किलोमीटर के दायरे में स्थित निशाद पंचायती मंदिर में पूजारी सालिगराम दास व्दारा प्लास्टिक की बोरियों में रखे बम में भीषण विस्फोट हुआ। इससे मंदिर की आवासीय छत ध्वस्त हो गई। इस पूजारी का नाम गुंडा अधिनियम अन्य अपराधिक मामलों में है।(लोकमत समाचार, 24 अगस्त 2003) जोर-जबरदस्ती से ब्राह्मण-धर्म के मंदिर बनाने का काम जारी है। दिल्ली के निजामुद्दीन पुल के पास यमूना नदी के किनारे की जमीन पर आजादी के पहले से खेती कर रहे लोगों की बेशकीमती जमीन को केन्द्र सरकार ने मास्टर प्लॅन बदलकर एक निजी धार्मिक संस्था को कौडियों के भाव विशाल मंदिर बनाने के लिए अलॉट की। दिल्ली विकास निगम के अधिकारियों ने बिना पूर्व सूचना के किसानों की खडी फसलों पर ट्रेक्टर चलाकर फसल उजाड दी। किसानों को दंडे और बंदूकों के डर से उजाडा गया। स्थानीय पुलिस ने इन

अधिकारियों का साथ दिया। संस्था व्दारा बुलाए गये गुंडों ने किसानों को पकड कर पहले से ही तैयार दस्तावेजों पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवा लिए। इन दस्तावेजों में लिखा था कि हम अपनी मर्जी से इन जमीनों का कब्जा संस्था को सौंप रहे है और फसलों की नुकसान भरपाई के लिए मुआवजा प्राप्त कर रहे है। उन्हे यह कह कर कि किसानों का कब्जा नाजायज था मुआवजा तक नही दिया गया। यह मंदिर इतना विशाल बन रहा है कि पिछले दो साल से लगभग रोज 2000 मजदूर काम कर रहे है, फिर भी इसके 40% ही तैयार होने की बात कही जा रही है। (प्रथम प्रवक्ता, मार्च व्दितिय 2003) मंदिरों की संपत्ति (लूट) के कब्जे को लेकर पंडों के बीच हत्याएं और खूनी संघर्ष का सिलसिला जारी है। श्रीराम जन्मभूमि न्यास के उपाध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास पर हुआ खूनी सशस्त्र हमला इसी वजह से हुआ। इन्ही के मंदिर के समीप स्थित राम वल्लभ कुंज मंदिर में विवाद बढते देखकर मंदिर को प्रशासन ने कुर्क कर लिया। सन 1983 में हनुमानगढी के साधु हरभजन दास की हत्या उसके निवास पर ही कर दी गई थी। साधुओं ने हत्यारे को पकडकर तात्काल मौत के घाट उतार दिया था। इसके पीछे भी धन-संपत्ति का विवाद था। 1987 में रामकोट इलाके में स्थित एक मंदिर के पूजारी जगतनारायण दास की कुल्हाडियों से काटकर हत्या की गई थी। बडी छावणी के महंत रामप्रसाद दास की हत्या की वजह भी करोडो की संपत्ति है।

हनुमंत भवन के महंत रामदेव शरण की हत्या की वजह भी संपत्ति विवाद रहा है। 1991 में जानकी घाट व बडा स्थान के महंत मैथिलिरमण शरण की हत्या उनके कमरे में गला दबाकर की गई थी। इसमें उनके शिष्यों का हाथ बताया गया था। साधु वेशधारी माफिया सरगणा रामकृपाल दास के उदय होने से अयोध्या में गँगवार भी बढ गया। सन 1995 में रामानुज दास की हत्या भी करोडों की संपत्ति के लिए हुई थी। नवंबर 1996 में रामकृपाल दास की हत्या हो गई। उसकी हत्या में प्रकाश शुक्ला का नाम सामने आया था। यह हत्या रामबाग मोहल्ले में स्थित बेशकीमती जमीन से जुडी बताई जाती है। (नवभारत, 30 मई 2001)

राम जन्मभुमि न्यास के मुख्य ट्रस्टी महंत डॉ. धर्मदास ने आरोप लगाया है कि न्यास के अध्यक्ष महंत रामचंद्र दास परमहंस अपराधी और हिस्ट्रीशिटर है। अयोध्या पुलिस स्टेशन में उसकी हिस्ट्रीशीट संख्या 22 वी दर्ज है। उन्होने यह भी आरोप लगाया की महंत परमहंस दास ने न्यास के फंड का जबर्दस्त गोलमाल किया है। चेतावनी यात्रा को आयोजित करने के बहाने महंत परमहंस दास ने बँक से दो करोड रुपये निकाले। (साप्ताहिक कांन्ति, 31 मार्च से 6 अप्रैल 2002) धर्मदास ने आरोप लगाया कि विश्व हिंदु परिषद के नेता अशोक सिंघल, विष्णुहरी डालमिया और परमहंस रामचंद्रदास ने शिलादान के नाम पर दो करोड डकारे। (लोकमत समाचार, 12 मई 2002) जब अयोध्या में ही ये हाल है तो सारे भारत की स्थिति क्या होगी इसका आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है।

आपसी लडाई से ब्राह्मण-धर्म के तथाकथित शंकराचार्य तक नही बचे है। बद्रिकाश्रम स्थित ज्योतिष्पीठ पर कब्जे को लेकर दो शंकराचार्यो 1) स्वामी माधवाश्रम महाराज एवमं 2) स्वामी स्वरुपानंद के बीच शर्मनाक स्तर पर वर्चस्व की लडाई चल रही है। माधवाश्रम महाराज ने पत्रकारों के समक्ष स्वामी स्वरुपानंद पर अपराध करने, जमीनों पर अवैध कब्जे करने, पदलोलुपता तथा उनपर कातिलाना हमले के आरोप लगाए। उन्होने न्यायालय की शरण ली और न्यायालय ने स्वरुपानंद के खिलाफ वारंट जारी किये। उन्होने लोगों से स्वामी स्वरुपानंद का बहिष्कार करने का आव्हान किया। स्वरुपानंद

स्वामी को शास्त्रार्थ करने की चुनौती भी दे डाली। स्वरुपानंद स्वामी ने कहाँ कि वो माधवाश्रम से शास्त्रार्थ कैसे कर सकता है क्योंकि वह तो ब्राह्मण है ही नही। (लोकमत समाचार, 7 जुलाई 2001) 28 मार्च 1998 को ज्योतिपिठ के शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रम ने दो अन्य शंकराचार्य व्दारकापीठ के स्वामी स्वरुपाननद सरस्वती तथा ज्योतीपिठ के स्वामी वासुदेवानन्द के खिलाफ उनपर जानलेवा हमला करने कि शिकायत दर्ज कराई। इस जानलेवा हमले में स्वामी माधवाश्रम के पैर की हड्डी टूट गई। (भारत अश्वघोष, मई-जून, 1998, p.53)

मस्तराम कपूर के अनुसार धर्म और पैसे का गठबंधन इस समय राष्ट्रीय स्तर पर ही नही, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पूरी तरह से उजागर हो चुका है। धार्मिक संस्थाओं का भूमंडलीकरण हो चुका है। इन संस्थाओं के पास इतना पैसा है कि बडी बहुराष्ट्रीय कंपनी का तेज भी इनके आगे फिका पड रहा है। करों से और बही-खातों की पारदर्शिता से मुक्त ये धार्मिक कंपनियाँ विश्व की सरकारों तथा न्याय-व्यवस्था के लिए खतरा बन गई है। अनेक रुपों में आतंकवाद को बढावा देकर वे आदमी को क्रूर पशू भी बना रही है। पिछले दो दशकों में स्वाध्याय, ध्यान, योग, राम-कृष्ण, शिव-शक्ति, गीता, रामायण, महाभारत आदि, धर्मकथाएं करने वाली संस्थाओं और उनके गुरुओं, संतों के पास इतनी संपत्ति जमा हो गई है कि उसके बल पर कितने ही ओसामा बिन लादेन तैयार हो सकते है।(लोकमत समाचार, 18 सितंबर 2002)

तीर्थस्थलों, मंदिरों में ब्राह्मणों के शोषण के कुछ उदाहरण पेश है :- सुभाषचंद्र बोस को शुद्र करार देकर ब्राह्मणों ने उन्हे अपने साथ खाना खाने से मना किया। कहा कि वे शुद्रों की पंक्ति में खाना खायें। बोस उस धार्मिक समारोह से बिना खाये चले गये और उन्होने सदैव तीर्थस्थलों का बहिष्कार किया। पंडे पूजारियों ने धर्म के नामपर देवदासी बनाकर वेश्यावृत्ति की प्रथा कायम की। 'बनारस में दशाश्म मेंध घाट पर दाह संस्कार के लिए जब शव लाए जाते है तब वहाँ के पंडे इसे अपने कब्जे में कर लेते है और कहते है कि यहां आने के बाद वह उनका हो गया। मृतकों के परिजनों को प्रारंभ में वे मकान, जमीन, हीरे, जवाहरात, सोना चांदी, लाखों रुपये दान में मांगेंगे। बेचारे परिजन अपने संबंधी की मृत्यु से दुखी है ऊपर से ये आर्थिक मार। गया और देवधर के पंडे गया, जेसी डोह जंक्शन से ही अपना शिकार फँसाकर अपने साथ ले जाते है और मनमानी रकम वसूलते है। दिनमान'' पत्रिका में दशकों पहले छपे लेख में कहा गया था कि देवधर (अब झारखंड) के 5000 पंडे करोडपति है। विनोदानंद झा (दिवंगत मुख्यमंत्री बिहार) की पंडों से अनबन हुई तो पंडों ने चैलेंज देकर उन्हे चुनाव में धूल चटा दी। (कृष्ण कुमार, प्लॉट नं. 13, महेश नगर नागपुर 440 013, लोकमत समाचार, 14-3-2001)

एक बार औरंगजेब काशी की तरफ गये थे, हिन्दु महिलाओं ने काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन की इच्छा जाहिर की जिसे बादशाह ने मान लिया। जब लष्कर आगे बढने की तैयारी कर रहा था तो पता चला कि कोटा की रानी वहाँ नही है। खोज शुरु हुई तो पता चला कि मंदिर के गर्भगृह में उनके सारे आभुषण लूट लिए गये थे। क्रोधित औरंगजेब ने मंदिर-रुपी ऐसे दुराचाल के स्थल को तोडने का आदेश दिया। काशी के विषय में कहावत है कि 'रांड, साँड, सीढी, सन्यासी इनसे बचीयों तो सेवियो कासी' वहाँ देह-व्यापार करती विधवाओं, और धूर्त पाखंडी सन्यासियों की बहुतायत है।

मान॰ मेघवाल के मुताबिक वाराणसी में गंगा नदी के मध्य भाग में एक कुंआ है जिसके चारों ओर गेट बना है। उसके बीच में आटी यानि तलवार लगी है। पंडे बहुजनों

से कहते थे कि हम तुम्हे सशरीर स्वर्ग भेज देंगे इसके लिये आप हमें भरपूर दक्षिणा दें और इस कुए में छलांग लगा दे, आप सशरीर स्वर्ग जायेंगे। कुंऐ में कूदने वाले बहु. जन तलवार से कटते रहे और उस कुंए के मगरमच्छ तथा मछलियाँ उन्हे खाती रही। अंग्रेजों ने सन् 1902 में इस कुएं को बंद किया। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 16 जूलाई 2006, पेज 4) इंदौर में सुर्यदेव नगर में माताजी के मंदिर में तथा राजेन्द्रनगर में स्थित अंबा मंदिर में चुनाव में जीत, बच्चों की चाहत, नौकरी, शादी-ब्याह इ॰ मन्नतें पूरी कराने के लिए जानवरों की बलि देकर बलि दिये बकरे का चार कटोरा खून मंदिर के पूजारी पिते है। वे कितना खून पी जाते है इसका इन पूजारियों को खुद पता नही चलता। अबतक एक लाख से ज्यादा बकरों तथा देढ लाख से ज्यादा मुर्गो की बलि चढाई जा चुकी है। (भाष्कर, 23 जुलाई 2003) गुरु गोपाल चक्रनारायण के अनुसार हर वर्ष यल्लमा के मंदिर में हिजडे अपने विश्वास के अनुसार कम से कम एक व्यक्ति को ले जाकर उसका लिंग देवी पर चढाते है और उस व्यक्ति को हिजडा बनाते है। येरमाळा बार्श, सोलापुर महाराष्ट्र के येडेश्वरी मंदिर में भी यही प्रथा है। नारदेव आंध्र में कल्पक मंदिर में हर वर्ष यात्रा भरती है तथा अपनी इच्छापूर्ति के लिए लोग स्त्रियों के खून को मंदिर में चढाते है। वडगांव पिंपळा, तालुका सिन्नर, नासिक महाराष्ट्र के भवानी मंदिर में अपने नवजात शिशु को बलि चढाया जाता है। कुरमून बर्दवान पश्चिमी बंगाल के शिव मंदिर में चैत्र माह में यात्रा भरती है। यात्रा के तीसरे दिन पूजारी एक व्यक्ति की बलि चढाकर उसके कटे सिर को हाथ में लेकर सभी भक्तगणों के साथ नृत्य करता है। अंग्रेजों ने इस नृत्य को ''मृत्यु का नाच'' ऐसा नाम दिया। माणुर की यल्लमा देवी की यात्रा में हजारों महिलाएं पूर्णतः नग्न होकर शामिल होती है, उनके बदन पर चिथडा तक नही होता। मंदिरों में बलि दिये जीव के खून से माथे पर तिलक लगाया जाता था। इसी से माथे पर तिलक लगाने की प्रथा कायम हुई है।(गुरु गोपाल चक्रनारायण, p.1,2, 6, 27) गुवहाटी के विश्व प्रसिध्द कामाख्या मंदिर को तांत्रिक शाखा का सर्वोच्च आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र माना जाता है। कामाख्या मंदिर में तांत्रिक शाखा के सदस्य जादुई व आध्यात्मिक शक्ति हासिल करने देवी के मंदिर में बच्चों की बलि चोरी छिपे चढाते है। इस मंदिर से नरबली की महिमा को लेकर कई कहानियाँ जुड़ी हुई है। एक स्वघोषित अघोड ने अपनी 18 महिने की मासूम बच्ची की बलि देने की कोशिश की थी। (दैनिक भाष्कर, 25 जून 2003) एक और रस्म के अनुसार रात को ये लोग स्मशान में एकत्रित होते है और मंत्रों का जाप करते हुए मुर्दो की हड्डियाँ चबातें है। जिसकी विभत्स तस्वीरें अखबार में छपती रही है। तामिलनाडु में वेटटाकारा स्वामी में आस्था रखने वाली महिलाएं जमीन पर औंधे मुंह लेटती है। लोहे की किले जडे हुए जुतें पैर में पहनकर पूजारी उनके उपर से चलता है। इन किलों से बचने के लिए ये महिलाएं अपने बदन पर लकडी का पाटा ओढ लेती है। (लोकमत समाचार, 5 मार्च 2003) तामिलनाडु में मदुरै जिले के पेरादूर गांव में 105 बच्चों को 1 मिनट के लिए जमीन में गाडने की लोमहर्षक घटना हुई। कुछ बच्चों की तबियत बूरी तरह बिगड गई। इस धार्मिक समारोह में जयललिता मंत्रिमंडल का एक मंत्री भी उपस्थित था। पुलिस की मौजूदगी में यह घटना हुई। 500 वर्षो से चली आ रही इस परंपरा में बच्चे पर हल्दी का पानी डालकर उसे किसी तरह बेहोश किया जाता है, नगाडे के शोर के बीच उसे जमीन में गाडकर मिट्टी भर दी जाती है। इसके एक मिनट बाद उसे बाहर निकाला जाता है। यदि इस दौरान बच्चा रोया या उसने असहयोग किया तो उसके माता-पिता को 1000 रुपये जुर्माना देना पडता है। (नवभारत, 23 अगस्त 2002)

भारत लूच्चे लंफंगे साधूओं से भरा देश है। राजपूत काल में ब्राह्मणों ने सूंदर सुकूमारियों का स्वच्छंद संभोग करने, रासरंग रचने के लिये सखी संप्रदाय बनाया। सखी संप्रदाय के धार्मिक रुप में स्त्री हो या पुरुष सभी को कृष्ण की सखी माना जाता था। ये सखीयाँ कृष्ण को अपना पति मानती थी। सखी बना पुरुष स्त्री रुप और भाव धारण करता था। ये स्त्री-पुरुष सखीयाँ सारा दिन साथ रहती, एक साथ खाना-पीना सोना नहाना करती थी। बुजुर्ग सखी बाबा जवान मर्दो को सखी बनाता। बूजूर्ग मर्दो को सखी बनाना नकार देता था। वह किसी भी उम्र की स्त्रियों को फौरन सखी बनाकर उनके गले में बांहे डालता था। कम उम्र के लडकों को वह बडे चाव से सखी बनाता। राधा बना पंडा भी इसी सखीप्रथा का एक उदाहरण है। (अम्बेडकर मिशन पत्रिका, जनवरी 2006)

इंटरनेशनल सोसाईटी आफ कृष्णा कांससनेस नामक कृष्ण-भक्तों की संस्था जिसके सारी दुनिया भर में गुरुकुल आश्रम तथा बोर्डीग शालाएं है वहाँ 4 वर्ष की अवस्था में ही बच्चों को दाखिल किया जाता है। दुनियां भर में स्थापित गुरुकुलों के गुरु चाकु की नोंक पर गुरुकुल में दाखिल इन बच्चों के साथ गुदा संभोग करते है तथा बच्चियों पर बलात्कार करते है। इन वारदातों का विस्तृत वर्णन अमेरिका के विख्यात पत्र 'टाईम्स' तथा ''न्युयार्क टाईम्स'' में दिया जा चुका है। खुद इसी कृष्ण-भक्तों की संस्था के प्रवक्ता डॉ. इ. बर्क रॉचफोर्ड जुनियर ने 9-10-1998 को इस बात को स्वीकार किया है। सन 1996 में 10 ऐसे बच्चों ने चाकू की नोंक पर उनके साथ वर्षो तक गुरुओं व्दारा बलात्कार किये जाने की शिकायत की। जान्हवी नामक 26 वर्ष की युवती ने बताया कि वह 4 साल की उम्र में गुरुकुल में शामिल हुई थी। उसे नंगा करके एक टब में सुलाया जाता था। अमेरिकी आश्रम के एक गुरु बच्चों व्दारा विद्रोह किये जाने के कारण तथा एक गुरु लोकनाथ स्वामी को बलात्कार के आरोप में हटाने पर मजबूर होना पडा। अमेरिका में ऐसे 45 आश्रम चल रहे है। भारत में चल रहे ऐसे आश्रमों में अमेरिकी लड़के लड़कियों के साथ ऐसे व्याभिचार जोरों पर चल रहे है। गुरुओं व्दारा उनकी चिट्ठियाँ सेंसर कर दी जाती है। इस कृष्ण-भक्तों की संस्था के गवर्निंग बॉडी कमीशन का चेयरमॅन एक जर्मन रंडी के साथ भाग गया। इसके दो प्रसिध्द गुरु भावानन्द स्वामी तथा स्वामी किर्ति आनंद तो गुदा मैथुन के आरोप में अमेरिका की जेल में सजा काट रहे है। संस्था की इटली शाखा के आनन्द स्वामी गुरु नोएडा (दिल्ली-उ.प्र) स्थित एक भारतीय राजनयिक की बेटी को उडा ले गया। कई अमेरिकी वहाँ के आश्रमों में चल रहे गुदा मैथुन तथा बलात्कार से बचने अपने बच्चों को भारत के कृष्ण आश्रमों में भेजने लगे। लेकिन यहाँ उनकी स्थिति और भी बदतर हो गई। ब्राम्हण नेता अटल बिहारी वाजपेयी और सिंधी नेता अडवानी ने इस संस्था के बहुत बडे कृष्ण-मंदिर का उदघाटन किया था। (भारत अश्वघोष, नवंबर-दिसम्बर, 1998, p. 54)

अनाचार के आश्रमों की जगह-जगह बाढ़ लाई गई है। दिल्ली की डिफेंस कॉलनी की एक कोठी में स्वामी सदाचारी के मसाज पार्लर में पहुँचे एक व्यापारी को रिवाल्वर की नोंक पर एक गेरुये वस्त्रधारी व्यक्ति ने उसकी तथा उसकी सेवा में पेश लडकी के साथ उसकी नग्न अवस्था में तस्वीरें उतारी। स्वामी ने धमकाकर उसके पैसे सोना, चांदी, उसकी घडी, इ॰ सभी छीन लिया। व्यापारी व्दारा लिखाई गयी रिपोर्ट के आधार पर उस कोठी पर छापा मारकर उस स्वामी को, गिरफ्तार किया गया। तलाशी में मसाज हाउस में दो रिवाल्वर, कई कारतूस, दो हॅन्डग्रेनेड, जापानी वॉकीटाकी, विस्की की बोतलें, दो पोलेराईड व दो विदेशी कैमरे, लड़कियों व पुरुषों की नंगी तस्वीरें बरामद हुई। गेरुवा वस्त्रधारी वह व्यक्ति कुख्यात स्वामी सदाचारी था। वह ठगी और ब्लैकमेलिंग के कारनामों

में दिल्ली और मुंबई के जेलों की यात्राएं कर चुका था। स्वामी सदाचारी ने सदाचारी वर्ल्ड वेलफेयर, सदाचारी जनसेवा केन्द्र, सदाचारी विश्व ज्योतिष केन्द्र, ऑल इंडिया सदाचारी जनता कॉग्रेस पार्टी, सदाचारी एज्युकेशनल चॅरिटेबल ट्रस्ट और सदाचारी मसाज हाउस इ. दुकानें चला रखी थी। उसका असली नाम विवेकानंद झा (ब्राह्मण) था। उसका पिता विद्यानंद झा बिहार के मधुबनी क्षेत्र का ज्योतिषी था। दिल्ली आकर उसने अपना नाम स्वामी सदाचारी रखा। पढाई के दिनों में उसने दिल्ली प्रदेश महिला कॉंग्रेस अध्यक्ष प्रेमलता को अपने प्रभाव में लिया था। प्रेमलता के व्दारा उसे कॉंग्रेस दरबार में अपनी जडें जमाने में तकलीफ नही हुई। अपने धंदे में उसने अपने भाईयों को भी शामिल कर लिया। उसने जादूगर अशोक भंडारी से कुछ जादुई करिश्मे सीखे। एक पत्रकार मित्र की मेहरबानी से प्रसंशात्मक किताब 'द रिलिजन ऑफ लव' छपवाई, जिसमें उसे भगवान का दर्जा दिया गया था। पूस्तक में कहा गया था कि इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, ज्ञानी जैलसिंह, रोनाल्ड रीगन, ब्रेजनेव्ह आदि उनके आशीर्वाद से ही सफल हुए है। (लोकमत समाचार, 25 जुलाई 2003) मद्रास उच्च न्यायालय नें बारह लड़कियों के साथ बलात्कार एवं एक प्रत्यक्षदर्शी की हत्या के आरोप में खुद को भगवान कहने वाले विवादास्पद धर्मगुरु प्रेमानंद और उसके सचिव कमलानंद को निचली अदालत व्दारा दी गई दोहरे आजीवन कारावास की सजा को बहाल रखा। बलात्कार और हत्या के मामलें में कथित धर्मगुरु को सहयोग देने के आरोप में उनकी पत्नि चंद्रादेवी को दी गई दो वर्ष सात महीने की सश्रम कारावास की सजा को भी बहाल रखा है। (लोकमत समाचार, 13 दिसंबर 2002)

प्रबोधनकार ठाकरे के अनुसार मौजूदा हिन्दु धर्म यह धर्म बिल्कुल ही नही है। ''पंडोंका यह धर्म'' गरीब, नासमझ मूलनिवासियों को मूर्ख बनाकर भट-ब्राह्मणों के पोषण का सैतानी थोथांड {पाखंड} है। इसी थोथांड के बोझ में दबकर गैरब्राह्मण मानव होकर भी पशु से भी गया बिता बन चुका है। उसकी गरीबी की जड भट-ब्राह्मणों के पेट में है। ठाकरे के अनुसार मंदिरों का धर्म यानी भटों की उपजीविका का साधन है। यह रहस्य बहुजनों से छुपाने के लिए ही भट-ब्राह्मणों ने 18 पूराणों की निर्मिती की है। पूराणों के शिकार बहुजन इसके इतने अधीन हो जाते है कि वह भटों के पैरों पर अपना माथा रगडने और भटों के पैर का धोया पानी तीर्थ समझ कर पीने लगते है। मंदिरों का महात्म्य पूराणों ने बढाया। पूराण याने शिमगा {होली के अवसर पर की जाने वाली अनैतिक हरकतें} ऐसा अनेक विचारवंतों का मानना है। पूराण यह शौचकुप है यह मेरा {प्रबोधनकार ठाकरे का} मानना है। मंदिर यानी भटों को जन्म के आधार पर मिलने वाली जागीरें है। भटों के सिवा मंदिर नही और मंदिरों के बिना भट नही ऐसा नियम उन्होने ही बनाया है। इसलिए मंदिरों की संख्या बढाने के लिए उन्होने ईश्वरों की संख्या 33 कोटी तक भिडा दी। देवताओं में भी श्रेष्ट-कनिष्ठ जैसे भेद पैदा किये। प्रत्येक देवताओं के अनेक संप्रदाय तथा उनके भक्त संघ बना दिये। इन भक्त संप्रदायों में भले ही जानी दुश्मनी हो लेकिन इन सभी के मंदिरों में भट ब्राह्मण देवों के दलाल के रुप में मौजूद रहता ही है। चाहे राम हो या रावण सभी की पूजा के लिए भट उपस्थित नजर आता है। भटों ने एक ही गांव में एक ही देवता के अनेक मंदिर बनाए। पूराणों की गुलामगिरी से ग्रस्त मूलनिवासियों से भट, देवता के नाम पर जेवर, गांव, वजीफे, तरह तरह के दान इ॰ पाकर मजबूत होते गये। मंदिर के जेवर भटों की पत्नियों के इस्तेमाल में रहते है। कई मंदिरों की तो यह ख्याति है कि भक्त ने ईश्वर के नाम से समर्पित किया फूलों का हार आधे घंटे में ही ''गमनाजी-जमनाजी'' {वेश्या} के बालों में गजरे के रुप में पहुँच

जाता है। मूलनिवासियों को मनुस्मृति, पूराण और मंदिर के फंदे में फाँसकर ब्राह्मण जाति ने अपना वर्चस्व कायम रखा है। यह तीनों बहुजनों के पेट में घुसे हुए प्राणघातक तीर और पत्थर की शिलाएं है। इनके कारण ही ब्राह्मणवाद जींदा है। इन को नष्ट किजिए, और आप देखेंगे कि भटशाही समाप्त हो गई है। लेकिन वह सुनहरा दिन तभी आ सकता है जब इन तीनों महा-पातकों के प्रति भटों व्दारा बहुजनों के मन में कायम की हुई पाप-पूण्य की झूठी धारणाओं को समाप्त किया जाए। (प्रबोधनकार ठाकरे, p.3,9,13,14) ब्राम्हणों का शोषण हैवानियत की सारी हदे पार कर चुका है, ज्ञानेश्वर के वक्त यह और भी भयानक था। इसलिए संत नामदेव ने आसानी से चातुवर्ण्य, वेद, शास्त्र, मंदिरों और तीर्थस्थलों की व्यर्थता को साबित किया।

संत कबीर के मुताबिक ब्राह्मणों का झूठा विश्वास है कि गंगा के पानी से सारे पाप धूल जाते है। जब मैने अपने कटोरे में गंगा का पानी लेकर ब्राह्मण-पंडे को पेश किया तो उसने एक मुस्लिम जुलाहे के हाथ के पानी को अपवित्र मान कर लेने से इनकार कर दिया। अगर गंगा का पानी मेरे कटोरे के पाप नही धो सकता तो ब्राह्मण गंगा के पानी से पाप धुलने का झूठा प्रचार क्यों करते है ? संत कबीर के मुताबिक गंगा में नहाने के बाद भी अगर किसी का मन गंदगी से भरा पडा है तो गंगा नहाने से क्या फायदा ? लोग व्यर्थ में तीर्थो के चक्कर काटकर, उपवास कर और तीर्थो के थंडे पानी में नहा कर खत्म होते रहे है। लेकिन उससे उनका एक भी पाप कम नही हुआ बल्कि और दस पाप उनके सीरों पर सवार हुए है। क्योंकि मन की गंदगी तो वैसी की वैसी है। कबीर के मुताबिक किसी परजीवी बेल की तरह तीर्थस्थल बढते जा रहे है। कबीर के अनुयायियों ने इन्हे त्याग दिया है क्योंकि जहर कौन खाएगा ? (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917)

संत कबीर के मुताबिक 'जपने की माला लकडी है, मूर्ति पत्थर है, गंगा तथा यमूना पानी है, राम तथा कृष्ण मर चुके है, चारों वेद काल्पनिक कहानियां मात्र है। अगर पत्थर की पूजा करने से ईश्वर मिलता है तो मै पहाड को पूजने के लिये तैयार हुं। इनसे चक्की के पत्थर अच्छे है जिनसे लोग अनाज पीस सकते है। नदी में डूबकी लगाने से मुक्ति मिलती है तो नदी के जीव कबके मुक्त हो गए होते। डूबकियां लगाने वालों में तथा नदी के मेंढकों में कोई फर्क नही है। ब्राह्मण भर्सना के काबिल है, उन्हे दान या भिक्षा मत दो। वे सपरिवार न सिर्फ नर्क में जाएंगे बल्कि अपने जजमानों को यानि जो उन्हे दान और भिक्षा देते है उन्हे भी अपने साथ ले जाएंगे।(Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907) जोग जप तप संयमा, तीर्थ ब्रत दाना। नौधा बेद किताब है, झूठे का बाना।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926,p.78)

बुध्दी-तर्क से यही निष्कर्ष निकलता है की ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर को कदम कदम पर इतना अपमानित होना पडा कि अंततः उसने अपनी 21 वर्ष की आयु में ही समाधी लेकर (1296 ईसवी) खुद के प्राण त्याग देने में ही सम्मान समझा। जोशी के अनुसार संत नामदेव इस समाधी के अवसर पर उपस्थित नही थे ऐसा उल्लेख हर्षे इन्होने किया है। (मधुकर जोशी, p.91) एक माह ही में दूसरे भाई सोपान ने भी समाधी लेकर अपने प्राण त्याग दिये। {मुक्ताबाई की बिजली गिरने से मौत हुई} निवृत्ती ने भी कुछ ही महिनों बाद 1297 में समाधी लेकर प्राण त्यागे। (मेणसे, p. 80-81)

ज्ञानेश्वर इ॰ ब्राम्हण-संतों व्दारा इस तरह प्राण त्याग देने से ब्राम्हणों ने संत नामदेव

को इतना प्रताडित किया कि वे पंढरपुर छोडकर पंजाब चले गये। पंढरपूर के वारकरियों पर राजसत्ता पर आसिन ब्राह्मणवादियों व्दारा हेमाड भट इ॰ की सहायता से इतने जुल्म ढाए गये कि शायद इसी वजह से मराठी में ''त्याची पंढरी घाबरली'' (उसकी पंढरी (पंढरपूर) आतंकित हो गई) जैसी कहावतें निर्माण हुई।

बहुजन संत नामदेव ने ब्राह्मण-संतों के विषमतावादी, विचारों का जबर्दस्त विरोध किया था। इसलिए ब्राह्मण साहित्यकारों ने गुरु नामदेवजी का चरित्र हनन करने के लिए उन पर झुठे आरोप लगाए है कि संत बनने के पहले वे लुटपाट और लोगों की हत्याएं करते थे। (जारुरकर p. 39) मान॰ उषा चौधरी के अनुसार संत नामदेव जी ने शतकोटी अभंग लिखने की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए उनके अभंग (दोहे) प्रचंड संख्या में थे। ब्राह्मण ों ने उनके अभंगों को नष्ट किया तथा उसमें ब्राह्मणवादी जहर की मिलावट करने का प्रयत्न किया। (जारुरकर, p.95) बहुजन संत गुरु नामदेव जी का आन्दोलन महाराष्ट्र से शुरु हुआ लेकिन कामयाब पंजाब में हुआ। संत गुरु नामदेव जी के शिष्य सतगुरु कबीर है जिन्होने अल्लाह की बात की। उन्होने संत नामदेव की शिक्षा को आगे बढाया।

कबीर सभी मानवों को समान मानते थे :- एकै रुधीर एकै मल मुतर एक चाम एक गूदा। एक बूंद तै सृष्टी रची है कौन ब्राह्मण कौन सुदा।। अवल्ली अल्लह नूर उमाया कुदरति ते सब बंदे। एक नूर तै सब जग कीआ कौन भले कौन मंदे।। (कबीर-ग्रंथावली, डॉ. पारसनाथ तिवारी, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग। प्रथम संस्करण अक्तूबर 1961) संत कबीर इन्सानों को हिन्दू-मूस्लिमों में बाँटने के खिलाफ थे :- संत कबीर के मुताबिक अगर खतना करने से ही कोई मुसलमान बन जाता है तब मुस्लिम औरतों का धर्म कौनसा होगा ? वे पुरुषों की अर्धांगनी मानी जाती है तब तो खतना किया हुआ पुरुष भी आधा हिन्दू ही रहेगा। जनेउ पहनने से ही अगर कोई आर्य-ब्राह्मण बनता है तो फिर ब्राह्मण औरतों को जनेउ क्यों नही पहनाया गया है ? औरतों को शुद्र करार देने के बावजूद ब्राह्मण-पंडा अपनी {शुद्र} बिबी के हाथ से परोसा अन्न क्यों खाता है ?(The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) पहिर जनेउ जो ब्राह्मण, मेहरी क्या पहिराया। वो जन्म की सुद्रीन परसै, तुम पांडे क्यों खाया।। हिन्दू तुर्क कहांते आया, किन्ह यह राह चलाई। दिलमें खोज देख खुजादे, भिस्त कहांसे आई।।(कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926, p.69) संत कबीर ब्राह्मणों के खुद को पवित्र और दूसरों को नीच करार देने के ढोंग का पर्दाफाश करते हुए कहते है :- ओ पंडे जब तुम घडे से पानी पीते हो तब इसपर विचार करो कि जिस मिट्टी से वह बना है उस मिट्टी में कितने मानव तथा प्राणियों के अंश मिले हुए है। पानी में कितने जीव पैदा होते है और एक-दूसरे का खून बहाते है। पानी में खून मिला है। पानी धरती पर बहता है उस मिट्टी में से कितने मृत मानव प्राणियों के अंश पानी में धूलमिल जाते है। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917)

कबीर कहते है :- ना मंदिर में ना मस्जिद में, सबकुछ देखा रोटी में। इसतरह कबीर रोटी को ईश्वर मानते थे। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 25 जून 2006) वे ईश्वर को नही मानते थे :- जग आनादी निधन अहै, तासु न कबहु नास। बीज ते रचनास सकल हो, यह जग सव्यंप्रकाश ।। याको कर्ता नाही कोई, यह जग आपै आप। कर्म प्रेरि करवाओ सब, कर्मही रचना थाप ।। कर्म जनित फल भोगै सारे। आतम सबके न्यारे न्यारे।। (कबीर-ग्रंथावली, डॉ. पारसनाथ तिवारी, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग। प्रथम संस्करण अक्तूबर 1961) हिन्दू तुर्क की एक राह है, सदगुरु सोई लखाई।

कहे कबीर सूनो हो संतों, राम न कहुं खोदाई।।(कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926) इससे स्पष्ट है कि कबीर किसी ईश्वर को नही मानते थे। उनके व्दारा लिया गया राम का नाम प्रतिक मात्र है। उनपर बौध्द तथा जैन धर्म का प्रभाव स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है।

कबीर के मुताबिक :- किसी भी मूर्त वस्तु को पूजना नही है, किसी भी देवता की प्रतिमा या मूर्ति पर चढाये हुए अन्न को नही खाना है, जो भी अन्न आप खाएं उसे निर्माता के नाम से खाये। कबीर अपने दोहों में ईश्वर के रुप में राम के नाम लेते है लेकिन अपने ही दोहों में उन्होने स्पष्ट किया है कि उनके राम का संबंध दशरथ पुत्र राम या ब्राह्मण धर्म के किसी भी अवतार से नही है। कबीर के मुताबिक 'ओ पंडे तु जो भी कह रहा है सब झूठ है। राम के नाम का उच्चारण करने से अगर दुनियां को बचाया जा सकता है तो 'शक्कर' इस शब्द के उच्चारण से मुंह मिठास से भर जाना चाहिये। सिर्फ नाम के उच्चारण से क्या होगा।(The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) ' बहुजन संत कबीर ने कभी भीख नही मांगी बल्कि वे बुनाई कर अपनी रोटी कमाते थे। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 16 जूलाई 2006) कबीर की शिक्षा है कि :- सभी जीवों के प्रति प्रेम और करुणा का भाव रखे, सभी प्रकार के नशे से दूर रहे, व्याभिचार से दूर रहे, झूठ न बोले, चोरी न करे, जुंआ न खेले, जादू-टोना, टोने-टोटके, गंडे-ताबीज, जंत्र, मंत्र, तंत्र इ. पर विश्वास न करें। तीर्थ इ. को भेंट न दें क्योंकि ये मौत के व्दार है। स्वर्ग, नर्क या अन्य किसी लोकों का अस्तित्व नही है, ये सिर्फ मूर्खो की कल्पनाएं है। ईर्षा, धोखेबाजी, अन्याय मुक्ति के दुश्मन है। मानवता ही सबसे बडी दौलत है। लोगों की भलाई करना ही मुक्ति का रास्ता है। उसके बिना मुक्ति मुमकिन नही है। लोगों से नम्रता से पेश आना बहुत बडा गुण है। घमंडी लोग सर्वोच्च सत्य को नही पा सकते। कबीर के मुताबिक जो अपनी जाति और वंश को त्याग देते है वे सदियों तक अमर हो जाते है। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) कबीर मन की शुध्दता और सदचरित्र को ही सबसे श्रेष्ठ मानते थे :- तन कौ जागी सब करे, मन कौ बिरला कोई। सब सिधि सहजे पाईये, जे मन जोगी होई।। माला फेरे मनमुखी, तातै कछु न होई। मन माला कौ फेरतां, घट उजीयारा होई।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926) कबीर के मुताबिक 'पेड अपने फल खुद नही खाता, नदी अपना पानी नही पिती। सदपुरुष औरों के भले के लिये ही जीते है।(Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907) कबीर के मुताबिक अपनी जीभ पर नियंत्रण रखो; ज्यादा मत बोलो। समझदार लोगों के बीच रहो। पानी पीने के पहले उसे छान लो। किसी को अपना गुरु बनाने के पहले उसे अच्छी तरह से जांच-परख लो। अपने गुरु की बातों की सच्चाई को जांचों-परखों।(Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907) जाका गुरु है आंधरा, चेला है जाचंद ! अंधे अंधा ठेलियां, दोन्हू कूप परंत ।।(कबीर-ग्रंथावली, डॉ. पारसनाथ तिवारी, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग। प्रथम संस्करण अक्तूबर 1961) संत कबीर कहते है :- '' निगुरा ब्राह्मण नही भला, गुरुमुख भला चमार, देवतन से कुत्ता भला नित 36 भूंके व्दार।। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 16 जूलाई 2006) पाप कटन को कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा। बुडत दोउ परस्पर देखा, यम लाये है खिंचा।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926 p.44)

इसतरह कबीर न सिर्फ शोषक ब्राह्मणों की भर्सना करते है बल्कि जो लोग धूर्त ब्राह्मणों के अंधविश्वासों में उलझे है उनपर उन्होने पहेली भी बनाई है :- बुझ लिजै ब्रह्म ज्ञानी। घोरि घोरि बरखा बरसावे, परिया बूंद न पानी।। मेंढुक सर्प रहत एक संगे, बिलइया स्वान बियाही। नित उठी सिंह सियार सो डरपे, अदभुत कथो न जाई।। कहै कबीर सूनो हो संतों, जो यह पद अर्थावें। सोई पंडित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926, p.58, 59) इसतरह कबीर बताते है कि किस तरह ब्राह्मणों के धार्मिक कथन बिना पानी के बारीश का भ्रम मात्र है। विदेशी शोषक ब्राह्मण और शोषित मूलनिवासी बहुजनों का मेल सांप और मेंढक, कुत्ते और बिल्ली के संग जैसा अस्वाभाविक संग है। कबीर के मुताबिक बहुसंख्यक मूलनिवासियों का अल्पसंख्यक ब्राह्मण समुदाय से घबराना ऐसा ही है कि बहुजन सिंह किसी कमजोर सीयार से डर रहा है।

कबीर ब्राह्मणों को आगाह करते है कि वे लोगों का दमन शोषण ना करे वर्ना इसके नतिजे खौफनाक हो सकते है। संत कबीर के मुताबिक 'लोहार की झोंकी गई हवा से लोहा भी ज्वाला उगलने लगता है या भस्म हो जाता है। कमजोरों का दमन-शोषण मत करो। कमजोरों की आहों में इससे भी बडी ताकत होती है।' (Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907)

कबीर के मुख्य 12 शिष्य थे जो सभी दलित तथा पिछडी जातियों से थे। सभी ने कबीर की शिक्षा पर आधारित अपने अलग अलग पंथ बना लिये थे। उन्होने कबीर के विचारों को ही प्रचारित किया। संत कबीर हिन्दी साहित्य के जनक माने जाते है क्योंकि उनके पहले किसी ने भी हिन्दी में रचनाएं नही लिखी थी। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917)

महान संत जगदगुरु कबीर गैर-ब्राह्मण थे। लेकिन उन्हे जबरन ब्राह्मण का पुत्र बताने के लिये एक विचित्र कहानी ब्राह्मणों ने गढ ली।(http://in.answers.yahoo.com/What about false fabricated PURANIC TALES to propagate superiority of caste Brahmins above all(even GOD) - Yahoo! Answers India.htm) संत कबीर के आरंभिक दोहों इ. को बिजक तथा आदिग्रंथ में दर्ज किया गया है। कबीर के मरने के पचास साल के पहले इन किताबों को नही लिखा जा सका। इसलिये यह स्पष्ट है कि इनमें कबीर की तमाम शिक्षा का समावेश नही है। उसी प्रकार यह भी स्पष्ट है कि बाद में लिखे दोहों में मिलावट की गई है। (Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907) इसलिये जाहिर है कि संत कबीर को ब्राह्मण बताना, उन्हे जातिवादी रामानंद का शिष्य बताना, कबीर की शिक्षा में ब्राह्मणवाद मिलाना इ. बातें जानबूझकर की गई है। ऐसी ब्राह्मणवादी मिलावट को हमने नकार देना चाहिये।

रेवरंड अहमद शाह के मुताबिक यह मानने के पर्याप्त कारण है कि ब्राह्मण संत रामानंद खुद ही कबीर से प्रभावित हुआ। जातिभेद और वर्ण-व्यवस्था को मानने वाला, किसी भी गैरब्राह्मण से पर्दे की ओट से ही बात करने वाला रामानंद कबीर से प्रभावित होकर ही दलित-पिछडी जाति के लोगों को अपना शिष्य बनाना शुरु करता है। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) स्पष्ट है कि कबीर के प्रभाव को कम करने के लिये और दलितों को गुमराह करने के लिये ही ब्राह्मण संत रामानंद ने दलित-प्रेम का ढोंग रचा होगा।

गुरु रवीदास ने संत कबीर को अपना गुरु माना और उनकी शिक्षा को आगे बढाया।

संत रविदास का सांस्कृतिक इन्केलाब {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों के गढ़ काशी में भी फैल रहा था। उन्होने मिट्टी से मंदिर बनाकर चमडे की ईश्वर की मूर्ति कायम की। पहली बार ईश्वर को उन्होने {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय की कैद से आजाद किया। काशी के ब्राह्मण आग-बबुला हो गए। उन्होने काशी के राजा से फरीयाद की। राजा के दरबार में तय किया जाना था कि कौन ईश्वर के मार्ग को ठिक से जानते समझते है। राजा ने संत रविदास तथा चुने हुए ब्राह्मण पंडितों के बीच धार्मिक चर्चा आयोजित की। कोई भी ब्राह्मण संत रविदास की प्रखर दलीलों का सामना नही कर सका। संत रविदास को राजा ने पालखी में बिठाकर उनका काशी में विजय जलूस निकाला। काशी के राजा उनके बगल में ही बैठे रहे। यह दलितों का पहला स्वतंत्रता युध्द था जो उन्होने जीता था। काशी के ब्राह्मण इस सदमें से कभी उबर नही सके। संत रविदास के 41 दोहे सीख धर्म के गुरुग्रंथ साहीब में शामिल किये गए है। ब्राह्मणवादियों के आध्यात्मिक बुध्दिवाद को बहुजन समाज के एक शुद्र संत के आगे परास्त होना पड रहा है यह बात {अल्पसंख्यक} ब्राम्हण समुदाय को घोर अपमान जनक लगी। 13 वी शताब्दी में ब्राह्मणों ने विष्णु मंदिर के सामने संत रविदास पर छूरे बरसाकर उनको मार डाला और प्रचारित किया कि रविदास पूर्व जन्म के ब्राह्मण थे, अपना जनेउ दिखाने के लिए उन्होने अपनी छाती खुद ही फाड ली।

इन्केलाबी सन्त ओर महाकवि रविदास ने चेताया है :– ''जे ही देश ब्राह्मण बसे, से ही देश अन्हार, आगे–पीछे देख के बहुजन करो विचार। कहे रविदास सूनों भई संतो, ब्राह्मण के गुण तीन, मान हरे, धन संपत्ति लूटे, और मति लियों छीन। '' (अम्बेडकर मिशन पत्रिका, जुलाई 2006, पेज 6) मान॰ मेघवाल के मुताबिक बहुजन संत रविदास ने कहा :- ''जातिपाति के फेर में, उलझ रहे सब लोग, मानवता को खात है रैदास जाति के रोग। वे कहते है '' चारो वेद कियो खंडोती जन रैदास करे दंडोती। यानि जो चारो वेदों का खंडन करता है रविदास उसे उसे प्रणाम करता हैं '' {कथित वेदों की धज्जियाँ उडाने का काम बुध्द ने किया था।} वे कहते है ''रविदास ब्राह्मण मत पूजीये जो होवे गुणहीन, पूजीये चरण चांडाल के जो होवे गुण प्रविण।(संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 16 जूलाई 2006) ब्राह्मणों ने संत मीराबाई को जबरन विष पीलाकर मार डाला।

जब भारत में बौध्द धर्म का नामोनिशान मिट चुका था, इस्लाम ब्राह्मणों के ताल पर नाचने वाले राजा-महाराजाओं तथा ब्राह्मणवादी मौलवियों के हाथों में बेबस हो चुका था तब सिख धर्म ने मूलनिवासी बहुजनों में प्रेम, भाईचारा और एकता कायम करने, उन्हे ब्राह्मण-धर्म के शोषण से मुक्त करने का संघर्ष छेड दिया।

नानक जब 27 साल के थे तब उनकी संत कबीर से बनारस में मुलाकात हुई थी। '' नानक नाम कबीर मत है, सो गुरु प्रघत सुनाई। इससे स्पष्ट है नानक कबीर के धर्म का ही नाम है। इस बात को गुरु ने मुझे सबके सामने कहा है। गुरु गोबिन्द सिंह के मुताबिक 'कबीर पंथ अब भयो खालसा' यानि कबीर का धर्म ही खालसा धर्म यानि सिख धर्म में तब्दिल हो गया है। नानक के सभी उत्तराधिकारी पंजाब से थे। इसके बावजूद आदिग्रंथ में पंजाबी में दोहे अपेक्षाकृत कम है। लगभग सत्तर फीसदी दोहे हिन्दी में है। कुछ दोहों में गुजराथी, मराठी, तथा दक्षिणी भाषाओं के शब्द है। संपूर्ण आदिग्रंथ पर कबीर का प्रभाव नजर आता है। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) मान॰ नंदकिशोर ओसीयान के अनुसार नानक ने जातिभेद के खिलाफ जेहाद छेड दिया। उन्होने निर्भीक स्वरों में घोषणा की :- र नीच जाति, नीची हुं अति नीच, नानक तिनके संग साथ, वडिया '' नीचा अन्दसिउ

क्या रीस।। यानी नीची जातियों में जो सबसे अधिक नीच माना जाता है, मै उसके साथ हुँ। (अम्बेडकर मिशन पत्रिका, मार्च-अप्रैल 2002, p. 15) बहुजन, शुद्र संतों की सीख को आधार बनाकर सिख धर्म बना। अछूत संतों और गुरुओं की वाणी गुरुग्रंथ साहिब में दर्ज है। गुरुनाम सिंह मुक्तसर के अनुसार गुरु नानक ने 1) भाई मर्दाना (मराशी), 2) भाई लालो (बढई), 3) भाई शिहान (टेलर), 4) भाई कोंडा (भील आदिवासी) इन चार दलितों को अपना सबसे श्रेष्ठ साथी घोषित किया। गुरुनानक जी ने पांधे (ब्राह्मण) से पढना नकारकर वे एक मूल्ला से पढे। गुरु नानक ने पूरी उम्र मुसलमान और अछूतों के साथ भ्रमण किया, और समानता की शिक्षा दी। जब गुरु रामदास ने दरबार अमृतसर की नींव रखवाई तो वह नींव मियाँ मीर नाम के मुसलमान फकीर ने रखी। सिख केन्द्र की नींव एक मुसलमान ने रखना एक बहुत बडी बात है। गुरुग्रंथ साहिब में, जिस प्रथम धर्म पुरुष की शिक्षा दर्ज है वे है बाबा फरीद, जो मुसलमान थे। बाबा फरीद की वाणी पर गुरु अर्जुनदेव ने मोहर लगायी, और गुरुग्रंथ साहिब में उसे दर्ज किया। इसतरह सिख घर्म में अल्लाह भी आया और लंगर में एक साथ बैठकर खाना खाने की प्रथा भी आयी। साथ ही प्रेम, भाईचारा, बराबरी, आजादी, भलाई और नेकी का सिधान्त भी आया। सिख धर्म का एक उंकार केवल अल्लाह का दूसरा नाम है जिसका सबूत संत कबीर के यह शब्द है : ''अव्वल अल्लाह नुर उपाया, कुदरत के सब बन्दे। एक नुर ते सब जग उपजीया, कौन भले कौन मंदे।'' अर्थात आदमी उँचे नीचे कैसे ? इन्सान को हिन्दु और मुसलमानों में न बाँटो यही बाबा फरीद का संदेश है जो गुरुवाणी में शामिल है। यही संत नामदेवजी, संत कबीर, संत रवीदास और गुरु नानक का संदेश है। (बहुजन संगठक, 8 और 22 जनवरी 2001) सिख धर्म में असमानता और भेदभाव जरा भी नही है। गौत्र के नामों से जाति का पता चलता है इसलिए सिखों में सारे पुरुषों का गोत्र (Sirname) सिंह व सभी स्त्रियों का गोत्र कौर होता है। पुरुष और स्त्रियों के नाम भी सरीखे होते है जैसे ''मनजीत सिंह'' और ''मनजीत कौर''। सिख पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही क्रिपाण रखते है। जाहिर है कि सशस्त्र स्त्री के साथ कोई कैसे बलात्कार कर सकता है ?

सिख धर्म को ब्राह्मणों के वर्चस्व और गुमराही से बचाने के लिए गुरुग्रंथ साहिब को आम लोगों की भाषा ''गुरुमुखी'' में लिखा गया है। (बहुजन संगठक, 8 और 22 जनवरी 2001) गुरुग्रंथ साहब की भाषा गुरुमुखी का निर्माण सिर्फ गुरु नानक ने ही नही बल्कि संत कबीर, संत रविदास इ॰ संतों ने किया है। संत कबीर ने उरा, अरा, अेयरी, सासा, हारा इ॰ भाषाओं में लिखा है। संत नामदेव ने इन्ही भाषाओं का उपयोग अपनी वाणी में किया। गुरुग्रंथ में ये सभी भाषायें पायी जाती है। पंजाबी या गुरुमुखी हमारे देश की प्राचीन भाषा पाली से विकसित हुई है। सिख धर्म में जो राम का नाम लिया गया है उसका दशरथ-पुत्र राम से कोई संबंध नही है क्योंकि सिखों का ईश्वर निराकार है। (Dalit Voice. May, 16-31, 2000) गौतम बुध्द की तरह ही सीख गुरुओं को भी ब्राह्मणों के षडयंत्रों का सामना करना पडा क्योंकि सीख गुरु भी गौतम बुध्द की तरह ही ब्राह्मणों की जाति-व्यवस्था, पूजारीप्रथा का तथा ब्राह्मणों के कर्मकांडों का विरोध करते थे। सिख धर्म ने बुध्द के विश्वबंधुत्व तथा समानता के पैगाम को फैलाना चाहा। गुरु नानक को वर्णाश्रम धर्म का तथा ब्राह्मणों के वर्चस्व का दुश्मन करार दिया गया। बुध्द की तरह ही गुरु नानक ने स्थानीय भाषा में अपने धर्म का प्रचार किया और लोगों को संस्कृत की बजाय उनकी अपनी गुरुमुखी भाषा दी। गुरुमुखी का मकसद ब्राह्मणों की संस्कृत के एकाधिकार को खत्म कर {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय के धार्मिक वर्चस्व की जड पर

प्रहार करना था। बुध्द धम्म के समानता के आधार पर गठित बौध्द संघ की संकल्पना से ही सीख धर्म ने सीख-संगत कायम की। इस तरह बौध्द धम्म की तरह ही सीख ध म्म भी {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों की असमान समाज-व्यवस्था का विरोधी और सामाजिक समानता का समर्थक है।(http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm)

मान॰ काला आनंद पूरी ने संगत सिंह की किताब The Sikhs in Sikh History का हवाला देते हुए लिखा है कि सिख धर्म ब्राह्मणवाद के लिए खतरा बन चुका था। इसलिए ब्राह्मणों ने अकबर बादशाह से बिनती की कि वे गुरु अमर के प्रभाव से ब्राह्मण धर्म की रक्षा करे। उन्होने कहा कि गुरु अमर ने सिखों को हिन्दू कर्मकांड, देवी-देवता इ॰ को मानने से मना कर दिया है, गुरु अमर व उनके शिष्य राम के नाम की जगह ''वाहे गुरु'' इस शब्द का पुर्नरुच्चार करते है। इसलिए नेहरु के पुरखे गंगु ब्राह्मण ने गुरु गोर्वीद सिंह के दो पुत्रों को सरहिंद सुबे के शासक को सौंप दिया और इन बच्चों को दिवार में चिनवा दिया गया। मोतिलाल नेहरु ने अपने पुरखे गंगु ब्राह्मण के कृत्य का यह कहकर समर्थन किया कि गुरु गोबींद सिंह का खालसा पंथ ब्राह्मणवाद के लिए बडा खतरा बन गया था। (दलित व्हाईस, 1-15 फरवरी 2001)

सिखों और शोषित मुस्लिम समाज के योगदान के कई सबूत है। गुरु नानक देव जी का जन्म राए की तलवंडी में हुआ। वहाँ के मुसलमान सरदार राए बुलार ने अपने इस गांव का नाम गुरु नानक के नाम पर ननकाना साहिब किया। बाबर गुरु नानक का शिष्य रहा। हिन्दु पहाडी राजाओं ने परमानन्द ब्राह्मण की सेंध में गुरु गोविन्दसिंह पर लगातार हमले किये। तब पंजाब के दो ढाई सौ उँची जाति के सिख महासिंह की अगुवाई में गुरु को बेदावा लिखकर उनका साथ छोड गये। अछूत और दलित सिख डटे रहे। गाजी पीर बुधुशाह मुसलमान ने अपने बेटों और पांच सौ मुरीदों को साथ लेकर गुरु का साथ दिया, साथ लडे मरे और शहिद हुये। जब गंगु ब्राह्मण की साजिश से गुरु गोविन्दसिंह जी की माता और उनके दो बच्चों को सुबा सरहिन्द ने पकड लिया और उँची जाति के हिन्दु सुच्चीदानन्द के बार बार जोर देने पर सुबा सरहिन्द के इनकारी होने पर भी मरवाकर बच्चों को दीवारों में चिनवा देने का फरमान जारी करवाया तो मलेर कोटला के मुसलमान नबाब ने ही सुबे को अन्याय करने से रोका था। मगर सुच्चानन्द और गंगु ब्राह्मण कामयाब हो गये और बच्चे नींव में चिनवा दिये गये। (बहुजन संगठक, 8 और 22 जनवरी 2001)

जब गुरु के बच्चों को दीवार में चिनाया जा रहा था तो गुरु जी चमकौर की गढी को छोडकर माछीवाडा के जंगलों में चले गये थे क्योंकि चमकौर जाट ने साजिश की और उसने खुद ही हिन्दू और मुगल फौज को गुरु उसके गढी में होने की खबर दे दी थी। माछीवाडा में गुरु को मुसलमानों ने सुरक्षा दी। एक मुसलमान औरत ने, गुरुजी के लिए विरों वाला निला चोला बनाया। गांव के काजी ने उसका साथ दिया और वे सभी गुरु को उच्च का पीर बनाकर खाट पर बीठा, माढों पर उठा कर फौज से बचा कर बाहर दूसरी जगह को निकले थे। एक फौजदार मुसलमान ने गुरुजी को पहचान कर भी अपनी सिपाही टुकडी को दूर ले गया था ताकि गुरु जी सुरक्षित निकल जाये। यहाँ से आगे गुरु जी मुसलमान सरदार किला राएपुर के राए-किला के पास ठहरे। उसने गुरुजी को सुरक्षा ही नही दी बल्कि अपना एक आदमी गुरुजी के बच्चों और माताजी की खबर लेने भी भेजा। वहाँ से गुरु जी को एक मुसलमान ने काफी देर तक अपने पास रखा। वहाँ से थोडी दूर कांगड के स्थान पर गुरुजी ने औरंगजेब को कुरान के सिधान्तों का हवाला देकर जफरनामा लिखा की उनकी मुगल सेना ने कैसे कैसे सवर्ण

हिन्दुओं की फौज के साथ मिलकर उनपर जुल्म किये। ''आर्य लोगों, बडी जाति के लोगों पर उन्होने बार-बार विश्वास करने पर भी उन्होने कैसे-कैसे उनको धोखा दिया''।

लाहोर सुबेदार के यहां कार्यरत चंदू शाह नामक ब्राह्मण मंत्री ने यह शिकायत की कि सीख गुरु अर्जुन सिंह बगावत का इरादा रखते है। इसलिये सुल्तान ने उन्हे बागी करार दिया। लाहौर के सुबेदार मीर मन्नु ने अपने ब्राह्मण मंत्री कौरामल के साथ हरीमंदिर साहिब को ध्वस्त कर दिया तथा पवित्र सरोवर को कुडे से भर कर अपवित्र कर दिया।

दिनां गांव छोडने के बाद गुरुजी साबों की तलवंडी (दमदमा) तक पहुँचे। रास्ते में उँची जाति के लोगों ने गुरुजी को साथ देने की बजाय अपने गांवों में घुसने नही दिया, और मुगल सेना को गुरुजी की सुह देते रहे। जब गांव छतिआना (मुक्तसर) में उंची जातिवालों ने अपनी तनख्वाह लेने के लिए गुरुजी का घोडा पकडकर रोक लिया था तो एक मुसलमान ही था, जिसने गुरुजी को रकम देकर मसला निपटाया। गुरुजी की पत्नियाँ बादशाह जफर के दिल्ली दरबार की सुरक्षा में रही। गुरु तेगबहादुर की शहीदी के पिछे कश्मीरी पंडीतों का हाथ था। जो गंगाराम (गंगु) अर्थात जवाहरलाल मोतीलाल नेहरु का पूर्वज था। गंगु ब्राह्मण को गुरुजी के बच्चों को पकडवाने और मरवाने की सेवा के बदले में इस कौल-वंशी कश्मीरी खानदान को दिल्ली में एक नहर के किनारे जमीन दी गई थी, जिससे इस वंश ने कौल गोत्र को छोडकर अपने आपको छिपाने के लिए अपने नाम के पीछे नेहरु जोड लिया था। यह खानदान पहले मुगलों का और बाद में अंग्रेजों का पक्का सेवादार रहा। गुरु अर्जुनदेव की शहीदी के पीछे खासकर चन्दु की साजिश थी। जब जहाँगीर को पता चला कि विरोध वाली कोई बात न थी तो उसने पछतावा किया। सिख-मुस्लिम सहयोग की बातों को हमेशा छुपाया गया लेकिन उन चंद बातों को बढा चढाकर लाखों बार दोहराया जिससे इनके बीच नफरत फैलती है। बीदुर में सिख विद्यार्थी हिन्दु हमलावरों से बचने के लिए एक मुसलमान के घर में छिप गये थे। उस मुसलमान ने हमलावरों से कुरान की कसम खा कर कह दिया की वे उसके घर में नही है और सिख बच्चों को बचा लिया। हकीकत यही है कि मुसलमान क्षेत्रों में सिखों की पूरी सुरक्षा की गई। ब्राह्मणवादियों ने बहुजनों को मुर्ख बनाते हुए मुसलमानों के खिलाफ झुठमुठ ही नफरत की दीवार पैदा कर दी। मुसलमान भाईयों ने और ना ही सिख भाईयों ने कभी हकिकत को जानने की कोशीश की और शरारती और छलकपटी मनुवादियों के दुष्प्रचार में हमेशा उलझे रहे, उनके इशारों पर, डुगडुगी पर बन्दर की तरह नाचते रहे। (प्रो॰ गुरनामसींह, बहुजन संगठक, 8 और 22 जनवरी 2001)

मूलनिवासी शुद्र कुणबी जाति में पूना के पास देहु नामक गांव में सन 1598 में बहुजन संत तुकाराम का जन्म हुवा। बहुजन संत तुकाराम मूलनिवासी शुद्र बहुजन समाज को ही अपना ईश्वर मानते थे। (भुती देव म्हणोनि भेटतो या जना। नाही हे भावना नरनारी।।) विदेशी आर्य-ब्राम्हणों व्दारा मूलनिवासी शुद्र जनता के किये जाने वाले शोषण और अन्याय को देखकर संत तुकाराम का मन व्यथित हो उठता था। वे कहते है ''ब्राम्हणों ने रुढ आचार छोड दिया है। वे अब चोरी और चुगली करते है। रिश्वत लेकर अदालत में झूठी गवाही देते है। पाजामा, चमडा ऐसा मुसलमानों का पोशाख पहनने लगे है। उँचे पद पर रहकर तख्त पर बैठकर जनता को भूखे मारते है। (सोडिले आचार। व्दिज चाहाड जाले चोर। टिळे लपविती पातडी। लेती विजारा कातडी।। बैसोनिया तक्तां। अन्नेविन पीडीती लोकां।) संत तुकाराम ने शुद्र जनता के दुःखों को समाप्त करने का संकल्प किया चाहे फिर ऐसा करते हुए उनका मौत से ही सामना क्यों ना हो जाए। (''न देखवे डोळा ऐसा हा आकांत। परपीडे चित्त दुःखी होते।। भित नाही आता आपुल्या मरणा।

दुःखी होता जना न देखवे।।'')

बहुजन संत तुकाराम ने शुद्र बहुजनों को समझाया की अन्न-द्रव्य दान उसी को देना चाहिये जो इसकी पात्रता रखता है। अन्यथा पुण्य करने के नाम पर हमारे हाथों से पाप होते रहेंगे। हम सांपों को दुध पिलाकर अपने लिए विपत्ति मोल लेते रहेंगे। (सर्वाभुती द्यावे अन्न। द्रव्य पात्र विचारोन। उपतिष्ठे कारण। तेथे बीज पेरिजे।। पुण्य करिता पाप होय। दुग्ध पाजोनि पोशिला साप। करोनी अधोर जप। दुःख विकत घेतले।।) बहुजन संत तुकाराम ने पाखंडी पंडे-पूजारियों का प्रखर विरोध किया। उन्होने जनता को जागरुक किया कि ये पाखंडी शरीर पर राख मलकर आँखे मूंदकर पाप करते है। वैराग्य का आडंबर करके भोग-विलास में मस्त रहते है। इनके कूकर्म मैं कितने गीनाऊँ ? किसी को मध्यस्थ बनाकर लोगों को उपदेश देकर अज्ञानी स्त्रियों तथा युवकों को फाँसकर अपने लिए वर्षासन नियुक्त कराते है। ऐसे भ्रष्टों को ईश्वर कैसे मिलेगा ? (अंगा लावुनिया राख। डोळे झाकुनी करिती पाप।। दावुनी वैराग्याची कळा। भोगी विषयाचा सोहळा।। तुका म्हणें सांगें किती। जळो तयांची संगती। धालुनियां मध्यवर्ती। दाटुनि उपदेश देती।। ऐसे पोटभरे संत। तयां कैचा भगवंत।। रांडेपोराते गोवती। वर्षासन ते लाविती।।)

संत तुकाराम कहते है तीर्थो में ईश्वर नही पंडों की लाईन लगी होती है और एक लोटा पानी (तीर्थ) के पंधरा रुपये, दो आने चम्मच पानी बिकते पाया है। (तीर्थी धोंडा पानी, देव रोकडा सज्जनी।) ' तीर्थ स्थलों में कोई ईश्वर नही है केवल पैसे की बरबादी है। ('जत्रा में फतरा बिठाया तिरथ बनाया पानी, दुनिया भयी दिवानी पैसे कि धुलधानी।) संत तुकाराम कहते की जिसके मन में दया और क्षमा का भाव होता है उस व्यक्ति को भक्ति करने की भी जरुरत नही है। (दया क्षमा ज्याचे चित्तीं त्याला न लागे करणें भक्ती।) उन्होने अंधश्रध्दा का विरोध किया। मन्नतें मांगने से अगर कन्या या पुत्र पैदा होते है तो फिर पति क्यों किया जाता है ? (''नवसे कन्या-पुत्र होती, तर कां करणे लागे पति ?) उन्होने समझाया कि शोषित बहुजन समाज के हितों और सुखों के लिए समर्पित व्यक्ति साक्षात ईश्वर है। ('' जे का रंजले गांजले। त्यासी म्हणे जो आपले।। तोची साधु ओळखावा। देव तेथेची जाणावा।। तुका म्हणे सांगु किती। तोची भगवंताची मूर्ती।।)

बहुजन संत तुकाराम ने कहा कि आत्म-सन्मान के बिना बिताया जानेवाला जीवन लज्जास्पद है। लाचारी का जीवन क्या कोई जीना है ? ऐसे जीने पर धिक्कार है। (तुका म्हणे जिणें। शर्तिविणे लाजिरवाणे।। नए मरो लंडीपणे। काय बापुडे ते जीने।। काळीमेचे जिणें। जीउनिया राहे सुने।। जळो जळो तैसे जिणें। फटमरें लाजिरवाणें।) हमने दुर्जनों का अपमान अवश्य करना चाहिये। जिस तरह हम नाखुन को काटकर फेंकते है उसी भाँति शुद्र बहुजन समाज को पीड़ा पहुँचाने वाले दुष्टों को समाज से अलग कर देना चाहिये। गुंडों को लातों से हटाना चाहिये। सज्जनों को हम अपने अंर्तवस्त्र तक दे देंगे लेकिन दृष्टों के सिर लाठी से फोडने में हमें कोई संकोच नही है। हम बहुजन माँ-बाप से भी अधिक स्नेह करने वाले है लेकिन दुष्टों का संहार करने का संकल्प करते है। हम अमृत से अधिक मधुर और विष से भी अधिक कडवे है। हम विट्ठल के वीर है और साक्षात मृत्यु तक का सिर फोड देंगे। (दुर्जनाचा मान। सुखे करावा खंडन।। लात हानोनियाँ वारी। गुंडा वाट शुध्द करी।। बहुता पिडी खळ। त्याचा धरावा विटाळ।। तुका म्हणे नखे। काढुनी टाकिजती सुखे।। भले तरी देवु गांडीची लंगोटी। नाठयाळाचि गांठी देवु माथा।। मायबापाहुनी बहु मायावंत। करु घातपात शत्रुहुनी।। अमृत ते काय गोड आम्हापुढे। विष ते बापुडे कडु किती।। आम्ही विट्ठलाचे वीर। फोडु कळिकाळाचे शीर।।)

संत तुकाराम छत्रपति शिवाजी के प्रेरणा-स्त्रोत्र थे। उन्होने शिवाजी का अनुरोध को

अस्वीकार करके राज-दरबार में सन्मान प्राप्त करने की बजाय जनता को जागरुक करना ही अधिक उपयुक्त समझा। (राजगृहा यावे मानाचिये आसे। तेथे काय असे समाधान ।। रायाचिये घरी भाग्यवंता मान। इतरा सामान्या मान नाही।। (गेल ऑम्वेट, p.10) बहुजन संत तुकाराम व्दारा फैलायी गई जागृति से ब्राह्मण बूरी तरह से तिलमिलाये। ब्राह्मणों ने संत तुकाराम को भ्रष्ट करने की पूरी कोशीश की। मंबाजी नामक ब्राह्मण ने उनके यहाँ वेश्या भेजी लेकिन तुकाराम ने उसे माता कहकर वापस भेज दिया। ब्राह्मणों ने उनकी पोथियों तक को नदी में डुबाया। लेकिन तुकाराम के अभंग शुद्र बहुजन समाज को भली भाँती याद थे, इसलिये ब्राह्मणों को अभंगों को नदी में डूबाने का कोई फायदा नही हुआ।

संत तुकाराम की गाथाएं जनभाषा में होने से लोगों की जूबान पर थी। संत तुकाराम ने मूर्तिपूजा का विरोध किया - ''वेड लागल जगाला देव म्हणती दगडाला, शेंदुर फासुनिया धोंडा, पाया पडती पोर रांडा। (दुनिया पागल हो गई है पत्थर को ईश्वर कह रही है, पत्थर को सिंदुर मल के बच्चे और औरतें प्रणाम कर रहे है।) उन्होने दुखी लोगों को अपना मानने वाले में ही ईश्वर होने का उपदेश दिया। उनकी गाथाओं से मूलनिवासी अवाम ब्राह्मण-धर्म के चंगुल से आजाद हो रहा था। इसलिये रामेश्वर भट ने रामदास के कहे मुताबिक संत तुकाराम पर मुकदमा दायर कर दिया। धर्मप्रमुख के नाते वही जज भी बना। उसने संत तुकाराम की सारी गाथाओं को नदी में डूबो देने का हुक्म दिया। इसके विरोध में नदी के किनारे संत तुकाराम बैठे रहे। तेली समाज के उनके शिष्य संत जगनाडे को उनके काफी अभंग याद थे। गांवों में भटककर तुकाराम के अभंग जिन लोगों को याद थे उन्हे लिखकर ये ग्रंथ दोबारा लिख डाले। ''तेली समाज और कुणबी समाज के एक होने से डुबो दी गई गाथाएं भी फिर से तैयार हो गई ये देखकर तेली-कुणबी समाज में ब्राह्मणों ने दुश्मनी पैदा की। तेलियों का मुंह देखना मनहुस करार दिया। (देखिए, प्रदिप सोळुंके) संत तुकाराम की सन 1649 में ब्राह्मणों ने हत्या करके उनकी लाश को नष्ट करके यह कहानी गढ ली कि वे सदेह वैकुंठ (स्वर्ग) चले गये। होली के जिस दिन रंग खेला जाता है उस दिन संत तुकाराम का ब्राह्मणों ने कत्ल कर दिया और उनकी लाश गायब कर दी और प्रचारित किया कि वे सदेह स्वर्ग चले गए। उस समय तुकाराम की उम्र सिर्फ 41-42 साल थी। होली का इतिहास यह है कि ब्राह्मण ों ने हम मूलनिवासियों के राजा हिरण्यकश्यप का मक्कारी से कत्ल किया और उसकी बेहद आलिम (विव्दान) बहन होलिका को जिन्दा जला दिया। इस दिन को ''होली'' के रुप में मनाने की मूलनिवासियों पर सख्ती की गई। तब से लेकर होली के दिन ब्राह्मण अपने दूश्मनों को जलाने का काम करते है। ब्राह्मणों ने होली के दिन बौध्द भिख्खुओं को भी जिन्दा जलाया है। (सम्राट, 27,28 मार्च 2005) मराठा सेवा संघ के मुताबिक जिस दिन हमारे बलिराजा को ब्राह्मण ने पाताल भेजा {कत्ल कर जमीन में गाड दिया} वह दीपावली का दिन बहुजनों का त्यौहार कैसे हो सकता है ? वह हम बहुजनों का दुख का दिन है इसलिये मराठा सेवा संघ ने दीपावली के दिन ''वामन-दहन'' (विष्ण ु दहन) शुरु किया है। गुढ़ी पाडवा, तुलसी विवाह और होली का बहिष्कार किया है। उन्होने ऐलान किया है कि कुणबी समाज ने तेलियों को अपना हमदर्द मानकर ब्राह्मणों का मुंह नही देखना चाहिये।

ब्राम्हण-संत रामदास का जन्म 1608 में हुआ। रामदास सन 1644 में चाफल आया तब छ. शिवाजी के साम्राज्य निर्मिति का कार्य शुरु हो चुका था। रामदास का एकमेव उद्देश्य ब्राह्मणों को जागरुक कर विषमतावादी ब्राह्मण-धर्म कायम करके मूलनिवासी बहुजनों को {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय का गुलाम बनाना था। उसके उपदेश मुख्य रुपसे

ब्राह्मणों के लिए ही थे। ब्राह्मण-संत रामदास को यह देखकर बडा ही दुख हुआ कि उसकी {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण जाति भ्रष्ट हो गई है, उन्हे शुद्र संतों के आगे नतमस्तक होकर तुकाराम, तुक्याबंधु, संताजी तेली, गवरशेठ बनीया, नावजी माली, शिवबा कासार, इ॰ शुद्र संतों को अपना गुरु मानना पड रहा है। ब्राह्मण दावलमलक फकीर के शिष्य बन गये तो कई मुसलमान पीरों की पूजा कर रहे है, कई मुसलमान बन रहे है। ब्राह्मणों की बुध्दी भ्रष्ट हो गई है, उन्होने नीचों को अपना गुरु मान लिया है, तो वेदों, {अल्पसंख्यक} ब्राह्मणों और तीर्थक्षेत्रों को कौन पुछता है ? राज्य शुद्रों और मुसलमानों के हाथों में आये है। ब्राह्मण-धर्म डूब चुका है। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय को अन्न भी मिलना बंद हो गया है, ब्राह्मणों तुम्हे इसका अहसास है या नही ? (ब्राह्मण बुध्दीपासुन चेवले। आचारापासुन भ्रष्टले। गुरुत्व सांडुन जाले। शिष्य शिष्यांचे।। कित्येक दावमलकांस जाती। कित्येक पीरास भजती। कित्येक तुरक होती। आपल्या इच्छेने।। तिर्थक्षेत्रे मोडली। ब्राह्मण ास्थाने भ्रष्ट जाली। सकळ पृथ्वी आंदोळली। धर्म गेला।। निच प्राणी गुरुत्व पावला। तेथे आचारची बुडाला। वेदशाश्त्र ब्राह्मणाला। कोण पुसे।। राज्य नेले म्लेचिं क्षेत्री। गुरुत्व नेले कुपात्री। आपण अरस्ती ना परस्ती। काहीच नाही।। आतांचे ब्राम्हणी काय केले। अन्न मिळेना ऐसे जाले। तुम्हा बहुतांचे प्रचितीस आले। किंवा नाही।।)

ब्राह्मण-संत रामदास ने शुद्र बहुजन समाज को बुरी तरह से अपमानित किया है, वह कहता है - 'नीच शुद्र मूलनिवासी भला ब्राह्मणों की बराबरी कैसे कर सकते है ? मनुष्य और गधे, राजहंस तथा मुर्गे, राजे तथा बंदर, गंगाजल और नाली का पानी एक समान कैसे हो सकता है, नाली का पानी हम कैसे पी सकते है ?'' (मणुष्य आणि गध ाडे। राजहंस आणि कोंबडे। राजे आणि माकडे। येक कैसी।। भागीरथी चे जळ आप। मोरी संवदनी तेही आप। कुश्रळ उदक अल्प। सेववे ना।।) ब्राह्मण-संत रामदास ने शुद्र बहुजनों से कहा कि चाहे ब्राह्मण कितना भी क्रियाहीन या निर्बुध्द ही क्यों न हो सारी दुनियाँ में वंदनीय होता है। शुद्रों ने ब्राह्मणों को ही शरण जाना चाहिये। शुद्र चाहे जितना विव्दान क्यों ना हो उसको ब्राह्मणों के पास बिठा कर उसकी पूजा करना तो संभव नही है।(गुरु तो सकळासी ब्राह्मण। जन्ही तो जाला क्रियाहिन। तरी तयाशीस शरण ा। अन्यन्यभावे असावे।। जरी ब्राह्मण मूढमती। तरी तो जगद्वंद्य।। अंत्येज शब्दज्ञाता बरवा। परी तो नेउन काये करावा। ब्राह्मणा सन्निध पूजावा। हें तो न घडे कीं।।) ब्राह्मण-संत रामदास ने कहा कि मूलनिवासी शुद्रों ने कभी भी ब्राह्मणों पर सत्ता प्रस्थापित नही करनी चाहिये। देव और ब्राह्मणों पर सत्ता करने वाला मूर्ख और ब्राह्मणों का व्देष करने वाला महामूर्ख है।(देवीं ब्राह्मणी सत्ता करी। तो एक मूर्ख।। व्देषी देवां ब्राह्मणांचा। तो एक पढत मूर्ख।।)

डॉ. अम्बेदकर के अनुसार ब्रिटिश भारत में मूलनिवासी जातियों के मुहल्लों में ब्राह्मण दिखने पर उनका मखौल उडाया जाता था। इससे पता चलता है कि मूलनिवासी जातियाँ भी विदेशी आर्य-ब्राह्मणों से कितनी घृणा करती थी।

ब्राह्मण–संत रामदास अदिलशहा औरंगजेब का मित्र जबकि शिवाजी महाराज का दुश्मन था। रामदास आदिलशहा तथा औरंगजेब का जासूस था। शिवाजी के दूश्मन अफजलखान के मित्र बाजी घोरपडे के आश्रम में ब्राह्मण–संत रामदास था। शिवाजी के समकालीन जेधे शकावली, सभासद बखर, शिवभारत इ॰ ग्रंथों में ब्राह्मण–संत रामदास का शिवाजी को लेकर कहीं उल्लेख तक नही है। ''देवी ब्राह्मणी सत्ता करी तो एक मुर्ख ।। (जो ब्राह्मण देवताओं पर हुकूमत करते है वे मुर्ख है) कहने वाले ब्राह्मण–संत रामदास का शिवाजी से संबंध ही केसे हो सकता था ? (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006)

रामदास की शिवाजी से उनके आरंभ काल में मूलाकात हुई या रामदास ने शिवाजी को प्रेरित किया ऐसे सबूत बिल्कुल नही है। बल्कि शिवाजी के विजय के कारण ही रामदास को अपने दासबोध नामक ग्रंथ के राजनीतिक भाग को लिखने की प्रेरणा मिली ऐसा प्रतित होता है।(गेल ऑम्वेट, p.11) ब्राह्मणों ने ब्राह्मण संत रामदास को झूठमूठ शिवाजी का गुरु प्रचारित किया। शिवाजी को झूठमूठ मुस्लिम विरोधी प्रचारित किया ताकि शिवाजी के मानने वालों का इस्तेमाल ब्राह्मणों के मुस्लिम विरोधी एजेंडे के लिये किया जा सके।(www.countercurrents.org/Saffronization,Hinduization Or Brahminization By Dr. K. Jamanadas.htm)

शुद्रों से घृणा होने के कारण ही ब्राह्मण-संत रामदास शिवाजी के राज्याभीषेक समारोह से अनुपस्थित रहा। ''राज्य म्लेच्छो और शुद्रों के हाँथों में जाने और ब्राह्मण ों को कोई महत्व नही देता'' इसकी पीडा तथा ब्राह्मण-राज्य की पुर्नस्थापना करने का निश्चय ब्राह्मणों के मन में पैदा करने के बाद ब्राह्मण-संत रामदास ने ब्राह्मणों को सीख दी कि ''गद्दारी से बडे से बडे राष्ट्र नष्ट किये जा सकते है।'' (फितव्याने बुडती राज्ये।) प्रा. मा.म. देशमुख ने रामदास को मुगलों का जासूस तथा ऐय्याश साबीत किया है। हिन्दू-मुस्लिम शासकों से गुप्त समझौते करके, उनकी सहायता लेकर तथा तमाम षडयंत्र करके छ. शिवाजी व्दारा स्थापित साम्राज्य को अंततः (अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण पेशवों ने हडप लिया और बहुजनों को चातुवर्ण्य पर आधारित ''ब्राह्मण-धर्म'' का गुलाम बना लिया। इसतरह रामदास का स्वप्न साकार हुवा। रामदास ने सारे देश में कुल 800 मठों की स्थापना की। शिवाजी की मृत्यु के समय तक उसके 1200 अनुयायी थे।

हरिचांद ठाकुर ने महात्मा ज्योतिराव फुले के पहले से अपना कार्य बंगाल में आरंभ किया। बंगाल की नमोशुद्रा (चान्डाल) जाति में सन् 1812 को फरीदपुर जिले में (जो आज बांगला देश में है) मान॰ हरिचन्द ठाकुर का जन्म हुआ। उन्होने माटुआ संघ तथा माटूआ धर्म बनाकर ब्राह्मणवादी अंधविश्वास तथा शोषण के खिलाफ जंग छेड दी। हरिचन्द ठाकुर की मृत्यु के पश्चात उनके काम को पूरा करने का जिम्मा उनके बेटे गुरुचंद ठाकुर ने उठाया। अछूतों को ब्राह्मणवादी अंधविश्वास से मुक्त करने के लिए उन्होने अपने पिता के माटूआ धर्म का प्रचार किया। गुरुचंद ठाकूर ने अछूतों की दयनीय अवस्था का कारण उनका अशिक्षित तथा ब्राह्मणवादी अंधविश्वासों में जकडे होना करार दिया। अपने पसीने की कमाई को धार्मिक प्रथाओं पर खर्च करने की बजाए अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में लगाने की शिक्षा दी। गुरुचंद ठाकूर ने लडकियों के बालविवाह और वृध्द पुरुषों के विवाह का सक्त विरोध किया क्योंकि इससे युवा विध ावायें पैदा होकर समाज में अनैतिकता फैलती है और अपराध बढते है। गुरुचंद ठाकूर ने अछूतों को ब्राह्मण पूजारियों बिना अपने सारे सामाजिक संस्कार-समारोह स्वँय करने की सीख दी। माटुआ धर्म में कोई पूजारी नही होता बल्कि कोई भी सामान्य व्यक्ति ये समारोह अंजाम दे सकता है। बंगाल के अछूतों ने 1872 में भारत के इतिहास में पहली बार ब्राह्मण-धर्म की समाज-व्यवस्था के खिलाफ और समान अवसर पाने के लिए व्यापक आंदोलन छेड दिया जिसके कारण अंग्रेजी सरकार ने ब्राह्मणों के अत्याचार के खिलाफ कानून बनाए। गुरुचंद ठाकूर ने जेल में अछूतों से सिर्फ मैला उठाने और गंदगी साफ करने के काम देने का विरोध किया। जिसके कारण अंग्रेज सरकार के 1901 के आदेश व्दारा यह प्रथा बंद करते हुए हर जाति के व्यक्ति को यह काम करना अनिवार्य कर दिया। उन्होने प्रचार किया कि हर नमोशुद्र ने अपने बच्चे को पढाना चाहिये। उनके विचारों का नमोशुद्र जाति पर इतना अधिक असर है कि आज भी बंगला देश में उनके जन्म

दिवस पर सार्वजनिक छुट्टी होती है। (Jotirmay Mandal, Dalit Emancipators, p.13)

हरिचांद-गुरुचांद ठाकुर की तरह पितामह ज्योतिराव फुले ने ब्राह्मणवाद के मजबूत किले में सुरंग लगाकर उसे जर्जर करने का काम किया। पितामह ज्योतिराव फुले ने तर्क पर आधारित 'सार्वजनिक धर्म' विकसित किया। जो किसी का शोषण नही करता, कडे परिश्रम से अपना जीवनयापन करता है, सबको आनंद देता है, यही मानव का धर्म और नीति है इसके अलावा सब अधर्म है। जो व्यवहार हमें खुद के लिए बुरा लगता है वैसा व्यवहार औरों से नही करना चाहिये यानि अपने से दुनिया को पहचानना चाहिये, यही सत्य है :- कोणास न पिडी कमावले खाई।। सर्वा सुख देई आनंदात।। खरी हीच नीती मानवाचा धर्म।। बाकीचे अधर्म।। ज्योति म्हणे।।आपल्यावरुन जग ओळखावे।। त्यांच्याशी वर्तावे।। सत्य तेच।।मानवाचा धर्म सत्य नीती खुण।। करी जीवदान ।। ज्योति म्हणे।। (फुले*, p.475) गेल ऑम्वेट के अनुसार ब्राह्मणों ने सार्वजनिक धर्म का विरोध किया कि इनका कोई धर्मग्रंथ नही है। तब पितामह फुले के साथी मुकुंदराव पाटिल ने कहा कि उन्हे धर्मग्रंथ की कोई आवश्यकता नही है। उन्हे मानव के मनों को ज्ञानार्जन के लिए मुक्त रखने है। इसलिए वे धर्म-किताब की सिफारीश नही करते।(गेल ऑम्वेट, p.84,147)

उनका आग्रह था कि प्रत्येक बहुजन ने अपनी सभी सामाजिक विधियाँ ''किसी भी पूजारी के बगैर'' खुद ही करनी चाहिये ताकि शोषक-पूजारी वर्ग विकसित ही न हो सके। सत्यशोधकों ने ऐसी शालाएं स्थापित की जिसमें लोगों को यह सिखाया जाता था कि शादी, जन्म, मृत्यु इ॰ सामाजिक विधियों को बिना किसी अंधविश्वास से कैसे अंजाम देना चाहिये। इन शालाओं में सभी जाति के शिक्षक होते थे। इसी उद्देश्य से उन्होने 'सार्वत्रिक-धर्म' नामक पुस्तक लिखी। सन् 1914 में सत्यशोधकों ने 'स्वँय पूरोहित' तथा 'घरचा पूरोहित' नामक किताबें प्रकाशित की। (गेल ऑमव्हेट, p.152) पितामह फुले का मानना था कि परिवार में स्त्री-पुरुष विषमता को समाप्त किये बिना समाज में सच्ची समानता स्थापित नही हो सकती। 'मानव' शब्द से 'पुरुष' आशय व्यक्त होने के कारण पितामह फुले ने अपनी पुस्तकों में मानव जाति का उल्लेख ''सभी स्त्री-पुरुष'' (सर्व एकंदर स्त्री-पुरुष) इस तरह से किया है।

पितामह फुले को शोषक और शोषण से सख्त नफरत थी। वे कहते है कि आर्य ब्राह्मणों ने काल्पनिक ईश्वरों की निर्मिती करके अपने हित के लिए पाखंड (ढोंग) रचा। अपने मतलबी धर्मग्रंथों में किन्नर और गंधर्वो को नचाकर अज्ञानी लोगों को कृत्रिम बातों से फँसाया। लज्जाहीन होकर शुद्रों को नीच तथा खुद को श्रेष्ठ बताकर शुद्रों का जमकर शोषण करके उन्हे नंगा किया। (कल्पनेचे देव कोरिले उदंड।। रचीले पाखांड।। हितासाठी।। किन्नर गंधर्व ग्रंथी नाचविले।। अज्ञ फसविले।। कृत्रीमानें।। निल्लज्य सोवळे त्यांचें अधिष्ठान।। भोंदीती निदान।। शुद्रादिक।। ब्राम्हणांनी नित्य होवुनी निःसंग।। शुद्र केले नंग।। ज्योति म्हणे।। (फुले*, p.471)) आर्य-ब्राह्मण काल्पनिक धर्म बनाकर शुद्रों के घर हराम का खाते है और खुद सत्य से भ्रष्ट होने के बावजूद उन्ही शुद्रों को पशु से भी अधिक दुष्ट मानते है। आर्य-ब्राह्मणों का धर्म मतलबी है जिसमें जरा भी दया नही है, ये धूर्त आर्य अपने स्वार्थ भर का प्रेम जताते है, धर्म के नाम पर झुठी बातें हांक कर शुद्र बहुजनों को ऐसे लुटते है जैसे चुहा सोये व्यक्ति के शरीर को फुंकते जाता है और खाते जाता है और उस व्यक्ति को पता ही नही चलता :- कल्पनेचा धर्म शुद्रास दाविती।। हरामाचे खाती।। त्यांचे घरी।। पशुपेक्षा शुद्र भटां वाटे दुष्ट।। स्वताः सत्यभ्रष्ट।। ज्योति म्हणे।। मतलबी धर्म ज्यांत नाही दया।। कामापुरती माया।। पक्के धुर्त।। धुर्त आर्य शुद्रा

धर्मथापा देती।। उंद्रापरी खाती।। फुंकुनिया।। (फुले*, p.490,492,491)

धूर्त ऋषियों ने वेद निर्माण करके जिस व्देषभावना से शुद्रों को सताया है इसकी कोई सीमा नही है। सारे वेद अपने घर में छुपाकर ओबीसी, दलित, मुस्लिम आदिवासियों को झाँसे में, अंधेरे में रखा है। लेकिन वेदों के ब्राह्मण-ढोंग को अंग्रेजों ने खोज निकाला और वेदों की छीः थुः की :- धुर्त ऋषीर्जीनी वेदास रचिलें।। व्देषाने छळीलें।। सीमा नाही।। वेद मनुग्रंथ घरी लपविले।। म्लेच्छा फसविले।। मोघमात।। त्यांचे ब्रम्हकुट इंग्लिशें शोधीले।। बाहेर काढीले।। छीः थूः केली।। (फुले*, p.481)

पितामह फुले के अनुसार हजारो सालों से आर्य ब्राह्मण ही शास्त्रकर्ता और न्यायकर्ता थे। वे गुरु भी बन बैठे। इसलिए इन नीचों ने हमें नीच बनाकर खुद को श्रेष्ठ करार दिया। ब्राह्मण दुर्गणों की खदान है, आर्य-ब्राह्मण मानव के रुप में शोभा नही देते क्योंकि वे मानवता के रास्ते को अपनाना ही नही चाहते। ब्राह्मण खुद को श्रेष्ठ जताकर उन्मत्त होकर हर तरह से शुद्रों का शोषण करते है। आर्य-ब्राह्मण काली करतुतों के रक्षक बन गये है। कृत्रिमता का गुण वाली ब्राह्मण जाति शुद्रों को प्रताडित करती है। अपने गुणों से खुद नीच होकर भी शुद्रों को अपमानित करती है, शुद्रों का धिक्कार करती है। शुद्रों के सारे छल का मूल कारण ब्राह्मण है। मनु को धिक्कारकर सभी शुद्र-अतिशुद्रों ने एकदुसरें को अपना भाई मानना चाहिये। आर्य-ब्राह्मण क्यों धनी है और शुद्र क्यों दास है इसकी खोज करके इन धूर्त लोगों का धिक्कार करने का वक्त आ चुका है। ब्राह्मण दुर्गुण ों से मुक्त नही हुए है इसलिए शुद्रों ने ब्राह्मणों का समूल त्याग करना चाहिये। अपने जरुरत का कमाकर सत्य की राह पर चलना चाहिये। ब्राह्मणों के कारण मांग-महार त्रस्त्र हो चुके है। अपने महत्व को भूल चूके है और शत्रु के छल-षडयंत्रों को नही समझते। ब्राह्मणों का यहां कोई अर्थ नही है। इसलिए उन्हे भगा देना चाहिये :- हेच शास्त्रकर्ते हेच न्यायदेते।। गुरु हेच होते।। पुर्वीकाळी।। म्हणुनी नीचांनीं आम्हा नीच केले।। श्रेष्ठत्व आणले।। आपणासी।। ब्रम्हजाण त्याहि ब्राह्मणाची खुण।। दुगुर्णाची खाण।। ज्योति म्हणे।। आर्य ब्राह्मण हा मानवा शोभेना।। मार्गास लागेना।। ज्योति म्हणे।। ब्राह्मण म्हणुनी उन्मत्त तो झाला।। नाडितो शुद्राला।। सर्वोपरी।। सव्दिवेकावीण आर्याजी पाषाण।। कलीचे रक्षण ज्योति म्हणे।। ब्राह्मणाची जात कृत्रिमी अखंड।। छळीले उदंड।। शुद्रादीकां।। जगव्देष्ठे आर्य जातिचे कमीन।। करी अपमान ।। शुद्रांचा हो।। सर्व मानवात ब्राह्मण बनला।। धिःकारी शुद्राला।। अहंपणे।। मनु धिःकारुनी एकीकडे फेंका।। माना शुद्रादीकां बंध ुपरी।। छळाचे कारण भट हें बा मुळ।। केला तो अढळ ज्योति म्हणे।। आर्य कसे धनी, शुद्र कां हो दास ?।। शोधा कृत्रीमास।। वेळ हिच।। आता कां रे तुम्ही विचार कराना।। धुर्त धिक्काराना।। ज्योति म्हणे।। दुर्गणापासुन मुक्त नाही झाला।। त्यागा पातक्याला ज्योति म्हणे।। ज्योति सांगे ब्रम्हलचांडा समुळ त्यागावें।। पोटापुरता धंदा करुन सत्या आळवावे।। (फुले*, p. 468,493,471, 468,481, 489, 491, 500,502) मांग महाअरी।। जेर झाले भारी ।। विसरले आपल्या महत्वास।। उमजेना शत्रुकाव्यास।। ब्राह्मणांचे येथे नाही प्रयोजन।। द्यावे हाकलुन ज्योति म्हणे।। आप्तसोयऱ्यांचा मेळवुनी मेळ।। त्यागावे समुळ पाखंडयास।। पितामह फुले के अनुसार ब्राह्मण अपनी शोषक-वृत्ति को छोडना ही नही चाहता इसलिए हर बात में खुराफाते करते रहता है। इस दुनिया में सबको प्रिय है ऐसा क्या एक भी कोई आर्य-ब्राह्मण है ? इसलिए हमने भटों की संगत नही करनी चाहिये क्योंकि उनका स्वार्थ आते ही अंततः वे शुद्रों को धोखा देते है :- भोंदाडु स्वभाव मुळीच जाईना।। योजी फितुरांना।। सर्व कामी।। जगी सर्वा प्रिय कोण आर्य झाला।। दावा हो आम्हाला।। एक तरी।। भटजी चा संग धरु नको आता।। देती खास गोता ।।

अखेरीस।। (फुले*, p.467, 470, 493) पितामह फुले के अनुसार शुद्र बहुजनों ने आर्य-ब्राह्मणों को दान में जुते और लाठियाँ देनी चाहिये। शुद्र बहुजन अगर अपने मानवी हकों से वाकिफ हो जाए तब इन आर्य-भटों को कौन बचायेगा ? इसलिए आर्य-भटों ने अपने दुष्टकार्य छोड देने चाहिये तब भविष्य में उनकी संतान को कोई डर नही रहेगा :- शुद्रांनी अर्पावे काठी जोडे दान।। आदराची खुण।। ज्योति म्हणे।। मानवाचे हक्क सर्वास कळता।। मग कोण त्राता।। आर्य भटा।। दुष्ट कर्मे तुम्ही अजिबाद टाका।। पुढे नाही धोखा।। मूलांबाळां।। (फुले*, p.489, 478, 474)

मनुस्मृति के अनुसार सभी वर्णो के गुरु ब्राह्मण ही रहेंगे फिर चाहे वे मुढ से मुढ ही क्यों ना हो। इसलिए ब्राह्मणों ने गुरु के पद को पवित्र प्रचारित किया। ब्राह्मणवादी सरकारें तथा प्रचार माध्यम शिक्षकों को महिमा-मंडित करते है। जबकि किसान, मजदूर, सफाई-कर्मी, रिक्षा चालक इ॰ समाज के लिए अत्यंत उपयुक्त काम करते है लेकिन उन्हे किसी ने कभी महिमा-मंडित नही किया क्योंकि इनमें से कोई भी ब्राह्मण नही होता। पितामह फुले न्याय-नीति, तर्क बुध्दि से सबके बर्ताव तथा चरित्र को जाँचकर उनका मूल्यांकन करने पर जोर देते थे इसलिए उन्होने ब्राह्मण गुरुओं की बेतुकी बातों की भर्सना की है। पितामह फुले कहते है गुरु के अनुसार आत्मा स्वतंत्र है उसे किसी आधार की जरुरत नही, ऐसे सभी गुरुओं पर धिक्कार है क्योंकि शरीर के बिना आत्मा को दिखाने वाला कोई गुरु आजतक देखने में नही आया :- गुरु म्हणे आत्मा आहे निराधार।। सांगे बडीवार।। त्याचा फार।। कुडिविण आत्मा दाविना मजला।। धिःकार गुरुला।। ज्योति म्हणे।।(फुले*, p.498) गुरु बने ऋषियों की नैतिकता का वर्णन भी पहले ही किया जा चुका है। ब्राह्मण शिक्षक बहुजन बच्चों पर कितना अन्याय और पक्षपात करते थे। पितामह फुले ने इनकी कडी भर्सना की है। कबिर ने भी गलत गुरुओं का विरोध किया है :- जाका गुरु आंधरा, चेला खरा निरंध। अंधे को अंधा मिला, पडा काल के फन्द।। जा गुरु में भ्रम न मिटे, भ्रांति न जिवका जाय। सो गुरु झूठा जानिये, त्यागत देर न लाय।। यानि जिस गुरु से अज्ञान दूर नही होता तथा दिल के शक दूर नही होते वह गुरु झुठा है जानकर उसे फौरन त्याग देना चाहिये।

आधुनिक बहुजन संतों ने भी बहुजन समाज को लाचार बनाने वाले ब्राह्मण-धर्म का मुकाबला करना जारी रखा। महाराष्ट्र में बहुजन संत गाडगे बाबा ने शोषित बहुजनों के मानव धर्म का परिचय प्रत्यक्ष अपनी कृति से कराया। उनका मानना था कि बहुजनों ने कर्जा निकालकर न ही त्यौहार मनाने चाहिये और न ही तीर्थ स्थलों की यात्रा करनी है। उन्होने अपने मामा को कर्जे से मुक्त करने के लिए दिन रात परिश्रम ही नही किया बल्कि साहुकार का कर्जा रहते तक घर में अत्यंत सादा भोजन बनाया। गाडगेबाबा शराब इ॰ के सख्त विरोधी थे इसलिए अपने बच्चों के जन्म पर शराब, माँस भोजों की परंपरा को मनाने से साफ इन्कार कर दिया। मन्नते मांगकर मुर्गा, बकरा इ॰ की बलि चढाने का उन्होने विरोध किया। बहुजन संत गाडगेबाबा की सीख थी कि दहेज लेकर या देकर शादी-ब्याह न करे। न ही इन बातों पर अधिक खर्चा करे। गाडगे बाबा ने अपने खुद के बेटे की शादी पूराने कपडों पर की; वर वधु ने एक दूसरे के गले में हार डाले, और शादी हो गई। इस शादी में कुल मिलाकर केवल साढे सात रुपये का खर्चा आया।

बहुजन संत गाडगेबाबा ने बहुजनों से आग्रह किया कि अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अपने तर्क और विवेक का उपयोग करे। अपने बच्चों को पढाए, पैसे न हो तो अपनी थाली बेच दे सब्जी हाँथ पर रखकर रोटी खाये लेकिन अपने बच्चों को जरुर पढाए। गाडगेबाबा ने सत्यनारायण इ॰ पूजा-पाखंड व कर्मकांडों का विरोध किया।

उन्होने पंडों को चुनौती दी कि वे समुद्र किनारे सत्यनारायण की पूजा करके डूबे हुए जहाज निकालकर दिखाए। चाहे फीस के रुप में ढाई रुपये के बदले ढाई लाख ले। गाडगेबाबा लोगों से कीर्तन में पूछते थे क्या मंदिर का ईश्वर खुद नहा सकता है ? धोती पहन सकता है ? उसको चढाया भोग कुत्ता खाने लगे तो क्या कुत्ते को भगा सकता है ? क्या अपने ही मंदिर में रोशनी पैदा कर सकता है ? मंदिर में दिया लगाने के बाद ही मूर्ति नजर आती है तब बताओ मूर्ति बडी या मूर्ति दिखाने वाला दिया बडा ? गाडगेबाबा के अनुसार गरीब, मजबूर और भूखे इन्सानों की सेवा करना ही ईश्वर की सेवा करना है।

बहुजन संत गाडगेबाबा की सीख है की भूखों कों खाना दे। लेकिन वे खुद लोगों के घर, आंगन झाडते, बर्तन मांजते, जलाउ लकडियाँ तोड देते, जो चाहे कडा परिश्रम करते, सारी बस्ती झाडते लेकिन इसके बावजूद किसी भी घर से आधी रोटी से ज्यादा नही लेते। वे चार घरों से आधी आधी रोटी मांगकर उसी से अपना गुजारा करते रहे। हजारों लोगों के सामुहिक भोजों का संचालन गाडगेबाबा ने किया लेकिन उन्होने इस भोजन से कभी रोटी का एक टुकडा भी नही लिया। गाडगेबाबा किसी के घर में नही ठहरते थे। बाहर जंगल में रात गुजारते थे। गाडगे बाबा की अपने कीर्तनकारों को ऐसा ही करने की ताकीद थी। जो कीर्तनकार लालची और स्वार्थी होते उनको गाडगेबाबा अपने कीर्तन में सामने खडा करके आम लोगों से कहते कि ऐसे लोगों को गाडगेबाबा का प्रचारक समझकर कोई भीख न दे बल्कि अपने गांव से भगा दे। गाडगेबाबा चाहते थे कि उनके परिवार के सदस्य अपनी मेहनत का खाये। लोग बाबा की पुत्री, पत्नि इ॰ को खुद होकर जो अनाज, वस्तुएं इ॰ श्रध्दावश दे जाते थे, तो बाबा घर वापस आते ही ये चीजे गरीबों को बाँट देते थे। उन्होने कभी अपने हाथ कोई पैसा नही रखा। उन्होने खुद पर, या अपने परिवार पर धर्मशाला इ॰ की संपत्ति का एक पैसा भी खर्च नही होने दिया।

बहुजन संत गाडगेबाबा ने जातिप्रथा का कठोरता से विरोध किया। जिस सामुहिक भोजन में अछूतों को साथ में खाना न परोसा जाता हो उन भोजों का गाडगेबाबा ने बहिष्कार किया। वे सभी को समान मानते थे इसलिए उन्होने किसी को भी अपना शिष्य नही बनाया। संत तुकाराम की तरह गाडगेबाबा ने भी किसी को आशीर्वाद नही दिया, न अपने पैर छुने दिये। गलती से कोई ऐसा करता तो उन्हे बहुत दुख होता था।

बहुजन संत तुकडोजी महाराज ने मूलनिवासियों को ब्राह्मणों के शोषण-चक्र से बाहर निकालने के लिए ''ग्राम गीता'' लिखी। इसके अर्पण-पत्रिका में वे कहते है कि श्रमिक अपनी मेहनत से महलों का निर्माण करता है और उसे झोपडी तक नसीब नही होती। श्रमिक जनता स्वातंत्र्य आन्दोलन में अपने प्राणों की आहुति देती है लेकिन मजा दूसरे ही मार रहे है। ऐसे भोले श्रमिक जनता को सुख और पूर्तता मिलने के लिये ही मैने ग्रामगीता लिखी है। (कष्ट करोनी महाल बांधसी। परि झोपडीही नाही नेटकिशी।। स्वातंत्राकरिता उडी घेशी। मजा भोगती इतरची।।; ऐशा भोळया शंकरासी। सौख्य लाभावे सर्व देशी।; मानवाची पुर्तता तुजसी। प्राप्त व्हावी मना वाटे। म्हणोनि केली ग्रामगीता। जागृत व्हाया ग्राम-देवता।।) तुकडोजी महाराज ने श्रम को ही सर्वोपरी और संपत्ति का जनक माना है। वे कहते है जब मिट्टी पत्थर खोदकर लाए गये और बुनियाद बनाकर दीवारें खडी की गई तभी उसे संपत्ति का रुप मिला है। जंगल में लकडा पडा है तो उस का तब तक कोई मोल नही है जबतक श्रम से उस लकडे की गाडियाँ या अन्य वस्तुयें नही बनाई जाती। श्रम ही के कारण वस्तु का मूल्य और मुनाफा बनता है। एक ने काम करना और दूसरे ने उसके श्रम के पैसे से आराम करना राष्ट्रहित में हराम है। जो परिश्रम करता है उसकी ही जमीन होनी चाहिये। जनता के शोषण को बन्द नही

किया गया तो जनता के क्रोध से सब कुछ भस्म हो जायेगा, हाहाकार मच जायेगा। (‘‘ खोदुन आणली गोटेमाती। तासली फाडी रचल्या भींती। तेंव्हाच बनली ति संपत्ति। परिश्रमाच्या स्पर्शाने।। रानी असोत लाकडे काडया। त्या श्रमाविण न होती गाडया माडया। श्रमाविण संपत्ति म्हणजे कवडया। त्याही वेचल्या श्रमाणे।। दुनिया आहे कष्टिकाची। जो जो कसेल शेती त्याची।। जो काम करिल लक्ष्मी तयाची। दासी व्हावी नियमाने।। एकाने करावे काम। दुसऱ्याने करावा आराम। हे तो आहे हराम। देश-हिताच्या दृष्टीने।। जनतेचा मग वालीच नाही। ती चेतता मग आगचि सर्वहि। भस्म होईल सगळी मही। हाहाःकारे।। (ग्रामगीता, p. 156,157,159))

संत तुकडोजी ने ग्रामगीता श्रमिक ग्रामवासियों को अर्पण की है।

बहुजन संत तुकडोजी कहते है आम बहुजन जनता के सुख और हित के लिए प्रयत्न करना ही सबसे महत्वपूर्ण है। बहुजनों का हित और सुख कायम करना ही ध र्म है। (‘‘अनेक प्राणी जेथे राहती। त्या सर्वाची रहावी सुस्थिति। समान समाधानाची गति। त्यास धर्म मनावे।।’’ (ग्रामगीता, p. 11,8)) उन्होने समाज की एकता, विकास इ॰ को अवरुध्द करने वाली हर ब्राह्मणवादी परंपराओं को त्याग देने को कहा है। वे पूछते है शादीब्याह करने के लिए कर्जा करना और सारी उम्र उसका ब्याज चुकाते रहना, और कंगाल हो जाना किस भगवान ने बताया है ? चाहे कितनी परेशानियाँ क्यों ना हो लेकिन ब्राह्मणों व्दारा निर्धारित मुहुर्त पर ही शादी करनी चाहिये ऐसी रुढीवादी घातक प्रवृत्ति बहुजनों ने छोड देनी चाहिये। तुकडोजी कहते है जिस दिन मौसम अच्छा हो वही विवाह का अच्छा मुहुर्त है। विवाह अत्यंत सादगी से, कम से कम खर्चे में पवित्र परंपरा की तरह संपन्न करना चाहिये। (लग्नाकरिता कर्ज करावे। जन्मभरि व्याज भरित जावे। लग्नासाठी कफल्लक व्हावे। कोण्या देवे सांगीतले ? ।। असोत अडिअडचणी किती। साध ालिच पाहिजे तिथि। ऐसी कां ठेवावी प्रवृत्ती। रुढीबध्द।। प्रसन्न हवा पानी ऋतु। हाचि विवाहाचा मुहुर्तू। बाकिचे झंझट फालतु। समजतो आम्ही।।(p. 196))

बहुजन संत तुकडोजी महाराज ने मृत व्यक्ति के संस्कार पर ब्राह्मणों व्दारा थोंपी गई कमर-तोड कुप्रथाओं का विरोध किया है। वे कहते है :- मृत व्यक्ति को नया पितांबर पहनाने के लिए घर तक बेचकर सारी उम्र दुःख झेलते रहने की ब्राह्मणवादी परंपराओं का पालन नही करना चाहिये। भले ही ऐसा करने के लिए ब्राह्मणों के शास्त्रों में लिखा होगा लेकिन बहुजन जनता का घर कैसे चलता है यह बात ब्राह्मणों के शास्त्रों को मालूम नही है। बुवा, पंच, ब्राह्मण इ॰ को सजा के तौर पर मिष्ठान्न खिलाकर शोषित बहुजनों की कमर टूट जाती है। जो अपने पिता को जीते जी ढंग से रोटी नही खिला पाता उसे अपने पिता की मृत्युपर ढोल-ताशे बजवाने पडते है, पिंडदान, दक्षिणा क्या क्या नही करना पडता है। लोक-लज्जा से श्राध्द के नाम पर धन लूटाने की मूर्खता हमने क्यों करनी चाहिये ? मृत्यु पर निश्चित अवधि का शोक मनाने की प्रथा ने तो हम पर शोक-वृत्ति लाद दी है। जो जिस बीमारी से मरा हो उसके परिवार के लोगों ने गाँव के अस्पताल के औषधालय को इस अवसर पर दान देना चाहिये ताकि इस बीमारी से ग्रस्त हर किसी की जान बचाई जा सके। ऐसे मानवधर्म को नही जानने के कारण ही लोग कर्जा निकालकर तीर्थो के चक्कर काटते है। इससे तीर्थो का व्यापार करने वाले पंडों का फायदा होता है। ये पंडे अत्यंत दुराचारी है और ज्यादा से ज्यादा लूटने की कोशिश में लगे रहते है। इनसे बहुजनों का उध्दार कैसे होगा। इसलिए तीर्थो की बजाए अपने गांव की नदी इ॰ में ही मृतक के संस्कार करने चाहिये। (मृत शरिरास पितांबर। घरी नसल्यास विका घर। दुःख भोगा जन्मभर। ऐसे कोणी न करावे।। नवेची वस्त्र पाहिजे

आणले। ऐसे शाश्त्रानी सांगीतले। तरी आमच्या घरचे कैसे चाले। नाहि ठाउके शाश्त्राशी।। ; बुवा, पंच अथवा ब्राम्हण। यासि धन देती भुर्दड म्हणोन। कोणी घेती गोड जेवण। कमर मोडे गरिबाची।।; जिवंत असता रोटी ना दे। मेलियावरी वाजवी वाद्ये। कावळयासी पिंड, इतरा दक्षिणा दे। म्हणोनि साधे काय याने ?।।; श्राध्दासाठी धन उकळावे। लोकलाजेस्तव मरावे। ऐसे कायसा करावे। मुर्खपणे।।; सुतक धरण्याची प्रथा लाविली। हि तर शोकवृत्तीच दाविली। आड येतिल ति काढुन टाकली पाहिजेत ऐसी बंधने।। जो कोणी ज्या रोगे मेला। तैसा होउ नए इतराला। म्हणोणी गावी औषधालयाला। मदत द्यावी त्यानिमीत्ये।। परि हे जनासी न कळे धर्मगुज। जाती तिर्थी करोनी कर्ज। त्याने फावते व्यापारा सहज। तीर्थीयांच्या।। परि पंडयाचि व्यसनी दुराचारी। फुकट लूटाया खटपट करी। तरि तो कैसेनि उध्दरी समाजासि ? ।। ; म्हणोणि आंधळा कर्मठपणा। हा वाढुच न द्यावा कोणा। गावगंगा म्हणोनी जाणा। तिलाच सर्व अर्पावे।। (ग्रामगीता, p. 202,201,204,205,206))

बहुजन संत तुकडोजी कहते है - ''लोगों के बीच भेदभाव पंडे-पूजारियों की वजह से है। इसके लिए उन्होने शास्त्रों का आधार लेकर समाज को पतन के गर्त में पहुँचाया है। पूजारी जूँआ खेलते है। मंदिरों में वेश्याओं के नाच-गाने कराते है। मंदिरों में तरह तरह के धंधे चलते है। मंदिर की भव्य इमारत गुंडों के अखाडों के रुप में बदल गई है इसलिए इनकी अनैतिक हरकतों का विरोध करने की सज्जनों को हिम्मत ही नही होती। (लोकी जो हा दुजाभाव झाला। तो पूजारी-पंडेगीरीने केला। शास्त्रेही लावोनी आधाराला। समाज नेला अधोगती।। पूजारी खेळती चौसरी। वेश्यादिकांचे गाणे मंदिरी। होती तमाशे-दंढारी। परोपरी देवळामाजी।।; मंदिराचा भव्य वाडा। झाला गुंडांचा अखाडा। धाक पडे घालाया मोडा। सज्जनांसी।।(ग्रामगीता, p.222, 229, 232) तुकडोजी कहते है, सारी सुविधाएं पुरुषों के लिए और स्त्रियों के लिए सारे दुख दिये है ऐसे शास्त्र फेंक देने चाहिये। सारी गलत रुढीयाँ फौरन त्याग देनी चाहिये और बहुजन हित और सुख के नए नियम बनाने चाहिये। (सर्व सोई पुरुषा करिता। स्त्रियांसाठी सर्व व्यथा। हे कोण बोलते शास्त्र आता ? द्यावे हाता झुगारोनि।। ऐशा ज्या ज्या वाईट रिती। झुगारोनि द्याव्या हातोहाती। करावी पुन्हा नविन निर्मीती समाज नियमांची।। (ग्रामगीता, p. 188,193))

बहुजन संतों ने ब्राह्मणों के शोषण से बहुजन समाज को मुक्त करने के लिए ईश्वर के ''नाम'' का उपयोग किया, लेकिन उन्होने ईश्वर को कभी भी गरीब बहुजनों से अधिक महत्व नही दिया है। संत नामदेव ने बहुजनों को शक्तिशाली और सुखी बनाना चाहा इसलिए उन्होने ईश्वर के नाम पर किये जा रहे ब्राह्मणों के शोषण-स्थल तिर्थ, मुर्तिपूजा इ॰ पाखंड के खिलाफ आवाज उठायी। तुकाराम कहते है दुखी-शोषित बहुजनों के दुखों को दूर करने के लिए प्रयत्नशिल व्यक्ति ही साक्षात ईश्वर है। (जे का रंजले गांजले त्यासी म्हणे जो आपुले, तोची साधू ओळखावा देव तेथे ची जाणावा।..... तुका म्हणे सांगु किती तोची भगवंताची मुर्ती) कबीर तथा पितामह फुले ने भी स्वर्ग-नर्क इ॰ सभी ब्राह्मणवादी संकल्पनाओं को त्यागकर बहुजनों के शोषण को दूर करने को ही महत्व दिया है। संत गाडगेबाबा भी शोषित बहुजनों की सेवा करने को ही ईश्वर की सेवा मानते थे। तुकडोजी महाराज ने भी इसी अर्थ में ईश्वर के नाम का उपयोग किया है। वे कहते है : - ईश्वर याने कर्तव्यशुर, न्यायनीति तथा क्रांति का विश्व में बहता झरना है। (देव म्हणजे कर्तव्यशुर। न्यायनितीचे माहेर। क्रांतीकार्याचे दिव्य निर्झर। अग्रसर जगामाजी।) श्रम से बचकर लोगों में भ्रम फैलाकर ईश्वर के नाम पर कुकर्म करने वालों ने ही समाज को डुबो दिया है। (लोकात वाढवावा भ्रम। आपले चुकवावेत श्रम। देवाचिया नावे चालवावे कुकर्म। त्यांनीच समाज बुडवला।।) हम श्रम को महत्व देनेवाले है। हमें ऐसा नास्तिक

भी प्रिय है जो समानता को मानते है और बहुजनों के हित और सुख के लिए प्रयत्नरत है। (आम्ही मुख्यतः कार्यप्रेरक। चालती आम्हा ऐसे नास्तिक। ज्यांचा भाव आहे सम्यक। 'सुखी व्हावे सर्व' म्हणुनि।।) ऐसा व्यक्ती चाहे धर्म को न मानता हो लेकिन मानव व्दारा मानव के सुख के लिए प्रयत्नरत है, जो अपनी संपत्ति को गांव की मानता है, अपने पुत्रों को भी गांव काज के लिए समझता है, जो अपनी कतर्व्यशक्ति को भी खुद के उपभोग के लिए नही बल्कि गांव के भले के लिए मानता है ऐसा नास्तिक भी मुझे प्रिय है क्योंकि मै भी तो यही करना चाहता हुँ। लोगों के सामने उच्च आदर्श रखने के लिए मै किसका नाम लु ? इसलिए ईश्वर का नाम बीच में डाला है। (भलेहि तो देव न माने। परि सर्वा सुख देवु जाणे। मानवासी मानवाने। पुरक व्हावे म्हणुनिया।। आमची संपत्ति नसे आमची। आमची संतती नसे आमची। कर्तव्यशक्ति ही नसे आमची। व्यक्तीशः उपभोगार्थ।। हे सारे गावाचे धन। असो काया वाचा बुध्दी प्राण। ऐसे असे ज्याचे धोरण। तो नास्तिकही प्रीय आम्हा।। आम्ही देवाचे नाव मध्ये घातले। परि सर्वाच्या सुखार्थ कार्य केले। कर्तव्यतत्परतेसीच वर्णिले। जिकडे तिकडे।। लोकापुढे विशाल ज्ञान। ठेवाया अत्युच्च आदर्श कोण ? म्हणोनि देवाचे नामाधिधान। घेतले विशाल भावाने।।) (ग्रामगीता p.7,8)

धर्मो के पूजारी कहते है कि आप धर्म की बातों पर चुपचाप भरोसा कर ले वर्ना उनका ईश्वर आपको नर्क सिधार देगा। इन्हे भरोसा है की नर्क की कल्पना से डरा कर वे अपनी हर बात को मनवा लेंगे। पितामह फुले ने स्वर्ग-नर्क की कल्पना को नकार दिया है :- जगामधी धर्म अगणित होती।। लढाया खेळती।। रेडयापरी।। रेडे धरणारे प्राण ास मुकती। कित्येक म्हणती।। स्वर्गी गेले। कोणी म्हणे सर्व मार्टर झाले।। जन्नतीस गेले कोणी म्हणे।। सदविवेकाविण सर्व भांभाविले।। रक्तपाती झाले।। ज्योति म्हणे।। (p.552, महात्मा फुले) कबीर के अनुसार स्वर्ग नर्क कही नही है। इसी धरती पर सब कुछ है। ''वहाँ न दोखज भिस्त मुकामा। यहाँ ही राम, यहीं रहमाना।।''

पेरियार रामास्वामी नायकर ब्राह्मणों के कुटील दांव-पेंचों से भली भांति वाकिफ थे। इसलिये वे अपने हर भाषण में दोहराते थे कि अगर कभी उनके सामने कोब्रा-सांप और ब्राह्मण आ जाये तो वे कोब्रा-सांप को जाने दे लेकिन ब्राह्मण को कतई न छोडे। अगर कोई तटस्थता से ब्राह्मणों की और खासकर ब्राह्मण पूजारियों की लोगों को जातियों के नाम पर विभाजित करने की, छुआंछूत तथा असंख्य अंधविश्वासों के निर्माण में उनकी भूमिकाओं की जांच करें तो उसे पेरियार की बात सौ फीसदी सही लगेगी। ब्राह्मण कभी देशभक्त नही रहे है। किसी भी तरिके से अपना मतलब सीधा करना ही उनका मूल मकसद रहा है। अपने स्वार्थ के लिये वे विदेशी ताकतों से मिलकर अपने जातीय स्वार्थ को पूरा करते रहे है। ब्राह्मणों के विश्वासघात के उदाहरणों से इतिहास भरा पडा है अगर उसे ईमानदारी से लिखा जाये। (The Secrets of the Socalled Sacred Journey of RAMA - Dr. M.S.Jayaprakash; http://www.modernrationalist.com/THE SECRETS OF THE SOCALLED SACRED JOURNEY OF RAMA - II.htm)

ब्राह्मणों व्दारा वारकरी पंथ में फैलायी गई बुराईयों से पितामह फुले काफी चिन्तित थे। चक्रधर, नामदेव, तुकाराम इ॰ संतों की मूल मानवतावादी शिक्षा पर अमल करने की बजाय विठोबा की मूर्ति का जप करके ब्राह्मण-भटों के तालपर नाचना ही उनका कार्य रह गया था। पितामह फुले कहते है आर्य तीर्थस्थल पर अंगवस्त्र ले जाते है और पंढरी में स्त्रियों के साथ फुगडी खेलते है। नाम-स्मरण में ही फल है ऐसी झुठी हांककर नासमझ वारकरियों को इन्होने भ्रमित कर दिया है। पत्थर की विट्ठल की मूर्ति बनाकर उसका ध्यान करके नर्तक की तरह नाच-गाना करके इन्होने सारी पंढरी को पागल बना दिया

है। वे निर्लज्ज होकर स्त्रियों के संग फुगडी खेलते है। नासमझ वारकरी लोगों को आर्शीवाद-उपदेश करते है :- तिर्थयात्री आर्य अंगवस्त्रे नेती।। फुगडया खेळती।। पंढरीस।। भोळा वारकरी त्यासी दिली हुल।। स्मरणांत फल ।। आहे म्हणे।। सर्व भुतां निर्मी ध ोंडयाचा विट्ठल।। पंढरी सकळ।। वेडी केली।। विट्ठलाची मुर्ती ध्यानी मनी धरी।। गाता ताल धरी ।। नाच्यापरी।। निर्लज्य होवुन फुगडया खेळती।। पकव्यास घालतो।। स्त्रिया संगे।। ''सुखरुप होशी'' उपदेश करी।। वेडा वारकरी।। ज्योति म्हणे।। (फुले, p. 507, 487, 493)

ब्राह्मणों के कुप्रचार से प्रभावित होकर सावित्रीबाई फुले के मायके वालों ने ज्योतिराव के कामों की निन्दा की तो सावित्रीबाई ने उन्हे स्पष्ट रुप से कहा कि मैं आप लोगों को निश्चित रुपसे कहती हुँ कि मेरे पति आप जैसे वारकरीयों की तरह मात्र हरिनाम लेकर वारीयाँ (यात्रायें) नही करते, वे प्रत्यक्ष हरि का काम करते है। (माळी, p.74) पितामह ज्योतिराव फुले के कारण भविष्य में ब्राह्मण-राज की राह में कांटे बिछते ही गये है। शिक्षा हासिल का प्रयत्न करने वाले एकलव्यों, शंबुकों का अंगुठा काट देने, उनकी हत्या कर देने जैसे ब्राह्मणवादी विचारों के सभी प्रतिरोधों का मुकाबला करके ओबीसी समाज के ज्योतिराव फुले ने सन 1848 में शोषित समाज के स्त्री-पुरुषों को पढने लिखने का हौसला और अधिकार हासिल कराया। ज्योतिराव फुले ने ब्राह्मणों के धर्म तथा सत्ता को नकार दिया था। विधवाओं का पुर्नविवाह करना शुरु किया और वह भी बिना किसी ब्राह्मण के। पितामह ज्योतिराव फुले का मानना था कि जब तक ब्राह्मण धर्म को त्याग नही दिया जाता देश की जनता में एकता होना संभव नही है। आर्य ब्राह्मण अगर सचमुच ही इस देश की जनता में एकता चाहते है तो सबसे पहले उन्होने अपने दुष्ट ब्राह्मण-धर्म के ग्रंथों को पानी में डुबो देना चाहिये। तब तक इस देश की जनता के बीच एकता स्थापित नही हो सकती :-आता तरी तुम्ही मागे घेवु नका।। धिक्कारुन टाका।। मनुमतां।। (महात्मा फुले, p.319)

पितामह फुले ने अपने गीतों में अंग्रेजों को आगाह किया कि हर तरफ किस बुरी तरह ब्राह्मणशाही फैली है और ब्राह्मण किस निर्ममता से बहुजन जनता का शोषण कर रहे है। ब्राह्मणवाद के शिकंजे में फँसे राजा बहुजन जनता से टॅक्स के माध्यम से वसूले गये सरकारी खजाने की रकम को ब्राह्मणवादियों पर किस तरह से लूटाने पर मजबूर थे। उनके अनुसार :- सैंकडों साल भट (ब्राह्मण) राजाओं ने प्रजा को नाक तक करों में डुबा कर करोडों रुपये अपने गले के नीचे उंडेले है। अपनी जाति के भटों को जगह जगह संस्थान बनाकर उनके लिए अन्न-छत्र कायम किये। टॅक्स का पैसा वसूल होते ही अमुक संस्थान के लिए दो लाख तो तमुक संस्थान के लिए पचास हजार इस तरह पैसा बाँट कर आज ब्राह्मणों के लिए घी रोटी का भोजन और उपर से दस-दस रुपये की दक्षिणा; आज ब्राह्मणों के लिए लडडुओं का भोजन और उपर से बीस-बीस रुपये दक्षिणा; आज ब्राह्मणों के लिए केशर मिश्रीत चावल का भोजन और उपर से अंजुलीभर रुपयों की दक्षिणा। इसके अलावा कईयों को शालजोडी, कईयों को पगडियाँ, कईयों को धोतियों की जोडी तथा कईयों को सालाना वजीफों की घोषणाएं की जाती थी। शुद्र बहुजनों के पैसों से ब्राह्मणों को ऐश कराकर शुद्र प्रजा को तरह तरह से प्रताडित करने का काम किया है। अंग्रेजी सरकार ने ब्राह्मणों की इन तमाम कृत्रिम शोषण-प्रथाओं को जारी रखकर अपनी बुध्दी और राजनीति को कलंकित किया है। जनता की जरा भी पर्वाह न करते हुए उपरोक्त खर्च से फोकट का खाकर मगरुर हुए ये सांड (ब्राह्मण) उल्टे अज्ञानी शुद्र दाताओं को अपने पैर का धुला पानी पिलाते है। (महात्मा फुले p. 390, 170)

भेड की खाल में भेडिया यानि, हिन्दू-धर्म के बुर्के में ब्राह्मण-धर्म !

लुघेत ए किश्वरी (Lughet-e-Kishwari) नामक पर्शियन शब्दकोष को लखनउ में 1964 को प्रकाशित किया गया। उसमें हिन्दू शब्द का अर्थ 'चोर', 'डाकू' 'राहजन' तथा गुलाम ऐसा दिया हुआ है। एक दूसरे शब्दकोष 'उर्दू-फिरोजउल लघात (Urdu-Feroze-ul-Laghat, Part One, p. 615) में इसका अर्थ बार्डा यानि आज्ञाकारी नौकर, सीया फाम यानि काले रंग का ऐसा है। ये सभी अर्थ अपमानास्पद अर्थ है जो भारत के लोगों के लिये है।(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm) हिन्दू शब्द मूलतः भौगालिक क्षेत्र को दर्शाता है। अरब ग्रंथों में भारतीय उपमहाव्दीप में रहने वाले लोगों के लिये हिन्दू शब्द इस्तेमाल हुआ है क्योंकि यह भूप्रदेश सिंधू नदी के पार का क्षेत्र है। पूरानी पर्शियन भाषा में 'स' की जगह 'ह' का उच्चार होता है। इसलिये सिंधू इस शब्द का उच्चार हिन्दू होगा। ग्रीक लोगों ने इसका और भी अपभ्रंष करते हुए सिंथोस को इंडोस कर दिया। इसी इंडोस शब्द से इंडिया यह शब्द बना। हिन्दू शब्द से ही हिन्दूस्तान यह शब्द तुर्क, मंगोल तथा अफगानों ने भारतीय भूक्षेत्र को दिया।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

अंग्रेजों-मुस्लिमों ने हिन्दू-धर्म बनाकर
अल्पसंख्यक ब्राह्मणों को उसका मुखिया बनाया !

हिन्दू शब्द भारतीय है ही नही। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय के किसी भी धर्म ग्रंथ में हिन्दू शब्द का उल्लेख नही है। भगवत गीता या समूचे वेदिक साहित्य में कहीं हिन्दू शब्द का उल्लेख नही है।(http://hubpages.com//The Origin of Hinduism.htm) मुस्लिमों के पहले भारत में कोई हिन्दू नही था। तुर्क-मंगोल काल में ही 'हिन्दू' संकल्पना पैदा हुयी। मुसलमान शासकों ने बिना कोई फर्क किये सारे गैर-मुस्लिम भारतीयों को हिन्दू करार दे दिया। (www.countercurrents.org/Saffronization,Hinduization Or Brahminization By Dr. K. Jamanadas.htm) ऐसा करना सरासर अन्याय था क्योंकि इसका मतलब भारत के मूल जैन, बौध्द, इ. मूलनिवासी धर्मो का अस्तित्व नकारना था। शायद सबसे पहले अलबेरूनी ने लगभग ईसवी 1030 में गैरमुस्लिमों को हिन्दू करार दिया। 19 वी अर्ध शताब्दी के पहले संस्कृत के किसी भी साहित्य में हिन्दू शब्द का उल्लेख नही है। ईसाई चर्चो ने अपने धार्मिक प्रचार के दौरान व्यापक रुप से गैर-इस्लामी, गैर-ईसाई लोगों को 'हिन्दू' नाम से संबोधित करना शुरु किया। मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन के संतों ने हिन्दू शब्द का इस्तेमाल लगभग न के बराबर किया। अंग्रेजों ने अपने जनगणना के आंकडों में तथा दिगर सरकारी दस्तावेजों में भारत के गैरमुस्लिम, गैरईसाई लोगों के लिये हिन्दू शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होने भारत के मूलनिवासियों पर जबरन हिन्दू पहचान थोंप दी। हिन्दू धर्म का निर्माण अंग्रेजों-मुस्लिमों ने उन्नीसवी शताब्दी में किया है। इसलिये सभी धर्म हिंदू धर्म से पूराने धर्म है। (Looking for a Hindu Identity Dwijendra Narayan Jha)

भारत के सभी मूलनिवासी लोगों के धर्म-पंथों को ब्राह्मणों की धार्मिक अधिसत्ता के तहत लाने का काम अंग्रेज तथा मुस्लिम शासकों ने किया है।(Swami Dharma Teertha,

pp. 123 ff.) अंग्रेजों ने द्रविड इ. मूलनिवासी धर्म-संस्कृतियों को नकार कर सन् 1830 में 'हिन्दू' धर्म का निर्माण किया। (http://matter-of-spirit.com/ARYAN.htm) अंग्रेज तथा मुस्लिम शासकों ने ब्राह्मणों को हिन्दू धर्म के अधिकारिक पूजारियों के रुप में मान्यता भी दे दी। भारत के मूलनिवासियों पर ब्राह्मणों के धर्मग्रंथ भी जबरन थोंप दिये। ब्राह्मणों की मनुस्मृति इ. के नियम सारे भारतीय मूलनिवासियों पर कानूनन लागू करने का रास्ता मुस्लिमों तथा अंग्रेजों ने ब्राह्मणों के लिये खोल दिया।(http://www.countercurrents.org/What Is "Hinduism" By Dr. Iniyan Elango.htm) कलकत्ता सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सर विलियम जोन्स के पास मुस्लिमों के लिये मुस्लिम कानून, इसाईयों के लिये ईसाई कानून था। उन्हे भारत के बाकी लोगों के लिये एक सामाजिक कानून चाहिये था। कलकत्ता के ब्राह्मणों ने सर जोन्स को मनु धर्मशास्त्र किताब दी जिसे उन्होने हिन्दू कानून के रुप में मान्यता दे दी। युरोपियन शासकों ने 19 वी शताब्दी में हिन्दू कानूनों का निर्माण किया। {इल्युमिनॅटी के षडयंत्र के चलते यह किया गया वर्ना अंग्रेज मूलनिवासियों के लिये संतों की परंपराओं के मुताबिक तर्कपूर्ण नियम लागू कर सकते थे।} इतिहास की यह सबसे बडी विडंबना है कि हिदुत्व की कभी कोई व्याख्या नही की जा सकी है।(http://www.christianindiaministries.in/CHRISTIAN INDIA MINISTRIES.htm) पहले ब्राह्मण केवल 15% उच्च जातियों के ही पूजारी थे। मुस्लिम शासकों ने सभी गैरमुस्लिमों को ''हिन्दू'' नाम देकर विदेशी आर्य ब्राह्मणों को बहुजनवादी धर्मो, पंथों पर कब्जा कर भारत के 85% मूलनिवासी बहुजनों पर अपनी पंडेगीरी को लादने का मौका फराहम कर ब्राह्मण-धर्म की अनमोल सेवा की है। मूसलमानों का सवर्ण मुस्लिम नेतृत्व भारत को भारत नही बल्कि हिन्दूस्थान कह कर ब्राह्मण-धर्म की अनमोल सेवा कर रहा है। यह मुस्लिमों तथा अंग्रेजों का ब्राह्मणों पर किया गया सबसे बडा अहसान है जिसकी बदौलत भारत के मूलनिवासियों को गुलाम बनाना ब्राह्मणों के लिये आसान हुआ।

भारत के धर्म-पंथों को हिन्दू करार देना,
तमाम नैतिक तथा न्याय के सिधान्तों के खिलाफ है !

भारत के संविधान के अनुसार भी जो व्यक्ति मुस्लिम, ईसाई, पारसी या किसी अन्य विदेशी धर्म में विश्वास नही रखता वह हिंदू है। हिंदू यह शब्द मात्र मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी धर्मो के अलावा दिगर धर्मो के समुच्चय को दर्शाता है।{न कि उनके अलग अलग धर्मो को} (p. 31, पाकिस्तान फोरम सिरीज -7, Vision of Pakistan) इसलिये भारत के जैन, बौध्द इ. धर्मो को हिन्दू 'धर्म' करार देना नाइन्साफी है। 'हिन्दू' कोई एक धर्म न होकर कई धर्मो का समुच्चय है। जैसे कि Heinrich von Stietencron का कहना है कि हिंदु धर्म ऐसा एक कृत्रिम पौधा है जो हकीकत में कही भी अस्तित्व में नही है। जी. जे. लार्सन के मुताबिक 'हिन्दू बहुसंख्या' 'हिन्दू धर्म' तथा 'हिंदुत्व' यह सब कृत्रिम वर्गवारी (artificial categorisation) है। स्मिथ (Wilfred Cantwell Smith) के मुताबिक 'हिंदुत्व' एक असत्य संकल्पना (false conceptualisation) है। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, तथा इस्लाम को स्वतंत्र धर्म के रुप में मान्यता है क्योंकि उनका धर्म-संस्थापक है, उनकी एक स्वतंत्र धार्मिक किताब तथा प्रथा परंपराएं है। यही बात जैन, बौध्द, सिख, शैविजम, शक्तिजम, वैष्णवीजम, इ. भारत के तमाम धर्म-पंथों पर लागू होती है। अगर म निनियन स्मार्ट (Ninian Smart) के सात पहलुओं (seven dimensional analysis) के मुताबिक विश्लेषण करें तो भारत का हर पंथ एक स्वतंत्र धर्म होगा। नोनिका दत्ता (Nonica Datta) के मुताबिक सिखों ने कभी खुद को हिन्दू नही कहा। सिखों की विचारधारा ब्राह्मण धर्म

से एकदम विपरित है। यही बात जैन धर्म तथा एनिमिजम के बारे में है। उन्हे हिन्दू ध र्म के पंथ कहना गलत है। भारत के आदिवासियों को हिन्दू कतई नही कहा जा सकता क्योंकि उनकी अपनी स्वतंत्र धार्मिक पहचान, अपनी स्वतंत्र प्रथा-परंपराएं और स्वतंत्र ध र्म है। जो ब्राह्मण धर्म से बिल्कुल अलग है।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) कई समुदायों के धर्मो का कोई भी नाम नही है। उन्हे धर्म के नाम की कभी कोई जरुरत महसूस नही हुई। वे परंपरा से अपनी प्रथाओं पर अमल करते रहे है। कई समुदायों ने 'हिन्दू' शब्द तक नही सुना है। इन सबको जबरन हिन्दू करार देना उनपर अन्याय करना है।(http://factsanddetails.com/HINDUISM AND ITS HISTORY - World Topics _ Facts and Details.htm) हिन्दू धर्म के अंर्तगत शामिल किये गये धर्म-पंथ अपने विचारों में परस्पर विरोधी है। कोई शाकाहारी है तो कोई मांसाहारी। कोई ईश्वर को मानता है तो कोई ईश्वर को नकार देता है। कोई नैतिकता के उंचे मानदंडों में विश्वास करता है तो कोई लैंगिक उदारता को अपने पंथ की केन्द्रिय वस्तु मानता है। कथित हिन्दू धर्म में असंख्य विरोधाभास है। हिंदू धर्म अंग्रेजों तथा मुस्लिमों की अस्वाभाविक निर्मिति है। यह कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि कई हिन्दू बुध्द तथा ईसा मसीह तक को हिन्दू देवता के अवतारों के रुप में पूजा करते है।

मान. वी. टी. राजशेकर के मुताबिक भारत में हिंदुओं के आंकडों को जानबूझकर बढा चढाकर आंका जाता है। हिन्दूओं में उन लोगों को भी जबरन शामिल किया गया है जो वास्तव में हिन्दू है ही नही। इनमें अनुसुचित जनजातियां, अनुसुचित जातियां, पिछडी जातियां है जिनकी कुल तादाद 70 फीसदी से ज्यादा है। इनमें मुस्लिम, ईसाई, सीख, इ. को मिला दिया जाये तो यह तादाद 90 फीसदी हो जाती है जो हिन्दू नही है।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म और जैन धर्म को
जबरन ब्राह्मण-धर्म की शाखा घोषित किया है !

ब्राह्मणों ने बुध्द और उनके धम्म को खत्म कर जनमानस से विस्मृत करने के लिये हर हिंसक तरिका अपनाया और अंततः वे अपने मकसद में कामयाब हो गये। लेकिन जब पश्चिमी पुरातत्व वैज्ञानिकों ने बुध्द के धम्म की सुवर्ण परंपरा को दुनियां के सामने उजागर किया तो ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म को ब्राह्मण धम्म की शाखा के रुप में प्रचारित किया। तमाम ब्राह्मण इतिहासकारों, दार्शनिकों, तथा शिक्षा क्षेत्र के लोगों की रणनीति है कि वे भारत के श्रमण परंपरा के धर्मो को हिन्दू प्रचारित करते है। सन् 1956 में बुध्द के 2500 वे महापरिनिर्वाण दिन के अवसर प्रकाशित सरकारी किताब '2500 Years of Buddhism' की प्रस्तावना में एस. राधाकृष्णन ने लिखा कि 'बुध्द को इस बात का अहसास था कि वे कोई नया धर्म नही बना रहे है। बुध्द का जन्म एक हिन्दू के रुप में हुआ, वे हिन्दू के रुप में बडे हुए और उनकी मौत एक हिन्दू के रुप में हुई।'(http://hubpages.com//Sanskrit Language Facts3.htm) विवेकानंद कहता है कि 'बौध्द धम्म और ब्राह्मण-धर्म से अलग समझने की गलती ना करे ... बुध्दिजम हमारा ही एक पंथ है। बुध्द ने वेदों के दर्शन के सार को समझाया है।(Vivekananda says: Do not mistake, Buddhism and Brahmanism … Buddhism is one of our sects." "He (i.e. the Buddha) taught the very gist of the philosophy of the Vedas) एस राधाकृष्णन कहता है कि बौध्द धम्म का नये और स्वतंत्र धर्म के रुप में कभी निर्माण नही हुआ। वह सिर्फ ब्राह्मण ों के प्राचीन विश्वास की एक अलग शाखा मात्र है। बुध्द ने ब्राह्मण धर्म की विरासत

लेकर उसमें ही कुछ सुधार किये है। ब्राह्मण धर्म-परंपराओं का स्कॉलर पी. वी. काणे ब्राह्मण कहता है कि बुध्द ब्राह्मण धर्म के सुधारक मात्र थे। उपरोक्त तमाम कथन भारत के ब्राह्मणवादियों की सोच का तथा इल्युमिनॅटी के षडयंत्र का प्रतिनिधित्व करते है जिसकी आधारशिला थिओसॉफिस्ट ब्लावटस्की तथा आलॅट ने रखी थी। वे बौध्द धम्म को उपनिषदों के दर्शन के मुताबिक पूर्नपरिभाषित करने की कोशिश करते है। ब्राह्मणों ने बुध्द को ब्राह्मण धर्म का अवतार करार दे दिया है।

कोई भी ब्राह्मण इस बात का जवाब नही देता कि अगर बौध्द धम्म ब्राह्मण धर्म का विकसित और सुधारित रुप था तो भारत से बौध्द धम्म क्यों खत्म किया गया। भ्रष्ट ब्राह्मण धर्म आज भी क्यों फल-फूल रहा है ? भारत से बौध्द धम्म को नष्ट किया जाना एक ऐतिहासिक सच है इसलिये बौध्द धम्म ब्राह्मण-धर्म की सुधारित शाखा होने की बात ब्राह्मणवादी दुष्प्रचार के सिवा कुछ नही है। कोई भी उपनिषद बुध्द के पहले का नही है। कई पुराने उपनिषद राजा अजातशत्रु का तथा ब्राह्मण धार्मिक विचारक अस्वलयान का उल्लेख करते है जो बुध्द के समकालीन थे। कोई भी उपनिषद ईसापूर्व 550 वर्ष पहले का नही है। उपनिषदों का निर्माण बुध्द के बाद से सम्राट अशोक के काल तक ब्राह्मण ों ने किया है। उपनिषदों को बुध्द के पहले के काल का बताने की कोशिश मात्र एक दुष्प्रचार है। पूराने उपनिषदों में जो भी जैन तथा बौध्द श्रमण परंपरा के विचार शामिल किये है, वे ब्राह्मणवाद की विचारधारा में बेमेल पैबंद जैसे है। वे सांख्य तथा योग दर्शन के माध्यम से शामिल किये गए है जो वेदों की बलिप्रथा का विरोध करते है। इसलिये ये ब्राह्मणवाद के मूल विचार नही है। श्रमण विचारधारा तथा ब्राह्मणवाद एक दूसरे के एकदम विरोधी है इस बात को पहले ही विस्तार से बताया जा चुका है।

भारत में बौध्द धम्म के पहले समुह में वे बौध्द शामिल है जिन्होंने ओरीसा, बंगाल, हिमाचल प्रदेश के उत्तरी जिले जो भारत नेपाल सीमा पर है तथा लद्दाख के निवासी अपने पूर्वजों से बौध्द धम्म ग्रहण किया था। दूसरे समुह में डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी बौध्दों का समावेश होता है जिन्होने 14 अक्तूबर 1956 में ब्राह्मण धर्म छोडकर बौध्द ध ाम्म कबुल किया था। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी मुख्यतः दलित है और थेरावादी परंपरा के बौध्द धम्म के अनुयायी है। तिसरे समुह में बुध्दिजीवियों का समावेश है जिन्होने बाद में बौध्द धम्म अपनाया है। इस समुह में मुख्यतः ब्राह्मण, क्षत्रिय, कायस्थ, वैश्य इ. भद्रलोगों का समावेश होता है। इस समूह में धम्मानंद कौसंबी, राहुल सांस्कृत्यायन, भिख्खु जगदीश कश्यप इ. का समावेश है। चौथा समूह दलाई लामा के साथ तिब्बत से भारत आये हुए तिब्बती तंत्रयानी बौध्दों का समुह है जिनकी तादाद पचास हजार से भी ज्यादा है। डॉ. अम्बेडकर के अनुयायी बौध्दों को छोड बाकी तिनों समुह ब्राह्मणवादी इल्युमिनॅटी के संयुक्त षडयंत्र व्दारा प्रचारित बातों के असर में है।

हिन्दुत्व का अर्थ सिर्फ और सिर्फ,
ब्राह्मणों की निरंकुश धार्मिक-राजसत्ता (Theocracy) है !

हिंदुत्व मूलतः अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों का जाति-दर्शन है। आर्य-ब्राह्मण अल्पसंख्यंक होने की वजह से कभी अपने बलबूते पर संसद में सत्ता तक नही पहुंच सकते। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होने {अपने आर्य जातभाई अंग्रेजों के साथ मिलकर} जबरन जैन, बौध्द, सीख, दलित, आदिवासी तथा ओबीसी को हिंदू करार दिया है। इसी षडयंत्र के तहत वे इस्लाम, ईसाई धर्म, बौध्द धम्म इ. को अपना चुके लोगों को भी तमाम तिकडमों से घर वापसी के नाम पर कथित हिन्दू धर्म में पूर्नशामिल करना चाहते है। उनकी नीति

का मूलाधार ''मरने के लिये गैरब्राह्मण लेकिन चरने के लिये ब्राह्मण'' यह घोष-वाक्य है। ब्राह्मणों के हिन्दू धर्म का मकसद न ही जाति-व्यवस्था को खत्म करना है और न ही ओबीसी, दलितों, तथा आदिवासियों को सत्ता तथा हर क्षेत्र में भागीदारी और अधिकार देना है। ब्राह्मणों का मकसद इतना ही है कि गैरब्राह्मण सिर्फ उनके धार्मिक गुलाम बनकर ब्राह्मणराज के लिये अपनी जान कुर्बान करते रहे। (THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

आडवाणी जैसा {सींधी) नेता {जिसकी बहु गौरी ने उसपर शारीरिक शोषण का आरोप लगाया है} इस्लाम के अनुयायियों को महंमदी हिंदू करार देता है। वह भारत के ईसाईयों को ईसाई हिन्दू, तथा सिखों को हिन्दू सीख करार देता है। हिन्दू महासभा ने सन् 1951 में कही बातों को अडवाणी दोहरा रहा है जिसमें कहा गया था कि हिन्दू महासभा हिन्दूत्व तथा हिन्दू राजनीति के सैनिकीकरण में विश्वास करती है; इस्लाम, ईसाई, झोरास्टरीजम, तथा यहूदियों को हिन्दू बनाया जाये .. उन्हे हर हाल में हिन्दूओं के साथ जुडना होगा। उन्हे प्राचीन भारत के इतिहास को अपना मानना होगा। संक्षेप में उन्हे वेदिक संस्कृति को मानना ही होगा। ब्राह्मणों का मकसद भारत में ब्राह्मण-धर्म की निरंकुश राजसत्ता कायम करना है जो मनुस्मृति के नियमों के मुताबिक गैरब्राह्मणों का दमन शोषण करेगी, उन्हे उनके हर मानवीय अधिकारों से वंचित कर देगी जो अधिकार भारत के संविधान ने सुनिश्चित किये है।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) न ही भगवाकरण शब्द, न ही हिन्दूकरण शब्द आर.एस.एस. के कुटील मकसद को स्पष्ट करता है। इसका योग्य शब्द 'ब्राह्मणीकरण' यानि लोगों को {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय का गुलाम बनाना है। अटल बिहारी वाजपेयी अपने इंटरव्यू में खुलेआम कह चुका है कि उन्होने मंडल लाया इसलिये हम कमंडल ले आये।(Dharmayug, 90, q/b Pardeshi p. 15) इसलिये हिन्दुत्व सिर्फ {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय के वर्चस्व को स्थापित करने का हथियार मात्र है। इसका और कोई मतलब ही नही है।

भारत का सीख धर्म भी आज उसी चौराहे पर खडा है जहां 9 वी शताब्दी के आरंभ में बौध्द धम्म खडा था। जिस तरह बौध्द अनुयायी तथा उनके धार्मिक स्थल ब्राह्मणों के हमलों का शिकार बने उसी तरह ब्राह्मणवादी ताकतों के हमलों का शिकार आज सीख धर्म हो रहा है। सीख धर्म आज अपने अस्तित्व की रक्षा की लडाई लड रहा है। यह लडाई तब से और तेज हो गई है जबसे ब्राह्मण इंदिरा गांधी ने सीख धर्म को बौध्द धम्म की तरह ध्वस्त करने की कोशिश की। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) डॉ. अम्बेदकर के अनुसार ब्राम्हणवाद ऐसा जहर है जिसने कथित हिन्दु धर्म को विकृत किया है। आप कथित हिन्दु धर्म को बचाने में सफल हो सकते है बशर्ते आप ब्राम्हणवाद को नष्ट कर सके।(P. 77, Dr.Babasaheb Ambedkar writing and speeches. Vol. 1)

बहुजनों के हितों के दुश्मन ब्राह्मणवाद की हैवानी असहिष्णुता !

दयानंद सरस्वती ने अपनी विवादास्पद किताब 'सत्यार्थ प्रकाश' में सभी गैर-ब्राह्मण धर्म-पंथों तथा दर्शनों के प्रति स्पष्ट असहिष्णुता की भावना व्यक्त की है। मा. म. देशमुख ने जिनका जिक्र संडासवीर जैसे शब्दों से किया है ऐसे ब्राह्मणवादियों ने ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, झोरोस्टर का धर्म इ. को विदेशी धर्म करार देते हुए मुस्लिमों को हिन्दू धर्म {पढिये ब्राह्मण धर्म} का सबसे बडा दूश्मन करार दिया है। आर.एस.एस. के तमाम ब्राह्मण संस्थापकों के मुताबिक मुस्लिम, ईसाई तथा कम्युनिस्ट भारत की अंतर्गत सुरक्षा

के लिये खतरा है जबकि बौध्द अवाम हिन्दू संस्कृति {पढिये वेदिक ब्राह्मण संस्कृति} का दुश्मन है। उपरोक्त विषवमन के बावजूद {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय जब बौध्दों, जैनों, सिखों तथा आदिवासियों को ब्राह्मण धर्म का हिस्सा करार देते है तो इसका यही मतलब है कि उन्हे मनुसंस्कृति के तहत {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय का गुलाम बनाया जाना है। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय ने अपने साहित्य में बौध्दों, जैनों, सीखों तथा आदिवासियों को उनकी मर्जी के खिलाफ जबरन हिन्दू करार दिया है और भारत की {मनुवादी} न्यायव्यवस्था भी ब्राह्मणों की बात का समर्थन करती है। कानून के मुताबिक बौध्दों, जैनों तथा सीखों का अंतर्भाव हिन्दू धर्म में किया गया है। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय भारत के ईसाईयों को हिन्दू ईसाई तथा मुस्लिमों को मंहमदिया हिन्दू करार देकर उन्हे भी उनकी मर्जी के खिलाफ जबरन हिन्दू धर्म के तहत लाना चाहते है। अंग्रेजों से सत्ता का खुद के हाथों में स्थानांतरण होते ही {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय ने सरकारी खर्चे से सोमनाथ के मंदिर का पूर्ननिर्माण करने का काम किया। जिस कॅबिनेट में यह निर्णय लिया गया था उसकी अध्यक्षता ब्राह्मण नेहरु ने की थी। हिन्दू महासभा के एक नेता के मुताबिक ध्वस्त सोमनाथ मंदिर हिन्दूओं (पढीये ब्राह्मणों} के अपमान को दर्शाता था।(http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm)

सभी परजीवी जाति-समुदाय अपने वर्चस्व के लिये नकली इतिहास गढते है।

[Information for above chapter is synthesized from following sources : en.wikisource.org/Indic civilisation - Wikisource, the free online library.htm; http://en.wikipedia.org/Historical revisionism (negationism) - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://encyclopediaegypt.com//'JEWISH HISTORIAN' HOAX. htm; http://www.theastralworld.com/Is The Bible True - Real Facts About the Authenticity of the Bible.htm; http://www.rense.com/Behind The Bible Fraud - What Was The Church Trying To Hide.htm; http://www.jesusbelievesinevolution. com/Genesis Creation Story Is the Forgery of Heretic Priests.htm; http://rupeenews. com//How Adi Shankara destroyed Buddhism and founded 'Hinduism' in the 8th century _ Rupee News.htm;]

अफ्रिका वंशीय काली जनता के मुक्ति योध्दा माल्कम एक्स के अनुसार शोषकों {ब्राह्मणवादियों} ने हमारे सभी पहचान चिन्ह खत्म किये है क्योंकि अगर हम अपनी मौजूदा स्थिति के आरंभ को ही नही जानते तो हम अपनी मौजूदा बदतर गुलामी का कारण भी नही जान सकते। इसलिए हम बडी आसानी से यह मान लेते है कि हम हमेशा से ऐसे ही लाचार थे और हमेशा ऐसे ही लाचार रहने वाले है। इसलिए हम अपनी हालत से समझौता कर लेते है। इसके विपरीत जब हम अपनी स्थिति के आरंभ को जान लेते है तो हमको पता चलता है कि हमारी आज की स्थिति छल और मक्कारी से बनाई गई

है। इस हालत को बदला भी जा सकता है। तब हम विश्व में हमारी ही स्थिति में लाए गये शोषितों को एकदूसरे का हिस्सा मान लेते है। ऐसा करने से खुद ब खुद हम में यह अहसास जागने लगता है कि हम बहुसंख्यक समाज का हिस्सा है और बहुजनों को गुलाम बनाने वाले शोषक {ब्राह्मणवादी} चंद संख्या वाले है। इन शोषकों को उखाड फेंकने का हौसला हम में जागने लगता है। हम याचनाएं करने की बजाय लडकर अपने हक हासिल करने की प्रवृत्ति विकसित कर लेते है। यही बात हमारे शोषकों को भयभीत करती है। (माल्कम एक्स, p. 12-15) इसलिए हर शोषकों की तरह ब्राह्मणवादियों ने भी मूलनिवासी बहुजनों को उनकी मूल पहचान मालूम नही होने दी। {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय ने हमें अनार्य यानि जो आर्य नही है के रुप में प्रचारित किया। अनार्य शब्द से हमें हमारा हतिहास पता नही चलता। ब्राह्मणवादियों के इतिहास का उद्देश्य भी मूलनिवासियों की {अल्पसंख्यक} ब्राह्मण समुदाय के गुलामों के रुप में पहचान स्थापित करना है। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार जो लोग अपना इतिहास नही जानते वे कभी इतिहास कायम नही कर सकते। इसलिये शोषितों को अपने इतिहास को जानना-समझना बेहद जरुरी है।

हर परजीवी जाति-समुदाय मूलनिवासी अवाम के दमन-शोषण करने को आसान बनाने के लिये तथा अपने वर्चस्व को कायम रखने नकली इतिहास गढता है। शोषक वर्ग का मकसद मनगढंत इतिहास से अशिक्षित तथा तर्क का इस्तेमाल न करने वाले लोगों को मूर्ख बनाना रहा है। इतिहास एक ऐसा हथियार है जिसके जरिये राष्ट्रीयता की खास पहचान कायम की जाती है। संस्कृति तथा यादों को खास आकार दिया जाता है। व्यक्ति की वैसी ही सोच बन जाती है। किसी राष्ट्रीयता को कमजोर करना हो तो सबसे पहले उसके इतिहास को विकृत बनाया जाता है। किसी समुदाय को ध्वस्त करना हो तो उसके समुदाय की विरासत तथा संस्कृति की पहचान को खत्म किया जाता है। सच्चे इतिहास से अनजान मूलनिवासी समुदाय शोषकों के खिलाफ कभी विद्रोह नही कर सकता। अपने उज्वल भविष्य के बारे में सोचने का कोई आधार ही नही रहता। इसलिये शोषकों के खिलाफ इन्केलाब की संभावना ही खत्म हो जाती है। ब्राह्मण-धर्म की जंजीरों में फँसे समुदाय विशेषकर ओबीसी समाज इसी वजह से अपने हकों से वंचित रहा है। सभी देशों की शोषक सरकारें अपने राजनीतिक मकसद को पूरा करने के लिये खास किस्म के इतिहास को लोगों के मन में बसाती है। सरकार परस्त इतिहासकार अपने आकाओं के मकसद को पूरा करने करने के लिये सच्चाई को तोडते मरोडते है, सच्चाई को छुपा लेते है। झूठ को सच के रुप में स्थापित कर देते है। इतिहास को समझने के लिये यह जानना जरुरी है कि उसे किस परजीवी जाति-समुदाय ने लिखा है। विकृत इतिहास पर भरोसा करना अपने इतिहास से अनजान रहने से भी ज्यादा खतरनाक है। इसलिये शोषित समाज की पहली जरुरत शोषकों व्दारा बताये जा रहे इतिहास को पूरी तरह से नकारकर अपने सच्चे इतिहास को सही परिपेक्ष में समझना है।

झूठा इतिहास लिखने में इस्तेमाल की जाने वाली तिकडमें !

हमेशा विजेता लोगों ने अपने इतिहास को अपने मन के मुताबिक खुद ही लिखा है। किन लोगों को आतंकवादी और किसे देशभक्त माना जायेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि विजेता कौन है। अंग्रेजों तथा ब्राह्मणवादियों के लिये भगतसिंह आतंकवादी जबकि भारत की जनता के लिये वे शहीद क्रांतिकारी है। जब भी दो देश युध्दरत होते है तो उनके युध्द के इतिहास पूरी तरह से एक दूसरे से भिन्न होते है।

लोगों के इतिहास को मन मुताबिक गढने के लिये झूठे दस्तावेजों को सच्चे दस्तावेजों

के रुप में पेश किया जाता है। सच्चे दस्तावेजों को झूठे ठहराने के लिये उनके खिलाफ सबूत गढे जाते है। किसी दस्तावेज का अर्थ अपने मन के मुताबिक लगाया जाता है। किसी बात का समर्थन करने के लिये झूठे आंकडे निर्माण किये जाते है। किताबों का गलत रुप से भाषांतर किया जाता है।

1) मन के मुताबिक झूठा इतिहास लिखा जाता है। उसमें कुछ घटनाएं गढी जाती है। कुछ काल्पनिक नामों के साथ कुछ वास्तविक नामों का भी समावेश किया जाता है ताकि गढा या इतिहास विश्वसनीय लगे। 2) गढे गये इस इतिहास को किसी प्राचीन काल के लेखक के नाम से खपाया जाता है क्योंकि उस काल्पनिक प्राचीन लेखक से कोई पूछताछ कर ही नही सकता। 3) जब इस नकली इतिहास का कई लोगों के व्दारा हवाला दिया जाता है तो अपने आप उसे विश्वसनीयता प्राप्त होने लगती है। इसलिये मनगढंत इतिहास लिखने के बाद दूसरे लेखकों की मदद से उसी मनगढंत इतिहास को मूल लेखक के हवाले से दोहराया जाता है।

मनगढंत कहानी गढ कर ही संतोषी माता नामक नई देवता निर्माण की गई। संतोषी माता के बारे में हिन्दी में एक काल्पनिक फिल्म बनाई गई थी। संतोषी माता के बारे में कही कोई लिखित उल्लेख नही था। अंधविश्वासी लोगों ने न सिर्फ उसपर भरोसा किया बल्कि उसके नाम पर मंदिर बनाकर यात्राएं शुरु की। आज दूनियां भर के हिन्दू उसकी पूजा करते है। विदेशों में भी उसके मंदिर बनाये गए है।

ब्राह्मणों के पूराणों में भूतकाल की बजाय जानबुझकर भविष्य काल का है ताकि पहले से घटी घटनाएं भविष्यवाणियाँ प्रतित हो। जैसे भागवत पूराण में मौर्य राजाओं के संबंध में लिखा है कि ''एक ब्राह्मण नौ नंद राजाओं को अपदस्त कर देगा। उनके नाश के बाद यही ब्राह्मण चंद्रगुप्त को राजगद्दी पर स्थापित करेगा। उसका पुत्र उसका वारीस होगा जिसको अशोकवर्धन नामक पुत्र होगा।'' (स्वपन के. बिस्वास, p.275)

ईसाई पूजारियों ने अपने मन के मुताबिक बायबल गढी है ! ईसाई धर्म की शुरुआत ईसापूर्व 6 वी शताब्दी में हिब्रु कल्ट के रुप में हुई। बाद में उसका रुपांतरण यहूदी धर्म में हुआ। जेजस के समय उसमें विभाजन होकर कॅथलिक चर्च का निर्माण हुआ। कॅथलिक बायबल कई रुपों में बनी। सभी ईसाई पंथों की अपनी अलग अलग बायबल थी। किंग जेम्स की बायबल तथा प्रोटेस्टंट ईसाई मत की बायबल इसके बेहतर उदाहरण है। सन् 1850 के वर्षो में प्राचीन धार्मिक किताबें ईसाई विश्वास के भी पहले से थी। समय बितता गया और हजारों प्राचीन दस्तावेज मिले। बायबल भी इन्ही प्राचीन साहित्य पर आधारित है इसके बावजूद मौजूदा बायबल इनसे पूरी तरह से भिन्न है। बायबल कही सूनी बातों पर आधारित है। इसके बावजूद ईसाई उसके प्रत्येक शब्द को सच मानते है। बायबल सच्ची कैसे हो सकती है अगर वह अपने मूल दस्तावेजों से मेल नही खाती। कॅथलीक चर्च के वरीष्ठ नेतृत्व ने पढाये जाने संबंधी एक दस्तावेज जारी किया। इसके मुताबिक ईसाई मत में विश्वास करने वालों से कहा गया है कि बायबल के कुछ हिस्से सच नही है। इंग्लंड, वेल्स तथा स्कॉटलंड के बिशप ईसाई अनुयायियों तथा अन्यों को आगाह कर रहे है कि बायबल का अध्ययन करते वक्त उसमें वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक संपूर्ण अचुकता की उम्मीद ना की जाये। अगर हम सबसे पूरानी ज्ञात बायबल का अवलोकन करें तो वह ब्रिटीश म्युजियम में रखी हुई 'सीनाई बायबल' (Sinai Bible) है जिसमें मौजूदा बायबल से 14800 फर्क है। यह इसलिये है क्योंकि चर्चो ने बायबल को बार बार अपनी सुविधा स्वार्थ के मुताबिक लिखा। वे बायबल में मूल बायबल के विपरित परिवर्तन

करते रहे और विसंगत दस्तावेजों को नष्ट करते रहे। उन्होने मूल यहूदी बायबल को कब्जे में कर उसमें मन मुताबिक परिवर्तन किये। उन्होने इनक्विजेशन (inquisitions) के दौरान यहूदियों को प्रताडित किया। आरोप लगाया कि यहूदियों ने धर्मग्रंथों में परिवर्तन किया है। चर्च के पादरियों ने तमाम विरोधी मत वाले धार्मिक साहित्य को नष्ट कर दिया। फिर भी यह साहित्य उजागर होता रहा क्योंकि उन्हे पूरी तरह से नष्ट नही किया जा सका था। कुछ साहित्य को वॅटीकन ने अपने गुप्त कक्षों में लोगों की आँखों से दूर रखा है। निश्चित रुप से यह साहित्य मौजूदा बायबल से बिल्कुल अलग है। ब्राह्मण ध र्म के असंख्य देवता है। उनमें से कुछ दर्जन देवता कम भी हो जाये तो अल्पसंख्यंक ब्राह्मण जाति को कोई फर्क नही पडेगा। लेकिन इसाईयों के इकलौते ईसा मसिह के बारे में अगर यह साबित हो जाये की उनका अस्तित्व ही नही था तो ईसाई धर्म खतरे में पड जायेगा। बायबल को पागान (pagan) दर्शन-परंपरा के मुताबिक तथा ताकतवर लोगों के हितों में मन मुताबिक बदला गया है। इनसायक्लोपीडीया जुडाईका के ग्रंथ 10 पुष्ठ क्रमांक 10 में स्पष्ट रुप से दर्ज है कि चर्च ने अपने मन मुताबिक बायबल में परिवर्तन किया। खुद रोमन चर्च ने भी माना है कि पवित्र धर्म ग्रंथों में हेराफेरी की गई है। कॅथलिक इनसायक्लोपीडीया ग्रंथ 6 पुष्ठ 136 में कहा गया है कि मूल असली दस्तावेजों के साथ छेडछाड करना तथा उनमें नकली दस्तावेज शामिल करना मध्य युग में एक व्यापार जैसा हो गया था। इनोसेंट तृतीय के मुताबिक इसाई चर्च से संबंधीत नौ तरह की धोखाधडी उनकी नजर में आयी है। चर्चो की यह धोखाधडी सिर्फ मध्ययुग तक ही सिमित नही थी। यह धोखाधडी ईसाई चर्च के आरंभ से ही शुरु हो चुकी थी। सन 1562 में वॅटीकन ने विशेष सेंसर कार्यालय बनाया था जिसे Index Expurgatorius के नाम से जाना गया। इस कार्यालय का मुख्य काम आरंभिक चर्च के फादर लोगों व्दारा लिखी तृटीपूर्ण बातों को छपने से रोकना था जो मौजूदा बायबल से अलग है। प्रो. इडमांड एस. बोडीउक्स (Edmond S. Bordeaux) ने लिखा है कि कैसे ग्रेट पॅन की मौत हुई। उनके अध्याय 'संपूर्ण चर्च का इतिहास' और कुछ नही बल्कि इतिहास को गढा जाना है' (The Whole of Church History is Nothing but a Retroactive Fabrication) कहा गया है कि चर्च ने हाल ही में लिखे हुए साहित्य को पुरातन साहित्य दर्शाया, उन्होने कुछ दस्तावेजों में परिवर्तन किया तो कुछ दस्तावेज गढ लिये। चर्च ने यह दर्शाया कि यह सब कुछ बहुत प्राचीन है। इस तरह चर्च ने अपना खुद का इतिहास गढ लिया। (How The Great Pan Died, op. cit., p. 46) इहरमॅन (Ehrman) फोर्जेड (Forged) में लिखते है कि मन माफिक बातें गढना अज्ञात लेखकों का हथियार था। इसके माध्यम से वे अपने चर्च पर होने वाली आलोचनाओं से अपनी रक्षा करते थे और अपने चर्च को सच्ची स्थापित करते थे। बायबल के कई अध्याय ईसा मसीह के करिबी लोगों ने नही बल्कि उनसे कई शताब्दियों बाद उनके नामों से अपने मकसदों को पूरा करने के लिये लिखे गए। इहरमॅन स्पष्ट करते है कि कैसे व्यापक तौर पर आरंभिक ईसाई लेखकों व्दारा ध ोखाधडी की गई तथा इसके लिये उनकी कितनी कठोर आलोचना तक हुई है।(http://www.amazon.co.uk/Forged Writing in the Name of God--why the Bible's Authors Are Not Who We Think They Are Amazon.co.uk Bart D. Ehrman Books.htm)

जिन लोगों ने धार्मिक साहित्य के साथ धोखाधडी की वे भली भाँति जानते थे कि हिब्रु लोगों की प्रसिध्द परंपराएं उनके मकसद के खिलाफ है। इसलिये उन्होने झूठा इतिहास लिखकर उसे इतना प्राचीन बताया कि कोई उसे झूठा साबित न कर सके। इस तरह वे यहूदियों को यह समझाने में कामयाब हो गए कि मोसेज ने ही उन बातों को कहा

है। जबकि वास्तव में मोजेस ने ऐसा कुछ भी नही कहा था। अपनी किताब Forged मइहरमॅन ने दावा किया है कि 27 में से कम से कम 11 न्यू टेस्टामेंट की किताबें (अध्याय) जाली है। इहरमॅन आलोचना को पॉल के खतों तक सिमित नही रखते। वे मॅथ्यु, मार्क तथा जॉन के गॉस्पेल के असली होने को भी चुनौति देते है। उनके मुताबिक इनमें से कोई भी जेजस के शिष्यों ने नही लिखा क्योंकि आरंभिक गॉस्पेल्स में उनके लेखकों के नाम ही नही है। मौजूदा नाम उसकी प्रतिकृतियां बनाने वालों ने लिखे है। कोई व्यक्ति प्रसिध्द नही है तो वह अपने लिखे दस्तावेजों को अपना नाम नही देगा। वह उसे पीटर या जॉन का नाम देगा ताकि उसकी लिखी बातों को लोगों की मान्यता मिले। जिन भी लोगों ने खुद को पीटर, जॉन या ईसा मसिह के करीबी होने का दावा किया उन सबके नामों का इस्तेमाल किया गया। इहरमॅन के मुताबिक कमसे कम 100 धोखाधडीयां जेजस के करीबियों के नाम पर चर्च की पहली चार शताब्दियों के दौरान की गई है।(http://www.cnn.com/Half of New Testament forged, Bible scholar says – CNN Belief Blog - CNN.com Blogs.htm)

जाली ऐतिहासिक सबूतों का निर्माण !

फ्रांस के लीरे में ईसा मसीह के तुरीन कफन (Turin Shroud) मिलने की बात को सन् 1390 में बिशप पिअरे डीअरकिस (Pierre d'Arcis) ने एक मेमोरंडम लिख कर चुनौति दी कि यह यह कफन एक धोखाधडी मात्र है। कपडे को बडी होशियारी से रंगा गया था और यह दावा किया था कि सूली से उतारने बाद ईसा मसीह को दफनाने के लिये जिस कफन में लपेटा गया था वह कफन यही है। बिशप पिअरे डीअरकिस ने यह विस्तार से बताया कि कैसे उसके पूर्व बिशप हेनरी डी पोईटीअर्स (Henri de Poitiers) ने इस धोखाधडी को जान लिया। इस कपडे को रंगने वाले कलाकार ने भी धोखाधडी की बात को मान लिया था।(http://www.johnsanidopoulos.com//MYSTAGOGY Why the Shroud of Turin is a Forgery.htm) ऐसे ही झूठे दस्तावेज लेनीन इ. के बारे में तैयार कर उन्हे बदनाम करने की कोशिश की गई। जाली दस्तावेज तैयार करने और उसे अपने धार्मिक तथा राजनीतिक मकसद से इस्तेमाल किये जाने के अनगिनत उदाहरण है।

अकबर उपनिषद तथा अल्लाउपनिषद 17 वी शताब्दी में दारा शिकोव के अनुरोध पर इस्लाम की प्रसंशा में लिखे गए।(Harry Oldmeadow in 'Light from the East: Eastern Wisdom for the Modern West' – Page 37) मुगल सम्राट को खुश करने के लिये ब्राह्मणों ने अपनी किसी संहिता में से अल्लाह या इल्ला शब्द ढूंढ निकाला तथा पूरी अल्लाउपनिषद लिख डाली थी। इस उपनिषद में अल्लाह की स्तुति की गई है तथा नबी हजरत मुहम्मद को राजासुल्ला (Rajasulla) कहा गया। सम्राट अकबर के राज्याभिषेक के दौरान इन ब्राह्मणों ने वेदिक भाषा में अल्लाउपनिषद का वाचन किया और अकबर को आशिर्वाद दिया। अकबर की प्रिय पत्नि देवी चौधरानी ने इन मंत्रों का उच्चारण तुलसी पूजा के दौरान किया। ब्राह्मणों ने कई प्रकार के उपनिषद अपने मतलब को पूरा करने के लिये लिखे है। वेदों के संहिता वाले भाग की भाषा इतनी पूरातन है कि उसमें कोई व्याकरण है ही नही। इसलिये उसपर कुछ भी लिखा जाना मुमकिन है। (Indian literature: Volume 41 , page 175) इन उपनिषदों में अकबर को अल्लाह का नबी करार दिया गया है।(http://en.wikipedia.org/Allopanishad - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) डॉ. अम्बेदकर के अनुसार इस्ट इंडिया कंपनी के समय में ब्राह्मणों ने अपने एक दावेदार के समर्थन में पूरी स्मृति ही रच डाली तथा अकबर के ''दिन ए

इलाही'' को मान्यता दिलाने ''अल्लाहुपनिषद'' धर्मग्रंथ लिखकर उसको ब्राह्मण धर्म की सातवी दर्शन-शाखा प्रचारित किया। (Vol. 7, P. 102 ,138, Vol. 9 , p. 195) संहिता ग्रंथ जिन्हे उपनिषद कहा गया है अंग्रेजी शासन के अंत तक सन् 1947 तक प्राप्त होते रहे। के. एम. पानीकर के मुताबिक मलबार के ब्राह्मणों ने शंकराचार्य के नाम से एक ग्रंथ लिख डाला ताकि दलितों को अमानवी unapproachability प्रथा के तहत बाकी लोगों से दूर रखा जा सके।(Forgeries of Hindu Scriptures - Google Groups.htm) ब्राह्मण ावादी झूठ के असंख्य उदाहरण है।

संक्रांत और किक्रांत नामक दो ब्राह्मण कन्याओं ने हम मूलनिवासियों के संख्यासूर को अपने जन्मदिन के उत्सव पर आमंत्रित किया। नाच गाने के दौरान इन ब्राह्मण कन्याओं ने संख्यासूर का कत्ल कर दिया। उनके खून से अपने माथे पर तिलक लगाया। माथे पर लगा सिंदूर संख्यासूर के खून का प्रतिक है। (सम्राट 13 जनवरी 2005) मूलनिवासी राजा जार्लीदर (जलधर) की गैरमौजुदगी में उसकी बिवी तुलसी (वृंदावनी) पर ब्राह्मणों ने बलात्कार किया। अपमानित तुलसी ने खुदकशी कर ली। हम बिना सोचे समझे ब्राह्मण ों के कहे मुताबिक अपने ही हाथों से अपनी ''तुलसी का विवाह'' बलात्कारी ब्राह्मणों से लगाते है। (सम्राट, 27,28 मार्च 2005) कर्नाटक में बहुजन संत बसवेश्वर का ब्राह्मणीकरण कर उन्हे ब्राह्मण घोषित किया गया। संत बसवेश्वर को झुठमूठ ब्राह्मण साबित करने के लिये उन्होने कई किताबें लिखी। बसवेश्वर गैर-ब्राह्मण होने के कई सबूत है। बसवेश्वर अपने काव्य में कहते है कि उनका जन्म खेती करने वाली दो जातियों के मिलन से हुआ है। मेरे पिता तथा मेरी मां की जातियाँ अलग अलग है। दोनों ही जातियाँ खेती करने वाली जातियाँ है। जब बसवेश्वर ने खुद को गैरब्राह्मण कहा है तो क्या बसवेश्वर झुठे है और ये ब्राह्मणवादी लेखक सच्चे ? (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 9 जूलाई 2006)

मान॰ श्रीमंत कोकाटे के मुताबिक ब्राह्मण लेखक संत नामदेव–तुकाराम का जयघोष करने को जातिवाद कहते है क्योंकि नामदेव और तुकाराम दोनों ही ओबीसी संत है। वे चाहते है कि नामदेव को हटाकर उसकी जगह ब्राह्मण–संत ज्ञानेश्वर को रखकर ज्ञानद. ेव–तुकाराम कहा जाये। जबकि वारकरी पंथ की बुनियाद रखने का काम बहुजन–संत नामदेव ने किया।(संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 25 जून 2006)

शुद्र जनता को महानुभाव पंथ से अलग करने के लिये ब्राह्मणों ने उनके संबंध मे अनेक असत्य किस्से-कहानियाँ प्रचारित की जैसे महानुभावों के पंचकृष्ण व्याभीचारी मातंगों के बेटे थे इ॰। संत नामदेव को हत्यारा और लूटेरा प्रचारित किया।

दृढ निश्चय का हमेशा फल मिलता है, (निश्चयाचे बळ, तुका म्हणे तेची फळ।।), कहने वाले, स्वाभीमान को महत्व देने वाले संत तुकाराम को ब्राह्मणों ने यह कहते दिख. ाया कि ''ईश्वर जैसे भी रखे वैसे ही रहना चाहिये।'' (आलिया भोगासी असावे सादर। देवावर भार टाकु नये।। १।।) (पैठनकर p.348) संत तुकाराम महाराज को यह कहते हुये बताया कि ज्ञानियों का राजा ब्राह्मण संत ज्ञानेश्वर है तथा उसके जैसी महानता मुझमें कैसी आयेगी। जैसे पैर की चप्पल पैर में अच्छी उसी तरह मै ऐसे ही ठीक हुँ। (ज्ञानियांचा राजा गुरु महाराज। म्हणती ज्ञानदेव ऐसे तुम्हां।। १।। मज पामरा हे काय थोरपण। पायीची वाहान पायी बरी।। २।। (पैठनकर, p.340&341) ब्राह्मणों ने रविदास के साहित्य को ब्राह्मणमय करने की भरकस कोशिश की जिसमें वे सफल भी रहे। ''प्रभु जी तू चंन्दन हम पानी'' यह रविदास जी के नाम पर ब्राह्मणों व्दारा बनाया गया कृत्रिम पद है। चारों वेद करौ खण्डौती, गुरु रविदास करौ दण्डौती। चारों वेदों का खण्डन बुध्द ने किया था जो घोर नास्तिक थे, इसलिए चारों वेदों का खण्डन करने वाले रविदास

आस्तिक कैसे हो सकते है। संत रविदास को ब्राह्मणों के चरित्र की गहराई से समझ थी। उन्होने कहा '' सन्तों रुप को जानो, ब्राह्मण के गुण तीन। मान हरे, धन-सम्पत लूटे, और मति लियो छीन।(अम्बेदकर मिशन पत्रिका, सितंबर- अक्तुबर 2002)

बहुजन संतों की शिक्षा को ब्राह्मणवाद के अनुकुल पेश करने हेतु ब्राह्मणवादियों ने बहुजन संतो के साथ अंधविश्वास और चमत्कार जोड दिये। चमत्कार लोगों के मन को भाते है इसलिए तेजी से फैलते है क्योंकि हर कोई उसे नमक मिर्च लगाकर सुनता-सुनाता है। संत नामदेव के बारे में ऐसे ही चमत्कार प्रचारित किये गये। जैसे ''बालक नामदेव व्दारा पेश किया गया भोग (नैवद्य) पांडुरंग (ईश्वर) ने खाया।'' नामदेव दर्जी के बेटे थे। मराठी में दर्जी को शिंपी कहा जाता है। ब्राह्मणों व्दारा ''शिंपी का लडका'' इस को अपमान दर्शक रुप से ''शींपल्या चा मूलगा'' प्रचारित किया। ''शिंपला'' का अर्थ समुद्र या नदी में पाये जाने वाली सीप भी होती है। ब्राह्मणों ने प्रचारित किया की नामदेव के पिता को रास्ते में एक सीप मिली उस सीप में से नामदेव निकले।

बुध्द, महावीर, चक्रधर स्वामी, संत नामदेव, कबीर, रविदास संत तुकाराम गाडगेबाबा इ॰ सभी के साथ चमत्कार गढकर जोड दिये। झुठे दोहे गढे, झुठी कहानियाँ प्रचारित करके मूल शिक्षा को मनुवादी जहर से विकृत और कलुषित किया क्योंकि इतिहास लिखने का कार्य हमेशा से ब्राह्मणवादियों के ही हाथों में रहा है।

ज्योतिराव फुले ने अपने एक स्नेही के पत्र का जवाब देते हुये 2 जुन 1886 को अपने पत्र मे लिखा है कि : '' फितुर गोपिनाथ पंत की सहायता से शिवाजी ने धोखे से अफजलखान का वध किया, तानाजी मालुसरे ने धोरपड की सहायता से चढकर किले पर कब्जा किया, तथा शिवाजी ने पूना में डाका डालकर मुसलमान लोगों का कत्ल किया इस तरह की कोई घटना का बयान करने वाले पोवाडे आज तक मेरे (ज्योतिराव फुले के) देखने में नही आये है। आजतक युरोपियन लोगो ने जो कुछ इतिहास तैयार किया है उन्होने शुद्र तथा अतिशुद्रों की वास्तविक स्थिति से मेल न बिठाकर x x x ढंककर आर्य भट ब्राह्मणों के ग्रंथों को तथा ब्राह्मण कर्मचारियों पर भरोसा करके इतिहास बनाया है। अभी हाल ही में भटों के पढे-लिखे बच्चे धीरे से ऐसे झुठे पोवाडे बनाकर उसे मान्यता दिलाने के प्रयास में है। ऐसे कई असत्य पोवाडे मेरे देखने में आये है। ऐसे पोवाडों में शुद्रों की कमाई पर मानिक मोतीयों का चारा चरने वाले भागवती गो–ब्राह्मणों सहीत दादाजी कोंडदेव जैसों (ब्राह्मणों) की व्यर्थ बढाई की जाने की वजह से ऐसे नकली पवाडों का मैने संग्रह नही किया है।'' (p.406, महात्मा फुले समग्र वांग्मय)

ब्राह्मणों ने जानबूझकर यह लिखा है कि छत्रपति शिवाजी ने रायेश्वर के मंदिर जाकर स्वराज्य कायम करने की प्रतिज्ञा ली। देवी भवानी ने प्रसन्न होकर उन्हे अपनी तलवार दी। वास्तविकता यह है कि पुतुर्गाल में बनी इस तलवार को छत्रपति शिवाजी ने गोवलेकर सावंत से 300 होन देकर यानि 1050 रुपयों में खरीदी थी। ब्राह्मण चाहते थे कि माँ जीजाउ का शिवाजी को मार्गदर्शन तथा उत्साहवर्धन, शिवाजी में पायी जाने वाली जीत के लिये जरुरी वैज्ञानिक दृष्टी और छापामार युध्द का कौशल्य, दलित शोषित जनता की शिवाजी को मिली भारी हिमायत इन सबको भवानी के नाम पर नकारकर शिवाजी का महत्व कम किया जाये और शिवाजी को ब्राह्मणधर्म का यानि ब्राह्मणों का सेवक बताया जाये। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 25 जून 2006)

छत्रपति शिवाजी को 'कुलवाडी भूषण' यानि पिछडी जाति के कुलों के गौरव के

रुप में जाना जाता था। पितामह ज्योतिराव फुले ने भी उनका कुलवाडी भूषण के विशेषण से ही उल्लेख किया है। छत्रपति पिछडी जाति के किसान के स्तर से अपने शौर्य के बल पर छत्रपति के स्तर पर पहुंचे थे। ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ पूर्ण करने के लिये उन्हे 'गो-ब्राह्मण प्रतिपालक' प्रचारित किया ताकि छत्रपति शिवाजी का आदर करने वाले ब्राह्मणों की सेवा में जूट जाये। श्री शेजवालकर ने छत्रपति शिवाजी के मूल खतों का अवलोकन करने के बाद ब्राह्मणों के इस झूठे प्रचार का पर्दाफाश कर दिया। छत्रपति शिवाजी ने समतामूलक समाज का निर्माण किया इसके बावजूद ब्राह्मणों ने यह प्रचारित किया कि छत्रपति शिवाजी हिन्दू पातशाही के संस्थापक थे। छत्रपति शिवाजी की सेना में बडी तादाद में मुस्लिम सिपाही तथा सरदार थे। शिवाजी कुराण का सम्मान करते थे तथा अपने सैनिकों को नमाज पढने उन्होने मस्जिद का भी निर्माण किया था।

छत्रपति शिवाजी ने शुद्र समझी जाने वाली सभी जातियों को लेकर अपनी सेना बनाई। शिवाजी महाराज संत तुकाराम महाराज के बताए इन्सानियत के आदर्शो को समर्पित थे इसलिए शिवाजी ने कभी मंदिर नही बनाए बल्कि किले बनाए। शिवाजी ने गायों को नही पाला बल्कि घोडों की संख्या बढाई। इस्लाम मानवता का बर्ताव स्थापित करता है इसलिए छत्रपति शिवाजी महाराज इस्लाम के प्रशंसक थे। उन्होने रायगढ़ पर अपने मुस्लिम सैनिकों के लिए मस्जिद बनाई। समाचार के अनुसार यह अभीलेख में स्थापित है की शिवाजी ने मस्जिदों और मजारों के रखरखाव के लिए शाही खजाने से नियमित अनुदान की व्यवस्था कर रखी थी। (लोकमत समाचार, 28 अप्रैल 2002) संत तुकाराम के अलावा शिवाजी के गुरु की सूचि में केळशी के याकुत बाबा नामक मुस्लिम संत का भी नाम लिया जाता है। अत्याचारी हिन्दु-मुस्लिम धनवानों को लूटकर उस पैसे को बहुजनों के हित के लिए इस्तेमाल करते थे। लूट के सामान में कभी कुरान मिल जाने पर उसे अपने मुसलमान सैनिकों को सौंप देते थे। शिवाजी की सख्त हिदायत थी कि किसी फकीर या स्त्री को कभी सताया न जाए। उनकी इस आज्ञा का सरासर उल्लंघन करके तथा स्वयँ के लिए तरक्की इ॰ प्राप्त करने के तथा 27 वर्षीय युवक शिवाजी को सुरा-सुंदरी के मोह में उलझाकर नैतिक रुप से भ्रष्ट करने के दुरगामी कुट-उद्देष्य से 24 अक्तुबर 1657 को आबाजी सोनदेव नामक ब्राह्मण ने मूल्लाना अहमद की अत्यंत रुपवति बहु को बन्दी बनाकर उसे शिवाजी को नजराने के रुप में पेश किया। दुश्मन को बदनाम करने तथा भ्रष्ट बनाने की यह पूरानी मनुवादी चाल है। मंबाजी नामक ब्राह्मण ने भी एक रुपवती वेश्या को बहुजन संत तुकाराम के घर भेजा था और संत तुकाराम ने उसे सन्मान से वापस भेज दिया था। शिवाजी ने सोनदेव ब्राह्मण को फटकार लगाकर अपने गुरु संत तुकाराम के आदर्शो के अनुसार ''इतनी अधिक सुंदर अगर मेरी माँ होती तो मै कितना खुबसुरत पैदा होता'' ऐसा घोषित करके मूल्लाना अहमद की बहु को सम्मान सहित विदा किया। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 23 जूलाई 2006)

मान॰ श्रीमंत कोकाटे के मुताबिक 400 ब्राह्मणों ने दिलेरखान से 2 कोटी रुपये लेकर शिवाजी के खिलाफ दिलेरखान की जीत हो इसके लिये कोटीचंडी यज्ञ किया। इससे साफ जाहिर है कि शिवाजी ने ब्राह्मणों के कर्मकांडों कतई मान्य नही किया था इसलिये वे उनके दुश्मन हो गये थे। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 28 मई 2006) वास्तव में संत तुकाराम से प्रेरित होकर मूलनिवासी धर्म का पालन करने की वजह से छत्रपति शिवाजी से ब्राह्मण बेहद नफरत करते थे। अफजलखान के ब्राह्मण वकील कृष्ण ाजी भाष्कर कुलकर्णी ने अफजलखान के मरते ही छत्रपति शिवाजी के माथे पर अपनी तलवार से इतना करारा वार किया था कि तलवार फौलादी शिरस्त्राण को चीरती हुई

शिवाजी के माथे पर एक गहरा घाव हमेशा के लिये छोड गई।(देशमुख, मा. म.; शिवशा. ही, पेज 63) ब्राह्मणों को शुद्र राजा मंजूर नही था इसलिए छ. शिवाजी को ब्राह्मणों ने शुद्र कहकर अपमानित किया, उनके खिलाफ तरह-तरह की साजिशें की। उनके राजा होने की बात का मखौल उडाया गया। तंग आकर शिवाजी ने अपना राजतिलक करना चाहा। लेकिन उनके राजतिलक के लिए सारे भारत से एक भी ब्राह्मण तैयार नही हुआ। अंततः छत्रपति शिवाजी को काशी से गागाभट नामक ब्राह्मण को नौ करोड रुपये देकर अपना राज-तिलक करवाना पडा। गागाभट ने छ. शिवाजी के माथे पर अपने हाँथ के अंगुठे से नही बल्कि अपने पैर के अंगुठे से तिलक लगाया। शुद्र का राजतिलक करने के कारण ब्राह्मणों ने गागाभट का बहिष्कार किया। गागाभट जब वापस बनारस लौटा तो ब्राह्मणों ने उसे जाति से बाहर कर दिया। अंततः ब्राह्मण समाज व्दारा उसकी हत्या कराई गई क्योंकि गागाभट ने एक शुद्र का राजतिलक करके ब्राह्मण-धर्म की अवहेलना की थी। गागाभट्ट ने बनारस वापस लौटने पर ''गागभट्टी '' नामक एक किताब लिखी थी जिसमें उसने लिखा था कि ''एक शुद्र कुर्मी (कुणबी) राजा का तिलक करने के लिए मै पूरे ब्राह्मण समाज से माफी चाहता हुँ। लेकिन मुझे पैसे की सख्त जरुरत थी। मैने मोटी रकम लेकर शुद्र शिवाजी का राजतिलक किया है। मैने फिर भी ब्राह्मण-धर्म की अवहेलना नही की है क्योंकि मैने एक शुद्र राजा का राजतिलक अपने पैर के अंगुठे से किया।'' (बहुजन संगठक, 19 जुलाई 1999)

शिवाजी के खून की वजह से रायगढ में पूरा तनाव तथा डर का माहौल था। खून की हकीकत बाहर न जाये इसके लिये ब्राह्मण पूरी सावधानी बरत रहे थे क्योंकि जनता को शिवाजी महाराज के खून की हकीकत पता चली होती तो एक भी ब्राह्मण जिंदा नही बचता। ब्राह्मणों ने जनता को बताया कि शिवाजी महाराज की मौत ''गुडघी'' नामक बीमारी से हुई है। आज तक सारी दुनियाँ में किसी की मौत गुडघी नामक बीमारी से नही हुई। कुछ ब्राह्मण प्रचार करते है कि शिवाजी महाराज की मौत एन्थ्रेक्स से हुई। शिवाजी का खून सोयराबाई ने किया ऐसी अफवाएं ब्राह्मणों ने फैलाई। (Indian Express Nov. 2001) शिवाजी का अंत्यसंस्कार जल्दी निपटाया गया। उनके अंत्यविधि के वक्त एक भी रानी सति नही गई इससे स्पष्ट है कि शिवाजी महाराज ने सति प्रथा पर पाबंदी लगाई थी। ब्राह्मणों ने शिवाजी महाराज ने किये समाजिक सुधार को कलंक लगाने के लिये पुतलाबाई को धर्म के नाम पर शिवाजी महाराज के मरने के 85 दिनों बाद सति होने पर मजबूर किया। पुतलाबाई के सिवा कोई भी रानी सति नही हुई। अपने पिता शहाजी की मौत के बाद शिवाजी ने अपनी माँ जीजाबाई को भी सति नही होने दिया।

छत्रपति संभाजी ने अपनी उम्र के 14 वे साल में ''बुधभूषण'' ग्रंथ लिखकर ब्राह्मणों के अहम को कुचल डाला था। मनुवादी ब्राह्मण-संत ज्ञानेश्वर ने अपनी उम्र के सोलहवे साल में ज्ञानेश्वरी ग्रंथ लिखा था।(सम्राट, 8, 10 अप्रैल 2005) गेल आम्वेट के अनुसार ब्राह्मणों ने संभाजी की बजाय उसके छोटे भाई को गद्दी पर बिठाने की कोशिशें की। ब्राह्मणों ने संभाजी को व्याभीचारी, शराबी कहकर बदनाम किया तथा ब्राह्मणों ने ही संभ. ाजी को मुगलों के हाँथों गिरफ्तार होने दिया। (गेल ऑम्वेट, p.14) ब्राह्मणों ने राजमाता को राजद्दी पर बिठाकर कम उम्र के राजाराम को भी रास्ते से हटाने की योजना बनाई। जब ब्राह्मण मोरोपंत तथा अण्णाजी दत्तो संभाजी को गिरफ्तार करने पन्हालगढ़ निकल पडे तो रास्ते में हंबिरराव ने उन्हे गिरफ्तार किया और संभाजीराव का रायगढ पर रा. ज्याभिषेक किया। संभाजी ने राजगद्दी संभालने के बाद चार बार ब्राह्मणों ने उनकी हत्या की कोशिशें की। तीन बार संभाजी ने उन्हे माफ किया। चौथी बार सारे ब्राह्मण मंत्रियों

को मौत के घाट उतार दिया। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006) संभाजी ने षडयंत्रकारी ब्राह्मणों को हाथी के पैर के नीचे कुचलवाया।(सम्राट, 8, 10 अप्रैल 2005)

संभाजी को मुगलों के हवाले करने वाला व्यक्ति कवि कुलेश ब्राह्मण है। उसने संभाजी से मित्रता कायम की और मुख्य प्रधान तक बन गया। औरंगजेब ने कुलेश को संपत्ति देते ही उसने संभाजी से गद्दारी की। उसने अपने बेटे के जरिये औरंगजेब को रायगढ की प्रतिकृति बनाकर दी। संभाजी को गिरफ्तार करने में ओरंगजेब को मदद करने के लिये रायगढ को जाते वक्त कवि कुलेश ने संभाजी को संगमेश्वर में रुकने पर राजी किया। खुद अनुष्ठान करने बैठ गया। खतरे की संभावना से संभाजी ने उसे चलने के लिये कहा। उसने अनुष्ठान को जानबूझकर लंबा किया जिससे औरंगजेब को संभाजी को गिरफ्तार करने में आसानी हुई। संभाजी ओरंगजेब की सेना के चंगुल से भागने में सफल हुए थे लेकिन कुलेश ने चिल्लाकर कहा कि ''महाराज मै गीर गया'' इसलिये उसे बचाने संभाजी वापस आये और गिरफ्तार किये गए। कुलेश की गद्दारी छूपाने के लिये ब्राह्मणों ने संभाजी के साले गणोजी शिर्के ओर नागोजी शिर्के को बदनाम किया। संभाजी को पकडने के बाद उसकी धींड (मखौल उडाने वाली यात्रा) निकाली गई।

ब्राह्मणों ने संभाजी को गिरफ्तार करवाया। सजा देने के लिये उन्हे ब्राह्मणों के हवाले किया गया। ब्राह्मणों ने संभाजी की आंखे निकाली। जीभ छाट दी। चमडी उध ेडी। संभाजी के सिर को काटकर कटे सिर में बांस भोंककर उस बांस पर मूलनिवासी औरतों की इज्जत ''साडी-ब्लाउज'' (लुगडा-चोळी) टांगकर और उसे जूते-चप्पलों की माला पहनाकर संभाजी के सिर का जलूस निकाला। ब्राह्मणों ने संभाजी के कत्ल के दिन को ''गुढी पाडवा'' के रुप में मनाना शुरु किया। उस दिन हमारे मूलनिवासी पूर्वजों ने दुख से नीम के कडवे पत्ते चबाए। आज भी हम गुढीपाडवा के दिन नीम के पत्ते चबाते है। संभाजी ब्रिगेड और कई संगठनों के आव्हान के मुताबिक गुढी पाडवा के दिन शिरोळ तालूका के 5000 परिवारों ने अपने घर पर गुढ़िया नही लगायी। (सम्राट, 8, 10 अप्रैल 2005)

शिवाजी के सारे राज्य का कारोबार शिवशक के मुताबिक चलता था लेकिन छल से शिवाजी के सामाज्य पर कब्जा करते ही पेशवों ने शिवाजी के शिवशक बंद कर मुगलों के फसलीशक को लागू किया। शिवाजी तथा संभाजी ने किये जनवादी कामों के नष्ट करने की मुहिम शुरु की। पेशवों ने जातिभेद की चरमसीमा लांध दी।

ब्राह्मणों ने ब्राह्मण दादाजी कोंडदेव को छत्रपति शिवाजी महाराज का पिता प्रचारित कर शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई को चरीत्रहीन स्त्री साबित करने की कोशिश की है। ब्राह्मणों के इसी दुष्प्रचार को पूना के भंडारकर इंस्टीटयुट के ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में जेम्स लेन नामक लेखक ने अपनी किताब में छापा है। यह संस्था ब्राह्मण आतंकवादियों की समर्थक मानी जाती है क्योंकि इस संस्था के तिन कथित संशोधक मालेगांव आतंकवादी हमले में तत्कालीन एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे की छानबीन के तहत थे। (http://www.countercurrents.org/Pune Terror 01_08_12 And The Ongoing Maratha-Bahujan vs Chitpawan Brahmin Caste War Across Maharashtra.htm) राज्य की गुप्तचर शाखा ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि जेम्स लेन की किताब में शिवाजी और उनकी माँ जिजाबाई का उपहासात्मक वर्णन किया जाना ब्राह्मणों की साजिश है, (जिन्होने शिवाजी के बारें में काल्पनिक अफवाएं जेम्स लेन को बताई)। (नवभारत, 12 अप्रैल 2004) महाराष्ट्र सरकार के साहित्य संस्कृति मंडल ने छापी हुई किताब ''मराठयांची प्रशासन व्यवस्था'' में छत्रपति शिवाजी और उनकी माँ पर इतनी अभद्र टिप्पणियाँ है जिन्हे पढकर नही

सुनाया जा सकता। डॉ. सुरेन्द्रनाथ सेन लिखित इस किताब का अनुवाद विजया कुलकर्णी (ब्राह्मण) ने किया है। (नवभारत, 16 अप्रैल 2004) इस किताब के प्रकाशन को मंजूरी शिवसेना-भाजपा सरकार ने सन् 1990 में दी और काँग्रसी गठबंधन सरकार ने सन् 2003 में इस किताब को छपवाया था। (भाष्कर, 16 अप्रैल 2004)

अंग्रेजी शासन में ब्राम्हण ही सारी नौकरशाही, और उच्च पदों पर काबिज थे जबकि पितामह फुले ने अंग्रेजों की नौकरी भी नही की। ब्राह्मणों की राष्ट्रीय सभा यानि काँग्रेस सालों तक इग्लंड की महारानी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद ही अधिवेशन की कार्रवाई शुरु करती थी। (नरके, p. 86) पितामह फुले अंग्रेज सरकार की ब्राह्मणवादी नीतियों का कठोर विरोध करने में जरा भी नही हिचके। पितामह फुले ने पुणे नगरपालिका में अंग्रेज अफसरों का सत्कार करने के ब्राह्मणों के प्रस्ताव का विरोध किया था। इसके बावजूद ब्राह्मणवादी लेखकों ने पितामह फुले को अंग्रेजों का हस्तक और छत्रपती शिवाजी का व्देषकर्ता तक प्रचारित किया है। जबकि ज्योतिराव फुले ने ध्वस्त पडी शिवाजी की कब्र बडी मुश्किल से धुंड निकाली। उसे साफ किया, उसपर फुल चढाये। ग्रामजोशी ब्राह्मण ने आगबबूला होकर लातों से फुल बिखरा दिये और कहा कि अरे कुणबट जिस शिवाजी की तु पूजा कर रहा है वह क्या राजा था क्या ? उसने शिवाजी को अपमानित करना शुरु किया। शिवाजी के अपमान से दुखी ज्योतिराव ने शिवाजी की प्रसंशा में पोवाडा लिखा और शिवजयंती मनाना शुरु किया।(संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 4 जून 2006) पितामह फुले और उनके साथियों ने ही शिवाजी का स्मारक बनाने के लिए सभाएं लेकर पैसा जुटाने का काम किया है।

अंग्रेजों ने अपने हस्तकों को ''सर'', ''दिवान बहादुर'' ''राव बहादुर'' इ॰ उपाधियों से सन्मानित किया। मोदी, पुरुषोत्तम दास, सी.पी. रामास्वामी अय्यर, विश्वसरैय्या, डॉ. एस. राधाकृष्णन इ॰ को अंग्रेजों ने ''सर'' उपाधी दी। गांधी को अंग्रेजों ने ''कैसर ए हिन्द'' उपाधी से नवाजा था। इन ब्राम्हणवादियों को अंग्रेजों के हस्तक करार देने के बजाय काँग्रेस सरकार ने उन्हे उच्च पद और सन्मान प्रदान किये, राधाकृष्णन को भारत का राष्ट्रपति बनाया गया। (V.T. Rajshekhar, p.38, Mahatma Gandhi & Babasaheb Ambedkar,1989, DSA) डॉ. अम्बेदकर अंग्रेजों के दलित विरोधी कदमों का पूरी ताकत से विरोध करते रहे है, उन्हे अंग्रेजों ने कोई उपाधी नही दी। इसके बावजूद नकली कम्युनिस्टों सहित तमाम ब्राह्मणवादी डॉ. अम्बेदकर, शाहु महाराज, पितामह फुले इ. को झूठमूठ अंग्रेजों का एजन्ट बताते है। वे अपने अंग्रेज-परस्त जात-भाईयों के बारे में एक शब्द तक नही कहते। राष्ट्रीय स्तर के कम्युनिस्ट नेताओं के अंग्रेजों के तनख्वाहशुदा एजन्टों के रुप मे काम करने की बातें भी स्पष्ट हो चुकी है। (देखिये स्वपन बिस्वास)

मुंबई के ब्राह्मणवादी साप्ताहिक सोबत में दि. 4 तथा 11 दिसंबर 1988 को बहुजन घृणा की मानसिकता का प्रदर्शन करते हुये संघ परिवार के एक ब्राह्मण लेखक ने पितामह फुले को दुर्गधी, निर्बुध्द, स्वधर्म-द्रोही, स्वजनद्रोही, देशद्रोही, इसाईयों तथा अंग्रेजों का हस्तक, अधम स्तर पर जाकर मुल्यमापन करने वाला, विव्दत्ता का दुश्मन, नरक उगलनेवाला, शिश्नोदर के पार जिसे बिल्कुल रुची नही ऐसा नासमझ, असंस्कृत, ब्राह्मण-व्देषी; समाजकारण, राजनीति में परस्पर व्देष की मलगंगा का उगमस्थल, साम्राज्यवादी अंग्रेजों व्दारा हवा भरके सडायी हुयी गंदगी की गठरी इ॰ कहकर अपमानित किया है। एक कुत्ते के भौंकते ही जिस तरह सारे कुत्ते एक सूर मे भौंकने लगते है, उसी तरह संघी ब्राह्मणवादियों ने सुर मे सुर मिलाकर अपने संघी ब्राह्मण भाई का समर्थन करके उसे फुले, शाहु के बुर्के को फाडनेवाला बहादुर इ॰ कहकर उसका हौसला बढाया। (नरके, p.4-11)

मुख्यतः ब्राह्मण ही अपने मतलब के लिये अधिक संख्या में ईसाई बने है। जहाँ टिळक, गद्रे, बापट, काणे, (रमा पंडिता) इ॰ जैसे ब्राह्मण लोग ईसाई धर्म कबूल कर चुके थे वहाँ पितामह फुले या उनके किसी भी साथी ने इसाई धर्म कबूल नही किया। राममनोहर रॉय इ॰ अनेक ब्राह्मण तथाकथित समाजसुधारकों ने इसाई धर्म की समानता की शिक्षा की प्रसंशा की है। ब्राह्मणवादियों ने अपने ब्राह्मणों को नजरंदाज कर पितामह फुले को ईसाई मशिनरियों का हस्तक करार दिया। आगरकर जैसा ब्राह्मण अपने समग्र वांग्मय में पितामह फुले का सीर्फ एक बार ''रेव्हरंड ज्योतिबा'' कहकर उल्लेख करता है। (नरके, p.27,28, 29) जबकि ज्योतिराव कभी ईसाई नही बने। हिन्दु महासभा के एक अन्य ब्राह्मण लेखक ने झूठमूठ लिखा है कि एक समय ज्योतिराव फुले इसाई होना चाहते थे लेकिन ईसाई मशिनरियों को फुले को ईसाई बनाना मंजूर ही नही था। (नरके, पेज 65)

पितामह फुले ने ब्राह्मण पेशवा नाना फडनिस व्दारा अंग्रेजों के गैरसैनिक मासूम बच्चों तथा नागरी स्त्री-पुरुषों का कत्लेआम मचाने का कठोर विरोध किया है। इसलिये ब्राह्मण लेखकों ने नाना पेशवा की काल्पनिक पुत्री मैना पैदा की। नाना पेशवा के अधिकृत ब्राह्मण चरित्रकार आनंदस्वरुप मिश्रा बताता है की नाना पेशवा को मैना नाम की कोई पुत्री ही नही थी। इस ब्राह्मण लेखक ने लिखा की अंग्रेजों ने इस मैना को जिन्दा जलाया तब ज्योतिराव फुले ने इसके विरोध में कुछ भी क्यों नही कहा ? (नरके p.64)

महाराष्ट्र का मराठा समुदाय पिछले दो दशकों से अपनी मूलनिवासी सांस्कृतिक पहचान और विरासत को कामयाबी से खोज रहा है। उन्होने छत्रपति शिवाजी को आदर्श मानते हुए मूलनिवासी शिव-धर्म कायम किया है। ब्राह्मणों ने वाघ्या नामक शिवाजी के कुत्ते की कहानी गढ़ ली। वाघ्या नामक कुत्ते का कोई अस्तित्व नही था ऐसा श्री अनंत दारवटकर ने अपनी शोध किताब 'अव्दैति छत्रपति श्री संभाजी महाराज' में साबित किया है। सईबाई छत्रपति संभाजी महाराज की मां है। छत्रपति संभाजी महाराज ब्राह्मणों के आँखों की किरकीरी रहे है। इस स्थल में छत्रपति शिवाजी की पहली पत्नि सईबाई को दफनाया गया था जिसे ब्राह्मणों ने वाघ्या की समाधी प्रचारित किया। संभाजी ब्रिगेड ने काल्पनिक वाघ्या नामक कुत्ते की समाधी को ध्वस्त कर दिया। इसे दोबारा सईबाई के नाम से प्रतिष्ठित किया। पिछले कुछ सालों से मान. सुधाकर लाड तथा विलास खरात इन्होने इस वाघ्या की समाधी के खिलाफ अभियान चलाया था और सरकार से मांग की थी कि मराठा समुदाय के इस उपहास को बंद करें। लेकिन जब सरकार ने कोई कार्रवाई नही की तब संभाजी ब्रिगेड ने झूठी वाघ्या की समाधी को ध्वस्त कर दिया।

विश्व हिन्दू परिषद के जनरल सेक्रेटरी सिंघल ने नया सिधान्त गढा है कि दलितों का निर्माण मुस्लिम काल में हुआ है। जिन जाति-समूहों ने मुस्लिम आक्रमणकारियों का कडा मुकाबला किया और मुस्लिम बनने से इनकार किया उन्हे अपमान और जुल्म सहने पडे। इन समुदायों को समाज से अलग कर दिया गया। इसी वजह से वे गरीब और दलित जातियों में तब्दिल हुए। इस्लाम ने भारत में अछूतों का निर्माण किया (The Sunday Observer, July 30-August 5, 1995 [Naim:1998]) मान. फैजल कुट्टी कॅनडा के अनुसार ब्राह्मणवादियों ने विदेशों मे भारत के इतिहास को विकृत रुप से प्रचारित करना शुरु किया है। उनके अनुसार कुतुब मिनार का नाम विष्णु स्तंभ होकर उसे समुद्रगुप्त नामक हिन्दू ने बनाया था। ताजमहल पहले हिन्दु मंदिर था तथा उसका नाम तेजो महालया (शिव का महाल) था। दुनिया का सबसे बडा कत्लेआम मुस्लिमों व्दारा भारत के हिन्दुओं का किया गया कत्लेआम है इ॰ झुठा प्रचार जम कर किया जा रहा है। हिन्दूत्व के प्रचारकों ने पश्चिमी देशों के {इल्युमिनॅटी के} स्कालर्स से गठबंधन कर

मुस्लिम उपलब्धियाँ छुपाने तथा मुस्लिमों को क्रूर प्रचारित कर ब्राम्हणवाद को श्रेष्ठ जताने का पुरजोर अभीयान छेडा हुआ है। इस अभीयान में पश्चिमी मीडिया उनका बखुबी साथ निभा रहा है। {सवर्ण} मुस्लिम स्कालर्स-प्रचारक चुप्पी साधे हुये है। उनके लेख का शिर्षक "Muslim leaders fail to challenge Hindu Nazi bid to rewrite Indian history" है (p. 20-21, दलित व्हाईस, 1-15 अक्तुबर 2000) ब्राह्मणवादी झूठे सबूत गढने निचले स्तर पर जा सकते है।

स्वपन के. बिस्वास के अनुसार केदारनाथ पांडे यानी ब्राह्मण राहुल सांस्कृत्यायन ने अपने लेख ''भारत में बुध्दीजम का उत्थान और पतन'' में बुध्द धर्म का उन्मूलन करने में ब्राह्मणों की भूमिका को नजरंदाज किया है। बौध्दों को छल-बल से प्रताडित करने वाले शंकराचार्य तक का बडी मक्कारी से बचाव किया है। (स्वपन बिस्वास, p.356-357) राहुल सांस्कृत्यायन ने अपनी पुस्तक ''वोल्गा से गंगा'' में मूलनिवासी नागों के बारे में लिखा है वे बहुत भद्दे-कुरुप होकर गुलामों की खरिदी-बिक्री का कारोबार करते थे। (p.54) जबकि भारत के किसी भी आदिवासी समुह में गुलामी प्रथा का नामों निशान तक नही है। आर्यो में गुलामी प्रथा किस तरह से चातुवर्ण्य में समा दी गई थी इसका उल्लेख है। राहुल सांस्कृत्यायन के अनुसार उच्च वर्ग के असूरों में अधिकतर कायर थे, उनका बहुत बडा जनानखाना होता था।(ibid, p.58) उनमें योध्दाओं का प्रमाण एक फीसदी भी नही था। (p.65) मूलनिवासी नागों में गण-प्रथा और प्रजातंत्र आरंभ से ही था। यहाँ तक कि राजा बनने तक का काम बारी बारी से गणों में होता था यह स्पष्ट होने के बावजूद भी राहुल सांस्कृत्यायन आर्यो में प्रजातंत्र तथा नाग-असूरों में निरंकुश तानाशाही होने की बात लिखता है। मूलनिवासी कभी कायर नही रहे है। ब्राह्मण ही अपनी जान-माल की खातीर ताकतवर के आगे अपना 'सबकुछ' अर्पण करते रहे है। यही ब्राह्मणवाद की शिक्षा है। सांस्कृत्यायन के अनुसार असूरों का सबसे बडा दोष असूरों की राजा-प्रथा तथा उसी का अंग पुरोहित-प्रथा है। (p.70) जबकि पुरोहीत प्रथा नागों में नही, आर्य-ब्राम्हणों में है। ईरान के ब्राह्मण मॅजी पूजारियों की क्रुरता, अन्याय के कारण ईरान में मॅजी पूजारियों की हत्या की मॅगिफोनिया प्रथा का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। राहुल सांस्कृत्यायन ने सारी नैतिक बूराईयाँ नाग-असूरों में लिखी है। सांस्कृत्यायन के अनुसार असूरों से 200 सालों के संसंर्ग से आर्यो में असूरों के अनेक दोष आने शुरु हुये जिससे बुजुर्ग आर्यो को निराशा होने लगी। (p.66) राहुल सांस्कृत्यायन ने किताब के एक आर्य पात्र के कुत्ते का नाम शंभु रखा। (p.24) इससे उसकी मूलनिवासियों के प्रति नफरत उजागर होती है।

भगतसिंह को हिन्दूत्ववादी साबित करने के लिये ब्राह्मणों ने प्रचारित किया कि उन्हे वसंती रंग पसंद है,। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' नामक गीत भी उनके नाम से गढ़ा गया। जबकि भगतसिंह को बसंती नही बल्कि लाल और काला रंग पसंद था क्योंकि वे साम्यवादी विचारधारा के थे। (नवभारत, 28 मई 2002) प्रकाश कुमरे, काळे चौक काटोल नागपूर के मुताबिक ब्राह्मणवादी प्रदीप दळवी के लिखे मराठी नाटक 'मी नाथूराम बोलतोय' में झुठी, काल्पनिक बातों को प्रचारित कर गोडसे को महिमामंडित किया गया है। जैसे कि रिजर्व बँक के 375 में से पाकिस्तान को 55 करोड रुपयों की रकम पाकिस्तान के हिस्से में आई थी जिसका समझौता नेहरु और पटेल ने भारत के नुमाइन्दे के रुप में किया था। इसका गांधी से ताल्लूक नही है। नाटक का पुलिस अफसर अर्जूनदास, शेख, सावंत ये पात्र और नाथूराम गोडसे और देवदास गांधी की मूलाकात की बात भी काल्पनिक है। (साप्ताहिक बहुजन मानस, विशेषांक, 2003) ब्राह्मणवादी लेखक अरोरा, नंदा और

सचदेवा ने लिखी किताब "Punjab Politics" जो पंजाब के तीनों विश्वविद्यालयों के एम. ए. राज्यशास्त्र, भाग 2 के लिए मंजूर की गयी है के अध्याय 13, p.137-138 में मान॰ कांशीराम को पंडीत कांशीराम कहकर उन्हे ब्राह्मण जाति का बताया गया है ताकि ब्राह्मणों को शोषितों का सच्चा हमदर्द बताया जा सके। जबकि मान॰ कांशीराम दलित रामदासिया सीख समाज के है। (दलित व्हायस, 1-15 Aug. 2002) सभी लोकप्रिय टिव्ही सिरियलों में ब्राह्मणों को नायकों की जबकि बहुजनों को खलनायक की भूमिकाओं में दिखाया जाता रहा है।

मनुस्मृति के मुताबिक :--➲ ब्राह्मण के नाम का पहला भाग पवित्रता, क्षत्रीय का शक्ति, वैश्य का पैसा और शुद्र का हीनता जताने वाला होना चाहिये। ➲ ब्राह्मण के नाम का दूसरा भाग खुशी से संबंधीत, क्षत्रीय का रक्षा से संबंधीत, वैश्य का संपन्नता से संबंधित और शुद्र के नाम का दूसरा भाग सेवक होने का सुचक होना चाहिए।

राहुल सांस्कृत्यायन ने अन्य ब्राह्मणों की तरह नाना फडणीस और मंगल पांडे को क्रांतिकारी जताकर उनके व्यक्तित्व को निखारने की पुरी कोशिश कि है। जबकि मनुमीडिया और सभी ब्राह्मणवादी श्री लालुप्रसाद यादव को 'लल्लु ' और उनकी बीबी श्रीमती राबडी देवी को 'रबडी' कहकर उनका उपहास उडाते रहे है। उनका चरित्र हनन करने के लिए भद्दे चुटकुले, कहानियाँ लिखते रहे है क्योंकि लालु यादव ओबीसी समाज के है। चारा घोटाले के आरोपी जगन्नाथ मिश्र को और करोडों के घोटाले के आरोपी सतिश शर्मा को ब्राह्मणवादियों ने कभी 'जग्गु मिश्र' या 'सत्तु शर्मा' नही कहा। ब्राह्मणवादी प्रचार-माध्यम उन्हे बडे सन्मान से 'डॉ जगन्नाथ मिश्र' और 'कॅप्टन सतिश शर्मा' कहते रहे क्योंकि 'मिश्र-शर्मा' ब्राह्मण है। करोडों के घोटालों के आरोपी 'पंडित सुखराम शर्मा' के नाम के 'पंडित' और 'शर्मा' को हटाकर उसे सिर्फ 'सुखराम' कहते रहे है ताकि ऐसा लगे कि यह घोटाला किसी ब्राह्मण ने नही बल्कि 'जगजीवनराम या कांशीराम' की जाति वाले ने किया है। 'गव्वया' कहकर लालुप्रसाद यादव की भाषण-शैली का मजाक उडाने वाले मनुमीडिया ने अटल बिहारी के बाबरी घटना पर किये कथनों को और उत्तर-प्रदेश में बसपा विधायकों की खरीद-फरोख्त को जायज ठहराने वाले कथनों को कभी 'अटटू-चकल्लस' या 'अटकु चकल्लस' नही कहा। बाबरी मस्जिद ढहाये जाने पर किसी मनुमीडिया ने अटल बिहारी को 'अटटू बिहारी', 'अटकु बिहारी' या 'अटकल बिहारी' और लालकृष्ण अडवाणी को 'लल्लु-किसन अडवाणी' नही कहा। ब्राह्मण नेताओं को राष्ट्रीय नेता प्रचारित किया जाता है। कोई अखबार उसे ब्राह्मणों, सिंधी-बनियों का नेता कहकर नही पुकारता जबकि बहुजन समाज के नेता को दलितों, कुणबियों का, तेलियों का, मराठों का, ओबीसी का जाटों का, आदिवासियों का, मुस्लिमों का नेता कहा जाता है।

परजीवी जाति-समुदायों ने विरोधी सबूत तथा दस्तावेज नष्ट किये है !

चर्च ने जेजस के बारे में विरोधी जानकारियों को नष्ट करने के मकसद से मूल यहूदी धार्मिक किताबों तथा दस्तावेजों को जलाने का व्यापक पैमाने पर अभियान चलाया था। इसमें ओल्ड टेस्टामेंट की सैकडों हस्तलिखित प्रतियां भी थी। इनक्वीजिशन के दौरान तलमूद की 1200 प्रतियां जला दी गई। डेड सी स्क्रॉल्स (Dead Sea Scrolls) खोजे जाने के पहले ओल्ड टेस्टामेंट की जो सबसे पूरातन प्रति इस विध्वंस से बच गई वह Bodleian Codex (Oxford) थी जो लगभग 1100 इसवी में बनी थी। (http:// www. rense.com/Behind The Bible Fraud - What Was The Church Trying To Hide.htm)

इनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका के मुताबिक लगभग 1200 सालों का ईसाईयों का इतिहास पूरी तरह से अज्ञात है। ईसवी 1198 के पहले के चंद दस्तावेज ही चर्च व्दारा जारी किये गए है। यह कोई योगायोग नही है कि पोप इनोसंट तृतीय ने ईसवी 1198 में चर्च के पूर्व इतिहास से संबंधित तमाम दस्तावेजों को गुप्त कक्षों में बंद किया।(Catholic Encyclopedia, Farley ed., vol. xv, p. 287)

सन् 1934 में बंबई सरकार व्दारा नियुक्त संशोधनकर्ता दल के ब्राह्मण सदस्य को छानबीन करते वक्त पेशवा के दफ्तर में नाना पेशवा के रखैलों की सूची मिली। इस ब्राह्मण ने उसे तुरंत निगलकर नाना पेशवा की ऐय्याशी के महत्वपूर्ण सबूत नष्ट कर दिये। (देशमुख, मा. म.; शिवशाही) बिजेपी के शासनकाल में स्कूल की कई किताबों के अध्याय तथा उनके अंश हटा दिये गए। इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च (ICHR) ने एक किताब का प्रकाशन बहाने गढ कर रुकवा दिया क्योंकि उसमें यह जानकारी दी गई थी कि आजादी के संघर्ष के दौरान हिंदू महासभा अंग्रेजों के साथ मिल कर काम कर रही थी। आर.एस.एस. अंग्रेजों की वफादार थी। अंग्रेजों को कोसकर खुद की राष्ट्रभक्ति का ढिंढोरा पीटने वाला आर.एस.एस. भारत छोडो आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी शासन के प्रति अपनी वफादारी प्रकट कर के खुद को धन्य मान रहा था यह बात मुंबई से ब्रिटीश सरकार को भेजी गयी एक गुप्त रिपोर्ट से स्पष्ट है। रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया था कि आर.एस.एस. अंग्रेज सरकार के प्रति पुरी तरह से वफादार है। इन जानकारियों के कारण ही भारतीय इतिहास संशोधन परिषद की ओर से प्रकाशित होने वाले ''टुवार्ड फ्रीडम'' के दो खंडों की छपाई रोक दी गयी। किताबें प्रकाशन के लिये देने के बाद वापस लेने का भारतीय इतिहास संशोधन परिषद को हक नही है इस आधार पर अनुबंधित प्रकाशक (आक्सफोर्ड युनिव्हर्सीटी) ने दिल्ली उच्च न्यायालय में मामला दाखल किया। (आज का सुरेख भारत, जुन 2001, p.12)

मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक भटों के पाखंडी अपवित्र राष्ट्रवाद और धर्माभीमान बारे में बहुजनों ने सावधान रहना चाहिये। इनके ब्रह्मजाल में फँसकर अपनी गर्दन में गुलामी की बेडियाँ नही पहननी चाहिये। इतिहास को विकृत कर बहुजनों को गुलाम बनाने के लिये ब्राह्मणों के हक में झूठा इतिहास बनाने का काम भंडारकर शोध संस्था, पेशवे दफ्तर, भारत इतिहास संशोधन मंडळ, गोखले इंस्टिटयूट, विश्वकोष मंडळ, एन.सी. ई.आर.टी., बाल भारती इ॰ ब्राह्मण नियंत्रित संस्थाओं के माध्यम से बदस्तूर जारी है। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006) मान॰ श्रावण देवरे के मुताबिक बहुजनों पर गुलामी लादने के लिये आर्य–ब्राह्मणों ने बहुजनों को अपना खुद का साहित्य निर्माण नही करने दिया। उन्होने ब्राह्मण–धर्म का साहित्य बहुजनों पर थोंप दिया। बहुजनों के शिक्षा लेने तथा साहित्य लिखने को पूरा प्रतिरोध किया। {संत तुकाराम के अभंग नदी में फेंके गए और हर बहुजनवादी विचारों को विकृत किया गया।} बहुजन साहित्य निर्माण प्रक्रिया बंद नही की गई होती तो ब्राह्मणसत्ता कब की नष्ट हो चुकी होती। ज्योतिराव फुले ने शुरु की हुई सच्ची साहित्य निर्मिति को रोकने के लिये ही ब्राह्मणों ने शिवाजी को गोब्राह्मण प्रतिपालक प्रचारित किया। नतीजा यह हुआ कि ओबीसी गो–ब्राह्मणों का सेवक बन गया। धर्म के नाम पर ब्राह्मणों के हित में मुस्लिमों से लडकर अपने अधिकार खो बैठा। बहुजन लेखकों ने अगर ज्योतिराव के साहित्य को आधार बनाकर मूलनिवासियों का सच्चा इतिहास बहुजनों के सामने पेश किया होता तो आज शिवाजी के नाम पर आर्य-ब्राह्मणवादियों को मुलनिवासी मुस्लिमों और ओबिसी का आपस में खून नही बहा होता और ओबीसी अपने हकों की लडाई में कामयाब हो चुके होते। (तेली समाज क्रांति

1 सितंबर 2006)

सम्राट अशोक को कलंकित और विस्मृत करने की ब्राह्मणों की कोशिशें !

दूसरी ईसवी शताब्दी में अशोकवदना नामक आख्यायिका लिखी गई। इस किताब में कलींग और कलींग युध्द का कोई उल्लेख नही है। सम्राट अशोक मौर्य राजवंश के थे इसका भी उल्लेख नही है। सम्राट अशोक ने राजसत्ता का दूरुपयोग कर बौध्द धर्म का प्रचार-प्रसार करने की बात कही गई है। सम्राट अशोक को दूसरे धर्मो के प्रति बेहद क्रूर बताया गया है। कहा है कि पुन्ड्रावर्धन के गैरबुध्द ने बुध्द को महावीर के पैरों पर झुककर प्रणाम करती हुई तस्वीर बनाई। शिकायत आने पर सम्राट अशोक ने पुन्ड्रावर्धन के सभी 18,000 अजिवकों को मार डाला। पाटलीपुत्र के एक निंग्रंथ अनुयायी ने ऐसी ही तस्वीर बनाई तब अशोक ने उसको परिवार सहित जला दिया। सम्राट अशोक ने ऐलान किया कि निंग्रंथ के अनुयायी का सिर काटकर लाने वाले हर व्यक्ति को एक चांदी की दिनार दी जायेगी।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) उपरोक्त मनगढंत कहानियों का उल्लेख किसी भी पाली साहित्य में नही है।

संघपरिवार के ब्राह्मणवादियों का यह झूठा प्रचार है कि सम्राट अशोक ने अहिंसा का पालन कर भारत पर आक्रमण का रास्ता खोल दिया। बुध्द तथा सम्राट अशोक व्दारा प्रचारित अहिंसा मुख्यतः वेदिक ब्राह्मणों के यज्ञों में किये जाने वाले जानवरों के कत्लेआम को लेकर है। बुध्द और सम्राट अशोक को राज्य की हिफाजत में युध्द मान्य थे। बुध्द किसी भी सैनिक को भिख्खु नही बनाते थे क्योंकि देश की रक्षा के महत्व को वे समझते थे। सम्राट अशोक ने अपनी विशाल सेना कायम रखी थी।(Mahajan:1972:277) इसलिये सम्राट अशोक के मरने के बाद भी आक्रमण करने की किसी की हिम्मत नही हुई।

सम्राट अशोक के जनहितकारी कामों से उन्हे देवनामप्रिय प्रियदर्शी का विशेषण दिया गया। उन्हे एक बेहद समझदार, करुणा से भरपूर परोपकारी सम्राट के रुप में जाना गया है। उन्होने उम्र के 72 साल अपनी मृत्यु तक राज किया। उनका शुमार दुनियां के सबसे बेहतरीन शासकों में होता है। एच. जी. वेल्स (H.G. Wells) ने अपनी किताब ''A Short History of the World'' में सम्राट अशोक के बारे में लिखा है कि दुनिया के इतिहास में हजारों राजा तथा सम्राट आये जिन्होने खुद को उच्च विशेषणों से संबोधित किया। लेकिन उनकी चमक बस थोडे ही समय तक थी और वे इतिहास में फौरन गुम हो गए। लेकिन सम्राट अशोक तेजस्वी तारे की तरह आज भी प्रकाशित है।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

दफनाए गए बौध्द-सुवर्णयुग को पश्चिमी खोजकर्ताओं ने उजागर किया !

ब्राह्मण इतिहासकारों ने महान नाग-द्रविड मूलनिवासियों को विस्मृत करने की पूरजोर कोशिश की। सम्राट अशोक की जानकारी उनके शिलादेशों से, श्रीलंका तथा दिगर देशों में मौजूद विभिन्न दस्तावेजों से मिली है। इसे खोजने का काम जेम्स प्रिन्सेप (James Prinsep) ने किया। सम्राट कनिष्क को उनके सिक्कों से, चीन में दर्ज दस्तावेजों से, अश्वघोष के बुध्दचरित से, उनकी बनाई इमारतों से पहचाना गया। राजा मेनांदर तथा सम्राट हर्षवर्धन को मुख्यतः चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग के दस्तावेजों से जाना गया। ब्राह्मणों के लिये सम्राट अलेक्झांडर तक का अस्तित्व नही है।(http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) सम्राट अशोक

की यादों को ब्राह्मणों ने योजनाबध्द रुप से खत्म किया। सम्राट अशोक के स्तंभों की यादों को मिटाने के लिये अशिक्षित, अंधविश्वासी लोगों को बताया गया कि महाभारत के भीम की ये छडियां है। शाम ए सीराज के मुताबिक जब अंबाला के निकट टोपरा में स्थित अशोक स्तंभ को सुल्तान फिरोजशाह ने ईसवी 1356 को दिल्ली मंगवाया उस वक्त स्थानीय लोगों ने यह बताया था कि ये भीम की छडी है जिसके साथ वे चलते थे। दूसरे किस्से में बताया गया कि महाभारत काल में जानवर बहुत बडे आकार के होते थे। उन्हे हांकने के लिये इस स्तंभ का इस्तेमाल किया जाता था। उनकी याद में यह स्तंभ गाडे गए है। जब फिरोजशाह ने कुछ भारतीय भाषा विव्दानों को बुलाकर इस स्तंभ पर लिखी हुई इबारत पढने को कहा तो कोई भी उसे पढ नही सका। कुछ स्वार्थी ब्राह्मणों ने सुलतान फिरोजशाह से झूठमुठ कहा कि यह लिखा है कि इस स्तंभ को कोई भी नही हटा पायेगा। बाद में मुसलमान राजा सुलतान फिरोज ही इसे हटा सकेगा।(Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy Sri Lanka) सुल्तान फिरोजशान ने अशोक के दो स्तंभ दिल्ली में स्थापित किये है। एक फिरोजशाह कोटला में तथा दूसरा दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र में स्थापित है।

ब्राह्मणों ने हर मूलनिवासी नाग-द्रविड महापुरुष के इतिहास को विकृत किया है। चंद्रगुप्त मौर्य के एक हजार साल बाद ब्राह्मणों के मुद्राराक्षस नामक संस्कृत नाटक का मूल मकसद चंद्रगुप्त मौर्य की कामयाबी का सारा श्रेय चाणक्य नाम के महत्वहीन ब्राह्मण को देना है। छत्रपति शिवाजी की कामयाबी का श्रेय ब्राह्मणों ने ब्राह्मण दादा कोंडदेव, ब्राह्मण संत रामदास तथा भवानी माता की कथित तलवार को देने का काम किया है। ब्राह्मणों ने हर गैरब्राह्मण की कामयाबी के पीछे एक ब्राह्मण गढ़ कर गैरब्राह्मण महापुरुष को ब्राह्मणों का सेवक बताने की पूरजोर कोशिश की है।

सम्राट अशोक का गौरवशाली इतिहास विस्मृति की गर्त में समा जाता अगर उन्होने शिलादेशों में अपने साम्राज्य की बातें दर्ज नही की होती। सम्राट अशोक ने हरप्पा के बाद सबसे पहले शिलाओं पर प्राकृत भाषा में इबारतें लिखी थी। असंख्य बौध्द स्थलों जैसे कि तक्षिला, भारहट, सांची, सारनाथ, कौसंबी, बौध्दगया इ. को खोजने का श्रेय ब्रिटीश भारत के पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर तथा भारत के पुरातत्व विभाग के जनक सर अलेक्झांडर कनिंघम को जाता है। अलेक्झांडर कनिंघम ने अधिकांश बौध्द स्थलों का पता लगाया। ब्रिटीश पुरातत्व वैज्ञानिक मार्टीमर व्हीलर (Mortimer Wheeler) ने भी सम्राट अशोक के ऐतिहासिक स्त्रोतों, खासकर तक्षिला की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अंग्रेज पुरातत्व वैज्ञानिकों ने बौध्द स्थलों पर अशोक के शिलालेख देखे तो उन्हे पढने वाला कोई नही था। सम्राट अशोक, बौध्द गया, सारनाथ इ. के बारे में कोई भी नही जानता था। इतिहास की किसी भी किताब में सम्राट अशोक का उल्लेख नही था।(EMPEROR ASOKA : MESSENGER OF PEACE & CULTURAL REVOLUTION IN INDIA By Sona Kanti Barua) सम्राट अशोक के शिलालेखों तथा स्तंभालेखों ने कई पुरातत्व वैज्ञानिकों को अपनी ओर आकर्षित किया था क्योंकि ''देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी '' लिखी हुई एक ही भारतीय राजा की इबारतें सारे भारत में मिली थी। शिलालेख मिलने का सिलसिला थम नही रहा था। शिलालेखों की तादाद बहुत अधिक थी इसलिये इबारतों को समझने में मदद मिली। उन्हे इस बात का पता चला कि यह राजा सम्राट अशोक है जिनकी श्रीलंका, थायलंड इ. बौध्द देशों में प्रसंशा की जाती है। सन् 1915 में एक शिलालेख पर देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी के अलावा अशोक का नाम भी लिखा था। तब

यह साबित हो गया कि यह सभी इबारतें सम्राट अशोक की है।(The Edicts of King Asoka An English rendering By Ven. S. Dhammika)

सम्राट अशोक की खोज के साथ ही बुध्द की भी खोज होती गई। अल्लेन (Allen) व्दारा लिखे गए 1) अशोका, 2) बुध्द और साहीब नामक दो किताबों में सनसनी पैदा करने वाले अध्ययन, फॉरेन्सिक कौशल्य तथा स्पष्ट उच्चारण कौशल्य से ओतप्रोत मालुमात है। इन किताबों को पढकर अंदाजा होता है कि किस लगन, मेहनत और कुशलता से ब्रिटीश वैज्ञानिकों ने भारत के दफनाये गए इतिहास को दोबारा जीवित किया। उन्नीसवी शताब्दी में पुरातत्व विज्ञान का इतना विकास नही हुआ था। इन ब्रिटीश वैज्ञानिकों ने मामुली औजारों से बडी कुशलता से काम किया। उन्हे उन अधिकारियों के रोष का भी सामना हुआ जो इतिहास में रुची नही रखते थे। भवन निर्माण करने के लिये ऐतिहासिक शिलाओं तथा इंटों की लूट करने वाले लूटेरों से भी उनका सामना हुआ। इन दिक्कतों के बावजूद उन्होने काफी ऐतिहासिक सामग्री जुटाई। 18 वी तथा 19 वी शताब्दी में काम करने वाले इन पुरातत्व वैज्ञानिकों में भले ही प्रतिस्पर्धा हो लेकिन वे काम के प्रति बेहद समर्पित थे। वे जब भारत आये तो उनमें से कोई भी भारत की भाषा को नही जानता था। विलियम जोन्स (William Jones) ने बिना कोई समय गँवाये यहां की भाषा सीखनी शुरु की। उन्होने भारत भर में घूमकर यहां की जमीन, वनस्पति तथा लोगों की जानकारी ली। हर जानकारी को बडे जतन से रिकार्ड किया। दुर्गम इलाकों में जाकर वहां के शिलालेख तथा इबारतें पढ़ी। कई पुरातत्व वैज्ञानिक पहले सेना में इंजिनियर तथा ड्रफ्टस्मॅन थे इसलिये उन्होने सभी शिलालेखों को रेखांकित किया। बहुत बडी तादाद में ऐतिहासिक ईबारतों तथा दस्तावेजों की आकृतियां तैयार की। उनका संकलन इतिहास की बहुत बडी प्राथमिक धरोहर साबित हुआ। उन्होने श्रीलंका, चीन, इ. देशों से शिलालेखों तथा बौध्द धार्मिक स्थलों से संबंधित जानकारियां हासिल की। ब्राह्मण-धर्म के पुराणों इ. का अध्ययन कर मूलनिवासी राजाओं के उल्लेखों का पता लगाया। ग्रीक साहित्य को खंगालने के बाद विलियम जोन्स अलेक्झांडर के भारत पर आक्रमण को तथा उसके समय को स्थापित करने में तथा सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की सत्ता कायम होने के संबंधों को समझने में कामयाब हुए। इस तरह उन्हे मौर्य राजवंश की जानकारी हासिल हुई।

इस्ट इंडिया कंपनी ने ऋग्वेद को भाषांतरित कर प्रकाशित करने के लिये उस वक्त नगद नौ लाख रुपये दिये। यह रकम भी पर्याप्त नही थी क्योंकि सैंकडों पंडों को हर महिने मोटी रकम देकर उनसे संस्कृत समझना तथा ऋग्वेद के अर्थ को समझने का काम करना था। मॅक्स म्युलर ने अपनी प्रस्तावना में लिखा है कि वह 25 सालों तक दिन-रात सिर्फ हस्तलिखित तैयार करते रहे थे। इन ग्रंथों के प्रकाशन में और 20 साल लगे। इसी से अंग्रेजों की असामान्य लगन का पता चलता है।(The Complete Works of Swami Vivekananda; Volume 6; Conversations and Dialogues; Part IX, Pages 495-496; http://www.islamhinduism.com/Why Hindus hate Max Muller - Islam and Hinduism Initiative.htm) ब्रिटीश भारत के पुरातत्व वैज्ञानिक जेम्स प्रिन्सेप (James Princep) ने सन् 1837 में इन शिलालेखों को अंततः पढने में कामयाबी हासिल की और हजारों सालों से दफनाया गया बौध्द धम्म का इतिहास बाहर आ गया। (EMPEROR ASOKA : MESSENGER OF PEACE & CULTURAL REVOLUTION IN INDIA By Sona Kanti Barua) यह इसलिये संभव हुआ क्योंकि उन्होने ब्राह्मी लिपि की तथा सम्राट अशोक के विभिन्न जगहों से हासिल शिलालेखों तथा स्तंभालेखों की लिपि के अक्षरों में समानता खोजी। मौर्य काल के सिक्कों पर लिखी इबारतों ने भी इन्हे समझने

में मदद दी। विभिन्न स्त्रोतों से हासिल जानकारी को जार्ज टर्नर (George Turnour) व्दारा 1830 में लिखे श्रीलंका के महावंश के भाषांतर तथा अन्य बौध्द ग्रंथों की मदद से सन् 1837 में वे ब्राह्मी लिपि को समझ सके। तभी सम्राट अशोक तथा बौध्द धर्म के इतिहास को खोजने का सिलसिला शुरु हो सका।

कनिंघम ने पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर जनरल की हैसियत से प्राप्त शिलालेखों वस्तुओं, सिक्कों, स्तंभों, स्तुपों, विहारों इ. को सरकारी खर्चे से सुरक्षित किया। उन्होने सन् 1877 में लिखा हुआ 'Inscriptions of Asoka – in the Corpus Inscriptionum Indicarum' में अबतक प्राप्त कुल 14 मुख्य शिलादेश, 3 गौण शिलादेश, 2 अलग शिलादेश तथा 7 स्तंभादेशों की संपूर्ण जानकारी है जो भारतीय उपमहाव्दीप में 30 जगहों पर फैले है। ये शिलादेश तथा स्तंभादेश तिन दशकों में अलग अलग समय पर लिखे गए है। अफगानिस्तान के कंदहार में प्राप्त गौण शिलादेश सन् 1958 में खोजे गए। वे ग्रीक तथा आरमिएक (Aramaic) लिपि में लिखे गए है। जॉन मार्शल ने तक्षिला शहर के इंडो-ग्रीक स्थलों की खोज कर अशोक संबंधी जानकारी में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सन् 1920 के वर्षो में सिंध में मोहेंजोदारो में उत्थनन किया गया। पंजाब के हरप्पा तथा मोहेंजोदारों के उत्खनन में प्राप्त जानकारी से भारतीय संस्कृति के बारे में नई जानकारी हासिल हुई। जब ब्रिटीश भारत के पुरातत्व विभाग के आखरी डायरेक्टर जनरल मार्टीमर व्हीलर ने भारत छोडा तो उन्होने अपनी तमाम जानकारी को भारतीय तथा पाकिस्तानी विशेषज्ञों के हवाले किया जो अंग्रेज पुरातत्व वैज्ञानिकों की 200 साल की कडी मेहनत का फल था। अलेन अपने अंतिम अध्याय में जिक्र करते है कि उस वक्त के भारतीयों का {पढीये ब्राह्मणवादियों का} सम्राट अशोक के प्रति नजरिया दुविधापूर्ण था। हिन्दू राष्ट्रवाद {पढीये ब्राह्मण राष्ट्रवाद} ने सम्राट अशोक के बौध्द धम्म के संदेश को नकारने की कोशिश की। आज बुध्द को हिन्दू धर्म का हिस्सा बताकर उनकी मूल शिक्षा को खत्म करने की कोशिश जारी है। ऐसी ही कोशिश सिंघू घाटी सभ्यता को लेकर की जा रही है। बिना किसी सबूत के उसे वेदिक संस्कृति बताया जा रहा है।(http://www.history.ac.uk/Ashoka The Search for India's Lost Emperor _ Reviews in History.htm)

उन्नीसवी शताब्दी के आरंभिक वर्षो में ब्रिटीश भूगोलतज्ञ बुचानन हॅमिल्टन ने नालंदा को भेट दी। इसके बाद सन् 1860 के वर्षो तक नालंदा क्षेत्र उपेक्षित पडा रहा। पुरातत्व विभाग के प्रथम डायरेक्टर अलेक्झांडर कनिंघम ने नालंदा की विस्तृत खोजबीन की। उनके उत्खनन से बौध्द धम्म संस्कृति की बहुमुल्य जानकारियां हासिल हुई। उन्होने इन जानकारियों को सन् 1871 में प्रकाशित किया। सन् 1872 में ब्राडले (Bradley) नामक पुरातत्व वैंज्ञानिक ने नालंदा में कुछ उत्खनन किया और अपना एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया। सन् 1915 में ब्रिटीश भारत के आर्किआलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के तहत उत्खनन का काम शुरु हुआ। इस उत्खनन में काफी चीजें बरामद हुई। इन सभी चिजों की हिफाजत का पूरा इंतेजाम किया गया। प्राप्त वस्तूओं को नालंदा, पटना और कलकत्ता के म्युजियम में रखा गया। प्राप्त अवशेषों में नालंदा युनिवर्सिटी के अवशेष, स्तुप, विहार, मोनेस्ट्रीज, हॉस्टल, चीत्रकला कक्ष, बुध्द तथा बोधिसत्वों की आकृतियां, बुध्द की मूर्तियां, कई इबारतें, नालंदा की अधिकारिक मुद्रा, नालंदा युनिवर्सिटी के शिक्षकों की निजी मुद्राएं, अलग अलग राजाओं व्दारा जारी किये हुए सिक्के, दीवारों पर लगाये गए मुल्यवान स्मृति चिन्ह, गहने, बर्तन, तथा कई चिजें मिली। अवशेषों में मुख्य स्तुप और इर्दगीर्द छोटे स्तुप मिले।पांच स्तुपों की हालत काफी ठिक थी। वहां 11 मोनेस्ट्रीज

मिली। कई चैत्य स्थल मिले। बुध्द की मूर्तियों में नौवी शताब्दी की एक बहुत ही चीकनी बुध्द की मूर्ति भूमिस्पर्श मूद्रा में थी। और भी बहुत सारी मूर्तियां प्राप्त हुई। इन अवशेषों से बौध्द धम्म की गौरवशाली संस्कृति का पता चलता है जिसका वर्णन ह्युएन त्सांग ने किया है।

सन् 2006 में सींगापूर, चीन, भारत, जापान तथा दिगर देशों ने मिलकर नालंदा में अंतर्राष्ट्रीय विश्वविज्ञालय कायम करने के इरादों की घोषणा की। इनके प्रयत्नों से भारत की पहली मल्टीमीडिया म्युजियम जनवरी 2008 में खोली गई। नालंदा के इतिहास के संबंध में एक त्रिमीतीय (3D) एनिमेशन फिल्म बनाई गई। (NALANDA: lIustrious International Buddhist University 5th century CE to 12 century CE) सारे भारत में बौध्द धार्मिक स्थलों के हजारों अवशेष बिखरे पडे है। हजारों बौध्द शिलालेख, एक हजार के करिब पत्थरों को काट कर बनाई गई बौध्द गुफाएं तथा मोनेस्ट्रीज, हजारों ध्वस्त स्तुप, असंख्य बौध्द धर्म के प्रतिक चिन्ह, चित्र तथा शिल्प गौरवशाली बौध्द संस्कृति का दर्शन कराते है। बौध्द संस्कृति करुणा, शांति, प्रेम, सेवाभावना, लालसाओं पर नियंत्रण तथा तार्किक सोच पर आधारित है। लेकिन पुरातत्वशास्त्र चंद ब्राह्मणों के हाथों में केन्द्रित होने से अधिकांश शोधकर्ता भारत में बौध्द संस्कृति देखने में नाकाम रहे है। भारत एक बौध्द राष्ट्र था इस हकीकत को ब्राह्मणों ने छुपा लिया। ब्राह्मणों ने भारत को ब्राह्मण-राष्ट्र घोषित किया हुआ है। भारत की मूल श्रमण यानि बौध्द-जैन-अजिवक-चार्वाक, शैव संस्कृति को ब्राह्मणों ने झूठमूठ वेदिक संस्कृति का हिस्सा प्रचारित किया है।

अफ्रिका वंशियों के गौरवशाली इतिहास को नकारने की कोशिशें !

गोरों ने अफ्रिका वंशीयों के गौरवशाली इतिहास को नकारने की कोशिश की है। वंशवादी गोरों के लिये यह बात असहनीय है कि काले लोग गौरवशाली सभ्यताओं के स्वामी थे क्योंकि उस वक्त गोरे बर्बर जंगली थे। उन्होने अमेरिका, अफ्रिका, भारत इ. की मूर्तियों के अफ्रिका वंशीय गुणधर्मो को जानबूझकर नष्ट किया। त्वचा का काला रंग छुपाने उसे दोबारा रंगा गया। शिलालेखों में उकेरी गई अफ्रिका की मूल लिपियों को घीस कर मिटाया गया। अफ्रिका के गुणधर्मो को छुपाने कॅमेरे में विशेष फिल्टर्स का उपयोग कर गलत कोणों से तस्विरें ली गई। कलाकृतियों को नष्ट किया गया। नकली मूर्तियां बना कर स्थापित की ताकि गौरवशाली अफ्रिकी परंपरा को गोरों की परंपरा बताया जा सके।

युरोपियन इतिहासकार छुपा रहे है कि ग्रीक सभ्यता आरंभ से ही काले लोगों की इजिप्त-सभ्यता थी। ग्रीक लोगों की आख्यायिकाओं में इस बात को कबुल किया गया है कि इजिप्त तथा फोनेशियन्स विजेता ईसापूर्व 14 से 15 वी शताब्दियों तक सारे ग्रीस पर राज करते थे। पश्चिमी देशों की सभ्यता के अफ्रिकी मूल को कई किताबों ने उजागर किया है जिसमें 1) Cheikh Anta Diop: The African Origin of Civilization — Myth or Reality 2) Martin Bernal: Black Athena Vol. 1, 2. प्रमुख है। ग्रीक गोरों व्दारा इजिप्त के विज्ञान, दर्शन और धर्म पर किस तरह से कब्जा किया इसका वर्णन जार्ज जेम्स ने अपनी किताब Stolen Legacy में किया है।

इतिहासकार हेरोडोटस के मुताबिक (Book 1 - CLIO) ग्रीस के अफ्रिका वंशी काले शासकों ने जंगली अवस्था में रह रहे गोरों को अपने क्षेत्र में रहने दिया था। अलबिनो निन्डरथॅलवंशी होने से गोरे लोग काले लोगों की तरह शारीरिक रुप से सक्षम नही थे। इसलिये अफ्रिका वंशी काले लोगों व्दारा ग्रीस में आयोजित ऑलंपिक प्रतियोगिता में गोरे हिस्सा ही नही ले सकते थे। इसलिये स्पष्ट है कि पुरातन ऑलंपिक के संदर्भ में

बनाई हुई गोरे लोगों की प्रतिकृतियां वास्तव में आधुनिक प्रतिकृतियाँ है। (The Greek Dark Ages and Alexander the Great.htm) जो आकृतियां या शिल्प गैर अफ्रिकी लगते है वे वास्तव में अफ्रिकी वंशीयों के ही थे जिन्हे गोरों ने कांटछाट कर, नया रुप देकर गैर अफ्रिकी बनाया है ताकि अफ्रिका वंशियों की विरासत को गोरों की विरासत दर्शाया जा सके। संपूर्ण इजिप्त तथा नुबिया में मकबरों की आकृतियों को बिगाडा गया है। गिझा के मकबरों को बंद किया गया है क्योंकि वहां देखने के लिये बहुत कम बचा है। सिर्फ सक्कारा के मकबरे ही इस विध्वंस से बच सके है। वे कब तक बचे रहेंगे कहा नही जा सकता। अलेक्झांडर ने इजिप्त में ईसापूर्व 332 के अक्तूबर के आखीर में प्रवेश किया। इसवी 640 ईसवी में जब मुस्लिमों ने इजिप्त को काबिज किया उस वक्त इजिप्त पर गोरे रोमन और ग्रीक लोगों का कब्जा था। इन 972 वर्षो की अवधी में गोरों ने इजिप्त की तमाम परंपराओं को अपनाया था। उन्होने हर मामले में इजिप्त के पारोहाओं का अनुकरण किया था। इसलिये इन गोरों की भी मूर्तियां और ममियां है। इन्ही शिल्पों की बदौलत गोरे लोग इजिप्त की अफ्रिकी विरासत को हडपना चाहते है। गोरे लोगों ने मूल अफ्रिकन शिल्पों तथा कलाकृतियों की नकली प्रतिकृतियां बनाकर मूल कलाकृतियों को नष्ट करने का जैसे उद्योग खोल लिया है। (http://realhistoryww.com/Prehistoric Egypt - Ancient Man and His First Civilizations.htm) इंग्लंड की भाषा 'इंग्लिश' है। यही बात फ्रेंच, जर्मनी इ. देशों की भाषाओं पर लागू है। इजिप्त की भाषा को इजिप्शियन नाम देने की बजाय 'जर्मन A.L. von Schlozer ने सन् 1780 में सेमिटिक' भाषा कहा है। इजिप्त का प्राचिन नाम केमेट है इसे छुपाने की कोशिश की गई है। (http://realhistoryww.com/Prehistoric Egypt - Ancient Man and His First Civilizations0.htm) अफ्रिका की विरासत को नकारने गोरे लोगों ने इजिप्त को अफ्रिका से अलग कर एशिया में दिखाने तक की कोशिशें की है। लेकिन एशिया के मूलनिवासी भी काले अफ्रिका वंशी ही है। पश्चिम एशिया के मूलनिवासी अफ्रिका वंशी सुमेरियन थे। उन्होने मेसोपोटेमिया की समृध्द संस्कृति कायम की जिसमें बॅबिलानियन्स, चाल्डीयन्स, कॅननाईटस् फोनेशियन्स तथा इलेमाईटस् यानि पर्शिया के मूलनिवासियों का समावेश होता है।(Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward). (Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar)

ब्राह्मण-धर्मग्रंथों की असलियत !

[Information of above chapter is synthesized from the following sources : http://brahminterrorism.wordpress.com/How Brahmins Killed Buddhism In India _ Brahmin Terrorism.htm; http://www.civanharappana.org//Earlier tamil was the most spoken language of India _ CIVAN HARAPPANA.ORGCIVAN HARAPPANA.ORG.htm; Brahmanism Controlled Masses Through Language Dr. K. Jamanadas; www.indiaheritage.org/Indian Written Literature,History Of Indian Writing, History Of Linguistics, India.htm; http://www.abovetopsecret.com/The Emergence of Hinduism from Christianity , page 2.htm; http://hubpages.com//Sanskrit Language Facts3.htm; http://www.integralworld.net/Tantra and Veda The Untold Story, Roar Bjonnes.htm; http://en.wikipedia.org/Pali - Wikipedia, the free encyclopedia.htm;

. http://hubpages.com//Sanskrit Language Facts3.htm; http://evans-experientialism.freewebspace.com/DEAD SANSKRIT WAS ALWAYS DEAD - THE ANTI-SANSKRIT SCRIPTURE - BY SHYAM RAO - ATHENAEUM LIBRARY OF PHILOSOPHY.htm; http://hubpages.com//Sanskrit Language for Computer Programming.htm; http://www.realhistoryww.com/The Origins of The Alien Albino Mutant Caucasians _ Omasiali's Blog.htm;]

तमिल, पाली तथा प्राकृत पूर्वऐतिहासिक भारत की मूल भाषाएं है !

बर्बर असभ्य आर्यो के भारत पर आक्रमण से काफी पहले से ही भारत की मूल भाषाएं तमिल, पाली तथा प्राकृत थी। इजिप्त में तमिल में लिखी इबारतें मिली है। तमिल भाषा की खुद की लिपि है। तमिल को 6000 साल पुरानी भाषा माना जाता है। तमिल के प्राचीन रुप को बलुचीस्तान के ब्राहुई लोग आज भी इस्तेमाल करते है। ब्रहुई तथा तमिल भाषाओं में ढेर सारी भाषाशास्त्रीय समानताएं है। बलुचीस्तान में मेहरगढ की 8000 साल पूरानी शहर सभ्यता है जो 500 एकड के क्षेत्र में फैली है। मेहरगढ की आबादी 20,000 थी। उस वक्त पूरे इजिप्त की आबादी लगभग 30,000 थी। ईसापूर्व 7000 वर्ष में मेहरगढ से लेकर ईसापूर्व 4000 वर्ष हरप्पा और मोहेंजोदारों इ. सिंधु घाटी शहरी सभ्यता की निरंतरता है। तब भारत में समृध्द पिसाची भाषा भी बोली जाती थी। पिसाची भाषा भी तमिल भाषा ही थी और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक बोली जाती थी। संभव है कि पूरानी तांत्रिक सभ्यता की आरंभिक जडें मेहरगढ में थी। शिव के काल में इस सभ्यता में सुधार होते हुए वह संपूर्ण सिंधु घाटी में फैली।

प्राकृत भाषा भारत के मूलनिवासियों की भाषा थी। इसका संबंध बौध्द संस्कृति से था। प्रसिध्द अंग्रेजी इतिहासकार कनिंघम के मुताबिक ब्राह्मी लिपि जिसमें महान सम्राट अशोक ने अपने संदेश जनता तक पहुंचाए वह हरप्पा की भाषा से विकसित हुई थी। इसतरह बौध्द संस्कृति की भाषा हरप्पा के लोगों की भाषा है। ऋग्वेद में प्राकृत भाषा का उल्लेख है। खरोष्ठी तथा ब्राह्मी लिपि को समझा गया। यह पाया गया कि उनका स्त्रोत एक ही है। दोनों ही लिपियां दायें से बायी ओर लिखी जाती है। उनमें कई भाषाशास्त्रीय समानताएं है तथा संभवता इजिप्त की लिपि से संबंधित है। सम्राट अशोक ने उसको दाये से बायें लिखने की बजाय बाये से दाये लिखना शुरु किया। ब्राह्मी लिपि खरोष्ठी लिपि से ज्यादा काल तक इस्तेमाल में रही है और वहीं बाकी भारतीय भाषाओं का स्त्रोत भी है।

पूर्वऐतिहासिक भारत में संस्कृत का अस्तित्व ही नही था !

ब्राह्मणों ने झूठे दावे किये है कि ऋग्वेद की संस्कृत भारत की मूल भाषा है, क्लासिकल संस्कृत का विकास ऋग्वेदिक संस्कृत से हुआ है, संस्कृत इंडो-युरोपियन भाषा नही है, संस्कृत पूरे भारत की भाषा थी, ब्राह्मण ही पूरे भारत में रहते थे, ब्राह्मणों ने संस्कृत पश्चिमी देशों में पहुंचाई और युरोपियन भाषाओं को विकसित होने में मदद दी, भारतीय संस्कृति के सारे मुल्य संस्कृत भाषा में है। कुछ ब्राह्मणवादियों का दावा है कि सारा विश्व एक समय संस्कृत बोलता था, ईसाई लोग भी इसाई धर्म के पहले संस्कृत बोलते थे और वेदों के मुताबिक चलते थे।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

डॉ. आर. पी. हर्ष के मुताबिक पुरातत्वीय, साहित्यीक या अन्य कोई सबूत नही है जो साबित करें कि ऋग्वेद तथा संस्कृत बुध्द धर्म के पहले के है। बौध्द धम्म के पहले

भारतीय इतिहास में वेदिक काल या आर्य संस्कृति जैसी चिज का अस्तित्व नही है। हरप्पा के बाद की लिखित इबारतें सिर्फ सम्राट अशोक के शिलादेश और स्तंभादेश है। इनमें से कोई भी संस्कृत में नही है। सम्राट अशोक ने बुध्द का संदेश अपने राज्य की जनता को उनकी स्थानीय भाषाओं में पहुंचाया। इसलिये सम्राट अशोक के शिलालेख ग्रीक तथा अरामिएक (Aramaic) भाषाओं में भी लिखे है। वह उनके साम्राज्य में एक छोटा सा समुदाय था। कोई भी शिलालेख संस्कृत में नही है। इससे स्पष्ट है कि सम्राट अशोक के काल में संस्कृत में बोलने वाला कोई भी जनसमूह उनके अतिविशाल राज्य में कहीं भी नही था। राजा बिंबिसार, चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार इ. ने भी संस्कृत का इस्तेमाल नही किया है। महावीर तथा बुध्द ने अपने प्रवचन अर्धमगधी, मगधी इ. प्राकृत भाषाओं में दिये है। राबर्ट सीजर चिल्डर्स के मुताबिक पाली का क्षेत्रीय नाम मगधी था। पा-ली का मतलब रेखा, क्रम या ऋंखला होता है। बाद में यह बौध्द धम्म के साहित्य की ऋंखला बना। पाली बौध्द धर्मग्रंथों की भाषा है। ईसाई पादरी थॉमस के काल में पाली तथा प्राकृत का इस्तेमाल बौध्द तथा जैन धम्म ने किया है। तमिल दक्षिण भारत में मौजूद थी।

ईसापूर्व 500 वर्ष पहले संस्कृत का कोई अस्तित्व नही था। ब्राह्मणों ने इसे बडी मक्कारी से छुपाया हुआ है कि :- 1) 'संस्कृत' शब्द का वेदों में कोई उल्लेख नही है। वेदों के किसी भी श्लोक (verse) में इसका उल्लेख भाषा के रुप में कहीं भी नही है। 2) वेदिक भाषा को चांदसा (Chandasa) भाषा कहा जाता था। पानिनी ने भी इसका उल्लेख चांदसा के नाम से ही किया है, संस्कृत के नाम से नही। बुध्द को ब्राह्मण शिष्यों ने अनुरोध किया था कि उनकी शिक्षा को संस्कृत यानि उस वक्त की चांदसा भाषा में रुपांतरित किया जाये तो बुध्द ने इससे इन्कार किया था। उन्होने प्राकृत में ही अपनी शिक्षा को लिखवाया। 3) किसी भी तत्कालीन बौध्द साहित्य में संस्कृत शब्द का कोई उल्लेख ही नही है। इससे स्पष्ट है कि संस्कृत का बुध्द के समय अस्तित्व नही था। ब्राह्मण अपनी भाषा को चांदसा भाषा कहते थे। 4) संस्कृत शब्द भाषा के तौर पर सबसे पहले रामायण में आया है। रामायणों में इसे संस्कृत यानि परिशोधित भाषा कहा है। रामायण को ईसा के जनम के कई शताब्दियों बाद लिखा गया है। 5) भारत की सबसे पहली इबारतें प्राकृत भाषा में लिखी हुई सम्राट अशोक की 30 से ज्यादा इबारतें (c. 273 BC - 232 BC) है। इन्हे ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है। इनमें से दो इबारतें खरोष्ठी में है। अफगानिस्तान की इबारतें आर्मिएक तथा ग्रीक भाषाओं में है।(http://evans-experientialism.freewebspace.com/DEAD SANSKRIT WAS ALWAYS DEAD - THE ANTI-SANSKRIT SCRIPTURE - BY SHYAM RAO - ATHENAEUM LIBRARY OF PHILOSOPHY.htm)

चौथी शताब्दी तक संस्कृत भाषा का नाम अस्तित्व में ही नही था। पानिनी को क्लासिकल संस्कृत का व्याकरण तैयार करने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है। लेकिन जिस भाषा का वह व्याकरण लिख रहा है उसके लिये पानीनी भी संस्कृत शब्द का इस्तेमाल नही करता। दुनियां की सभी भाषाएं उन्हे बोलने वाले समुदायों के नामों से या उन क्षेत्र के नामों से जानी जाती है। मगधी भाषा मगध के रहने वालों की भाषा है। जर्मन भाषा जर्मनी के लोगों की भाषा है। संस्कृत किसी समुदाय का या क्षेत्र का नाम नही है। वेदों तथा उससे संबंधित ग्रंथों में उनकी भाषा का उल्लेख 'भाषा' इसी नाम से किया गया है। पानीनी भी उसका 'भाषा' के नाम से ही उल्लेख करता है। संस्कृत यह नाम सिर्फ ईसवी चौथी शताब्दी में पाया गया। इसलिये ब्राह्मणों के वेदों की मूल भाषा संस्कृत कतई नही थी।(http://hubpages.com/What was original language of Rig

Veda.htm) स्पष्ट है कि ऋग्वेद दुनिया का सबसे पुराना ग्रंथ नही है।

पुरानी चांदसा भाषा (संस्कृत) प्रोटो-इंडो-युरोपीयन (PIE) भाषा है !

स्कॉलर्स के मुताबिक प्रोटो-इंडो-युरोपियन भाषा ईसापूर्व लगभग 3700 वर्ष पहले आर्यो में समान रुप से बोली जाती थी। कुर्गान सिधान्त के मुताबिक जैसे जैसे आर्य पांटीक-कॅस्पीयन घास के मैदानों से विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरित हुए प्रोटो-इंडो-युरोपियन भाषा में बदलाव आये तथा कई भाषाएं निर्माण हुई। इन भाषाओं का विकास कैसे होता गया इसके संबंध में ग्रीम्स नियम (Grimm's law), वर्नर का नियम (Verner's law), ब्रुगमॅन नियम (Brugmann's law), बार्थोलोमाई का नियम (Bartholomae's law), ग्रासमॅन नियम (Grassmann's law), विंटर का नियम (Winter's law), तथा हिर्ट का नियम (Hirt's law) इ. नियम विभिन्न इंडो-युरोपियन भाषाओं के विकास को स्पष्ट करते है।(http://en.wikipedia.org/Proto-Indo-European language - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) तमाम भाषाशास्त्रीय सबूत साबित करते है कि इंडो-आर्यन भाषा दक्षिण एशिया में ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में प्रवेशित भाषा है। प्रोटो इंडो युरोपियन भाषा की मातृभूमि काले समुद्र के निकट के क्षेत्र है।(http://en.wikipedia.org/Indo-Aryan migration - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) एफ. बॉप्प (F. Bopp) के मुताबिक प्रोटो-इंडो-युरोपियन भाषा ने इंडो-इरानी भाषा को जन्म दिया। इंडो-इरानी भाषा से संस्कृत का विकास हुआ। इसलिये ब्राह्मणों का यह दावा बेतुका, झूठा और मनगढंत है कि ग्रीक, लॅटीन तथा दिगर युरोपियन भाषाएं संस्कृत से विकसित हुई। ये सभी भाषाएं मूल प्रोटो-इंडो-युरोपियन भाषा से अपनी अपनी स्थानीय हालातों के मुताबिक विकसित हुई है।(http://www.gfchindia.com/GFCH - Global Foundation for Civilizational Harmony (India) -- Home Page --.htm) इंडो-आर्यन भाषा का विकास प्रोटो-इंडो-ईरानियन अवस्था से हुआ है, जो कॅस्पियन समुद्र के उत्तर-पूर्वीय क्षेत्र की सिंतस्था तथा एंड्रोनोवा कास्य संस्कृति से विकसित हुई है।(http://en.wikipedia.org/Indo-Aryan migration - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) इंडो-इरानियन भाषा बाल्टिक तथा स्लाविक भाषाओं से समानता रखती है। इनके बीच विभिन्न शब्दों का तथा भौगालिक वनस्पति तथा प्राणियों के नामों का भी आदान-प्रदान हुआ है।(http://en.wikipedia.org/Sanskrit - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) ऋग्वेद में पर्शिया के संबंध में कई उल्लेख है। पर्शियनों को पहले पार्शवा (Parshavas) तथा बाद में पाराशिका (Parasikas) कहा गया। इससे आधुनिक पारसी यह शब्द निर्माण हुआ है। पार्थियनों को पार्थवा (Parthavas) कहा गया। पूरानी पर्शियन भाषा इंडो-युरोपियन भाषा की इंडिक शाखा मानी जाती है। इससे आरंभिक झोरास्टर धर्म की झेंड अवेस्टा भाषा का संबंध है। यह भाषा बाद में इंडिक तथा इरानी इन दो शाखाओं में विभाजित हुई। पहली संस्कृत के रुप में तथा दूसरी पर्शियन के रुप में विकसित हुई। संस्कृत तथा अवेस्टा का मूलभूत शब्दसंग्रह तथा व्याकरण सामान्य है। संस्कृत तथा अवेस्टा के कई शब्दों के मूल सामान्य है :- rita = asha (arta), atharva = atar (fire, atish), yama = yima, ashman = aseman (sky), danu = danu (river), manas = manah (mind), pitr = pitar (sather), martyanam = masyanam (of mortal men), yajna = yasna (sacrifice), arya = airya.

पर्शियन शब्द खुदा अवेस्टा के हवदा (Hvada) तथा संस्कृत के स्वधा (svadha) यानि अंर्तभूत शक्ति होता है। अवेस्टा के क्षथ्रा (Kshathra) संस्कृत के क्षत्र (Kshatra), आधुनिक पर्शियन के शहर (Shahr),तथा हिन्दी के खत्री / खेत (Khatri/Khet) है।

अवेस्टा के दुघ (dugh), तथा संस्कृत के दुग्ध (dugdha) का रुपांतर दूध में हुआ है। अवेस्टा का ब्रातार (bratar), तथा संस्कृत का भ्रात्री (bhratri) का रुपांतरण पर्शियन में बरादर तथा हिंदी में भाई हुआ है। अवेस्टा का हवार (hvar) या ख्वार (khvar) तथा संस्कृत का स्वर पर्शियन में खुर (khur) तथा हिन्दी में सुर हुआ है। संस्कृत का प्रा (pra), पुत्र (putra) अवेस्टा में क्रमशः फ्रा (fra) तथा पुथ्र (puthra) है। इरानियन भाषा में 'स' की जगह 'ह' का इस्तेमाल होता है। इसके कुछ अपवाद भी है। (h replaced s in Iranian except before non-nasal stops and after I, u, r, k; Sanskrit sapta (seven), sarva (all) are Avestan hapta and haurva.) इरानी भाषा में क्स (xs) तथा स (s) के उच्चार मौजूद है जबकि इंडो-आर्यन भाषा में सिर्फ क्ष (ks) है। अवेस्टा के क्सयेइति (xsayeiti), साईति (saeiti) संस्कृत में क्षयाति (ksayati) तथा क्षेती (kseti) है। पर्शियन शब्द दिन यानि धर्म शब्द ऋग्वेद के धेना (dhena) है, उसका अवेस्टा में समानार्थी शब्द दाईना (daena) है। गार्ड (Gard) शब्द संस्कृत में गार्था (Garta) है जिसका अर्थ जगह होता है। गार्था या कार्ता का मतलब बाद में राजधानी हुआ जैसे कि जकार्ता। क्षेत्र के गर्वनर को पर्शियन में क्षथ्रपावान (khshathrapavan) जो ग्रीक लोगों ने क्षत्रप किया, संस्कृत में भी उसे क्षत्रप कहा जाता है।(http://www.indianembassy-tehran.ir// Embassy of India, Tehran.htm)

संस्कृत में कई शब्द लॅटीन, रशीयन, ग्रीक, इंगलिश तथा अन्य युरोपियन भाषाओं के शब्दों जैसे है। इन शब्दों के उच्चारण तथा अर्थो में भी लगभग पूरी समानताएं है। माँ तथा बाप यह मूल प्राचीन शब्द है क्योंकि बच्चा सबसे पहले यही दो शब्द सीखता है। इन दो शब्दों का इस्तेमाल हजारों सालों से होता आया है। माँ के लिये संस्कृत में मातृ इंगलीश में मदर (Mother), लॅटीन में मातर (Mater) फ्रेंच में मेअर (Mere), जर्मन में मट्टर (Mutter) तथा स्पॅनीश में माद्रे (Madre) है। संकृत में पिता के लिये पितृ / पितर शब्द है। लैटीन में यह पाटेर (Pater), इंगलीश में फादर (Father), स्पनीश में पाड्रे (Padre), जर्मन में उच्चारण में फादर लेकिन लिखने में Vater है। (http://www. mayyam.com//Origin of Sanskrit Language.htm)

विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत का लॅटीन तथा ग्रीक भाषा के साथ करीब का संबंध है। मसलन संस्कृत में तिन के लिये त्रयास है, लॅटीन में ट्रेस (tres) तथा ग्रीक में ट्रेईस (treis) है जो उनका एक ही भाषीक उगम दर्शाते है। उसी तरह सांप के लिये संस्कृत में सर्प, लॅटीन में सरपेन (serpens), तथा इंगलीश में सरपेंट (serpent)है। ऐसे तमाम शब्दों में समानता की वजह यह है कि इंडो-युरापियन दक्षिण रशीया के घास के मैदानों में किसी समय साथ साथ रहे है।(http://www.usu.edu/1320 Section 7 The Indo-Europeans and Linguistics.htm)

इंडो-इरानीयन, वेद तथा अवेस्टा के समान शब्द आगे दिये मुताबिक है, आखीर में उनका अर्थ दिया गया है :- 1) अप (ap), अप (a-p), अप (a-p) इनका अर्थ पानी है। अपास (a-pas) का अर्थ कई पानी के स्त्रोत है। 2) आर्यामन (aryaman), आर्यामन (aryaman), अैरीमन (airyaman) इनका अर्थ आर्य समुदाय का व्यक्ति है। 3) अथर्वन (athar-van), अथर्वन (atharvan), अथ्राउन (a-?rauuan) इनका अर्थ पूजारी है। ४) अझी (azi), अही (ahi), अझही (azhi, aži) इसका अर्थ ड्रॅगन, सर्प होता है। 5) दैवा (daiva), देव (deva), दैवा (daeva, dae-uua) इसका अर्थ देवता होता है। 6) मनु (manu), मनु (manu), मनु (manu) का अर्थ आदमी होता है। 7) मित्रा (mitra), मित्रा (mitra), मिथ्रा (mithra) का अर्थ शपथ, प्रतिज्ञा (covenant) है। 8) असूर (asura),

असूर (asura), अहूर (ahura) का अर्थ देवों के विरुध्द की प्रतिदेवता है। 9) सर्वतत (sarvatat), सर्वतत (sarvatat), हरुउतत (Hauruuatat) का अर्थ अभंग, संपूर्ण है। 10) साउम (sauma), सोम (soma), होम (haoma) का अर्थ नशीला पौधा है। 11) यज्ञ (yajna), यज्ञ (yajña), यसना (yasna, yazata) का अर्थ पूजा, बलि विधि, आहुति है।(http://en.wikipedia.org/Proto-Indo-Iranian religion - Wikipedia, the free encyclopedia.html) वेदिक संस्कृत, गाथा अवेस्टा भाषाओं का आरंभिक स्वरुप एकदम समान है जो एक ही प्रोटो-इंडो-इरानीयन भाषा से विकसित हुआ है। (http://en.wikipedia.org/Indo-Iranians - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) जैसे जैसे वे भारत की ओर बढे समय के साथ वेदिक आर्यो की भाषा में परिवर्तन होता गया।(www.newasiabooks.org/Discovering the Vedas Origins, Mantras, Rituals, Insights _ New Asia Books.htm)

संस्कृत तथा अन्य कुछ युरोपियन भाषाओं के बीच मुख्य समानता यह है कि :-

1) ये भाषाए दोहरी संख्या (Dual Number) का इस्तेमाल करते है। संस्कृत में इसे व्दी-वचन कहा जाता है। प्राचीन लॅटीन तथा ग्रीक भाषाओं में व्दी-वचन लंबे समय तक इस्तेमाल होता रहा। स्लावीक समुह आज भी इस भाषा प्रकार का इस्तेमाल करते है। लेकिन भारत की कोई भी मूल भाषा इस प्रकार का इस्तेमाल नही करती।

2) संस्कृत भाषा में संयुक्त अक्षरों की तादाद बहुत ज्यादा है। 'र' यह अक्षर बहुतायत में है। मसलन ब्राह्मण, कर्म, नम्र, आर्युवेद, कृत, क्रिया, कृपा, राष्ट्र इ. शब्द। युरोपियन भाषा में भी हमें भारी तादाद में संयुक्त अक्षर मिलते है जिसमें 'र' शामिल होता है। लेकिन भारत की मूल भाषाओं में 'र' अक्षर से युक्त मूल संयुक्त शब्द नही होते।

3) संस्कृत में त्र, द्र, संयुक्त शब्द भारी तादाद में मिलते है। जैसे इंद्र, मित्र, शत्रु, पुत्र, शुद्र इ.। रशीयन भाषा में भी ऐसे संयुक्त अक्षर है। रशियन भाषा में त्स (TSa) यह संयुक्त अक्षर बडी तादाद में पाया जाता है। यह शब्द संस्कृत में भी पाया जाता है। लेकिन भारत की मूल भाषाओं में इस तरह के मूल संयुक्त अक्षर नही पाये जाते।

4) भारतीय मूल भाषाओं में संयुक्त अक्षर उसी अक्षर का दो बार होना होता है। मसलन अब्बा, अम्मा, खट्टा, बुध्द, दिल्ली, मुद्दा, अम्मी इ. शब्द। संस्कृत तथा युरोपियन भाषाओं में ऐसे संयुक्त अक्षर नही होते।

5) रशियन तथा संस्कृत में व्द (DV) यह संयुक्त अक्षर बडी तादाद में पाया जाता है। स्पष्ट है कि संस्कृत युरोपियन भाषाओं के करिब है, न कि भारतीय मूल भाषाओं के। मान. महावीर सांगलिकर के मुताबिक यह ऐसा इसलिये है क्योंकि आर्य पूर्वी युरोप इ. युरोपियन क्षेत्रों से भारत आये है। आर्यो की भाषा वही थी जो उन क्षेत्रों में बोली जाती थी। भारत तक आते आते उनकी भाषा में बहुत फर्क हुआ है। (http://hubpages.com/European Origin of Sanskrit Language.htm)

मूलनिवासी भाषाओं से ब्राह्मणों ने संस्कृत का विकास किया !

वेदिक आर्यो की टोलियों की अपनी अपनी विशेष भाषा थी। लगभग ईसापूर्व 500 साल पहले पानीनी ने चांदसा भाषा का विकास किया जो कई इंडो-आर्यन भाषाओं का संश्लेषित (synthesized) स्वरुप थी। संस्कृत के निर्माण में न सिर्फ मध्ययुगीन इंडो-आर्यन शब्दों का समावेश किया गया बल्कि भारत की मूलभाषाओं के शब्दों को कुछ फेर बदल के साथ शामिल किया गया। संस्कृत में लगभग 50 फीसदी से ज्यादा शब्द द्रविड भाषाओं से तथा विदेशी भाषाओं से लिये गए है। लाहोवेरी (Lahovery) के मुताबिक संस्कृत में

द्रविडन तथा अन्य भाषाओं से शब्द लिये गए है। भारत में हजारों साल पहले द्रविड लोगों में थमिझ (Thamizh) भाषा का इस्तेमाल होता था। इंगलीश भाषाशास्त्र के वैज्ञानिक काल्डवेल तथा बुरो (Caldwell and Burrow) ने साबित किया है कि संस्कृत में थमिझ (Thamizh) भाषा के शब्द काफी तादाद में लिये गए है। मसलन नीर यानि पानी तथा मीन यानी मछली इ. शब्द। आर्यो ने क्लासिकल संस्कृत का विकास {जासूसी के अलावा} इसलिये भी किया ताकि बौध्दों के पालि साहित्य के मुकाबले ब्राह्मणों के साहित्य का पैदा किया जा सके। कई भाषाओं से कृत्रिमता से विकसित किया जाने से वह भ्रमित करने वाली संकरित भाषा थी। इसलिये संस्कृत कर्मकांडों की भाषा बनी रही। (http://www.indianetzone.com/Origin of Sanskrit Languagex.htm; http://evans-experientialism.freewebspace.com/DEAD SANSKRIT WAS ALWAYS DEAD - THE ANTI-SANSKRIT SCRIPTURE - BY SHYAM RAO - ATHENAEUM LIBRARY OF PHILOSOPHY.htm; http://prearyan.blogspot.in//Pre Aryan.blogspot.com Sanskrit is much younger language than Tamil. Thousands of words were borrowed from Thamizh into Sanskrit.htm) चांदसा अथवा संस्कृत को पानीनी के नाम से ही लगातार संशोधित किया जाता रहा है। इसलिये मूल पानीनी के व्याकरण में और मौजूदा पानीनी के व्याकरण में जमीन आस्मान का अंतर है।

विटझेल (Witzel) के मुताबिक ऋग्वेदिक संस्कृत पानीनी के अथवा कालिदास के संस्कृत से पूरी तरह से अलग थी। ऋग्वेद के कई शब्द मौजूदा संस्कृत के शब्दों से अलग थे। विटझेल के मुताबिक भारत के संस्कृत पंडित तथा प्रोफेसर्स भी इन शब्दों का अर्थ नही जानते।(www.haindavakeralam.com/HaindavaKeralam - Witzel's New Revealation - Rigveda is not Indian, but foreign !.htm) संस्कृत भाषा का विकास ईसवी 100 – 150 के दौरान किया गया।(http://www.abovetopsecret.com/The Emergence of Hinduism from Christianity , page 2.htm)

संस्कृत भाषा त्रृटिपूर्ण तथा संभाषण के लिये अयोग्य भाषा है !

कई माईनों में ऋग्वेद की भाषा इतनी अलग और मिश्रित थी कि उसे समझा नही जा सकता था। बियोवल्फ (Beowulf) की भाषा को समझने में जो समस्या इंगलीश भाषियों को होती है वैसा ही हाल ऋग्वेदिक संस्कृत को लेकर था। ऋग्वेद के कई पद्य समझ से बाहर थे। जैसे पूरानी अंग्रेजी भाषा के पद्य आधुनिक इंग्लीश भाषियों की समझ से परे होते है।(http://www.utexas.edu/Indo-European Languages Evolution and Locale Maps.htm) संस्कृत के शब्द synonymic है यानि अलग अलग शब्दों का एक ही अर्थ होता है; वे homonymic है यानि दो अलग शब्दों को एक जैसा ही लिखा जाता है या उनका उच्चारण एक जैसा है लेकिन उनके अर्थ अलग है; वे hermaphroditic है यानि उन्हे किसी भी लिंग के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। इसी से ब्राह्मणों ने ऋग्वेद इ. के पुरुषों को स्त्री करार देकर स्त्रियों की स्वतंत्रता का धोखा पैदा किया है। स्त्रीभ्रुण हत्या, सति-प्रथा, दहेज-प्रथा तथा बहुओं को जीन्दा जला देना इ. बातों को सीरे से नकार दिया है। ये संयुक्त शब्द भी है जिनका संधी विग्रह अलग अलग ढंग से करने पर अर्थ बदल जाते है। ये बातें संस्कृत को अनुपयुक्त भाषा बनाती है। विज्ञान के क्षेत्र ऐसी भाषा का इस्तेमाल में नही हो सकता।(http://evans-experientialism.freewebspace.com/DEAD SANSKRIT WAS ALWAYS DEAD - THE ANTI-SANSKRIT SCRIPTURE - BY SHYAM RAO - ATHENAEUM LIBRARY OF PHILOSOPHY.htm)

अल बेरुनी की प्रसिध्द किताब 'किताबुल हिन्द' के मुताबिक संस्कृत भाषा को सीखना बेहद कठिन है क्योंकि इस भाषा में एक ही चीज को कई कई नामों से जाना गया है तथा एक ही शब्द को कई चीजों के लिये इस्तेमाल किया गया है। शब्द के सही अर्थ को समझने के लिये घटना का परिपेक्ष (context) तथा पहले के वाक्यों के परिपेक्ष को समझना जरुरी है। संस्कृत में ऱ्हस्व का उच्चारण नही है। संस्कृत के एक ही शब्द के 100 अलग अलग अर्थ हो सकते है, तथा अलग अलग 100 शब्द एक ही वस्तू के नाम हो सकते है। इसलिये संस्कृत शब्दों के अर्थ को लेकर भ्रम पैदा करती है। किस संदर्भ में कौनसा शब्द कहा गया है इसे ध्यान में रखकर ही उसका अर्थ निकाला जाता है। संस्कृत में दूसरी समस्या शब्दों की संघी को लेकर है। इन शब्दों का संधी-विग्रह अलग अलग तरह से किया जा सकता है जिससे मूल वाक्य का पूरा अर्थ ही बदल जाता है। इसलिये संस्कृत में शब्द का उचित अर्थ तय करना मुश्किल है। संस्कृत के दो जानकार भी शब्दों के अर्थ को लेकर आपस में विवाद करते है। संस्कृत के जानकार भी अगर संस्कृत को लेकर एक राय नही रखते फिर संस्कृत आम लोगों के योग्य कैसे हो सकती है ? संस्कृत त्रुटीपूर्ण भाषा है इसलिये लोग संस्कृत सीख नही पाते। अपनी इन्ही त्रुटियों की वजह से संस्कृत कभी भी जनभाषा का स्थान नही ले सकी है। संस्कृत का विकास कृत्रिम है स्वाभाविक नही है। संस्कृत का विकास करने वालों ने संस्कृत को आम लोगों की भाषा के रुप में कभी विकसित ही नही किया था बल्कि इसे सिर्फ ब्राह्मणों के हितों की पूर्ति के लिये बनाया गया था। संस्कृत भाषा को जानबूझकर कठिन तथा अनाकलनीय बनाया गया ताकि यह भाषा चंद लोगों के बीच रहे। इसलिये लोगों को इसे सीखने, पढने सूनने से प्रतिबंधित किया गया था।बुध्दि को संस्कृत में बुध दी (buddhee), कवि को कवी (kavee), कविता को कवीता (kaveetaa), वधु को वधू (vadhoo) उच्चारण होता है। वेदिक ब्राह्मणों को शब्दों को सही उच्चारण से लिखने तक की अक्ल नही थी जबकि संस्कृत लिखने के लिये वे देवनागरी जैसी संपुर्ण लिपि का इस्तेमाल कर रहे थे। वेदों तथा अन्य धर्मग्रंथों को लिखते वक्त उन्होने हजारों उच्चारण संबंधी गलतियां की है। उच्चारण की इन गलतियों को बाद के लोगों ने वैसे ही कायम रखा है।(http://nirmukta.com//Legacy Of Ancient Religions Of India _ Nirmukta.htm; http://thehimalayanvoice.wordpress.com//)SANSKRIT 'NOT' A PERFECT LANGUAGE AND VEDAS 'PLAGIARIZED' WORKS « THE HIMALAYAN VOICE.htm; www.vepachedu.org/Brahmin, brahmana, caste, tribe, gotra, rishi, ritual, india, hindu, religion, Mana Sanskriti (Our Culture), Issue 69.htm; http://troubledgalaxydetroyeddreams.blogspot.in/My story Troubled Galaxy Destroyed dreams Fwd Sanskrit is NOT a Perfect Language & Vedas are Plagiarized Works!.htm) संत कबीर के मुताबिक जनभाषाएं बहता हुआ झरना है जबकि ब्राह्मणों की संस्कृत ठहरा हुआ गंदा पानी है। अबे कॅरे (Abe Carrey) नामक इसाई धम्म प्रचारक ने संस्कृत यह सोचकर सीखी कि उसमें बडा ज्ञान का भंडार है। यह बात पूर्णतः झूठ है देखकर उसे घोर निराशा हुई। उसके शब्दों में संस्कृत भाषा में कंकड-पत्थरों के सिवा कुछ नही है। बी. एन. नायर के मुताबिक संस्कृत कभी भी बोली जाने वाली भाषा नही रही है।(What The Great Scholars Said About Sanskrit Language? -Mahavir Sanglikar http://hubpages.com) सन् 1921 की जनगणना के मुताबिक संपूर्ण भारतीय उपमहाव्दीप में मात्र 356 लोग संस्कृत बोल सकते थे। जबकि इस एंग्लो-ब्राह्मण काल को संस्कृत के पुर्नरूत्थान का सुवर्ण-युग कहा जाता था। श्री श्यामराव के मुताबिक 'मृत-संस्कृत' हमेशा से ही 'मृत भाषा' रही है। सन् 1951 की जनगणना के मुताबिक भारत के 362 मिलियन

लोगों में से सिर्फ 555 लोग संस्कृत बोलने वाले थे। इटालियन, हिब्रु जैसी भाषियों की तादाद संस्कृत से बहुत ज्यादा थी। भारत में इटॅलियन भाषा बोलने वाले 685 लोग, पुतुर्गीज भाषा बोलने वाले 6652, अरबी भाषा बोलने वाले 7914, फ्रेंच भाषा बोलने वाले 1929, हिब्रु भाषा बोलने वाले 1209, जर्मन भाषा बोलने वाले 1665, इंगलीश बोलने वाले 171742 लोग पाये गए।

ब्राह्मणों की संस्कृत संबंधी धोखाधडी को 'मदर संस्कृत सिधान्त' के नाम से जाना जाता है जो बीसवी शताब्दी का सबसे बडा धोखा (hoax) है। ब्राह्मणों की इन मनगढंत कल्पनाओं को ब्राह्मणों के युरोपियन जातभाईयों ने इल्युमिनॅटी के षडयंत्र के तहत शैक्षणिक शोधों के नाम पर दुनियां भर में प्रचारित किया। युरोपियन उपनिवेशवादियों के लिये भारत के अध्ययन (Indology) का मतलब संस्कृत तथा ब्राह्मण संस्कृति का अध्ययन इतना सिमित किया है। यही प्रवृत्ति आज भी है। उन्होने द्रविड, इंडो-मुस्लिम, प्राकृत इ. संस्कृतियों को जानबूझकर नजरंदाज किया है। त्रि-इब्लिसी षडयंत्र के तहत युरोपियन स्कॉलर ब्राह्मण धर्म ग्रंथों की झूठी बातों को प्रचारित करने में लगे है।

आर्य-ब्राह्मण संस्कृत की लिपि तक विकसित नही कर सके है !

सभी प्राचीन इबारतें प्राकृत भाषा की है। सभी प्राकृत भाषाएं ब्राह्मी लिपि में ही लिखी गई है। ब्राह्मी लिपि प्राकृत भाषाओं से संबंधित है। सबसे पुराने दस्तावेज प्राकृत भाषा के है। संस्कृत में एक भी नही है। संस्कृत की खुद की लिपि नही है। ब्राह्मणों की लिखने में कोई दिलचस्पी नही थी। अलबेरुनी के मुताबिक लिखने की बात का ब्राह्मण उग्र विरोध करते थे। वेदिक ब्राह्मणों ने लिखना नाग द्रविडों से सीखा है। {ब्राह्मणों के धर्मग्रंथों को लिखने का काम नाग द्रविड गणेश तथा वेदव्यास इ. ने किया था।} जाहिर है कि मूलनिवासी द्रविडों ने अपनी मूलभाषाओं में उसे लिखा। ब्राह्मणों ने संस्कृत को लिखने के लिये स्थानीय लिपियों का इस्तेमाल किया है। 3 री ईसवी में सबसे पूरानी संस्कृत की इबारत ईसवी 150 में गुजरात के जुनागढ के शक महाक्षत्रप रुद्रदमन के समय की लिखी इबारत है। इस इबारत में कई शब्द खुद संस्कृत के पानिणी के व्याकरण के मुताबिक गलत है तथा उनपर प्राकृत भाषा का प्रभाव है। भारत में संस्कृत लिखने के लिये खरोष्ठी, गुप्त लिपि, शारदा लिपि, बंगाली, उडीया, कन्नड, तमिल, तेलगु, मलयालम, नागरी, इ. लिपियों का इस्तेमाल किया गया। विदेशों में संस्कृत को लिखने के लिये रोमन, इंगलीश इ. लिपियों का इस्तेमाल किया गया।(http://hubpages.com//Sanskrit a Language Without Script.htm) यह सभी जानते है कि ब्राह्मी लिपि अरामेक (Aramaic) मूल की लिपि है। इसके बावजूद ब्राह्मणों ने उसे अपनी लिपि बताने की नाकाम कोशिश की है। ब्राह्मी लिपि से ही देवनागरी लिपि का विकास लगभग 10 वी इसवी में हुआ है। कालीदास ने अपनी कविताएं देवनागरी में नही लिखी। उत्तरी भारत की सभी लिपियां स्वतंत्र रुप से ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इसलिये यह दावा झूठा है कि देवनागरी उत्तरी भारत की लिपियों की पूर्वज है। लेकिन ब्राह्मणों व्दारा दी गई गलत जानकारी की वजह से इनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका तक में ऐसा ही गलत लिखा गया है।

बौध्द धम्म के पहले आर्य-संस्कृति होने की झूठी कल्पना !

संस्कृत का विकास बौध्द धम्म के बाद हुआ है। बुध्द काल में ही वेदों को तैयार

किया गया है। इसलिये बौध्द धम्म के पहले आर्य-संस्कृति या वेदिक काल अस्तित्व में नही था। ब्राह्मणों ने अपनी हीनता पर पर्दा डालने के लिये बौध्द धम्म के पहले आर्य-संस्कृति तथा वेदिक काल की झूठी कल्पना को जानबूझकर प्रचारित किया है। (http://www. buddhistchannel.tv/Buddhist Channel _ Buddhism News, Headlines _ Issues _ Why Buddhism prospered in Asia but died in India.htm) वेदिक ब्राह्मण सर्वोच्च स्थान पर काबिज है इसलिये उन्हे अपनी ऐतिहासिक हीनता कैसे बर्दाश्त हो सकती थी। यह वास्तविकता सामने आ जाये कि ब्राह्मण-संस्कृति बौध्द धम्म के बाद पैदा हुई है तो उनके वेद, उनके देवि-देवता सबकुछ झूठ का पूलिंदा साबित हो जाते है।

ब्राह्मणों के वेद इ. धर्मग्रंथ बुध्द काल के बहुत बाद के है !

खुद ऋग्वेद ही ब्राह्मणों के इस दावे को झूठा साबित करता है कि उनका ऋग्वेद धर्मग्रंथ दुनिया का सबसे पूराना ग्रंथ है। क्योंकि ऋग्वेद में प्राकृत भाषा का उल्लेख है। प्राकृत भारत के मूलनिवासियों की भाषा है। ऋग्वेद में भारव्दाज, वसीष्ठ, भ्रिगु, विश्वामित्र इ. ऋषियों के नाम है। बौध्द साहित्य के मुताबिक ये सभी ऋषि बुध्द के समकालीन थे।(History Sr. Sec. Courses, Open School Class XI, Neeraj Publication p, 29; Buddha and His Dhamma, Dr. B. R. Ambedkar) खुद वेदों से यह साबित होता है कि 1) जब ऋग्वेद को लिखा जा रहा था उस वक्त दास (Nagas) देश के शासक थे। 2) लोगों की भाषा प्राकृत थी 3) भारव्दाज, भ्रिगु इ. ऋषि बुध्द के समकालीन थे। इसलिये ऋग्वेद दुनिया का सबसे पुराना ग्रंथ नही हो सकता। बुध्दिजम के पहले हिन्दू संस्कृति का भी कोई अस्तित्व नही था। अगर वेद शाश्वत थे यानि अनंत काल से मौजूद थे तो बाद के काल के लोगों का वेदों में अस्तित्व क्यों है ? वेदों को शास्वत बताने के लिये ब्राह्मणों ने यह बचकानी दलील पेश की है कि ध्वनि शाश्वत है इसलिये वेद भी शाश्वत है। इस दलील से सभी किताबें शाश्वत होती है। (http://brahminterrorism. wordpress.com/How Brahmins Killed Buddhism In India _ Brahmin Terrorism.htm) वेदों को लिखने का काम बायबल लिखे जाने के बाद भी जारी रहा है।(http://www. answers.com//Discussion of 'Were the Vedas or the Bible written first '.htm) ऋग्वेद को लिखना गुप्ता काल (4th to 6th century AD) तक पूरा नही हुआ था। तबतक ब्राह्मी लिपि ही प्रमुख लिपि थी। ब्राह्मणों के सबसे पूराने उपलब्ध हस्तलिखित धर्मग्रंथ मध्ययुग के आखरी हिस्से में पाये गए है।(http://en.wikipedia.org/Rigveda - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) केथ (Keith) के मुताबिक सबसे पूराने उपनिषदों के काल को ईसापूर्व छटवी शताब्दी से पहले किसी भी सूरत में रखना नामुमकिन है। ऐसा करना कल्पना मात्र होगी। एस. एन. दासगुप्ता, ए. ए. मॅकडॉनेल, मॅक्स म्युलर, विंटरनिटझ, जॅकोबी तथा कुछ दिगर शोधकर्ता उपनिषदों को ईसापूर्व छटवी तथा पांचवी शताब्दी का मानते है। चंदोग्या इ. सभी उपनिषदों का काल बुध्द तथा सम्राट अशोक के बीच का काल है। कोई भी उपनिषद बुध्द (624–544 BCE) के पहले का नही है। किसी भी उपनिषद को किसी एक व्यक्ति ने एक काल में पूरा नही किया गया है, क्योंकि वे परस्पर विरोधी विचारों का संकलन है। उनमें योग तथा ध्यान करने की श्रमण धर्मपंथों की पध दति का समर्थन तथा वेदों की बलिप्रथा का विरोध भी शामिल है। जबकि बुध्द के पहले के किसी ब्राह्मणों के दर्शन में बुध्द के एक भी विचार देखने को नही मिलते। आरंभिक इंडो-आर्यन तथा ब्राह्मणों की कल्पनाएं बौध्द धम्म के विचारों से पूरी तरह से विरोधी है। सबसे पूराने उपनिषद इसापूर्व 500 से 300 वर्ष की कालावधी के है। पूराने उपनिषदों

पर बौध्द विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव है। (Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Lal Mani JoshiDepartment of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151) हिन्दूओं का दावा है कि ब्राह्मणवादी राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य व्दितीय (ईसवी 380-413) से उनका विक्रम काल शुरु होता है।

मूल वेद सिर्फ दो ही है !

ऋग्वेद में 10 किताबें या मंडल है। मंडल 2-7 ऋग्वेद का सबसे पूराना तथा सबसे छोटा हिस्सा है। इनकी व्याप्ति ऋग्वेद की व्याप्ति का 38% है। 8 तथा 9 वे मंडल में बाद के अलग अलग काल के श्लोक (hymns) है। उनकी व्याप्ति क्रमशः 15% तथा 9% है। पहला तथा दसवा मंडल सबसे बाद में लिखा है। वे 191 सुक्तों के सबसे लंबे मंडल है। उनकी कुल व्याप्ति 37% है।

संत थॉमस के भारत में प्रवेश के वक्त लिखित रुप में सिर्फ ऋग्वेद था। उस वक्त ऋग्वेद संस्कृत में नही बल्कि वेदिक अथवा अवेस्टन भाषा में लिखा गया था जो पर्शिया की पूरानी भाषा है। ऋग्वेद के इस भाग को ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में लिखा गया। मंडल दो तथा दस को लिखने का काम बाद की इसवी शताब्दियों में किया गया। बाकी तीन वेदों को बाद की इसवी शताब्दियों में लिखा गया।(http://www.abovetopsecret.com/The Emergence of Hinduism from Christianity , page 2.htm) हर मंडल में श्लोक है जिन्हे सुक्त कहा जाता है। इनका मकसद विभिन्न बलि-प्रथाओं को अंजाम देना है। हर सुक्त में व्यक्तिगत stanzas होते है जिन्हे ऋचा (ric) यानि प्रसंशा के नाम से जाना जाता है। ऋचा में पद (units of verse) पाये जाते है। ऋग्वेद की 95 फीसदी से ज्यादा ऋचाओं को लिखने का काम ऋषियों के दस परिवारों ने किया है।(http://en.wikipedia.org/Rigveda - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद, तथा अथर्ववेद इन शब्दों का उल्लेख वेद संहिताओं में नही है। ये नाम ब्राह्मणों ने इन्हे संकलित करने के बाद दिये है ताकि उन्हे पहचाना जा सके। इन्हे आरंभिक तौर पर रिचा इ. प्रसंशा श्लोक, आशिर्वाद तथा शाप के श्लोक इ. के रुप में जाना जाता था। सभी वेदों में प्रसंशा, शाप, आशिर्वाद इ. प्रकार है। ऋचाओं के प्रकारों के मुताबिक ऋग्वेद को सामवेद या किसी भी वेद को कोई भी वेद कहा जा सकता है। यही बात वेद संहिताओं की है।(http://www.islamhinduism.com/Textual Corruption in Vedas.htm) महाभाष्य में पातंजली कहता है कि चार वेद अपने भागों के साथ एकदूसरे में बूरी तरह से मिले हुए है। (http://www.islamhinduism.com//Textual Corruption.htm) ऋग्वेद तथा अथर्ववेद ये दो ही वेद मूल वेद है। यर्जुवेद तथा सामवेद मुख्यतः ऋग्वेद से लिये है। इनमें बाद में कुछ कल्पनाएं जोडी गई। अथर्व वेद में अतिप्राचीन लोगों के बेहद पूराने विश्वास शामिल है। एक लंबे समय तक ब्राह्मणों ने इसे वेद के रुप में मान्यता नही दी।(http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) यह माना जाता है कि आरंभ में ऋग्वेदिक तथा अथर्ववेदिक परस्पर विरोधी दो संप्रदाय थे जो काफी देर के संघर्ष के बाद एक हुए।

ब्राह्मणों ने वेदों को अस्पष्ट भाषा में लिखा है।

श्री Abbé Dubois के मुताबिक कोई भी वेदों के अध्ययन में से कोई मतलब हासिल नही कर पाता। क्योंकि वे आरंभिक संस्कृत में लिखे है। उनका अर्थ एकदम अस्पष्ट है।

वेदों की प्रतियां बनाते वक्त लापरवाही थी या अज्ञान वश ढेर सारी गलतियां की है। इसलिये विव्दान भी मूल ग्रंथ का स्पष्टीकरण करने में खुद को असमर्थ पाते है। डुबोईस के मुताबिक बीस हजार ब्राह्मणों में से कोई भी अंशतः भी वेदों के अर्थ को समझ नही सका।(Dubois 1816: 173-74) होरास हेमन विल्सन (Horace Hayman Wilson) ने पाया कि वेदों का शायद ही अध्ययन हुआ है। ब्राह्मण उसके शब्दों को तोतों की तरह रटते रहे है। मतलब की उन्हे पर्वा नही थी।(https://sites.google.com/site/colonialconsciousness/mantrasofantibrahmanism - Colonial Consciousness.htm)

वेदों में लगातार बदलाव किया गया है !

ब्राह्मणों का दावा झूठा है कि वेद एक पीढी से दूसरी पीढी तक शाब्दिक रुप से स्थानांतरित होते रहे। क्योंकि यह साबित हो चुका है कि बौध्द धम्म के पहले संस्कृत का अस्तित्व ही नही था। तब सवाल है कि किस भाषा में 'रटकर' इनको एक पीढी से दूसरी पीढी को सुनाया गया ? वंशों का अध्ययन से स्पष्ट है कि एक पीढी ने दूसरी पीढी को बताई हुई बातें कभी भी मूल रुप में नही रह सकी। दो पीढीयों में ही उनमें ढेर सारे परिवर्तन होते है, कई काल्पनिक बातें जुड जाती है। इसलिये सत्यता की दृष्टी से वे बातें बेकार साबित होती है। इसलिये वेदों की बातों का एक पीढी से दूसरी पीढी में स्थानांतरण होते वक्त विस्मृति से तथा काल्पनिक बातें जोडी जाने से उनमें ढेर सारे बदलाव होना लाजमी है। स्मृति में परिवर्तन के विभिन्न नियमों का स्पष्टीकरण मनोविज्ञान में किया गया है। ब्राह्मणों के मौजूदा धर्मग्रंथों की सामग्री इतनी ज्यादा है कि कोई भी उन्हे याद रख ही नही सकता। ऐसा एक भी ब्राह्मण मिलना मुमकिन नही है।

भारत पर बनाई गई मायकल वूड की 'oral traditions' यानि श्रृति परंपराओं पर बनी डाकुमेंटरी को बीबीसी 2 पर दिखाया गया था। इसमें यह साबित हो गया कि श्रृति परंपराएं पूरी तरह से झूठी है। धार्मिक बातों को पहले लिखा गया, फिर उन्हे जोर से पढकर औरों को सुनाया गया।(http://newsgroups.derkeiler.com/Re Michael Wood documentary proves Oral Traditions are a lie2.htm) एक पीढी से दूसरी पीढी तक वेदों की विभिन्न संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति के लिये अलग अलग भाषाओं का इस्तेमाल हुआ। अंत में इनको संस्कृत में लिखा गया। पूजारियों के इतिहास को समझने वाले जानते है कि पूजारियों ने हमेशा अपने स्वार्थ के मुताबिक धार्मिक ग्रंथों में समय समय पर परिवर्तन किया है। ब्राह्मणों ने अपने वर्चस्व को टिकाने अपने धर्मग्रंथों में समय समय पर व्यापक परिवर्तन किये है। इन धर्मग्रंथों में उन्होने वास्तविक घटनाओं को छुपाया, नामों में परिवर्तन किया, जगहों के नामों में तथा घटनाओं के कालक्रम में भ्रम पैदा किया, घटनाओं में काल्पनिक बातों तथा चमत्कारों को मिला दिया ताकि ब्राह्मणों के कुटील मकसद पूरे हो सके। ब्राह्मण धर्म के ग्रंथों में जानबूझकर किये गए परिवर्तनों का वर्णन पेज क्रमांक 212-218 में किया जा चुका है। जब खास मकसद को पूरा करने धर्मग्रंथों में जानबूझकर परिवर्तन किये जाते है तो मूल सामग्री लगभग खत्म हो जाती है।

टी. जे. एस. जार्ज के मुताबिक आरंभ में वेद धार्मिक ग्रंथ नही थे। ब्राह्मणों के पुनरूत्थान के काल (ईसवी 1-400) के काल में ब्राह्मणों ने अपने अधिकतर धार्मिक ग्रंथ धोखाधडी से लिखे जिसमें उन्होने बौध्द तथा श्रमण धर्मपंथों की बातों को भी अपने ग्रंथों में खुद के नाम से शामिल किया। यह प्रसिध्द है कि सभी धर्मो के पूजारियों ने धार्मिक ग्रंथों में धोखाधडी इसी काल में की है। इसी काल में वंशों के बारे में नकली काल्पनिक

बातों को गढा गया। धर्म तीर्थ के मुताबिक कोई भी संस्कृत ग्रंथ ऐसा नही है जिसको न बदला गया हो। ऐसा कोई प्रसिध्द ऋषि नही है जिसके नाम पर धर्मग्रंथों में बातें नही गढी गई। ऐसा कोई धर्मग्रंथ नही जिसमें काल्पनिक बातों को तथा काल्पनिक इतिहास को न मिलाया गया हो।(http://www.islamhinduism.com//Textual Corruption.htm)

यजुर्वेद की 101 शाखाएं है। सामवेद की 1000 शाखाएं है। ऋग्वेद की 21 तथा अथर्ववेद की 9 शाखाएं है। इन सबको जोड देने से वेदों की कुल शाखाओं की तादाद 1131 हो जाती है। इन्हे वेदों के 1131 आवृतियां (versions) माना जा सकता है। हर शाखा की अपनी संहिता, ब्राह्मणा, अरण्यक तथा उपनिषद है। इन 1131 वेद संहिताओं में से 1120 संहिताएं नष्ट हो चुकी है। दूसरे शब्दों में 99% वेद नष्ट हो चुके है। आज हम जिसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रुप में जानते है वे इन शाखाओं की बची हुई शाखाएं है। अगर कोई दलील देता है कि शाखाएं वेद नही है बल्कि वे सिर्फ स्पष्टीकरण अथवा भाष्य (explanations /commentaries) है तो क्योंकि मौजूदा वेद खुद ही शाखाएं है इसलिये उन्हे वेद नही जा सकता। किसी वेद के प्रसंशा श्लोक (hymn) में उस वेद के नराम का उल्लेख नही है। यानि ऋग्वेद में उसके ऋग्वेद होने का उल्लेख नही है। कोई अगर यह दलिल देता है कि दूसरे धर्मग्रंथों में ऋग्वेद इ. को वेद कहा गया है तो यह सवाल पैदा होता है कि धर्मग्रंथों में कई चीजों को वेद कहा गया है। मसलन आर्युवेद, सर्पवेद, धर्नुवेद, इतिहासवेद, पुराणवेद (कथाएं) इ., तब वेदों की तादाद 4 से बहुत ज्यादा होती है। (http://www.islamhinduism.com//Textual Corruption.htm) कुल वेद संहिताएं 1131 है जिनको मंत्रों के प्रकार के मुताबिक चार हिस्सों में बाँटा गया है।

विभिन्न यजुर्वेद संहिताओं के फर्क को देखा जाये तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये मूल वेदों का स्पष्टीकरण नही है बल्कि खुद यर्जुवेद की विभिन्न आवृतियां (versions) है जो उस वक्त मौजूद थे। इनमें एक-दूसरे के प्रति ईर्षा या दूश्मनी तक पाई जाती है। एक संहिता के मानने वाले दूसरी संहिता के मानने वालों की भर्सना करते थे। मसलन, शतपथ ब्राह्मणा (1:7:1:3) तैतरिया संहिता की भर्सना करता है। सभी शाखाएं खुद को मूल ग्रंथ होने का दावा करती है। इसतरह कुल 1131 वेद संहिताएं खुद को मूल ग्रंथ मानती थी जिसमें से अब मात्र 11 संहिताएं बची है। इन वेदों की शाखाओं को आपसी प्रतिस्पध र्ा तथा ब्राह्मणों के काले कुटील इतिहास को छुपाने के इरादे से नष्ट किया गया होगा।

हर संहिता के मंत्रों की तादाद में भी फर्क है। यजुर्वेद में कई ब्राह्मणाओं को घुसाया गया है। 24 वा संपूर्ण अध्याय ब्राह्मणा है। अध्याय 30 श्लोक 7 से 15 ब्राह्मणा है। शतपथ ब्राह्मणा (4:2:3:7-8) इसे मान्य करती है कि संहिताओं में ब्राह्मणा को मिलाया गया है। अगर यर्जुवेद मूल (original) ग्रंथ है, तब शुक्ल यर्जुवेद में ब्राह्मणा क्यों है ?

शुक्ल यर्जुवेद की रचना तथा शब्दों का इस्तेमाल अध्याय 15 तक कृष्ण यर्जुवेद से मूलतः अलग है। शुक्ल यर्जुवेद के 39 वे अध्याय के मंत्र कृष्ण यर्जुवेद में नही पाये जाते। शुक्ल यर्जुवेद के बारे में यह आश्चर्य की बात है कि उसका आखरी अध्याय (Chapter 40) मूलतः इश उपनिषद है। आर्य समाज के विश्वास के मुताबिक उपनिषद ब्राह्मणों के अवतरित (revealed) धार्मिक ग्रंथ नही है। वेद अगर अवतरित ग्रंथ है और इश उपनिषद अवतरित नही है तो फिर उसकी यर्जुवेद में उपस्थिति क्यों है ? वेदों में शामिल करते ही क्या वह अवतरित ग्रंथ बन जाता है ? यजुर्वेद में सिर्फ इश उपनिषद ही नही शामिल किया गया है बल्कि उसमें कई ब्राह्मणाओं को भी मिलाया गया है। मसलन

संपूर्ण अध्याय 24 एक ब्राह्मणा है। अध्याय 30 के श्लोक (verses) 7 से 15 ब्राह्मणा है। (http://www.islamhinduism.com//Textual Corruption.htm)

सामवेद के 75 मंत्रों के अलावा बाकी सारे मंत्र ऋग्वेद की शाकाल संहिता से लिये गए है। बचे हुए 25 फीसदी मंत्र बाश्काल (Baashkal) से लिये गए है। अब अगर बाश्काल मूल संहिता नही है तो सामवेद के 75 मंत्र जाली साबित होते है। अथर्ववेद को अथर्ववेद तथा अंगीरसवेद इन दो भागों में बाँटा गया है। अथर्ववेद में अंगीरसवेद का हिस्सा बहुत बाद का है। अंगीरसवेद का श्रेय ऋषि अंगीरस को दिया जाता है जो अथर्व ऋषि के बाद चौथी पीढी का है। अथर्ववेद के अलग अलग नाम होने के कोई स्पष्टीकरण नही दिये गए।(http://www.islamhinduism.com/Textual Corruption in Vedas.htm)

ऋग्वेद की अनुक्रमणिका के मुताबिक ऋग्वेद में कुल 10580 मंत्र है। गायत्री परिवार के ऋग्वेद में 10552 मंत्र है। सायानाचार्य के मुताबिक ऋग्वेद के 10000 मंत्र है। दयानंद सरस्वती के मुताबिक ऋग्वेद के 10589 मंत्र है। उपरोक्त आंकडों के मुताबिक ऋग्वेद के लगभग 500 मंत्र शंशयास्पद है। वे शायद बाद में घुसाये गए। रामगोविंद त्रिवेदी ने अपने ऋग्वेद के हिंदी भाषांतर की प्रस्तावना में कहा है कि ऋग्वेद के एक मंत्र (Page 1403, Mantra 8) के मुताबिक ऋग्वेद में कुल 15000 मंत्र थे। जिस मंत्र की बात त्रिवेदी कर रहा है वह मंत्र 10:114:8 है। लेकिन जब हम मंत्रों की गणना करते है तो वे 10469 होते है। इसतरह ऋग्वेद के लगभग 450 मंत्र नष्ट किये गए है। शायद इन मंत्रों को ब्राह्मणों के काले कुटील इतिहास को छुपाने के लिये हटाया गया था।

न सिर्फ प्राचीन या मध्ययुगीन काल में बल्कि आधुनिक काल में भी वेदों में परिवर्तन किये जाते रहे है। दयानंद के यर्जुवेद भाष्य में अध्याय 9 मंत्र 20 में गमयात (Gamyaat) शब्द मिलाकर उसके अर्थ को विकृत किया गया है। यह शब्द मूल मंत्र में नही है। गायत्री परिवार के यर्जुवेद के अध्याय 25 में 47 मंत्र है। राल्फ ग्रिफीथ के भाषांतरित यर्जुवेद में भी 47 मंत्र है लेकिन आर्य समाज के यर्जुवेद में अतिरिक्त 48 वा मंत्र है। दयानंद के यर्जुवेद भाष्य के अध्याय 26 मंत्र 26 में अयोहताय (Ayohtay) शब्द को अपोहताय (Apohtay) में बदला गया है। अध्याय 39 के मंत्र 5 में विषयानदमाने (Vishyandmaane) को विषपांदमाने (Vishpandmaane) किया है। आर्य समाज के यर्जुवेद संस्करण में से 13:58 को हटाया गया है, यह गायत्री परिवार के संस्करण में मौजूद है। यह बदलाव छपाई की गलतियां नही है क्योंकि इनके भाषांतरों में यही गलतियां कायम रखी गई है। (http://www.islamhinduism.com//Textual Corruption.htm)

वेदों की व्यर्थथा को कई विव्दानों ने महसूस किया है !

ब्राम्हण वेदों को पवित्र बताते है। वेदों को ब्राम्हणों ने सबसे पहले स्मृतियों से नीचे, बाद में पुराणों के नीचे, तथा अंततः तंत्रविद्या से नीचे का स्थान दिया है। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol. 4, P. 60-61) संक्षिप्त ब्रह्म पुराण के मुताबिक :- महामुने ! सत्ययुग, त्रेता, व्दापर और कलियुग - ये चार युग इस भारतवर्ष में ही होते है, अन्यत्र कहीं नही होते। (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 42) इससे स्पष्ट है कि पुराणों के ईश्वर विश्वव्यापि प्रभाव वाले नही है। उनकी ताकत बहुत सीमित है।

संत कबीर ब्राह्मणों को वेदों को त्यागने की सलाह देते है क्योंकि वेद मन की कल्पनाएं मात्र है। (The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) बेद किताब छाड देव पांडे, ई सब मन के भर्मा। कहै

कबीर सुनो हो पांडे, ई सब तुम्हरे कर्मा।। संत कबीर के मुताबिक :- वेद किताब दुइ फंद पसारा, मेही फंदे परु आप बिचारा। कहै कबीर तै हंसन बिसरे, जेहिमा मिले छुडा. वन हारा।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926, p.52) शोषित बहुजन भारत के पितामह महात्मा ज्योतीराव फुले का प्रतिज्ञा पूर्वक कहना है कि वेदों की व्यर्थता को छुपाने तथा उसका व्यर्थ ही महत्व बढाने के उद्देष्य से धूर्त आर्य भट-ब्राम्हणों ने अपने वेदों का अनुवाद करके उसे जनता के सामने लाने का कभी हौसला नही किया है। अगर वे जनसामान्यों की भाषा में वेदों का अनुवाद करके आम जनता के सामने उसकी असलीयत आने दे तो बाजार की एक मामूली से मामूली वेश्या तक वेदों की बखियाँ उधेडकर रख देगी। (p.490, महात्मा फुले)

डॉ. अम्बेदकर के अनुसार ऐसा कोई कारण नही कि जिससे वेदों की बातों को पवित्र और अंतिम माना जाये। किसी ने यह पूछने का हौसला नही दिखाया है कि जिन वेदों में सिर्फ ऐसी ही प्रार्थनाएं है कि देव उनके दुश्मनों को मारकर उनकी संपत्ति लू. टकर आर्यो को दे दे, ऐसी महत्वहीन किताबों को क्यों पवित्र और अंतिम बताया जा रहा है ? (Dr Babasaheb Ambedkar writings and Speeches Vol. 4 ,P. 8-9) फुटपाथों पर बिकने वाली टोने-टोटकों कि किताबों से ज्यादा इनका महत्व नही है।

ब्राह्मणों ने रामायण-महाभारत को लगातार क्यों लिखा ?

प्राचीन साहित्य के मुताबिक महाभारत की कहानी लोगों को मालूम थी।(Benjamin, 1984; Brockington 2000) संभव है कि महाभारत आर्यो के बीच लडी गई छोटी लडाई का काल्पनिक चमत्कारों से युक्त चित्रण है। इसकी तुलना वेदों के 10 राजाओं के बीच के युध्द से करें तो कई बातें एक जैसी है :- 1) दस राजाओं के युध्द में सुदास भारत का राजा है। महाभारत में युध्दिस्टीर दूसरा भारत का राजा है जो धर्म का पुत्र है। 2) दस राजाओं के युध्द में वसीष्ठ सुदास का मुख्य पूजारी है। जबकि व्यास जिसे वसीष्ठ का वंशज कहा जाता है, पांडवों का मुख्य पूजारी है। 3) दस राजाओं के युध्द में इंद्र मुख्य देवता है। जबकि महाभारत में मुख्य यौध्दा अर्जुन इंद्र का पुत्र है। 4) दस राजाओं के युध्द में इन्द्र के सहयोगी मारुत है। महाभारत में भीम मारुतों का पुत्र है, 5) अश्वीन नामक जुडवा भाई इंद्र के सहयोगी है। महाभारत में नकुल तथा सहदेव अश्वीन के पुत्र है 6) दस राजाओं के युध्द में वरुण इंद्र का सहयोगी है। महाभारत में कृष्ण अर्जुन का सहयोगी है। दस राजाओं का युध्द एक अ-समान युध्द था जो एक छोटे से तृत्सु (Trutsu) नामक समूह के खिलाफ कई समुहों ने मिलकर लडा था। महाभारत में भी युध्दिष्ठीर के पास कोई सेना नही थी। दोनों ही लडाईयों में इंद्र तथा उसके साथियों की मदद से लडाई जीती गई। दोनों ही लडाईयों में शामिल समुहों में भी समानता है। कृष्ण की वृसी जनजाति कौरवों के पक्ष में जबकि कृष्ण तथा सत्यकी पांडवों के पक्ष में था। अलदेव ने तटस्थ भूमिका निभाई। ऋग्वेद में संजय त्रित्सु (Tritsus) समुह का सहयोगी है। महाभारत में भी इनका उल्लेख है जबकि महाभारत बहुत बाद का है। यही बात वैकरणा के बारे में लागू होती है। भारत शब्द का उपयोग कौरव तथा पांडवों के हुआ है। भारत समुह का एक ही युध्द है जो वेदों का 10 राजाओं का युध्द है। इसलिये महाभारत दस राजाओं के युध्द का अतिरंजित काल्पनिक वर्णन है। (The Questionable Historicity of the Mahabharata S.S.N. Murthy, School of Physical Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067, INDIA. E-mail: ssnm0700@mail.jnu.ac.in)

मूलनिवासी नाग-द्रविड और आर्य-ब्राम्हर्णो के बीच हुए संघर्ष के दौरान जो भी उतार

चढाव हुये है उसका असर ब्राम्हण-धर्म के साहित्य में दिखाई देता है। ब्राम्हण सबसे पहले अग्नि की पूजा करते थे बाद में उन्होने इन्द्र की पूजा करनी शुरु की। इसके बाद सोमा (चंद्र), उसके बाद वरुण और उसके बाद सुर्य, की पूजा की जाने लगी। हटा दिये गये देवों की फिर से पूजा की जाती रही है। अंत में ब्राम्हणों ने ब्रम्हा सुर्य की बजाय शिव, विष्णु, राम और कृष्ण की पूजा शुरु की। जबकि शिव और कृष्ण वेद विरोधी थे। ब्राम्हणों ने राम को देवता के रुप में बहुत बाद में उभारा। ब्राम्हण धर्मग्रंथों में ब्रम्हा, विष्णु तथा शिव के बीच जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा और इर्षा के बहुत उदाहरण है। ब्राम्हणों ने कृष्ण को देवता बनाकर उसे शिव से भी बडा दर्जा दिया। शिव के मुँह से भी कृष्ण की महानता को कबुल करवाया। बाद में ब्राम्हणों ने कृष्ण को नीचे गीराकर इतना अधिक अपमानित किया कि कृष्ण ने शिव के भक्त उपमन्यु के हाँथों शैवपंथ की दिक्षा ली ऐसा वर्णन किया है। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol. 4, P. 82,88,91,95) महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार राजसुया यज्ञ के दौरान ध र्मराज चाहते थे कि मेहमानों के स्वागत का काम कृष्ण करे। इसपर कृष्ण के रिश्तेदार शिशुपाल ने न सिर्फ आपत्ति प्रकट की बल्कि कृष्ण को काफी भला-बुरा कहा। उसने कृष्ण को हीन जन्म का कहा। उसकी नैतिकता के खिलाफ आरोप लगाये। महाभारत के गदापर्व के अनुसार दुर्योधन ने जब कृष्ण के दुष्ट कर्म गिनाने शुरु किये तब स्वर्ग से {उंचे महलों की छतों पर से} इन आरोपों को सुनने के लिये देवता जमा हुये। दुर्योधन के आरोप सुनने के पश्चात दुर्योधन पर फुलों की वर्षा की। भगवत गीता में कृष्ण के स्तर को ईश्वर की तरह पेश किया गया है। प्रोफेसर गर्बे के अनुसार भगवत गीता के दो स्पष्ट भाग है पहला मूल तथा दूसरा बाद में जोडा गया। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार भगवत गीता के चार स्पष्ट भाग है। भगवत गीता के दूसरे भाग का बडी बारिकी से अध्ययन करके प्रोफेसर जॅकोबी ने निष्कर्ष निकाला है कि उसकी निर्मिति इसवी सन 200- 450 में की गई है। तीसरे भाग में जहा कृष्ण का दर्जा ईश्वर की तरह है उसकी रचना गुप्त काल (400- 464 इसवी) में की गई है। गुप्तों के शत्रु शक राजाओं के पारीवारिक आराध्य देवता शिव थे। जबकि गुप्त साम्राज्य के राजाओं ने कृष्ण–वासुदेव को अपना आराध्य-देवता माना हुआ था। ब्राम्हणों के लिये धर्म व्यापार का स्थान रखता है इसलिये ब्राह्मणों ने कृष्ण का दर्जा उँचा उठाने में प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर दी। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3, P. 375 -379)

व्यास व्दारा लिखित पहले संस्करण का नाम 'जय' रखा गया था जिसमें 8,800 श्लोक थे। वैश्यपयन ने इसके दूसरे संस्करण का नाम 'भारत' रखा जिसके 24,000 श्लोक थे। तिसरा संस्करण सौती ने 'महाभारत' के नाम से किया। सौती ने तत्कालिन संस्कृती, राजनीति, धर्नुविद्या तथा अन्य संबंधित बातों का भी महाभारत में समावेश किया। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3, P. 241) अंत में श्लोकों की तादाद एक लाख तक बढाकर उसका नाम महाभारत रखा गया। यानि मूल ग्रंथ में 11 गुना से ज्यादा की बढौतरी की गई। (Ancient India www.jeywin.com)

पुणे के स्कॉलर खरे ने अपनी किताब 'The Quest of Gita' में गीता के कम से कम तीन लेखक होने की बात साबित की है। पश्चिमी देश के स्कॉलर कैगी (Kaegi) का विश्वास है कि इसमें 13 वी शताब्दी तक ही नही बल्कि मौजूदा शताब्दी के आरंभ तक परिवर्तन किये गए।(Kashmir Problem Has Origin In Fall Of Buddhism Dr. K. Jamanadas, /Kashmir Problem Has Origin In Fall Of Buddhism.htm)

'The Gita As It Was' (मूल गीता) नामक किताब में ब्राह्मणों की गीता में की गई

धोखाधडी को उजागर किया गया है। बिहार के स्कॉलर श्री फुलगेंदा सिन्हा जो अब अमेरिका में बस गए है के पास मूल गीता की प्रति है। उनके मूताबिक ब्राह्मणों ने मूल गीता के संदेश को छुपाने के लिये भारी हेराफेरी की है। लेखक मूल गीता के संस्कृत में तथा उसके इंगलीश में रुपांतरण को अपने दावे के समर्थन में पेश करते है। यह किताब निचे दिये गए पते पर उपलब्ध है :-Open Court, La Salle, Illinois -61301, U.S.A. Price US$ 15.95.(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm)

महाराष्ट्र सरकार की कक्षा छठवी की पाठयपुस्तक Hisrory of India (Ancient Period, Page 65) के अनुसार पुराण लिखने की शुरुआत मौर्य–काल (इसापुर्व 321-185) में हुई। यानी पुराण बुध्द के बहुत बाद के है। श्री हजारा के अनुसार सभी 18 पूराण नीचे दिये कालखंडों में लिखे गये है :- 1) मुस्लिम आक्रमण के पहले (ईसवी100-600) : – i) विष्णुपूराण (100–350), ii) ब्रम्हांड पूराण (200–500) iii) वायुपूराण (200–500) iv) मार्कंडेय पूराण (200–600) v) मत्स्य पूराण का एक हिस्सा (लगभग 325इसवी) vi) भागवत पूराण (500–600)

2) मुस्लिम आक्रमण के दौरान/पश्चात (ईसवी 550–1500) :– i) कर्म पूराण (550–1000) ii) लिंग पूराण (600–1000) iii) पदम् पूराण (600–950) iv) भविष्य पूराण (500 ईसवी के बाद) v) वामन पूराण (700–1000) vi) वराह पूराण (800–1500) vii) ब्रहनारदिय पूराण (875–1000) viii) अग्नि पूराण (800–900) ix) गरुड पूराण (850–1000) x) ब्रम्हा पूराण (900–1000) xi) स्कन्द पूराण (700 ईसवी के बाद) xii) ब्रम्हविराट पूराण (500 ईसवी के बाद) xiii) भविष्य पूराण (500 ईसवी के बाद) तथा मत्य पूराण का एक भाग (1100 ईसवी) में लिखा गया।

हरीवंश पूराण के अनुसार विष्णु के 6 अवतार है। वराह पूराण व नारायणी आख्याण के अनुसार 10, वायु पूराण के अनुसार 12 तथा भागवत पूराण के अनुसार विष्णु के 22 अवतार है। सभी पूराणों में से केवल भागवत पूराण में बुध्द को विष्णु का 21 वा तथा वराह पूराण में 9 वा अवतार बताया गया है।(Dr. Ambedkar, P. 256-257 Vol. 3; Vol. 4, P. 63, 75) ब्राह्मणवादी साहित्य में व्यापक फेरबदल की प्रक्रिया पुष्यमित्र शुंग की ब्राह्मणवादी प्रति-क्रांति से शुरु हुई। व्यास ने महाभारत लिखी, व्यास ही भगवत गीता भी लिखता है और व्यास ही 18 पूराणों को लिखता है। महाभारत में 18 पर्व है, गीता के 18 अध्याय है और पूराणों की संख्या भी 18 ही है। इनमें मुस्लिमों सहित अलग अलग कालखंडों के उल्लेख है। स्पष्ट है कि व्यास के नाम से इन ग्रंथों में लगातार बदलाव किया गया। (Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 3, P. 257) महाभारत और रामायण जो आज की सुरत में है लिखने का काम गुप्त राजाओं के काल में किया गया। (Will Durant, p.452) पुराण तथा धर्मशास्त्रों में बदलाव का काम मुस्लिम आक्रमण के बाद तक चलता रहा।

महाभारत में हुनों का उल्लेख किया गया है। स्कंदगुप्त ने सन् 455 ईसवी को हुनों को पराजित किया था। फिर भी हुणों के आक्रमण जारी थे। महाभारत के 190 वे अध्याय वन पर्व के 29 वे श्लोक में कहा गया है की सारी दुनिया म्लेच्छों के कब्जे में आ जायेगी। कोई भी ब्राह्मणों के कर्मकांडों को नही मानेगा। वनपर्व के 65,66, और 67 वे श्लोको में कहा गया है कि लोग येडुका (ईदगाह) की पूजा करेंगे, देवों का बहिष्कार करेंगे और शुद्र लोग सवर्णो की सेवा नही करेंगे। मस्जिदें तथा ईदगाह बनाने काम सिर्फ मोहम्मद गौरी ने किया है। इससे स्पष्ट है कि महाभारत लिखने का कार्य 1200 ईसवी

तक जारी था।(Dr. Ambedkar Vol. 3, P. 241- 243)

वनपर्व के 59 वे अध्याय में कहा गया है कि व्रशलों से पिडीत होकर तथा कोई सुरक्षा न पाकर भयभित ब्राम्हण रोते बिलखते इधर उधर भटकते रहे। बुध्द राजाओं ने ब्राम्हणों को इस तरह से प्रताडीत नही किया। इसलिये इस घटना का संबंध मुस्लिम आक्रमणों से है न कि बौध्दों से। भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण सन 712 में इब्ने कासिम व्दारा हुवा। बाद में महंमद गजनी ने आक्रमण कर ब्राम्हण तथा बौध्द धर्मप्रचारकों की हत्याएं की तथा मंदिरों विहारों को ध्वस्त किया। उसने मस्जिदें और इदगाह नही बनाये। मस्जिदें तथा इदगाह बनाने काम महंमद घोरी ने किया है। इससे स्पष्ट है कि महाभारत लिखने का कार्य इसवी सन 1200 तक जारी था। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3, P. 251, 243,)

मूल वाल्मिकी रामायण में 6000 श्लोक थे लेकिन इन्हे बढाकर पहले 12000 तथा अंत में 24000 किये गए। रामायण में 12 वी शताब्दी तक परिवर्तन किये जाते रहे।(Ancient India www.jeywin.com) लटारी मडावी के अनुसार रावण आदिवासी नाग-द्रविड था। रा यानी ताड, इसलियें रावण का टोटम ताड का झाड है। उसीप्रकार सुर्पनखा (ताड का पत्ता), ताडका (ताड का झाड), शंबुक (शबर-बेर), इ॰ भी आदिवासी ही है। (लटारी कवडु मडावी, बहुजन नायक, दि. 22 अप्रैल 2001) ''मारोतीराव रावण'' (मराठा समाज) सत्यशोधक समाज के नेता थे। (गेल ऑमव्हेट, पेज 191) प्रख्यात इतिहासविद एच. डी. सांकलिया ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक ''रामायण मिथ अॅन्ड रियलिटी'' में निष्कर्ष निकाला है कि रामायण की कथा आर्यो और मूलनिवासी नागों के बीच कई सौ वर्षे तक लगातार चले संघर्ष की कहानी है। हनुमान सुग्रीव इ॰ अन्य 'सवारा' कोरकु इ॰ मूलनिवासी जातियों के लोग थे, जिन्होने स्वार्थवश विदेशी आर्यो का साथ दिया था। धूर्त आर्यो ने नागों के विश्वासपात्र बनकर फुट डालकर मूलनिवासी नाग-द्रविडों को आपस में लडाकर अंततः ब्राह्मण सत्ता को मजबूत करने का प्रयास किया। मूलनिवासी नाग-द्रविडों के राजा बली, हिरण्यकश्यप इ॰ के राज्य छल कपट से हथियाने के लिये आर्य ब्राह्मणों ने जो तिकडमें अपनायी उसका कच्चा-चिट्ठा विदेशी आर्य-ब्राह्मणों के धर्म-ग्रंथों में मौजूद है।

सांकलिया ने सिध्द किया है की रावण आधुनिक छोटा नागपुर क्षेत्र (विंध्य क्षेत्र) के समस्त सुख-सुविधापुर्ण राज्य लंका के सम्राट थे। गोंड जाति में महाराज रावण का नाम बेहद सन्मान से लिया जाता है। रामायण में वर्णित लंका मध्य प्रदेश के जबलपुर श्रेत्र के उत्तर में स्थित थी। गोंड जाती की भाषा में ''लंका '' शब्द का अर्थ उच्च स्थान, एक व्दीप या राजमहल के संदर्भ में लिया जाता है। गोंड समुदाय के लोग अपने सभी महत्वपूर्ण स्थानों को ''लक्का'' के नाम से पुकारते है। (चारों ओर पानी होने वाले किले को गोंड लंका कहते है। (व्यंकटेश आत्राम, पेज 14) रामायण में वर्णित सभी पेड-पौधे छोटानागपुर, अमरकंटक इ॰ क्षेत्र में ही मीलते है। जबकि आधुनिक श्रीलंका में साल वृक्ष का नामोनिशान तक नही मिलता। (बहुजन संगठक 23 से 29 अक्तूबर 2000)

ब्राह्मण तुलसीदास ने राम के चरित्र को अत्यंत महान और रावण को बिना किसी सबूतों के दुर्गुणों से युक्त बताया है। जबकि अछूत वाल्मिकि व्दारा लिखी रामायण में रावण को महात्मा, विव्दान, नीति गुण-संपन्न, तथा श्रेष्ठ पुरुष कहा है। वाल्मिकि रामायण में रावण के बीस हात और दस सीर नही बताये गये है। जैन तथा बौध्द रामायण में भी रावण को श्रेष्ठ पुरुष बताया गया है।(नाना ढाकुलकर, p. 4, 5, 6, 8) वाल्मिकी ने रावण की चरित्रवान व्यक्ति के रुप में बडी प्रसंशा की है। उसे आकर्षक और उदार व्यक्तित्व

का बताया है। रावण जहां भी ब्राह्मणों को यज्ञ करते हुए तथा सोमा नामक मादक पेय पीते हुए देखता था तो उनको मारकर भगाता था।(Ravana and his Lanka (Hindi) by Chander Parsad Yagiasu) अन्य रामायणों में उसे राक्षस और क्रूर दर्शाया गया है जबकि वाल्मिकी ने उसे कई विषयों का ज्ञानी संत कहा है। ग्रीफीथ ने वाल्मिकी रामायण का भाषांतर किया है। उनके मुताबिक रामायण का सातवा अध्याय (उत्तर कांड) बाद में डाला गया है। रामायण के कई हिस्सों को बाद में हटाया गया, विकृत किया गया तथा उसमें झूठी तथा काल्पनिक बातें ब्राह्मणों व्दारा मिलाई गई।

रामायण आर्यो के मध्य तथा दक्षिण भारत पर आक्रमण की कहानी है। वाल्मिकी के मुताबिक राम विष्णु का अवतार नही है। उसके अवतार होने की कल्पना बाद में डाली गई है। राम एक सामान्य व्यक्ति था जो अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये बेझीझक झूठ बोलता था तथा धोखा देता था। जो भी राम को आदर्श व्यक्ति मानता हो उन्होने पेरियार रामास्वामी की लिखी किताब 'सच्ची रामायण' पढनी चाहिये। हनुमान को राम का आज्ञाकारी माना जाता है जबकि उडीसा के लोग आज भी उसे धोखेबाज करार देते है। बिहार के सोनेपूर क्षेत्र में भी वहां के आदिवासी हनुमान से नफरत करते है। उसके पुतले को हर वर्ष जलाया और कुचला जाता है। इसके बाद उसे पानी में फेंका जाता है। रामायण का श्रीलंका से कोई संबंध नही है। उस वक्त श्रीलंका को सिंहला के नाम से जाना जाता था। मार्कंडेय पुराण, कथासौतसागर, महाभारत, बदमवाद काव्य में लंका तथा सिंहला का अलग जगहों के रुप में उल्लेख है। बाल रामायण में सीता के विवाह के अवसर पर लंका तथा सिंहला के राजा मौजूद थे। श्रीलंका के प्राचीन इतिहास में कोई भी रावण या राम को नही जानता। रावण की राजधानी पश्चिमी ओरिसा के सोनेपुर में थी। सोनेपूर में प्राप्त ताम्रपत्र के मुताबिक सोमेश्वर देव नाम के राजकुमार खुद को पश्चिम लंका के सम्राट कहते है। वाल्मिकी के मुताबिक लंका महेंन्द्रगीरी पहाडी के पास थी जो ओरिसा के गजानन जिले में पडती है। रामायण में साल वृक्षों का उल्लेख है जो ओरिसा में बहुतायत में पाया जाता है। श्रीलंका में साल के वृक्ष नही पाये जाते। बस्तर में 1703 शताब्दी में प्राप्त शिलालेख के मुताबिक रामायण में उल्लेखित दंडकारण्य आदिवासी राजा भंजदेव के राज्य के करिब था। यह रावण का राज्य था। संभलपुर के बिनझाल आदिवासी लंका के संबंध में कई कहानियों को जानते है। ओरांग आदिवासी औरतें अपने प्रदेश के संबंध में गीत गाकर कहती है कि वे रावण की वंशज है। पुरातत्व वैज्ञानिकों ने सोनेपूर में तेल नदी के किनारे दो कीलोमीटर तक एक किले का उत्खनन किया। अवशेषों में उन्हे 27 फीट उंचे दो विशाल स्तंभ मिले। एक स्तंभ पर एक घर की आकृति तथा दूसरे पर एक बच्चे की आकृति बनी थी। यह स्थल ईसापूर्व 600 से 700 वर्ष पूराना है। {प्रस्तुत वेबसाईट के मुताबिक} वाल्मीकी जुल्म के खिलाफ लडने वाला था। वाल्मिकी ने राम के अश्वमेध यज्ञ का घोडा रोकर ब्राह्मणों की जाति-व्यवस्था का विरोध किया था। ब्राह्मणों ने इस बात को छुपा दिया है कि राम की मौत वाल्मिकी के हाथों हुई थी। लगभग सभी स्कॉलर्स का मानना है कि रामायण का आखरी हिस्सा उत्तरकांड एक धोखाधडी है। ब्राह्मणों ने वाल्मिकी को एक चोर-लूटेरा करार देकर उनको अपमानित करने की कोशिश की है। उनके साथ झूठी कहानी गढ ली कि राम का नाम जपने से उसे मुक्ति मिली। ब्राह्मणों ने मूलनिवासियों के इतिहास को नष्ट किया है ताकि मूलनिवासियों के पास फक्र की कोई चीज न बचे। वाल्मिकी मूलनिवासी इतिहास का हिस्सा होने से उनके संबंध की बातों को सही परिपेक्ष में जान समझकर उनके सामाजिक संघर्ष को आगे बढाना होगा।(http://www.bhagwanvalmiki. com/Monthly Valmiki Community News Letter.htm)

ब्राह्मणों ने ब्राह्मणों को झूठमुठ महीमामंडित किया है !

मनुस्मृति के मुताबिक : -- ➲ बाह्मण चाहे जितना ही मूढ़ और चरीत्रहीन क्यों ना हो वह विव्दान, चरित्रवान और काबिल शुद्र से उंचा और पूजनीय ही रहेगा।

इसलिये मनुमीडिया ब्राह्मणों को झुठमूठ महिमामंडित कर उनके वर्चस्व को बरकरार रखने के लिये एडी-चोटी का जोर लगा देता है।

ब्राह्मण दयानंद सरस्वती के आर्य समाज ने अपने धर्मांतरण को शुध्दि अभियान कहकर मुस्लिम, ईसाई इ. धर्म अशुध्द होने का प्रचार कर उनके खिलाफ नफरत पैदा की। दयानंद सरस्वती ने आर्यो के वेदों तथा ब्राह्मणों की वर्ण व्यवस्था को मान्यता दी। गैरब्राह्मणों को यह झांसा दिया कि वे अपने कर्म से ब्राह्मण बन सकते है। आर्य समाज ने किसी भी मूढ़ ब्राह्मण को शूद्र तथा विव्दान मूलनिवासी को ब्राह्मण नही बनाया। इसलिये आर्य समाज की बातें सिर्फ ढोंग और पाखंड है। मान॰ बी. श्यामसुंदर के अनुसार आर्य समाजी पंडितों ने कसम खाकर अदालतों और उनके व्दारा कायम किये गए कमिशनों के सामने बयान दिया कि अगर कोई जन्म से चमार है तो वह आर्य समाज में आने के बाद भी चमार ही रहेगा। चाहे उसने गुरुकुल में वैदिक धर्म ग्रहण करने के बाद वेदालंकार की उपाधि भी क्यों ना प्राप्त की हो और उसका यज्ञोपवीत संस्कार भी हो चुका हो। इन बयानों के पंडितों के अलावा गुरुकुल कांगडी के चांसलर आचार्य इन्द्र विद्यावाचस्पति स्वामी श्रध्दानंद का पुत्र भी था और उसके समर्थन में तत्कालीन उपराष्ट्रपति राधाकृष्ण ान ने भी एक पत्र लिखकर कहा था जो अदालत में पेश किया गया। चुनाव अधिकरण ट्रिब्युनल ने फैसला दिया कि यद्यपि प्रतिवादी अपने कार्य धार्मिक विश्वास और मान्यताओं के अनुसार आर्यसमाजी है लेकिन उसका जन्म हिन्दु धर्म के चमार जाति में हुआ है इसलिये उसके जन्म की जाति नष्ट नही होती, वह आर्य समाजी बनने के बाद भी चमार का चमार है। आर्य समाज ने शुद्रों की शिक्षा तथा आर्थिक स्वतंत्रता का कभी समर्थन नही किया। (बी. श्यामसुंदर : भू देवताओं का मेनिफेस्टो, p.270 संदर्भ B. Shyamsunder V. Shankerdev A.I.R. 1960 Mysore 27 also 21 E.L.R. page 303 of 1957, also see The tragedy of Arya Samaj by Captain Surya Pratap, Hyderabad (D.N.))

राजा राम मोहन राय (राममोहन बंद्योपाध्याय) ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। वह सनातनी कट्टर ब्राह्मण था। उसने कभी शुद्रों या अन्य धर्मियों के हाथ का बना खाना नही खाया। जब भी वह इंग्लैंड गया तो वह अपने साथ अपने ब्राह्मण रसोईये को भी ले गया ताकि उसका धर्म भ्रष्ट न हो जाए। मरते दम तक वह जनेउ पहने रहा। उसके ब्रह्म समाज की साप्ताहिक प्रार्थना में सबसे पहले दो तेलगु ब्राह्मण आकर वेदों का पठन करते थे क्योंकि बंगाली ब्राह्मणों को वेद पठन के काबिल नही माना जाता था। सती प्रथा का प्रचलन ब्राह्मणों तथा अन्य उंची जातियों में ही था। राममोहन राय ने जो सति प्रथा का विरोध किया वह सिर्फ ब्राह्मण परिवारों तक ही सीमित था। उसने किसी भी शुद्र को शिक्षित नही किया। वह किसान विरोधी तथा अंग्रेजी शोषण को कायम रखने के लिए कुछ भी करने को तत्पर था। नील की खेती से खेती जल्द ही बंजर बन जाती है इसलिये किसानों ने निल की खेती का विरोध किया। राममनोहर राय ने किसानों का विरोध और अंग्रेजी दमन का समर्थन किया। मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक आगरकर,

रानडे, चिपलूणकर इ. ने उसी की परंपरा चलाई। धोंडो केशव कर्वे ब्राह्मण ने सिर्फ ब्राह्मण लडकियों के शिक्षा की सुविधा की। मराठा समाज की होने से महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे की बहन जनाक्का को शिक्षा नकार दी। ऐसे मनुवादी को भारत की सरकार पर काबिज ब्राह्मणवादियों ने भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित कर उसे स्त्री शिक्षा का जनक घोषित किया। जबकि 1 जनवरी 1848 को पहली लडकियों की स्कूल कायम करने वाले ज्योतिराव फुले को नकार दिया गया। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006)

बंगाल में अस्सी साल के बुढे ब्राह्मण की 200 बीवीयाँ होने तथा उनमें सबसे कम उम्र की बीवी 8 साल की होने के उदाहरण है। हरिचंद ठाकूर के पहले इसपर किसी ने भी आपत्ती नही की। लेकिन हरिचंद और गुरुचंद ठाकूर का इतिहास में नाम तक दर्ज नही है। (Jotirmay Mandal, Dalit Emancipators, p.13)

रामकृष्ण परमहंस चट्टोपाध्याय :- अंग्रेजों को सहयोग प्रदान करने से कई शुद्र जातियों को अंग्रेजी सरकार ने जागीरें प्रदान की थी जिनमें से एक शुद्र रानी रशमनी थी। उसने काली का दक्षिणेश्वर मंदिर बनाया। इसके पूरोहित पद के लिए उसने रामकृष्ण परमहंस को आमंत्रित किया। रामकृष्ण ने मंदिर का पूरोहित बनना इसी शर्त पर कबुल किया कि मंदिर तथा सारी भूमि, संपत्ति कानूनी तौर पर ब्रह्मतवार के रुप में ब्राह्मणों की बनाई जाए। मजबूरन रानी को मंदिर और उसके खर्च के लिए 500 स्केअर मील की भूमि ब्राह्मणों के नाम करनी पडी। धर्म के नामपर भूमि हडपने वाले ऐसे ब्राह्मणवादी को भगवान का अवतार प्रचारित किया गया है।

विवेकानंद : ब्राह्मणों को शुद्र समाज में बिभीषण, सुग्रीव और हनुमान मिलते रहे है जो अपने ही समाज को औरों के कब्जे में जाने का जरिया बनते रहे है। विवेकानंद जैसे लोग इसी श्रेणी में आते है। शुद्र कायस्थ जाति में जन्मा नरेन्द्रनाथ दत्ता स्वामी विवेकानंद के नाम से जाना गया। उसने यही भूमिका निभाई है।

विवेकानन्द को आपत्ति थी कि अंग्रेज ब्राह्मण-धर्म की रक्षा भले ही कर रहे हो लेकिन कानूनी राज्य की वजह से दलितों, मुस्लिमों को आगे बढने से नही रोक पा रहे है। इसलिए उसने भारत से ब्रिटिश सत्ता को समाप्त करने के लिए देश तथा विदेश में प्रचार अभियान चलाया। उसे सवर्णो के युरोपीयन आर्य होने का गर्व था। उसके अनुसार सवर्णो की मात्रृभूमि स्पेन थी। विवेकानन्द सति प्रथा का समर्थक था। विवेकानंद की सबसे बडी विशेषता उसका पाखंडी होना है। बुध्दिजम की प्रशंसा करके अमेरिका की एक बुध्दिस्ट महिला से उसने 40,000 रुपयों की विशाल राशी प्राप्त की, दूसरी एक बुध्दिस्ट महिला हेनरीटा मूलर से 22 बीघा जमीन भारत के बिहार प्रांत में प्राप्त की। भारत आने पर उसने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। दानकर्ताओं को जब इसका पता लगा तो विवेकानंद ने जवाब दिया कि अमेरिका में उसे बुध्द अच्छा लगता था, भारत आने पर उसे ब्राह्मणवाद सार्थक लगता है। ब्राह्मणों से उसका कहना था कि शुद्रों की बस्तियों में जाकर उनका विश्वास जीतों और उनको जाति-व्यवस्था कायम रखने को सदैव प्रेरित करो। विवेकानंद प्रचार करता था कि ब्राम्हण और क्षत्रिय राज के बाद शुद्र-राज्य आयेगा तब शुद्र राजा बनेंगे। इसलिए अभी ब्राह्मणराज के अनुसार शुद्रों के कर्तव्य करते रहो। (Swapan Kumar Biswas, Gods, False-Gods & the Untouchables, p. 251-252)

मनुस्मृति के अनुसार :- ➲ जब ब्राह्मण किसी के घर आता है तो वह अतिथी होता है। उसका पूर्ण क्षमता के अनुसार बेहतर ढंग से सन्मान करना, उसे उत्तम भोजन परोसना जजमान का फर्ज है। ➲ लेकिन ब्राह्मण के घर अगर कोई क्षत्रिय, वैश्य

आये तो वह कदापी उसका अतिथी नही माना जायेगा। अगर ब्राह्मण स्वँय उन्हे अतिथी के रुप में बुलाता है तो ब्राह्मण का खाना-पीना हो जाने के बाद ब्राह्मण के घर के लोग उसे जो उचित समझेंगे परोस देंगे। ➲ कोई वैश्य अथा शुद्र ब्राह्मण के यहां अतिथी के रुप में आये हो तो उन्हे दयात्मक सदभाव दर्शाने के लिये सबका खाना समाप्त होने के पश्चात अपने नौकरों के साथ उन्हे खाना देना चाहिये।

इसलिये जब हरिव्दार के कानखल आश्रम में विवेकानंद को ब्राह्मणों की पंक्ति में भोजन नही करने दिया गया तो वह चुपचाप उठ कर शुद्रों की पंक्ति में भोजन करने बैठ गया। विवेकानंद इतना अधिक ब्राह्मणपरस्त था की कायस्थ जाति का होने से बार बार अपमानित किये जाने के बावजूद भी वह ब्राह्मण-धर्म का रक्षक बना रहा। (एल.आर. बाली, क्या गांधी महात्मा थे ? p. 86-79)

लाला लाजपत राय ने अस्पृस्यता का बचाव करते हुए अपनी पुस्तक 'Unhappy India' में तर्क दिया कि गुलामी की तुलना में अस्पृस्यता बूरी नही है। इसपर डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि गुलाम को रहने, खाने, पहनने, ओढने तथा उसे तंदरुस्त रखने की सारी जिम्मेदारी मालिक की होती है जबकि अस्पृस्यता में ब्राह्मणवादियों पर ऐसी कोई जिम्मेदारी नही होती। आर्थिक व्यवस्था के रुप में अस्पृस्यता बिना किसी जिम्मेदारी उठाये असिमित आर्थिक शोषण करते रहने की पध्दति है। (Dr. B. R. Ambedkar, Vol. 9, P. 197) कांग्रेस का नेता पं. मदन मोहन मालवीय (उसी के एक शिष्य के मुताबिक) गर्मी के मौसम में भी उनी कपडे इसलिये पहनकर रहता था क्योंकि ब्राह्मण धर्म-शास्त्रों के मुताबिक उनी वस्त्र पहने होने की हालत में कोई अछूत छू भी ले तो भी सवर्ण को कपडे समेत नहाने की जरुरत नही है (सोहनलाल शास्त्री, P. 172) विधवाओं के विवाह का पुरस्कार करने के कारण जिस पंडीत ईश्वरचंद्र विद्यासागर को प्रचारित किया जाता है। उसके तथाकथित विधवा विवाह उसकी ब्राह्मण जाति तक ही सिमित थे। विद्यासागर शुद्रों को शिक्षा देने का घोर विरोधी था। हिंदु कॉलेज के प्राचार्य के रुप में उसने किसी भी अछूत को कॉलेज में प्रवेश नही दिया। यहाँतक की अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तियों की सिफारीशों को भी वह किसी बहाने से नकार देता था। (Jotirmay Mandal, Dalit Emancipators, p.13)

राय बहादुर बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के बारे में कहा जाता है कि वह मूलनिवासी गरीबों के प्रति अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। वह अपने नौकरों को बूरी तरह से पीटा करता था। वह जमींदारी प्रथा को हर कीमत पर कायम रखने के लिए कृतसंकल्प था। बंगाल में ब्राह्मण जमींदारों तथा मुस्लिम किसानों के बीच हुए दंगे में बंगाल की नमोशुद्र (चांडाल) जाति ने मुस्लिम किसानों के साथ मिलकर ब्राह्मणवादियों की अच्छी धुनाई कर दी थी। बंकिमचंद्र ने ब्राह्मणों को समझाया की अगर नमोशुद्र और मुसलमान हमारे खिलाफ बगावत कर दे तो ब्राह्मण कहाँ बचेंगे ? उसकी मान्यता थी कि ब्राह्मणवाद की रक्षा के लिए भारत में अंग्रेजी राज का होना जरुरी है। उसके लिखे आनंदमठ नामक उपन्यास में उसने अंग्रेजी सत्ता की चाटुकारिता करते हुए मुस्लिम तथा मूलनिवासी शुद्रों के प्रति जातीय विव्देष उगला है। चटर्जी खुद भी कट्टर मुस्लिम विरोधी और कट्टर अंग्रेज-भक्त माना जाता था। 1857 के मुस्लिम-बहूल सैन्य विद्रोह के फौरन बाद अंग्रेजों व्दारा उसे डेप्युटी कलेक्टर बनाया गया था। वह पहला भारतीय शख्स है जिसे अंग्रेजों ने बडी फुर्ति से डेप्युटी कलेक्टर के पद से कलेक्टर के पद पर पदोन्नत किया था। आनंद मठ उपन्यास का एक पात्र सत्यानंद कहता है ''आज मुस्लिमों की पराजय हो गई है और हिन्दुओं ने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। अंग्रेज हमारे मित्र है, उन्हे

दुनियाँ में कोई परास्त नही कर सकता।'' दलित वॉयस हिन्दुस्तानी, सितम्बर 2005 में लिखे लेख के मुताबिक आनंद मठ उपन्यास मुस्लिम शासकों के खिलाफ हुए संन्यासी विद्रोह से प्रेरित होकर लिखा गया है। आनंदमठ किताब में 1) अंग्रेजों के तारीफों के पुल बांधे गए है, 2) इस्लाम और मुस्लिमों से इन्तेहाई नफरत जताई गई है, 3) गैरब्राह्मण ों को शुद्र, चोर-डाकू कहकर चातुवर्ण व्यवस्था का ढोंग रचाया गया है। मान॰ विलास तुकाराम खरात के मुताबिक बंकीमचंद्र चट्टोपाध्याय ब्राह्मण ने सन् 1875 में ब्राह्मणधर्म की देवी काली की प्रसंशा में वंदे मातरम गीत लिखा जिसे अपने बडे भाई संजीव चंद्र व्दारा संचालित पत्रिका की खाली जगह को भरने के लिये प्रकाशित किया गया। सात साल बाद उसी गीत को ''आनंदमठ'' में एक पात्र के मुख में डाल दिया गया। पांच stanzas वाले इस गीत के कुछ stanzas नीचे दिये मुताबिक है :- ''कोटि कोटि कन्ठ कल कल निनाद कराले, कोटि कोटि भुजैर्धल खरकरवाले, अबला केन मा एत बलें। बहुबल धारिणी नमामि तारिणी पिदुलवारिणी मातरम् ।। २।। इसका स्पष्टीकरण है – शत्रुओं का अर्थात मुस्लिमों का निर्दालन करने के लिये मां मैया दुर्गा ने कोटी कोटी के हाथों में तलवारें सौंपी है हमने कोई चुडियाँ नही पहनी है इससे सीधा मतलब मुस्लिमों का कत्लेआम मचाओ ऐसा होता है। यह बहुबल धारणी जो है वह हमें निचित तारने वाली है। मुस्लिमों को मारकर आखिर फतह हमारी ही है क्योंकि हम बहुबल धारणकर्ता है। रिंपुदलवासी मातरम् रिपु अर्थात शत्रुओं यानि मुस्लिमों का दल वाणी की तरह से नष्ट ध्वस्त कर दे। मां तुम्हे हम नमन करते है। पूजते है।'' तीसरे stanza में कहा है – ''तुमी विद्या, तुमी धर्म तुमी हृदी तुमी मर्म त्वं हि प्राणा शरीरे बहुते तुमी मा शक्ति, हृदये तुमी मां भक्ति, तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे मातरम ।। ३।। अर्थात हे दुर्गा माते तू अर्थात विद्या, तू अर्थात धर्म, तू अर्थात हृदय मर्म। जैसे मां तुम्हारी ही मूर्ति हर मंदिरों में रखी हुई है वहां तू साक्षात बसी है। तुमसे ही हमारी बाहों में ताकत पैदा होती है। शत्रु यानि मुस्लिमों को मारने के लिये हृदय से तुमको ही भक्तिपूर्ण पूजते है माते।'' चौथे stanza में कहा है –- ''वन्दे मातरम् त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी क्मला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी, न्मामी त्याम् म्नामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम् ।। ४।। अर्थात - माते तु साक्षात शस्त्रधारी दशभूजावाली दुर्गामाता है, कमलपुष्प में विराजमान हुई लक्ष्मी का रुप है। वाणी विद्यादायिनी यानि वाणी से विद्या देने वाली सरस्वती का रुप है। हे मां तु कणकण में विद्यमान है। अतुला अर्थात तेरी लीला अगाध है तुझे हम पूजते है।

इस गीत के सांप्रदायिक चरित्र की वजह से अंग्रेजों ने इस गीत पर रोक लगाई थी। यह गीत सांप्रदायिक दंगे भडकाने वाला गीत है इसलिये यह राष्ट्रविरोधी गीत है। इसके बावजूद ब्राह्मणवादी काँग्रेस ने सांप्रदायिकता बढाने के लिये इस गीत का पूरा इस्तेमाल किया। ब्राह्मणवादी गांधी-नेहरु ने इस गीत को राष्ट्रगीत के तौर पर पेश किया। डॉ. अम्बेडकर ने इस गीत को राष्ट्रगान के तौर पर शामिल करने का विरोध किया था।

रविन्द्रनाथ टॅगोर ने अंग्रेजी साम्राज्य के बारे में कहा कि अंग्रेजों का शासन ईश्वरीय सत्ता है। उसके खिलाफ बगावत करना पाप है। (Dr Badiuzzaman, Bidrohi Rabindranath Paschim'er Shimantey, 2000) टॅगोर भारत की आजादी का विरोधी है इसलिये भारत के इन्कलाबी उसकी हत्या करना चाहते थे। टॅगोर जब अमेरिका की यात्रा पर था उसपर जान का खतरा मंडरा रहा था । तत्कालीन समाचार में कहा गया था कि 'हिन्दू कवि तथा नोबल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टॅगोर ने कल पुलिस के पास पहुंचकर अपनी हत्या की संभावना के चलते उसे पॅलेस होटल में तथा कोलंबिया थिएटर जहां दोपहर

बाद उसका भाषण होना था, पूरी पूरी सुरक्षा चाही।(San Francisco Examiner, October 6, 1916]) इस समाचार में टॅगोर को हिन्दू कवि कहा गया था।

टॅगोर अंग्रेजों का स्वामीभक्त था। रानी विक्टोरीया की मौत पर शोक जताने के लिये उसने 'मात्रिशोकाशचश्य' (Matrishokashchash) नामक कविता लिखी। सन् 1911 में उसने अंग्रेजी राजा किंग जार्ज पंचम की प्रसंशा में 'जनगनमन अधिनायक जय हे' नामक गीत लिखा। (Prof Ahmed Sharif, Rabindruttor Trityo Projonmey Rabindra Mullayan, Quaterly Uttaradhikar, published by Bangla Academy, Baisakh-Ashar issue, 1393) इंग्लंड के राजा पंचम जार्ज की प्रसंशा में रविद्रनाथ टॅगोर व्दारा लिखी कविता को भारत का राष्ट्रगीत बना दिया।

इंदरजित सींग (अमेरिका) के अनुसार रविन्द्रनाथ टॅगोर ने इग्लंड के राजा जार्ज पंचम तथा महारानी के 1919 के भारत आगमन पर उनकी प्रसंशा में जो गीत लिखा स्वतंत्रता के बाद ब्राह्मण नेहरु ने अपनी अंग्रेज-भक्ति दर्शाते हुये उसी गीत को राष्ट्रगीत के रुप मे चुना। ''जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता'' इस लाईन में राजा पंचम जार्ज को भारत की जनता का अधिनायक और उनका भाग्य निर्धारित करने वाला कहा गया है। ''पंजाब, सींध, गुजरात, मराठा, द्रविड, उत्कल, बंग'' उस वक्त ये प्रांत ही अंग्रेजों के अधिकार में थे इसलिये केवल इनका ही उल्लेख किया गया है। कश्मिर, राजस्तान, तामिलनाडु, आंध्र, मैसुर या कर्नाटक इ॰ राज्य अंग्रेजी अधिकार से बाहर थे इसलिये गीत में उनका उल्लेख नही किया गया। ''विंध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधी तरंग'' इसी कारण गीत में यमुना और गंगा का तो उल्लेख है लेकिन अरब सागर और हिंद महासागर का उल्लेख नही है क्योंकी वे पोतुर्गीजों के कब्जे में थे। ''तव शुभ नामे जागे '' हम भारतीय तुम्हारा ही (राजा पंचम जार्ज) नाम लेकर जागते है। ''तव शुभ आशिश मागे'' और तुमसे ही आर्शिवाद मांगते है। ''गाहे तव जय गाथा'' और तुम्हारी (भारत पर) जीत के गुण गाते है। टॅगोर की कविता के बाकी के stanzas का अर्थ आगे दिये अनुसार है (जो राष्ट्रगीत मे शामिल नही है।) :- 1) तुम्हारे सींहासन के चारों ओर सभी धर्मो के लोग इकट्ठा होकर प्रेम का वर्षाव करते है और तुम्हारे (राजा पंचम जार्ज) सहानुभुतिपुर्ण शब्द सुनने का इन्तेजार करते है। 2) हम अपने राजा की प्रसंशा करते है जिसने सारथी बनकर हम मुसाफिरों को पुरातन दुखों से बाहर लाया। 3) हम (भारतवासी) इस देश में गहरे अज्ञान, दुखों, गरीबी से ग्रस्त, अचेत पडे थे। हम तुम्हारे आँखों के इशारे का और आपकी माता (इग्लेंड की महारानी) के सच्चे संरक्षण में आने की प्रतिक्षा में पडे थे। 4) तुम्हारी सहानुभुतीपुर्ण योजनाओं से सोया हुवा भारत जाग जायेगा। ओ महारानी, हम तुम्हारें कदमों में सीर झुकाते है और राजेश्वर (राजा पंचम जार्ज) के विजय की कामना करते है। सारी कविता में कहीं भी मातृभूमि का प्रेम नही है बल्कि यह निराशाजनक स्थिती को दर्शाता है। (दलित व्हाईस, p. 20, 1-15 सितंबर 2001) अंग्रेजों व्दारा किये गए जालियनवाला बाग जनसंहार का उसपर कोई प्रभाव नही हुआ। लोगों के भारी दबाव के चलते उसने 46 दिन बाद इस जनसंहार के खिलाफ मुंह खोला। (Prof Ahmed Sharif, Rabindruttor Trityo Projonmey Rabindra Mullayan, Quaterly Uttaradhikar, published by Bangla Academy, Baisakh-Ashar issue, 1393)

रविन्द्रनाथ टॅगोर का मानना था कि गैरब्राह्मण शिक्षक ब्राह्मण छात्रों से प्रणाम हासिल करने के हकदार नही है। मनोरंजन बनर्जी को अग्रहयान 19, 1309 में लिखे पत्र में टॅगोर ने अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए लिखा कि स्कूलों में कोई भी गैर'हिन्दू प्रथा का पालन नही किया जाना चाहिये। यह महत्वपूर्ण है कि मनुसंहिता के नियम के

मुताबिक छात्र ब्राह्मण अध्यापकों के पैर छूकर उन्हे प्रणाम करते है जबकि गैरब्राह्मण शिक्षक को सिर्फ प्रमाण शब्द का उच्चारण करते है।(Satyendranath Roy, 'Rabindra Manoney Hindu Dharma', The Desh, Autumn issue, 1905, p.305)

त्रिपुरा के महाराजा कुमार को लिखे पत्र में टॅगोर शांतिनिकेतन से (Baisakh 7, 1309) लिखता है कि भारतीय उपमहाव्दीप में ब्राह्मण और क्षत्रिय लोगों की भारी कमी है। शुद्रों व्दारा आक्रमण किये जाने से हम शुद्र बन जायेंगे। अपने मन में पूरा संकल्प लेकर, पूरे समर्पण के साथ, अपनी पूरी क्षमताओं से मै ब्राह्मणवाद की पूर्नस्थापना करना चाहता हुं। मेरी आपको सलाह है कि आप क्षत्रिय विचारधारा को फैलाने के लिये अपने मन में क्षत्रिय विचारधारा को मन की गहराई तक समा लें।(ibid, p.41)

टॅगोर न सिर्फ एक कट्टर ब्राह्मणवादी था बल्कि वह घोर मुस्लिम विरोधी भी था। प्रो. अहमद शरिफ के मुताबिक टॅगोर की जमीदारी में प्रजा मुख्यतः मुस्लिम थी। टॅगोर ने गायों की हत्या पर पाबंदी लगा दी, उनपर टॅक्स बढा दिये; टॅक्स की वसूली क्रूरता से की। मुस्लिमों को दबाने के लिये नई हिन्दू बस्तियां बसाई गई।(Prof Ahmed Sharif, Rabindruttor Trityo Projonmey Rabindra Mullayan, Quaterly Uttaradhikar, published by Bangla Academy, Baisakh-Ashar issue, 1393) टॅगोर के मुताबिक मुसलमान इस्लाम को मानने वाले है, उनका वंश हिन्दू है; वे मूलतः हिन्दू मुस्लिम है।(Dr Badiuzzaman, Bidrohi Rabindranath Paschim'er Shimantey, 2000) रविन्द्रनाथ टॅगोर मूलतः एक लालची और क्रूर दमनकर्ता था। उसपर {यह पाखंड था कि} वह विश्वव्यापि प्रेम पर कविताएं करता था। वह खुद भेदभाव करता था और घमंडी था।

जमींदार रविन्द्रनाथ टॅगोर व्दारा या उसके पूरे जमींदार परिवार ने कभी किसी को कुछ भी चंदा देने का कोई रिकार्ड नही है। उसने कभी किसी प्राथमिक शाला, अनाथालय, या शाहजादपूर, शिलाईडोह या पटीशोर में बन रहे बांध तक को चंदा नही दिया। इसके विपरित कांगल हरिनाथ मजुमदार ने टॅगोर वंश के दमन-शोषण पर एक लेख लिखा है, उन्होने बताया कि किस तरह सारे गांवों में आग लगाई गई थी।(Prof Ahmed Sharif, Rabindruttor Trityo Projonmey Rabindra Mullayan, Quaterly Uttaradhikar, published by Bangla Academy, Baisakh-Ashar issue, 1393) नारायण चौधरी के मुताबिक टॅगोर हमेशा से जमींदारी प्रथा का कट्टर समर्थक रहा है। इसका कही कोई उल्लेख तक नही है कि वह अपनी जमींदारी के लोगों के दुखदर्द और दमन-शोषण के प्रति वह कभी संवेदनशील रहा हो। उसने अपनी जमीदारी के लोगों को जमीने हस्तांतरित किये जाने का घोर विरोध किया। उसने दलील दी कि ऐसा करने से जमीन का गलत इस्तेमाल (misappropriation) होगा।(Promoth Choudhury, Ryot'er Katha (introduction section) and Bataynik'er Patra) सन् 1894 में अपने जमीदारी के किसानों पर टॅक्स बढा दिया। मार्टीन कंपनी से नई जमींदारियां भी खरीदी। टॅक्स जबरन वसूलने से उसकी जमींदारी में लोगों के विद्रोह भी हुए। टॅगोर ने इन विद्रोहों को क्रूरता से दबा दिया। इस्माईल मुल्लाह ने शिलाईडोह में टॅगोर के खिलाफ विद्रोह किया था।

बहुत ही कम लोग टॅगोर के असली चरित्र को जानते थे। उनमें से एक उसकी खुद की विधवा बहन थी। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टॅगोर ने जमीदांरी की एक निश्चित रकम अपनी बेटी के नाम की हुई थी। टॅगोर ने इससे संबंधित कानूनी दस्तावेजों को नष्ट किया और अपनी विधवा बहन को यह पैसा देना बंद कर दिया। टॅगोर ने वसीयत के सारे कागजात जला दिये थे। इससे उन सभी शेअर होल्डरों को भी उनके हकों से वंचित किया गया।(Prof Abu Zafar, 'Rabindra Bibh'bram', Daily Inqilab, July 7,

2000; http://mukto-mona.net/Dear Readers.htm)

ब्राह्मणों के आदर्श बाल गंगाधर तिलक ने अथनी गांव की सभा में ऐलान कर दिया कि 'कुणबियों को संसद में जाकर क्या हल चलाना है ? तेलियों को वहां क्या तेल निकालना है ? दर्जियों को वहां क्या मशिन चलानी है ? 23 मार्च 1918 को मुंबई में अस्पृस्यता निवारण परिषद अधिवेशन व्दारा पारित अस्पृस्यता विरोधी प्रस्ताव पर दस्तखत करने से तिलक ने साफ इन्कार कर दिया। सन् 1920 में पूणे महानगर पालिका में लडकियों के लिये शिक्षा अनिवार्य करने का प्रस्ताव पेश किया गया इसका भी तिलक ने कडा विरोध किया। लोगों ने तिलक की सभा को उधेड दिया। इसके बावजूद ब्राह्मण ों ने बहुजनव्देषी तिलक को लोकमान्य कहकर प्रचारित किया है।

गांधी खुद भी अंग्रेजी साम्राज्य का बहुत बडा सेवक था। सन 1899 के अंग्रेज बोइर्स युध्द में यह जानते हुये भी कि सच्चाई बोइर्स लोगों के साथ है गांधी ने अंग्रेजी सेना की मदत के लिये अंब्युलन्स युनिट का निर्माण किया। उसने अंग्रेजी सेना में लोगों को भर्ति कराने का काम करके अंग्रेजों से ''वार मेडल'' हासिल किया। सन 1915 में भारत लौटते समय गांधी को अंग्रेजी सरकार ने ''कैसर ए हिन्द'' यानी भारत का सम्राट इस ओहदे से सन्मानित किया। यह ओहदा गांधी को झुलु तथा बोइर्स लोगों के खिलाफ युध्द में अंग्रेजों की सेवाओं, रेडक्रास कार्य तथा उसकी अंग्रेज-भक्ति के कारण दिया था। जब भी गांधी को जेल जाना पडा उसे सजा के काफी पहले ही छोडा जाता रहा। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना भी एक अंग्रेज अधिकारी के हाथों से की गयी। काँग्रेस का मकसद ब्राह्मण-हित की रक्षा के बदले अंग्रेज आर्यो के शासन को मजबूत बनाने में हर तरह से योगदान करना था। काँग्रेस के पहले दस वर्षो में पांच अध्यक्ष युरोपियन थे। राष्ट्रीयता, देश प्रेम इ॰ से काँग्रेस का दूर का भी रिश्ता नही है। (Swapan Biswas, Gods, False-Gods & the Untouchables, p. 263-264, 266) ब्राह्मण-धर्म सत्ता को समर्पित ऐसे व्यक्ति को स्वतंत्रता का सेनानी प्रचारित किया गया है।

मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक वासुदेव बलवंत फडके अंग्रेजों के डाक विभाग में नौकरी करता था। ब्राह्मणों ने इस अंग्रेज-सेवक को आद्य क्रांतिकारी प्रचारित किया है। फडके ब्राह्मण का जन्म 4 नवंबर 1845 है। जबकि वीर उमाजी नाईक को अंग्रेजों के खिलाफ बगावत के लिये अंग्रेजों ने 3 फरवरी 1832 को फाँसी पर चढाया। लेकिन उन्हे नकार कर फडके जैसे चिथडों को रेशम की तरह पेश पेश करने वाले उनके जातभाई ब्राह्मण है। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006)

मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक नाना फडणवीस षडयंत्रकारी मातागमनी ब्राह्मण था। खुद की कामवासना को कैसे शांत करना इसका ब्यौरा उसी के लोगों ने लिख कर रखा है। घासीराम कोतवाल उसे औरतें पहुंचाने वाला दलाल था। आखिर में घासीराम की बहन और रामशास्त्री प्रभुणे की बेटी के पीछे नाना फडणविस लगा था। लक्ष्मी सरस्वती नामक ऐतिहासिक कादंबरी में इन बातों का उल्लेख है। ऐसे घासीराम कोतवाल का खून पुणे की जनता ने पत्थरों से कुचलकर किया। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006) ब्राह्मण नाना पेशवा को ब्राह्मणों ने स्वतंत्रता का सेनानी प्रचारित किया है जबकि अंग्रेजों को दी गई उसी की जुबानी को मुजुमदार ने अपनी किताब 'The Sepoy Mutiny and the Revolt of 1858' के पेज क्र. 266 पर दिया है जिसका सारांश निम्न प्रकार से है :- 'आपने सारे हिन्दूस्तान के गुनाहों को माफ कर दिया है .... यह आश्चर्य की बात है कि मेरे जैसा असहाय व्यक्ति जिसे मजबूरी में विद्रोहियों के साथ जुडना पडा माफ नही किया गया है। मैने कोई हत्या नही की है। ... विद्रोही सिपाही मेरे परिवार का

कत्ल कर देंगे और अंग्रेज सरकार मेरे सैनिकों के विद्रोह के लिये मुझे सजा देगी। मेरे लिये मौत के सिवा दूसरा रास्ता नही था। मुझे मजबूरी में सैनिकों के साथ जाना पडा। मैने दो-तिन बार सरकार से याचना-निवेदन किया लेकिन इसकी ओर जरा भी ध्यान नही दिया गया।' नाना पेशवा ने 6 जून को खत लिखकर जनरल व्हीलर को सिपाहियों के हमले के प्रति आगाह किया। मजुमदार के मुताबिक नाना पेशवा के हिमायती इस घटना को अगर विद्रोही सैनिकों के प्रति नाना पेशवा की धोखेबाजी कहलाना पसंद न भी करें तो भी उन्हे इसे नाना व्दारा अंग्रेजों की खिदमत करने की अंतिम घटना के रुप में मान्यता देनी ही होगी। विद्रोही सिपाहियों के प्रति ऐसे गद्दार और अंग्रेजों के खिदमतगार को ब्राह्मणों ने स्वतंत्रता सेनानी प्रचारित किया है क्योंकि लगभग सारे इतिहासकार ब्राह्मणवादी है।

मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक मनु तांबे को ब्राह्मणों ने झांसी की रानी के तौर पर प्रचारित ओर गौरवान्वित किया है। झांसी मात्र एक संस्थान था न कि राज्य। गोडसे भट की लिखी किताब के मुताबिक लक्ष्मीबाई का पति गंगाधर बाळा के बारे में विवरण है। गंगाधर बाळा उर्फ बाबासाहेब इसे दोबारा विवाह करने की इच्छा हुई लेकिन वह नामर्द है ऐसा लौकिक था क्योंकि वह अपने वाडे में औरतों की वेशभूषा और नथनी, कृत्रिम केश इ. लगाकर श्रंगार करता था। इसलिये कोई उसे लडकी देने के लिये तैयार नही था। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006) झांसी की कथित रानी लक्ष्मीबाई को आजादी के सेनानी के तौर पर प्रचारित किया गया है जबकि लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से लडने की बजाये किले के भंडारी गेट से भागती हुई मारी गई। लक्ष्मीबाई के वेशभुषा में उसकी जगह लडने वाली शुद्र वीरांगना झलकारीबाई थी। मनुमीडिया अंग्रेजों से माफी की गुहार लगाने वाली रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, सावरकर, अटलबिहारी वाजपेयी जैसों का लगातार महीमामंडन करता रहा है। 1857 के तथाकथित विद्रोह में मातादिन भंगी को ही सबसे पहले फाँसी पर लटकाया गया था। लेकिन इतिहास में मातादिन भंगी का नाम तक नही है। उसकी जगह ब्राह्मण सैनिक मंगल पांडे का गुणगाण किया गया। मान॰ गंगाधर बनबरे के मुताबिक इतिहासकार रूद्रांशु मुखर्जी की लिखी किताब '' Mangal Pandey Brave Martyr or Accidental Hero'' के मुताबिक मंगल पांडे का तथा 1857 के विद्रोह का कोई संबंध ही नही है। इसके बावजूद ब्राह्मण सावरकर ने उसे देशभक्त प्रचारित किया है। 29 मार्च 1857 को मंगल पांडे को फाँसी दी गई। कोर्ट मार्शल ट्रायल के दौरान उसने विद्रोह को लेकर कुछ भी नही कहा। विद्रोह के वक्त वह हमेशा की तरह भांग तथा अफीम के नशे में था ऐसा उसने कबूल किया था। गाय की चर्बी से बनी काडतुस दांतों से हटाने से वह धर्मभ्रष्ट हो जाएगा इसी भावना से उसने विद्रोह में हिस्सा लिया था न कि राष्ट्रप्रेम की से। इसतरह से अनेक ''गांडे–पांडे'' इतिहास के पन्नों पर लाये गए है। (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 7 मई 2006) ब्राह्मण राहुल सांस्कृत्यायन ने अन्य ब्राह्मणों की तरह नाना फडणिस और मंगल पांडे को क्रांतिकारी जताकर उनके व्यक्तित्व को निखारने की कोशिश की है। अंग्रेजों, ब्राह्मणों, जमींदारों व इसाई पादरियों के संयुक्त शोषण के खिलाफ शहीद बीरसा मुंडा, तिलका माँझी, मातादिन भंगी, रमाप. ति चमार इ॰ अनेक बहुजनों ने विद्रोह किया लेकिन ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने उन्हे नजरंदाज किया है। हजारों, लाखों विरांगणाओं में अवंतीबाई लोधी, उदा देवी पासी, रानी दुर्गावती इ॰ ने आजादी और आत्मसन्मान की रक्षा के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। अंग्रेजों से अपने प्राणों की भीख मांगना तो दूर ऐसा कायरतापुर्ण ख्याल भी उनके मन में कभी नही आया। प्रफुल्ल बिदवई के मुताबिक सावरकर हिन्दूराष्ट्रवादी था न की

भारतीय राष्ट्रवादी। उसके मुताबिक सिर्फ हिन्दू {पढीये आर्य-ब्राह्मण} ही भारत के वैध नागरिक हो सकते है। सावरकर ने अपनी किताब में कहा कि हिन्दू विजेताओं को मुस्लिम शासकों की औरतों का बलात्कार करना चाहिये था। उसने मुसलमानों के बारे में दयावान होने के लिये शिवाजी तक की भर्सना की है। सावरकर 'अभिनव भारत' नामक एक गुप्त संगठन से जुडा था जो ब्रिटिश अफसरों का कत्ल करने में भरोसा रखता था। सावरकर ने ढींगरा को इंडिया ऑफिस के विलियम वाईली का कत्ल करने के लिये प्रेरित किया और हुक्म दिया। जब सावरकर पर कत्ल के लिये उकसाने और राजद्रोह का इल्जाम लगा तो उसने आत्मसमर्पण किया। सन् 1911 में उसे आजीवन कैद की सजा सुनाई गई। एक साल बीतते बितते उसने राज्य से क्षमायाचना की और यह वादा किया कि ''जिस हैसियत से सरकार चाहेगी, वह उसी हैसियत से उसकी खिदमत करेगा ... एक पापी प्रायश्चितकर्ता सरकार की पैतृक चौखट के सिवाय और कहां लौटकर जायेगा ... '' यह याचिका दैन्यपूर्ण और कायरतापूर्ण है। अंडमान के ज्यादातर कैदियों ने ऐसी कायरतापूर्ण याचिका करने के बारे में कभी सोचा तक नही होगा। सावरकर ने इस तरह की याचनाएं 1913, 1014, 1917, 1920 और 1924 में की। उसे यह कबूल करने के बाद रिहा कर दिया गया कि ''मैने जो हिंसा के तौर तरीकें अपनाये, उनसे मै नफरत करता हुं, मै यथाशक्ति कानून और संविधान को बनाये रखने के लिये कर्तव्यबध्द हुं और मोंटींग-चेम्सफोर्ड सुधार को कामयाब बनाने के लिये तत्पर हुं।'' उसपर यह शर्त लगाई गई कि वह पांच साल तक किसी सियासी गतविधि में हिस्सा नही लेगा। दूसरे विश्वयुध्द छिडने के फौरन बाद सावरकर ने वाईसराय के बारे में वफादारी का एक बार फिर से वचन दिया। उस समय वह हिन्दू महासभा का अध्यक्ष था। (लोकमत समाचार, 8,10 सितंबर 2004)

{अपने जातभाई ब्राह्मण} सावरकर को देशभक्त प्रचारित करके अंदमान हवाई अड्डे को बीजेपी सरकार ने सावरकर का नाम दिये जाने को लेकर संसद में काफी हंगामा हुवा। आर.सी. मुजूमदार की अन्य किताब 'पिनल सेटलमेंट इन अंदमान' के अनुसार सावरकर ने अंदमान की सेल्युलर जेल में काला पानी की सजा भोगते हुये सन 1911 और 14 नवंबर 1913 में अंग्रेजों से दो बार क्षमा याचनायें की थी और अपनी रिहाई की गुहार लगाई थी। सावरकर ने कहा कि उसको माफ कर देने से न सिर्फ अनेक भारतीय अंग्रेजों के आभारी रहेंगे बल्कि अंग्रेजों के प्रति उनका मन भी बदलेगा। (लोकमत समाचार, दि. 7 मई 2002) अंग्रेजों को कोसकर खुद की राष्ट्रभक्ति का ढिंढोरा पीटने वाला आर.एस.एस. भारत छोडो आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी शासन के प्रति अपनी वफादारी प्रकट कर के खुद को धन्य मान रहा था। मुंबई से ब्रिटीश सरकार को भेजी गयी एक गुप्त रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया था कि ब्रिटिश शासन को आर.एस.एस. की चिन्ता करने की कोई जरुरत नही है क्योंकि संघ अंग्रेज सरकार के प्रति पुरी तरह से वफादार है। ऐसी जानकारियों के कारण ही भारतीय इतिहास संशोधन परिषद की ओर से प्रकाशित होने वाले ''टुवार्ड फ्रीडम'' के दो खंडों की छपाई रोक दी गयी। किताबें प्रकाशन के लिये देने के बाद वापस लेने का भारतीय इतिहास संशोधन परिषद को हक नही है इस आधार पर इस किताब के अनुबंधित प्रकाशक (आक्सफोर्ड युनिव्हर्सीटी) ने दिल्ली उच्च न्यायालय में मामला दाखल किया।(आज का सुरेख भारत, जुन 2001, p.12)

दि. 24 मार्च 1930 को कानपुर में हडताल हुई। हिन्दुओं ने दुकाने बंद कर ली पर मुस्लिमों ने दुकाने बंद नही की। इसपर हिन्दु-मुस्लिम दंगा हो गया। इस दंगे में ब्राह्मणवादी गणेश शंकर विद्यार्थी और नन्हु प्रसाद कुरील की घायल होने के बाद मौत

हुई। ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने {मूलनिवासी} नन्हु प्रसाद का नाम तक नही आने दिया जबकि ब्राह्मणवादी विद्यार्थी को हिरो बना दिया। मैनपूरी (यु.पी.) के महाराजा तेजसिंह युध्दस्थल छोडकर भाग गया था और बनारस में जाकर रहा था इस सच्चाई के बावजूद मैनपूरी के इतिहास में उसे शहीद लिखा गया। (आज का सुरेख भारत, मार्च 2000, p.10)

सन 1942 को अटलबिहारी बाजपेयी अंग्रेजों की मुखबीरी कर रहा था यह पर्दाफाश आक्सफोर्ड युनिव्हर्सिटी से छपे टुवर्डस् फ्रिडम नामक दो खंडो वाली किताब में किया गया है। (किरण उपाध्ये, संघाची सैतानी सत्ता) 27 अगस्त 1942 को बटेश्वर की जंगलात चौकी की सरकारी इमारत को उडाने के इल्जाम में 2 क्रांतिकारियों ककुआ और महुआ सहीत तीन देशभक्तों को उसके बयान से सजा हुई थी। वहीं बाजपेयी ने खुद को बेगुनाह बताया था। तब संघ से जुडे लोग अंग्रेजों से न सिर्फ माफी मांग रहे थे बल्कि यह आश्वासन भी दे रहे थे कि उनका संगठन सियासी नही सांस्कृतिक है और उनका आजादी आन्दोलन से कोई ताल्लुक नही है। (नवभारत, 12, 14 अप्रैल 2004) इस गद्दारी के बावजूद बाजपेयी खुद को स्वाधिनता संग्राम का सेनानी प्रचारित करता रहा है।

सन् 1996 के मई में तेरह दिन की सरकार का प्रधानमंत्री बनने पर बाजपेयी के प्रसारित अधिकारिक जीवनवृत्त में भी वाजपेयी का स्वाधिनता सेनानी के रुप में जिक्र किया गया था। 15 अगस्त 1997 को दैनिक जागरण में छपे लेख में बाजपेयी ने खुद भी आजादी संघर्ष में अपने किरदार का बढचढकर बखान किया। 1997 की 25 दिसंबर को बाजपेयी के जन्म दिन परिशिष्ट में छपे लेख में भी उसे महिमामंडित किया गया। 21 जनवरी 1998 को जारी एक बयान में वाजपेयी ने एक बार फिर, आगरा से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अपने पैतृक गांव बटेश्वर में भारत छोडो आन्दोलन में अपनी हिस्सेदारी का जिक्र किया। बटेश्वर की घटना के वक्त बाजपेयी आरएसएस का सक्रिय कार्यकर्ता था। आरएसएस ने खुद को आजादी संघर्ष से अलग किया हुआ था। 7 मई 1995 में आर्गनायजर में छपे लेख ''संघ इज माई सोल'' (संघ मेरी आत्मा है) में बाजपेयी ने खुद लिखा है कि वह सन् 1939 में ही आरएसएस के असर में आ चुका था। 1940 में वह नागपुर स्थित आरएसएस के मुख्यालय में आरएसएस कार्यकर्ताओं के पहले साल के ऑफीसर्स ट्रेनिंग कॅम्प को देखने के लिये गया था। 1941 में उसने ऑफीसर्स ट्रेनिंग कोर्स के पहले साल की ट्रेनिंग पूरी की। 1942 में दूसरा और 1944 में तीसरे साल का कोर्स पूरा किया। इसतरह वह 1942 में कट्टर आरएसएस का सक्रिय कार्यकर्ता था। अंग्रेजों के खिलाफ ग्वालियर में वाजपेयी के किसी तरह की आन्दोलनकारी या विरोध कार्रवाई में शामिल होने का कोई रिकार्ड नही मिलता है। लेकिन 21 जनवरी 1998 को जारी अपने बयान में वाजपेयी ने दावा किया कि ''भारत छोडो आन्दोलन में मेरी हिस्सेदारी और ग्वालियर में मेरी संभावित गिरफ्तारी के चलते ही मुझे अपने पैतृक गांव बटेश्वर भेज दिया गया था। ... लेकिन बटेश्वर में भी मै भारत छोडो आन्दोलन में शामिल हो गया।'' दिगर लोगों के साथ गिरफ्तार किये गए अटल बिहारी बाजपेयी ने दफा 164 के तहत जो इकबालिया बयान दर्ज किया उसके अंश आगे दिये मुताबिक है - '' 27 अगस्त को बटेश्वर बाजार में आल्हा हो रही थी। दोपहर करीब दो बजे ककुआ उर्फ लीलाधर और महुआ आल्हा की जगह पर आये और भाषण दिया और लोगों को जंगलात कानून तोडने के लिये उकसाया। दो सौ लोग जंगलात के दफ्तर पर पहुंचे। मै अपने भाई के साथ भीड के पीछे-पीछे गया और बटेश्वर वन कार्यालय पहुंचा। मै और मेरा भाई नीचे रह गए और बाकी सभी लोग उपर चढ गए। महुआ और ककुआ को छोडकर, जो वहां थे, मै और किसी का नाम नही जानता। मुझे ऐसा लगा कि ईटे

गिर रही थी, मै यह नही देख पा रहा था कि कौन दीवार गिरा रहा था। लेकिन दीवार की ईटे जरुर गिर रही थी। मै अपने भाई के साथ माईपुरा के लिये चल पडा और भीड हमारे पीछे थी। उपर दिये गए लोगों ने जबर्दस्ती कांजी हाउस से बकरियों को निकाल दिया और भीड बिचकोली की तरफ चली गई। जंगलात के दफ्तर में दस बारह लोग थे। मै सौ गज की दूरी पर था। मैने कोई नुकसान नही किया। मैने सरकारी इमारत गिराने में कोई मदद नही की। इसके बाद हम अपने अपने घर चले गए।''

ककुआ उर्फ लीलाधर का कहना है कि वाजपेयी के बयान ने इल्जाम तैयार करने में पुलिस की बहुत मदद की। आन्दोलन के नेता ककुआ उर्फ लीलाधर को कुल पांच साल की सजा हुई। अगर उसकी उम्र 18 साल की न रही होती तो और कडी सजा दी गई होती। पूरे गांव पर दस हजार रुपयों का सामूहिक जुर्माना भी थोंपा गया। सिर्फ 23 दिनों में ही अटल बिहारी और प्रेमबिहारी छोड दिया गया। वाजपेयी की रिहाई आश्चर्यजनक है क्योंकि दूसरे लोगों को सजा हुई थी उनका बुनियादी जुर्म वे ''गैरकानूनी भीड में शामिल'' थे। तब वाजपेयी बंधू कैसे रिहा हो गए ? अटल बिहारी वाजपेयी के भाई प्यारे बिहारी वाजपेयी ने खुद बताया था कि उनके पिता ने उनकी रिहाई के लिये पुलिस व प्रशासन में उच्च अफसरों से ताल्लूकात साधा था। बटेश्वर की घटना पर मध्यप्रदेश संदेश में 1973 में प्यारे बिहारी बाजपेयी ने लिखा था ''गिरिजाशंकर वाजपेयी वाईसरॉय की काउंसिल के आला सदस्य थे। उनकी दखलंदाजी पर हम दोनों भाईयों को छोड दिया गया था।'' सन् 1974 में जनसंघ के मुखपत्र स्वदेश में वाजपेयी के बचाव में छपी अपनी टिप्पणी में अंबिकाप्रसाद वाजपेयी ने भी, जो 1942 में आगरा जेल में सिविल सर्जन था, यही लिखा था कि वाजपेयी बंधूओं की रिहाई इसलिये मुमकिन हुई थी क्योंकि उनके पिता, आगरा के तत्कालीन पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट से इसके लिये दखलंदाजी करा सके थे। उन्हे या उनकी ओर से किसी को माफीनामा या अच्छे आचरण का वचननामा भरना पडा हो। वाजपेयी की रिहाई न तो बिना शर्त थी और न ही सिर्फ सबूतों के अभाव में हुई थी, बल्कि अफसरों के साथ मिलिभगत से हुई थी। वाजपेयी ने मुल्क की आजादी के लिये नही बल्कि खुद की जेल से आजादी के लिये संघर्ष किया है। आरएसएस भारत के आजादी संघर्ष से अलग होने के बावजूद आरएसएस के नेता खुद को आजादी संग्राम के सिपाही ही नही प्रचारित कर रहे है बल्कि आजादी संग्राम को ही अगुआ करने की कोशिश करते रहे है। लालकृष्ण अडवाणी ने आजादी की पचासवी सालगिरह के मौके पर एक ''स्वर्णजयंती रथयात्रा'' निकाली जो आजादी की लडाई की विरासत को ही हडपने की कोशिश थी। (लोकलहर, 11 अप्रैल 2004)

ब्राह्मणों ने ब्राह्मण सत्ता को कायम रखने के लिये ही योजनाबध्द तरिके से भारत का विभाजन किया था। (विस्तार से जानने के लिये पढे हमारी किताब 'बहुजनों की आजादी के दुश्मन') बीडला जैसे पारसी उद्योगपतियों ने मुस्लिमों को भारत से भगाने तथा भारत को हिन्दु राष्ट्र बनाने की मांग सबसे पहले रखी। जी.डी. बीडला के भाई बी.एम. बीडला के वल्लभभाई पटेल को लिखे पत्र के अनुसार सभी इस बात पर राजी थे कि भारत के मुस्लिमों का जबरन धर्म परिवर्तन कराकर उन्हे हिन्दु बनाया जाये। (V.T. Rajshekhar, p.39-40, Mahatma Gandhi & Babasaheb Ambedkar,1989, DSA) काँग्रेस के ब्राह्मणवादी नेता सी. राजगोपालाचारी ने गांधी, नेहरु तथा पटेल को समझाया कि पाकिस्तान की निर्मिति के बिना भारत में ब्राम्हणवाद को कायम नही किया जा सकता। राजगोपालाचारी ने मुस्लिम लीग में प्रवेश लेकर पाकिस्तान की निर्मिति की मांग के समर्थन में राजनीतिक युध्द छेड दिया। गांधी तथा नेहरु ने भारत का विभाजन करने का

प्रस्ताव ऑल इंडिया काँग्रेस कमिटी में पारित कराने के लिये अपनी सारी ताकत लगा दी। (Dhananjay Keer, life & Mission of Dr. B.R. Ambedkar, p-395) पारसी पत्रकार एच.एम. सीरवाई ने भारत के विभाजन से संबंधित सारे सरकारी मिटींग के कथन, पत्रव्यवहार, तार (टेलिग्रॅमस्), टेलिफोन संभाषण इ॰ अपनी पुस्तक '' Partition of India - Myth & Reality" में देकर भारत विभाजन के लिये गांधी, नेहरु और पटेल को जिम्मेदार ठहराया है। (V.T. Rajshekhar, p.80-81, Why Godse killed Gandhi)

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने ऐलान किया था कि अब बंगाल के भद्रलोक (ब्राम्हण, बनिया, कायस्थ) क्रुर म्लेच्छ मुस्लिमों के राज्य में नही रह सकते। भद्रलोगों को अलग से अपना हिन्दुराज चाहिये। हिन्दु महासभा तथा काँग्रेस ने बंगाल के विभाजन के पक्ष में हस्ताक्षर अधियान छेड दिया। जे. बी. क्रिपलानी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, कॉ. विधानचंद्र रॉय इ॰ सभी इस अभियान को अपनी निगरानी में सफल बनायेंगे ऐसा तय हुवा। काँग्रेस की केन्द्रिय कमिटी ने बिना किसी विलंब के विभाजन के प्रस्ताव को लार्ड माउंटबेटन को भेज दिया। बार असोसिएशन के सदस्यों तथा अनेक गणमान्य ब्राह्मणवादियों ने बंगाल के विभाजन के लिये कॉन्स्टीटयुअंट असेंबली के चेअरमॅन डॉ. राजेन्द्रप्रसाद से अनुरोध किया। लगभग सभी भारतीय उद्योगपतियों ने विभाजन का समर्थन करते हुये विभाजन के लिये असिमित आर्थिक मदत उपलब्ध करायी। (Swapan Biswas, Gods, false Gods and the Untouchables, p. 184-185) मुस्लिम प्रतिनिधियों के न चाहते हुए भी बंगाल का विभाजन किया गया और तोहफे के तौर पर ये गैरमुस्लिम दलित-बहुल क्षेत्र पूर्व पाकिस्तान को सौंपे गए ताकि प. बंगाल में ब्राह्मणों की सत्ता कायम हो जाये। ब्राह्मणों ने ब्राह्मण सत्ता को कायम रखने के लिये मुस्लिम अल्पसंख्या वाले दलित बहुमत के जैसौर, खुलना, फरीदपूर, बरीसाल तथा चीटगांव क्षेत्र पाकिस्तान को जानबूझकर सौंप दिये ताकि बचे हुए बंगाल में ब्राह्मणों की सत्ता कायम हो जाये। इसके बावजूद आर्य ब्राह्मण खुद को राष्ट्रभक्त होने का तथा भारत की इंच इंच भूमि की रक्षा करने का झूठा ढिंढोरा पीटते है।

ब्राह्मणवादी नेताओं के नैतिक चरित्र का पता निम्न तथ्यों से हो जाता है। मान. स्वपन बिस्वास के अनुसार गांधी अपने ब्रम्हचर्य पर प्रयोगों में सत्तरी में प्रवेश करने के बावजुद भी लडकियों के साथ एक ही बिस्तर पर सोता था। (Swapan Biswas, Gods, False-Gods & the Untouchables, p. 267) नानी गोपाल दास के अनुसार सन 1944 में गांधी ने ब्रम्हचर्य पर प्रयोग करने शुरु किये जिसके अंतर्गत वह नग्न औरतों के साथ नग्न अवस्था में सोता था। गांधी के इन कारनामों का विस्तृत वर्णन पेज 55-56 नानी गोपालदास की किताब Was Gandhi a Mahatma, 1999, 17, Dattabad Rd. P.O. Bidhannagar (Salt lake), Calcutta- 700 064 में पढा जा सकता है। नानी गोपाल दास ने उन महिलाओं के नाम तथा संबंधीत लोगों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया है। वि. टी. राजशेकर ने भी इस बात को दोहराया है कि गांधी अपनी 19 वर्षीय पोती (Grand niece) मनु तथा अन्य स्त्रियों के साथ नग्न सोता था। उन्होने इस सिलसिले में और भी कई उदाहरण दिये है। (V.T. Rajshekhar, p.97, Why Godse killed Gandhi) गांधी के असली चरित्र का संपूर्ण पर्दाफाश मान. डॉ रामनाथ ने अपनी किताब 'राष्ट्रपिता गांधी या अम्बेडकर' में किया है। हमारी 'बहुजनों की आजादी के दूश्मन' नामक किताब में भी इसका संक्षिप्त विवरण पढा जा सकता है। जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था तथा वंशवाद के कट्टर समर्थक गांधी को दलितों, तथा काले लोगों के उध्दारकर्ता के रुप में ब्राह्मण ों व्दारा प्रचारित किया गया है। जिसका शिक्षा में कोई योगदान नही ऐसे अपने ब्राह्मण

राधाकृष्णन के जन्मदिन को ब्राह्मणों ने शिक्षक दिन के रुप में जबरन लाद दिया है। एक प्रसिध्द इतिहासकार ने इल्जाम लगाया है कि एस. राधाकृष्णन जैसा भ्रष्ट ब्राह्मण जो खुद को दार्शनिक समझता है, जातिवाद की हिमायत करता है और वर्णाश्रम के अनुसार मानव को चार जातियों में विभाजित करना न्यायपूर्ण समझता है। वह कहता है कि जातपांत का चलन एक अनुकरणीय व्यवस्था है। (बी. श्यामसुंदर, भू देवताओं का मेनिफेस्टो, p.73, संदर्भ Hinduism in the modern world by K.M. panikar, p.44-46)

लालकृष्ण आडवाणी की निजी सचिव रही उसकी बहू गौरी ने आडवाणी पर ससूर एवं बहू के रिश्ते को कलंकित करने जैसे संगीन इल्जाम लगाये। गौरी के मुताबिक इस इन्सान का पूरा व्यक्तित्व कलंकित, ढोंगी और कपटपूर्ण है, वह इन्सान किसी आदर व सम्मान के नही बल्कि घोर निंदा के लायक है। यह ऐसा इन्सान है, जिसका नाम, जिसकी धार्मिक भावनाएं, ईमानदारी, मन और दिमाग की शुध्दता, सब धोखा है। भारत का पूर्व उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री जो आज बीजेपी का अध्यक्ष बना हुआ है, उसने घर में मेरे साथ यानि अपनी पूत्र वधू के साथ अश्लील, अनैतिक और शर्मनाक काम किये और मेरे आत्मसम्मान, मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, नैतिक मूल्यों और मानवाधिकारों का पूरी तरह से बलात्कार किया। इन घटनाओं का मुझपर जो भावनात्मक आघात पहुंचा है, उसे मै आजतक चाहकर भी भुला नही पाई हुं। गौरी ने वाजपेयी को लिखे पत्र में कहा कि जिन बातों का जिक्र मै आज कर रही हुं, पहले भी आपको बता चुकी हुं, और आपको इन सब बातों का इल्म है। अगर ये बातें अवाम के सामने जा आये तो लोगों का सास और बहू के रिश्ते से भरोसा उठ जाएगा। ससूर होते हुए भी उसने इस रिश्ते की गरिमा कभी नही समझी और मुझे शारीरिक और मानसिक रुप से इस्तेमाल और प्रताडित किया। उसके साथ जो घटनाएं हुई, उनका वर्णन वह लफ्जों में करने में समर्थ नही है। आडवाणी के बारे में ये बातें ऐसी है जो आपसे (वाजपेयी से) छूपी नही है, और जिनसे हर देशवासी और हिंदू समाज का सिर शर्म से झुक जाएगा। पूरी पार्टी की छबी धूमिल हो जाएगी। पत्र में वाजपेयी से मार्मिक अपील करते हुए गौरी ने कहा कि बिजेपी की मर्यादा की हिफाजत करना अब आपके हाथों में है। आडवाणी सार्वजनिक जीवन में रहने लायक नही है इसलिये उसे पार्टी से निलंबित कर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये। (लोकमत समाचार, 28 नवंबर 2004) लालकृष्ण आडवाणी पर उनकी पूत्रवध ू गौरी ने शारीरिक शोषण का इल्जाम लगाया है। गौरी ने 28 अक्तूबर 2001 को इस ताल्लूक से पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज कराई थी। गौरी ने कहा कि लालकृष्ण अडवाणी ने उसे भेंट में मिली देवि, देवताओं की चांदी की मूर्तियों को गलाकर चांदी के बर्तन बनवा लिये थे। गौरी ने लिब्राहन आयोग के सामने अपनी गवाही में लालकृष्ण अडवाणी के भ्रष्ट्राचार में शामिल रहने के इल्जाम भी लगाए। गौरी के परिवार की निगरानी की जा रही है और उन्हे प्रताडित किया जा रहा है। (लोकमत समाचार, 2 दिसंबर 2004) अखबार ए नौ ने लिखा है कि गौरी ने लालकृष्ण आडवाणी के जुल्मों के बारे में अटल बिहारी वाजपेयी और संघ प्रमुख को पत्र लिखे। बरसों पहले पुलिस में एफआईआर भी दर्ज कराई। लिब्रहन आयोग में पेशी के दौरान भी अपनी व्यथा सुनाई। कहीं सुनवाई नही हुई। गौरी ने यह पत्र मीडिया तक भी पहूंचाया। चंद अखबारों ने ही खबर छापी और एक-दो टी.वी चैनलो ने प्रसारण किया। लालू यादव ने लोकसभा में यह मुट्टा उठ. ाना चाहा तो हंगामा किया गया। अडवाणी से अपनी जान को खतरा बताते हुए गौरी ने कहा कि जिस दिन आडवाणी गृहमंत्री बना उसने मुल्क छोड देना ही मुनासिब माना। (लोकमत समाचार, 13 दिसंबर 2004)

उपरोक्त उदाहरण चंद मिसाले मात्र है। ऐसे उदाहरणों की तादाद अनगीनत है।

कौटल्य और उसके अर्थशास्त्र का ब्राह्मणों व्दारा झूठा महीमामंडन और गुणगाण !

{अल्पसंख्यक} आर्य-ब्राह्मणों ने अपने जाति के झूठे नायक तैयार कर या किसी एक मामुली शखियत को महीमामंडित कर ब्राह्मणवाद को मजबूत करने का काम किया है। इसी नजरिये से चाणक्य के चरित्र का विश्लेषण किया जाना चाहिये।

ब्राह्मणों व्दारा चाणाक्य के अर्थशास्त्र का बडा प्रचार किया जाता है। वास्तव में यह किताब काफी बाद तैयार की गई है। इस किताब की हस्तलिखीत प्रति एक ब्राह्मण को गाय के तबेले से बरामद हुई और सन 1909 में इसे मैसुर के डॉ. श्याम शात्री ने प्रकाशित किया। (स्वपन के. बिस्वास, p.267)

क्या चाणक्य / कौटिल्य चंद्रगुप्त मौर्य के काल का था ?

कौटिल्य के अर्थशास्त्र नामक किताब में मौर्य साम्राज्य के बारे में एक भी उल्लेख नही है। मौर्य साम्राज्य से कोई उदाहरण प्रस्तुत नही किया गया है। चंद्रगुप्त मौर्य की राजधानी का या किसी समकालीन व्यक्तित्व का जिक्र भी नही है। चाणक्य कौटिल्य था तो इन सबका उल्लेख क्यों नही है ?(http://hubpages.com/Chanakya Was Not Kautilya.htm) मुद्राराक्षस में वर्णित कौटिल्य / चाणक्य चंद्रगुप्त मौर्य के काल में होने के सबूत न के बराबर है। मेगास्थेनेस (Megasthenese) जो चंद्रगुप्त के दरबार में 10 साल तक राजदूत थे ने अपनी किताब 'इंडिका' में चाणक्य का उल्लेख नही किया है। इराक के बेरोसस (Berrosus; 200 BC) जो ग्रीक में लिखते थे वे भी चाणक्य के बारे में मौन है। इससे यही साबित होता है कि चंद्रगुप्त के काल में चाणक्य का कोई अस्तित्व नही था। जबकि इस बात के सबूत है कि उसके व्यक्तित्व को ब्राह्मणवादी राजाओं तथा अन्यों ने गढ लिया। मुद्राराक्षस नामक नाटक चंद्रगुप्त मौर्य के 1200 साल बाद लिखा गया। ब्राह्मणों व्दारा विभिन्न माध्यमों से चाणाक्य के किरदार को निर्माण करने के पिछे का मकसद चंद्रगुप्त मौर्य की कामयाबियों का श्रेय चाणक्य नाम के ब्राह्मण को यानि अंततः ब्राह्मणों को देना है। चंद्रगुप्त मौर्य खुद ही इतनी काबिलियत रखते थे कि उन्हे चाणक्य जैसों की जरुरत नही थी।(http://rupeenews.com/Chan Akya _ Rupee News. htm) ब्राह्मणों ने सभी मूलनिवासी राजाओं, सम्राटों तथा समाज-नायकों इ. की कामयाबी के पिछे किसी न किसी ब्राह्मण को दिखाने की कोशिशें की है जो बेनकाब होती रही है।

स्वपन के॰ बिस्वास के अनुसार मुद्राराक्षस नाटक में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य को उसके ब्राह्मण महामंत्री चाणक्य के व्यक्तित्व को झुठी तारीफों के पुल बांधकर तथा मनगढंत कथायें गढकर झुठमुठ महान दर्शाने का प्रयास किया है। चाणाक्य व्दारा चंद्रगुप्त मौर्य को अन्य कर्मचारियों के समक्ष ''व्रीसल'' याने शुद्र कहते हुए दिखाया गया है। यहाँ तक कि चाणाक्य ने चंद्रगुप्त से बिना इजाजत लिए खुद ही ''कौमुदीपर्व'' जो राष्ट्रीय उत्सव का स्थान रखता था बन्द करा दिया और चंद्रगुप्त की हिम्मत नही हुई कि वह इस बारे में चाणाक्य से कोई सवाल करे। (स्वपन के. बीस्वास, p.265) {ऐसे अविश्वसनीय} ड्रामा को ऐतिहासिक दस्तावेज कतई करार नही दिया सकता। वर्ना 2000 साल बाद कहना

पडेगा कि हॅरी पॉटर इंग्लंड का राजा और डंबलडोर एक ज्ञानी व्यक्ति था।(http://www.orkut.com/orkut - Who was Chanakya.htm#Home)

यह बात सर्वमान्य है कि गुप्त के काल में पुराण इ. धर्मग्रंथों को दोबारा ब्राह्मण हितों की पूर्ति के लिये तथा गैरब्राह्मण धर्म-पंथों को नष्ट करने के मकसद से लिखा गया। कुछ पुराणों में चाणक्य / कौटिल्य का उल्लेख किया गया है।

विष्णु पुराण के मुताबिक कौटिल्य नाम का ब्राह्मण इन नंदाओं की हत्या करेगा। उनकी मौत के बाद मौर्य धरती पर राज करेंगे। कौटिल्य खुद चंद्रगुप्त को राजसिंहासन पर स्थापित करेगा। उसका बेटा बिंदुसार होगा। उसका बेटा अशोकवर्धन होगा। ऐसी ही भविष्यवाणियां भगवत, वायू तथा मत्स्य पुराणों में की गई है।(http://notapennyformythoughts.blogspot.in//Musings of an Unknown Indian The Genius of Chanakya, the Man of Destiny.htm) जाहिर है कि इन पूराणों में पहले से ही घटित घटनाओं को भविष्यवाणियों का रुप दिया गया है। कौटिल्य के काल्पनिक या मामुली चरित्र को जानबूझकर महीमामंडीत किया गया है। यह सब ब्राह्मणों ने गुप्त राजाओं के पूरे संरक्षण में किया है। दिगर धर्मो पर काबिज ब्राह्मणों ने साहित्य में चाणक्य / कौटिल्य को मौर्यकालीन स्थापित करने के लिये झूठे कथानक शामिल करने की कोशिश की है।

चाणक्य तथा कौटिल्य के बारे में शुध्द ऐतिहासिक सबूत नही है। जो भी जानकारी है वह काल्पनिक कहानियों से है। थॉमस बरो (Thomas Burrow) ने सूचित किया है कि चाणक्य तथा कौटिल्य दो अलग अलग व्यक्ति हो सकते है।(http://en.wikipedia.org/Chanakya - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) चाणक्य के बारे में यह कहा गया है कि वह तक्षीला शहर में रहता था और ब्राह्मण-पुत्र था। उसके न सिर्फ दांत टूटे हुए थे बल्कि उसके पांव इ. शरीर के अंगों में व्यंग होने से वह कुरुप दिखता था। इसी वजह से उसे कौटिल्य कहा गया।(http://kathakhyana.wordpress.com//The Legend of Chanakya and Chandragupta (Buddhist Version) _ kathA.htm) चाणक्य के जन्मस्थान को लेकर विवाद है। उसके जन्म को लेकर अलग अलग बातें कही गई है। कुछ लोगों के मुताबिक वह पाटलीपुत्र के चनक नामक ब्राह्मण का पुत्र था। {ब्राह्मणों व्दारा लिखे गए} जैन साहित्य अदबीधना चिंतामणी (Adbidhana Chintamani) में उसके जन्म को दक्षिण भारत में संभवता केरल में बताया गया है। थॉमस बरो के मुताबिक चाणक्य तथा कौटिल्य दो अलग अलग लोग हो सकते है।(http://www.sampurnabrahmansamaj.com/RajneetisamratCHANAKYA.htm)

दिव्यवदन (Divyavandana) में लिखा है कि अशोक ने दुष्ट मंत्रियों की बगावत को कुचल दिया। तारानाथ के कथन के मुताबिक चाणक्य नामक बिंदुसार के एक मंत्री ने 16 नगरों के सत्ता-प्रमुखों को नष्ट कर पूर्व तथा पश्चिम के समुद्र के बीच के क्षेत्र पर खुद की हुकुमत कायम की। इसके बाद अशोक की उजैनी के गवर्नर के रुप में नियुक्ति की गई।(http://storieswithasoul.wordpress.com/Maurya Empire – Emperor Ashoka the Great _ storieswithasoul.htm; http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) उपरोक्त उध्दहरणों क्या यह स्पष्ट नही है कि 1) चाणक्य का उल्लेख बिंदुसार के शासन काल का है न कि सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के काल का। बिंदुसार चंद्रगुप्त मौर्य के बेटे थे। चंद्रगुप्त मौर्य लंबे समय तक राज करने के बाद अपने 22 साल के बेटे बिंदुसार को राजगद्दी सौंपकर जैन धर्म की परंपरा के मुताबिक अपने जींदगी के आखरी दिन श्रमण के रुप में बिताने दक्षिण भारत चले गए। 2) अगर वयस्क चाणक्य ने युवा चंद्रगुप्त मौर्य को राजगद्दी पर बिठाया तो चंद्रगुप्त मौर्य व्दारा राजगद्दी

अपने 22 वर्ष के बेटे के हाथों सौंपकर जैन मुनि बनने तक तो चाणक्य ने मौत के कगार तक पहुंचने इतना बुढा होना चाहिये। 3) बिंदुसार का बेटा अशोक था। जिस वक्त चाणक्य 16 क्षत्रपों का तख्ता पलटकर खुद उस क्षेत्र पर काबिज हुआ था उस वक्त अशोक की उम्र के 18 साल भी मान ले और उसे उसमें जोड दे तो सवाल पैदा होता है कि क्या चाणक्य इतनी लंबी आयु तक जीवित रह सकता था ? स्पष्ट है चाणक्य बिंदुसार के काल का था न कि चंद्रगुप्त मौर्य के काल का। 4) उपरोक्त उध्दरणों से पता चलता है कि बिंदुसार के राज्य में चाणक्य एक बगावती दुष्ट कुटील मंत्री था। शायद इसी वजह से उसे कौटिल्य कहा गया। 5) यह स्पष्ट होता है कि अशोक ने चाणक्य के विद्रोह को कुचल दिया था। 6) ब्राह्मणों व्दारा लिखे गए इतिहास के कई व्यक्तित्व काल्पनिक है। ब्राह्मणों ने दो अलग अलग व्यक्तित्वों को मिलाकर एक बडे व्यक्तित्व का निर्माण भी किया है। इसका एक उदाहरण चाणक्य और कौटिल्य है। कालिदास के नाम पर कई लेखकों के साहित्य दिखाकर उसे महान बनाने की कोशिश की गई है।

चाणक्य कौटिल्य नही है। दो लोगों को एक ही व्यक्ति के रुप में पेश कर चाणक्य के व्यक्तित्व को महान बनाया गया है।(http://rupeenews.com/Jainism myth of the Jain monk Chan Akya _ Rupee News.htm)

श्रमण धर्म-पंथों से नफरत करने वाला कथित चाणक्य
श्रमण धर्म के चंद्रगुप्त मौर्य का मंत्री कैसे हो सकता है ?

अर्थशास्त्र में कौटिल्य मूलनिवासी धर्म-पंथों को व्रसला या पसंडा (Vrsala or pasanda) संबोधित करता है। वह कहता है कि उनकी बस्ती स्मशान के अंत में या उसके पास होनी चाहिये। कौटिल्य श्रमण धर्म-पंथ के किसी को धार्मिक भोजन के लिये आमंत्रित करता है तो उसपर भारी आर्थिक जुर्माना लागू करता है। (Looking for a Hindu Identity Dwijendra Narayan Jha) कौटील्य / चाणक्य ने ऐसे व्यक्ति के खिलाफ 100 पाना दंड की सीफारीश की है जो बौध्दों, अजिवकों, शुद्रों या निष्काषित किये गए व्यक्ति के साथ भोजन करता है। कौटील्य के अर्थशास्त्र में लिखा गया है कि गैर वेदिक समुदायों को गांव के बाहर स्मशान घाट के पास बसाना चाहिये।

कौटिल्य बौध्द, जैन इ. सभी श्रमण धर्म-पंथों से घोर नफरत करता था। उसने श्रमण धर्म-पंथों को प्रताडित करने के लिये लिखा कि वानप्रस्थ के अलावा कोई भी सन्यासी, स्थानीय लोगों अलावा और कोई समुह तथा स्थानीय लोगों के अलावा कोई भी संगठन गांवों अथवा राज्य में प्रवेश नही करेंगे। (Shama Sastry, Arthasastra, p.54, quoted by Swami Dharmatirtha, p. 107) इस तरह बौध्द भीख्खु तथा उनके संघ गांवों में कानूनन नही रह सकते। (Dharmatirtha, p.107) चाणक्य घोर स्त्री विरोधी था।

चाणक्य नीति के अपने दूसरे अध्याय की शुरुआत में चाणक्य कहता है कि झूठ बोलना, बिना सोचे समझे काम करना, दुस्साहस, धोखेबाजी, मूर्खता, लालच, अशुध्दता और क्रूरता औरतों के मूलभुत गुणधर्म है।(Anritam Sahasam Maya Murkhatramatilubdha Ashochatvam Nirdayatvam Strinam Dosha Swabhavaja) चाणक्य नीति के चौदहवे अध्याय में कहा गया है कि आग, पानी, औरत, मूर्ख, सांप तथा राज घराना इन से बचकर रहे। वे घातक सिध्द हो सकते है। (Agnirapa Striyo Murkha Sarpa Rajkulani Ch Nityam Yatyen Seryani Sadhya Pranharaani Shat) चाणक्य पहले अध्याय में कहता है कि हमने नाखून वाले जानवरों से, तेज सिंगों वाले जानवरों से, नदियों से, सशस्त्र लोगों से, औरतों तथा राज घराने के लोगों से बचकर रहना चाहिये। चाणक्य के

मुताबिक कवि कुछ भी कल्पना कर सकता है जबकि औरतें कुछ भी कर सकती है जैसे पियक्कड या कौवे कुछ भी बोल सकते है और कुछ भी खा सकते है। (Kavaya Kim Na Pashayanti Kim Na Kurvanti Yoshitah. Madhyapa Kim Na Jalpanti Kim Na Bhakshanti Vayasa.; (http://www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm) चाणक्य की नजर में औरत उपभोग की चीज है। चाणक्य के मुताबिक हमने मुसिबत के समय के लिये कुछ पैसे बचाकर रखने चाहिये। अगर पैसे खर्च भी हो तो औरत की रक्षा करनी चाहिये लेकिन जहां खुद की रक्षा का सवाल है औरत को त्याग देना चाहिये। (http://www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm)

कौटिल्य के काल में अगर कोई स्त्री दूराचार की दोषी पायी जाती है तो उसके यौन अंगों को काट कर उसे मौत दी जाती थी।(Artha.IV.13 cited in Jain p.164) कौटील्य ने स्त्री के दूराचार की व्याख्या इतनी अस्पष्ट रखी है कि उसे शादी-पूर्व लैंगिक संबंध, विवाह के बाद के लैंगिक संबंध तथा विवाह के बाहर के लैंगिक संबंध इन सब के लिये स्त्री के यौन अंगों को विकृत कर उसे मौत दी जाती थी। कौटिल्य के ये कानून सिर्फ किताब तक ही सिमित नही थे बल्कि समाज में इनका पूरा पूरा पालन किया जाता था। Genocide of Women in Hinduism by Sita Agarwal http://www.pakistanaffairs.pk// Is Hinduism Misogynistic - Page 5.htm) कौटिल्य के मुताबिक कोई भी पत्नि अगर पति की मर्जी के बिना उपवास भी रखती है तो वह अपने पति की उम्र को कम करती है। ऐसी औरत नर्क जाती है और उसे नर्क में भयानक यातनाएं दी जाती है।(http:// www.merinews.com/Was Chanakya a misogynist.htm) उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि चाणक्य श्रमण जैन धर्म को मानने वाले सम्राट चंद्रगुपत मौर्य के दरबार का सदस्य कतई नही हो सकता। बौध्द, जैन, अजिवक इ. मूलनिवासी धर्मो के खिलाफ उत्पीडन व उन्मूलन अभियान पुष्यमित्र शुंग, गुप्त साम्राज्य इ. के काल में किये। पुष्यमित्र शुंग इ. के काल में लगाये गए प्रतिबंधों का उल्लेख कौटील्य / चाणक्य के नाम से कथित अर्थशास्त्र में जानबूझकर शामिल किया गया है।

चाणक्य का अर्थशास्त्र कब लिखा गया ?

हिल्लेब्राडट तथा केथ (Hillebrandt and Keith) के मुताबिक कौटिल्य के नाम से एक पूराना ग्रंथ था। मौजूदा ग्रंथ उसी ग्रंथ को बाद के लोगों ने बार बार संशोधित कर विकसित किया है। इस ग्रंथ के काल को लेकर बडे विवाद है। विंटरनिटझ, जॉली, केथ तथा भांडारकर (Winternitz, Jolly, Keith, and Bhandarkar) इ. के मुताबिक यह ग्रंथ गुप्त काल के आखरी दौर का है जो बहुत ज्यादा तर्कसंगत है। (http://hubpages.com/ Chanakya Was Not Kautilya.htm) मुद्राराक्षस नाटक भी गुप्त काल में ही लिखा गया। गुप्त काल में ही धर्म साहित्य में व्यापक धोखाधडीयां की गई। वात्स्यायन के कामशास्त्र का कौटिल्य के अर्थशास्त्र से करिब का संबंध है। जॉली (Jolly) के मुताबिक इन दो ग्रंथों के निर्माण में समय का बहुत ज्यादा अंतर नही है। उनके मुताबिक यह ग्रंथ शायद इसवी तीसरी शताब्दी में लिखे गए। अमेरिकन इंडोलॉजिस्ट थॉमस आर. ट्राउटमन ने 1970 के दशक में कौटिल्य के अर्थशास्त्र के भाषीक गुणधर्मो का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि कौटिल्य का अर्थशास्त्र ईसवी तीसरी शताब्दी में लिखा गया। अगर कौटिल्य ईसवी तीसरी शताब्दी में था तो चाणक्य और कौटिल्य के काल का कुल फर्क 600 सालों का होता है।(http://hubpages.com/Chanakya Was Not Kautilya.htm) कई स्कॉलर्स का मानना है कि अर्थशास्त्र कई लेखकों व्दारा सतत विकसित किया है

जिनमें से एक शायद चाणक्य / कौटिल्य है।(http://en.wikipedia.org/Chanakya - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) शायद अर्थशास्त्र को लगातार संशोधित कर गुप्त काल में अंतिम रुप दिया गया। (Shama Sastry, Arthasastra, p.54, quoted by Swami Dharmatirtha, p. 107) {प्रचारित किया गया है कि} यह हस्तलिखित 1904 ईसवी में श्यामशास्त्री नामक लायब्ररियन को मैसूर की ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीटयुट की लायब्ररी में मिली। उसी ने इस संस्कृत किताब का भाषांतर तथा संपादन 1909 में यानि किताब मिलने के बाद पांच सालों तक किया। श्यामशास्त्री वेदिक ब्राह्मण था और उसका परिवार संस्कृत का जानकार माना जाता था। जाहीर है कि चाणक्य का पूरा चरित्र ही ब्राह्मण हित के मुताबिक ढाला गया है। मूल चाणक्य / कौटील्य को ब्राह्मण-हीत में तिल का ताड बनाया गया है।

खुद को श्रेष्ठ दिखाने आर्य-ब्राह्मणों के मिथक (Myths) !

अलबिनो-निन्डरथालवंशी आर्य अपनी हीनता की भावना पर मरहम रखने के लिये मनगढंत सिध्दांत गढकर प्रचारित करने में लगे है कि उनकी संस्कृति बेहद विकसित और उन्नत थी। आर्यो के इन मिथकों में 1) अटलांटिस का मिथक, 2) व्रिल का मिथक, 3) शंबाला का मिथक 4) प्राचीन परग्रह-यात्रियों का मिथक इ. का मिथक शामिल है। इन मिथकों की काल्पनिक बुनियाद पर दावा किया गया है कि विश्व के काले अफ्रिकावंशी मूलनिवासियों ने अतिभव्य शिल्पों का निर्माण खुद नही किया बल्कि ये काम परग्रह के अतिविकसित यात्रियों ने किये है। खुद को इन प्रजातियों के वंशज बताकर मूलनिवासियों की उपलब्धियों को खुद का बताकर आर्य प्रजाति का महीमामंडन करने के मकसद से ये मिथक बनाये गए है। इन मिथकों के निर्माण में इल्युमिनॅटी के थिऑसाफीकल सोसायटी इ. संगठनों का बहुत बडा योगदान रहा है।

प्राचीन परग्रह-यात्रियों का मिथक !

ग्रेग लॅडन (Greg Laden) ने (in Myers' summary) में कहा है कि परग्रहियों से संबंधित सभी मिथकों में वंशवादी भावनाएं है। इनका मकसद मूलनिवासियों को हीन या निकृष्ट दर्शाना है। इन मिथकों के माध्यम से उन्होने हर विकसित मूलनिवासी संस्कृति को इन काल्पनिक अतिमानवों की देन प्रचारित किया है।(http://www.jasoncolavito.com/Ancient Astronauts and Racism - JasonColavito_com.htm) विज्ञान कभी झूठे सबूत गढकर दावे नही करता। फॉक्स नेटवर्क हिस्ट्री चॅनल की मालिक है। कुछ खास बातों को प्रचारित करना इस चॅनल का स्वार्थ है। प्राचिन परग्रह के यात्री (Ancient Aliens) टी.वी. सिरियल का यही मकसद है। वॉन डेनिकेन (von Däniken) ने 'परग्रह के यात्रियों के सिधान्त के समर्थन में गढे गए अंतरीक्ष यानों के चित्र वाले गढे गए बर्तनों के चित्रों को सबूतों के तौर पर पेश किया। दावा किया कि ये बर्तन बायबल काल के

पुरातत्वीय स्थल से प्राप्त हुए। लेकिन पीबीएस टेलिविजन सिरियल नोवा (Nova) ने साबित किया कि यह एक धोखाधडी है। उन्होने इन बर्तनों को बनाने वाले कारीगर को भी खोज लिया। नकली सबूतों का पर्दाफाश हुआ तो वॉन डेनिकेन ने बेशर्मी से दलील दी कि सबूत दिखाने के बाद ही लोग परग्रह के यात्रियों पर भरोसा करते इसलिये ध ोखाधडी जरुरी थी। आर्य खुद को श्रेष्ठ साबित करने के लिये कोई भी झूठा सबूत गढने में नही हिचकते। अपने वंशवादी मिथकों को प्रचारित करने के लिये उन्होने वैज्ञानिक नामों से वेब साईटस् तक बनाई है ताकि उनके झूठ को विज्ञान का सत्य कहा जा सके।

अटलांटिस का मिथक !

अटलांटिस का उल्लेख सबसे पहले प्रसिध्द दार्शनिक प्लॅटो व्दारा लिखित Timaeus तथा Critias में लिखा गया कि ईसापूर्व 9600 में वह पृथ्वी की वह सबसे ज्यादा विकसित अतिप्राचीन सभ्यता थी। उनके पास एक बहुत शक्तिशाली नेवी थी। प्राकृतिक विपदा की से अटलांटिस व्दीप समुद्र में डूब गया। यह व्दीप अटलांटीक समुद्र को मेडिटेरिनियन समुद्र से मिलने वाले जिब्राल्टर के संकरे भूभाग के पास है। प्लॅटो के वर्णन के मुताबिक अटलांटीस एशिया मायनर से बडा महाव्दीप था। इसे खोजने के कई अभियान चलाये गए। ऐसे अभियान सन् 2002 तथा 2011 में भी चलाये गए।(http://hubpages.com//Where Was Atlantis.htm) प्राचीन इतिहास में अटलांटीस के संबंध में कहीं कोई उल्लेख नही है। प्लॅटो के अलावा अटलांटीस का उल्लेख सिर्फ बाद के काल्पनिक उपन्यासों में किया गया। कई लोगों {वंशवादियों} के लिये अटलांटीस की कल्पना सुहावनी थी। इसलिये वे अटलांटीस के अस्तित्व पर भरोसा करते थे।(http://www.jasoncolavito.comWhy the Discovery of Troy Is a Bad Analogy for Finding Atlantis - JasonColavito.com.htm) इस मिथक को सच बताने कई किताबें लिखी गई :- 1) Survivors of Atlantis: Their Impact on World Culture 2) Atlantis Encyclopedia 3) Edgar Cayce on Atlantis (Edgar Cayce Series) 4) Atlantis: The Lost Empire (2-Disc Collector's Edition) 5) The Destruction of Atlantis: Compelling Evidence of the Sudden Fall of the Legendary Civilization 6) Ancient Mysteries - Atlantis: The Lost Civilization 7) Man: 12,000 Years Under the Sea: A Story of Underwater Archaeology (http://hubpages.com// The Existence of Atlantis and Piri Reiss.htm)

मियामी के इजिप्टोलॉजी सोसायटी के अध्यक्ष आरोन डू वाल ने ऐलान किया कि उनकी समुद्र के भीतर खोज करने वाली टीम ने बियामी समुद्र के भीतर 12,000 साल पहले के मंदिर के अवशेष खोजे है। डू वॉल ने कहा कि हम अभी से नही कहते कि यह अटलांटिस है, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि ये अवशेष केयसे (Cayce) की भविष्यवाण ी से तथा प्लॅटो के वर्णन से मिलते है। यहां तक कि धातु मढी हुई दीवारों तक से। इतना बताकर बिमिनी अवशेषों के बारे में डू वॉल ने चुप्पी साध ली। उसने उनके निश्चित स्थल की सुरक्षा को खतरा पैदा होगा कहकर स्थल नही बताया। अपनी खोजी टीम के सदस्यों के नाम भी नही बताये। डू वॉल ने वादा किया कि समय आने पर एक प्रेस कांन्फ्रेस लेकर इन अवशेषों के चलचित्र तथा तस्वीरें दिखाएगा। माया अंडरवाटर रिसर्च सेंटर के अंडरवाटर पुरातत्व वैज्ञानिक डॉ. पॉल पीट्टेन्नूड (Dr. Paul Pettennude) ने डू वॉल की इन घोषणाओं के खिलाफ तीव्र प्रतिक्रिया दी। उन्होने कहा कि 1) बिमिनी कोई अज्ञात क्षेत्र नही है। इस क्षेत्र में हजारों गोताखोर हर साल आते रहे है। उन्होने इस समुद्र के तल की इंच इंच जमीन खंगाली है। 2) मेलबोर्न, फ्लोरिडा की हार्बर ब्रांच

ओसियनोग्राफिक इंस्टीटयुट तथा युनिवर्सिटी ऑफ मियामी की रोसेन्टीएल स्कूल ऑफ ओसियनोग्राफी (Rosenteil School of Oceanography) के पास अत्याधुनिक उपकरण है जिनकी मदद से इस क्षेत्र के समुद्र को पहले ही खोजा जा चुका है। ज्ञात डूबी हुई चिजों के अलावा कुछ नही मिला है। 3) सन् 1986 में नासा ने अपने चॅलेंजर शटल के टूटे हुए टूकडों को खोजने के लिये क्युबा से लेकर कॅरोलिना के उत्तर तक के समुद्र क्षेत्र के तल को खंगाल लिया था। 6000 फीट गहरे समुद्रतल में खाने की प्लेट से बडे किसी भी टूकडे को अच्छी तरह से जांचा गया था। 4) अमेरिका की नेवी SOSUS नामक तकनीक का इस्तेमाल करती है जो किसी भी अनजान लोगों व्दारा समुद्र के तल पर आने की फौरन खबर कर देती है। वह संपूर्ण तल से उपर तक के चित्र भेजती है। इस तकनीक पर अमेरिका 16 बिलीयन डॉलर खर्च करता है। 5) बिमीनी के 300 फीट के समुद्र तल का क्षेत्र 14000 साल पूराना है। पानी का यह स्तर शीत युग के अंत से बढा है। यहां कोई भी डूबा हुआ शहर होने का सवाल ही पैदा नही होता क्योंकि बहामा के व्दीप डूब नही रहे बल्कि वे हर साल कुछ इंच उभर रहे है। यह स्थिति किसी भी प्राचीन शहर को अस्थिर कर सकती थी। 6) विशेष गोताखोर वायू के बिना गोताखोर 250 फीट गहरे पानी के नीचे नही जा सकते। सारी दुनियां में सिर्फ चंद लोगों के पास ही इतने भीतर जाने का प्रशिक्षण है। इसके लिये उन्हे प्रमाणित किया गया है। इनमें से एक मै भी हुं। यह समुह एक-दूसरे के सदैव संपर्क में रहता है। किसी ने भी किसी प्राचीन शहर के खोजे जाने की जानकारी नही दी है। झूठमूठ ही 'बिमिनी रोड' 1968 में उनके मियामी युनिवर्सिटी के प्रोफेसर जे. मॅनसन व्हलेंटाईन (J. Manson Valentine) व्दारा खोजे जाने की झूठी बात कही थी। समुद्र तल पर जो स्तंभों के तुकडे नजर आते है वे सिमेंट के बॅरल तथा ऐसी ही चिजों से बने है। ये चिजें जहाजों से समुद्र में डूबकर जमकर सख्त हो गई, बॅरलों का लकडी का खोल सडकर अलग होने से ये स्तंभ बने। इसतरह पर्दाफाश होने के बाद डू वॉल ने अपनी 25 जुलाई 1997 को आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस अंतिम समय में रद्द कर दी। उसे 8 अगस्त 1997 को लेने की घोषणा की लेकिन उसे फिर से स्थगित कर दिया। कोई प्रेस कॉन्फ्रेन्स लेने की कोई जानकारी नही है।(Source: http://www.greatdreams.com/bermuda.htm; http://www.world-mysteries.com//World Mysteries - Mystic Places - Atlantis.htm)

अटलांटीस खोजे जाने के कई दावे झूठे साबित हुए। सन् 1997 में रुसी वैज्ञानिकों ने अटलांटीस मिलने का दावा किया जो झूठ साबित हुआ। तीन साल बाद काले समुद्र में तुर्की के उत्तर के समुद्र में 300 फीट की गहराई में एक नगर के अवशेष पाये गए। वह अटलांटिस नही था। अमेरिकन आर्किटेक्ट ने सन् 2004 में सोनार तकनीक से सायप्रस तथा सीरीया के बीच के मेडिटेरीनीयन समुद्र में एक मील की गहराई में इन्सानों व्दारा निर्मित दीवारों के पता लगने की बात कही। सन् 2007 में स्वीडन के शोधकर्ताओं ने दावा किया कि उन्होने उत्तरी समुद्र में डॉग्गर के किनारे ब्रांझ युग में डूबे एक शहर का पता लगाया। फरवरी में आलेख जैसी रेखाएं जो किसी सडकों की तरह लगती थी वे गुगल अर्थ कार्यक्रम के जरिये अफ्रीका के समुद्र किनारे से दूर देखी गई। इसे भी अटलांटीस खोजे जाने के रुप में प्रचारित किया गया लेकिन खुद गुगल ने इन दावों का खंडन करते हुए कहा कि ये रेखाएं उनकी शोध में इस्तेमाल बोटों व्दारा पानी पीछे फेंके जाने से पैदा हुई लकीरें है।(http://rolandsanjuan.blogspot.in/Roland San Juan Has the real lost city of Atlantis finally been found... buried under mud flats in Spain.htm)

थूले (Thule) का मिथक !

दावा किया गया कि थूले नामक स्थल में अतिविकसित इन्सानों की एक प्रजाति रहती थी। अपनी अलौकिक आत्मिक, जादूई ताकतों से थूले प्रजाति के लोगों का प्रत्यक्ष संबंध अंतरीक्ष से था। वे बीसवी शताब्दी के विज्ञान से भी ज्यादा विकसित उन्नत विज्ञान जानते थे। हिटलर को थूले की कल्पना आकर्षक लगी। उसे लगा कि वह थूले की ताकत के इस्तेमाल से जर्मनी को सबसे ताकतवर बनाएगा। अटलांटीस के अपने नार्डीक आर्यवंश की शुध्दता को संजोकर नयी उन्नत आर्य-प्रजाति पैदा करेगा।(http://en.wikipedia.org/Thule - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) हिटलर के साथियों को पूरा भरोसा था कि थूले के लोग आर्यवंशी थे। 19 वी शताब्दी में ओएरा लिंडा की किताब Cornelis Over de Linden को प्राप्त हुई। इसमें थूले की जानकारी दी गई थी। उनके इस विश्वास को इस किताब से बल मिला। इस किताब का सन् 1933 में जर्मनी में भाषांतर किया गया। यह किताब हेनरिच हिमलर की प्रिय किताब थी। जबकि इस किताब की संकल्पनाओं को बहुत पहले ही नकारा जा चुका था। लेकिन हिटलर तथा उनके साथियों का दृढ़ विश्वास था कि थूले अटलांटीस की तरह ही आर्य लोगों की संस्कृति का केन्द्र स्थल था।(http://ultima0thule.blogspot.in//Ultima Thule The search for Thule - the story behind this blog.htm) पायथीस (Pytheas) नामक सैलानी ने british isles के उत्तर में छह दिन के समुद्र प्रवास पर थूले पाने का दावा किया था। इस दावे को स्ट्राबो (Strabo) ने सरासर झूठा दावा करार दिया। बीसवी शताब्दी में हवाई जहाजों से तथा बर्फ पर जाने वाले वाहनों से उत्तरी ध्रुव के सारे क्षेत्र को खंगाला जा चुका है। थूले के कहीं दर्शन नही हुए। व्दितीय विश्व युध्द में उत्तरी ध्रुव का क्षेत्र युध्दभूमि का हिस्सा था। सन् 1950 में अमेरिका की वायू सेना ने उत्तरी ग्रीनलँड में 'थूले एअर बेस' कायम किया। इन सबके बावजूद थूले कहीं नही मिला।(http://www.commondreams.org//The Lost Land of Thule A Legend Melts Away.htm)

अगार्था तथा शंभाला का मिथक !

अगार्था तथा शंभाला मिथक के मुताबिक अगार्था पृथ्वी के केन्द्र-स्थल में बसा हुआ अतिउन्नत प्रजाति का शहर है। इस भूगर्भ में बसे शहर में कई मिलियन लोग रहते है। वहां सर्वशक्तिमान तथा सबसे ज्ञानी शासक राज करता है।

तिब्बती तंत्रयानी लामाओं का विश्वास है कि शंभाला अगार्था की राजधानी है जहां Rigdenjyepo 'दूनिया का राजा' राज करता है। Roerich को ऐसा विश्वास था कि तिब्बत की राजधानी ल्हासा शंभाला से भूमिगत सुरंगों के जरिये जुडी हुई है। उसने यह भी दावा किया कि इन्ही सुरंगों के जरिये गीझा के विश्व-प्रसिध्द पिरॅमिड तक पहुंचा जा सकता है। इजिप्त के पॅरोहाओं का अलौकिक लोगों से शंभाला के दूतों के माध्यम से संपर्क था। वॅरेन स्मिथ ने अपनी किताब 'This Hollow Earth' में इन्ही बातों को प्रचारित किया है। अगार्था तथा शंभाला की कल्पना पर ही मॅट्रीक्स (Matrix) नामक अंग्रेजी फिल्में बनी है। पाताल लोक की कल्पना बहुत प्राचीन है। बॉन धर्म ग्रंथों में भी Olmolungring नामक भूगर्भीय शहर की कल्पना है। तिब्बती तंत्रयानीयों का शंभाला मिथक ब्राह्मणों के महाभारत तथा पुराणों में वर्णित शंभाला के कालकी मिथक पर आधारित है। तिब्बती लामाओं के कालचक्र की भविष्यवाणी यह है कि जब दुनिया लालच और युध्दों में जुट जाएगी तब 25 वा कालकी राजा शंबाला से अपनी विशाल सेना के

साथ प्रकट होगा। सभी काली ताकतों का विनाश करेगा। तंत्रयानी लामाओं के मुताबिक यह समय इसवी 2425 वर्ष है। शंभाला की कल्पना 1930 के दशक में कई सायन्स की काल्पनिक उपन्यासों में भी की गई है। 19 वी शताब्दी के आखरी हिस्से में थीआसॉफिकल सोसायटी की संस्थापक एच. पी. ब्लावटस्की ने शंभाला मिथक को दुनियाभर में प्रचारित किया। दुनियां भर के तंत्रयानियों तथा अलौकिक ताकतों पर भरोसा करने वालों के लिये शंभाला आकर्षण का केन्द्र बन गया। ब्लावटस्की की शिष्य ॲलिस ए. बेले (Alice A. Bailey) के मुताबिक शंभाला धरती के इथरिक (etheric) स्तर की आध्यात्मिक वास्तविकता है। शंभाला के इस आध्यात्मिक केन्द्र का धरती पर दैवी शासक सनत कुमार है। निकोलस तथा हेलेना रोईरिच (Nicholas and Helena Roerich) ने शंबाला की खोज के लिये सन् 1924-1928 के बीच खोजी अभियान चलाया। हेनरिच हिमलर तथा हेस ने भी सन 1930 में तथा बाद में 1934-35 के दौरान तथा 1938-39 के दौरान शंभाला की खोज के अभियान चलाये।(http://en.wikipedia.org/Shambhala - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

शुध्द आर्य-वंश का मिथक !

पर्शियन, मिडियन तथा पार्थियन जब सर्वप्रथम इन क्षेत्रों में आये थे और सैनिक के तौर पर तथा जानवरों की देखभाल करने वालों के तौर पर सेवा करते थे तब उन्होने स्थानीय लोगों से विवाह संबंध कायम किये। जब पर्शियन लोगों ने अपना खुद का साम्राज्य कायम किया उस वक्त वे स्थानीय मूलनिवासी इरानी लोगों तथा आर्यो की संकरित प्रजाति में बदल चुके थे।(http://www.iranologie.com/History of Iran.html) बेंजामिन वाकर (Benjamin Walker) के मुताबिक आर्यो तथा स्थानीय मूलनिवासियों के बीच लंबी प्रक्रिया में वैवाहिक संबंध कायम हुए। आर्य धर्मग्रंथों में आर्यो के देवि-देवताओं के साथ स्थानीय देवि-देवताओं के विवाह बताये गए है। ऋग्वेद में इस बात का दुख प्रकट किया गया है कि काले और गोरे लोगों के बीच विवाह हो रहे है। ऋग्वेद की एक प्रार्थना के मुताबिक 'ओ इंद्र इस बात को तय करो कि कौन आर्य है और कौन दास है और उन्हे एक-दूसरे से अलग करो।' अथर्व वेद के दूसरे एक श्लोक में कहा गया है कि इंद्र के खुद असूर स्त्री से संबंध थे। संडासवीर जैसी उपाधी से विभूषित संघपरिवार के आदर्श ब्राह्मणवादी तक का मानना है कि आर्यो तथा मूलनिवासी नाग-द्रविडों के बीच वैवाहिक संबंध कायम हुए। व्यापक तौर पर पर्शियन, ग्रीक, सिथियन, चीनी, तथा मध्य एशिया के लोगों के बीच वैवाहिक संबंध कायम हुए। अलेक्झांडर के भारत में आने के बाद ग्रीक तथा भारतीय मूलनिवासी लोगों के बीच विवाह संबंध कायम हुए। कई मेसोडेनियन सैनिकों ने स्थानीय औरतों से विवाह किये। चंद्रगुप्त मौर्य ने खुद सेलेउकस (Seleucus) परिवार की ग्रीक राजकन्या से शादी की। कई ग्रीक भारत में स्थायीक हुए। उन्होने भारतीय औरतों से शादियां की। भारत के रईस मूलनिवासियों व्दारा कई शताब्दियों तक ग्रीक औरतें खरीदकर भारत लाई जाती रही है। भारत में ईसापूर्व दूसरी शताब्दी तक युरोपियन औरतों की खरीदी-बिक्री का व्यापार जोरों पर था। के. एम. पानिकर के मुताबिक भारतीय लोगों का वंश संकरित यानि संमिश्र है। भारतीय लोगों में हर वंश समूह के लोग जैसे कि कॉकॅशियन यानि आर्य, मेडिटेरिनियन यानि द्रविडन, आस्ट्रीक, सेमेटिक, मंगोलाईड, तथा निग्रो सभी समुदाय पाये जाते है। पंजाब तथा गंगा की घाटी में संकरित आर्य-वांशिकता की मात्रा ज्यादा है जबकि अन्य क्षेत्रों में यह कम तथा नही के बराबर है। सातवी शताब्दी में भारत के मलबार इ. पश्चिमी समुद्र के किनारों पर

अरब तथा पर्शियन व्यापारियों ने बसना शुरु किया। उन्होने स्थानीय भारतीय मूलनिवासी महिलाओं से विवाह किया। मूगलों ने स्थानीय लोगों से वैवाहिक संबंध कायम किये। पठान, खिलजी, तुर्की तुघलक, अरब सैयद, अफगान लोधी, जार्जियन, बिजापूरी इन सभी ने भारतीय राजपरिवारों से वैवाहिक संबंध कायम किये। अकबर ने विशेष तौर पर अंर्तधर्मीय विवाहों पर जोर दिया। भारत में अंग्रेज, फ्रेंच, डच तथा डॅनिश वसाहतवादी आये। उन्होने भारतीय औरतों से विवाह किये। तमाम विदेशियों के विवाह अक्सर भारत की कथित उच्च जातियों या उच्चपदस्तों के बीच हुए है।

भारत में मंगोल वंशियों का प्रभाव भी काफी महत्वपूर्ण तथा व्यापक रहा है। मोहेंजोदारों में बर्तन इ. पर मंगोलियन शारीरिक बनावट के चित्र पाये गये है। वेद, महाभारत, पुराण इ. में कई लोगों के नाम तथा रितिरिवाज दिये है जो मंगोल वंश से संबंधित है। आर्यो के वंश की शुध्दता एक झूठी संकल्पना है। डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक वांशिकताओं का अध्ययन करने वालों का निष्कर्ष है कि दुनिया के किसी भी हिस्से में शुध्द वंश कहीं भी अस्तित्व में नही है क्योंकि हर जगह कुछ न कुछ संकरण जरुर हुआ है।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

सब से ज्यादा संकरण अलबिनो निन्डरथाल आर्यो में हुआ है जिसकी वजह से कुछ तादाद में मेलेनिन पैदा करने की क्षमता उनमें विकसित होकर उनकी अलबिनो-निन्डरथॉल गुणधर्म को दर्शाने वाली निली-हरी-भूरी आंखे विलुप्त हुई है। उनके बालों का लाल-सुनहरा रंग भी लुप्त होते गया है। शुध्द आर्य वंश का मतलब ही अलबिनो-निन्डरथॉल गुणधर्म यानि अक्षमताओं से युक्त वांशिकता है। मूलनिवासी कालों के साथ संकरण से यह शारीरिक अक्षमताएं कुछ हद तक कम हुई है इसलिये शुध्द आर्य वंश एक झूठी संकल्पना है।

ब्राह्मणों ने अपने अज्ञान को छुपाने वेदों में हर ज्ञान होने का झूठा प्रचार किया !

ब्राह्मण दूसरों के श्रम पर जीने वाली परजीवी जमात रही है। परजीवी विशेषता को उन्होने अपने ढोंगी-पाखंडी के चरित्र से छुपाया है। अपने अ-सभ्यता के इतिहास पर पर्दा डालने के लिये तथा महान नाग-द्रविड संस्कृति की उपलब्धियों को अपने नाम से हडपने के लिये आर्य-ब्राह्मण वेदों में हर प्रकार के ज्ञान होने के झूठ को सच के रुप में प्रचारित करते है। आर्य-ब्राह्मण दावा करते है कि वेदों के सुवर्ण काल में हवाई जहाज, आण्विक अस्त्र इ. सबकुछ थे। इल्युमिनॅटी के षडयंत्र के तहत दूनियां भर के तमाम आर्य-ब्राह्मण तथा सभी शोषक सरकारें इस झूठ को सरकारी तौर पर प्रचारित करती है।

वेदों में औषधी-विज्ञान होने का झूठा दावा !

नाग-द्रविड भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के समय से औषधी तथा चिकित्सा विज्ञान की अतिप्राचीन परंपरा रही है। हरप्पा, मोहेंजोदारों में उत्खननों से सबूत मिले है कि वे विभिन्न पौधों, खनिजों तथा जानवरों के शरीर से निर्मित वस्तूओं का औषधियों के रुप में इस्तेमाल करते थे।(D.P. Agrawal & Lalit Tiwari at http://www.indiantribalheritage.org) सन् 2001 में पुरातत्व वैज्ञानिकों को मेहरगढ, पाकिस्तान में प्राप्त दो लोगों के

अवशेषों के अध्ययन से यह आश्चर्यजनक बात पता चली कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग आरंभिक हरप्पा के काल से दंतविज्ञान तथा औषधी विज्ञान का ज्ञान रखते थे। युनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी कोलंबिया के भौतिक मानवविकास वैज्ञानिक प्रो. एन्ड्रिया कुसीना (Andrea Cucina) ने इस तत्थ्य का पता किया था।(http://us.sulekha.com/science in Indus valley civilization.htm) अप्रैल 2006 में नेचर नामक विज्ञान के जर्नल में यह छपा कि मेहरगढ के अवशेषों के अध्ययन से पता चला है कि इन्सानी दांतों में बारीक छेद करने की पध्दति का उन्हे पता था। नौ वयस्कों के गॅरह छेद किये हुए दांतों के कॅप मेहरगढ की कब्रों से हासिल हुए थे। ये कब्रें 7,500-9,000 वर्ष पूरानी है। (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ईसापूर्व 6 वी शताब्दी में तक्षिला विश्वविद्यालय चिकित्सा शास्त्र के लिये प्रसिध्द था। जीवक नाम के प्रसिध्द चिकित्सक ने बुध्द का इलाज किया था। जीवक के शरीर के अंश भी विभिन्न बौध्द स्तूपों में रखे गए है। सम्राट अशोक के विभिन्न शिलादेशों में यह स्पष्ट है कि उन्होने इन्सानों, जानवरों तथा पक्षियों तक के लिये अस्पताल कायम किये। इन अस्पतालों को चलाने के लिये चिकित्सकों की फौज खडी की। वे सभी शल्यचिकित्सा में कुशल थे। सम्राट अशोक ने देश विदेशों से औषधी वनस्पतियां हासिल की और शासन के संरक्षण में उनकी पैदावार की। (Rock Edict II) रुग्नों को अस्पताल पहुंचाने विशेष गाडियों की व्यवस्था की। इनमें सभी जरुरी चिजों समेत नर्स इ. से युक्त चिकित्सक रहते थे। नर्स इ. सहायक जरुरी दवाएं तथा औषधी आहार बनाने में कुशल होते थे। लोगों को स्वस्थ रखने पर ज्यादा जोर दिया जाता था।(Glimpses of health and medice in Mouryan Empire by Dr. D. V. Subba Reddy, Osmania Medical College Hyderabad, 1966)

ब्राह्मणों के धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि चिकित्सकों के पेशों को तथा दवाओं को ब्राह्मण तुच्छ नजर से देखते थे। चिकित्सा क्षेत्र में मूलनिवासी नाग-द्रविड बहुत ज्यादा कुशल थे।(Vedas and Upanishads http://www.san.beck.org/index.html) चिकित्सक का व्यवसाय आर्यो की नजर में शुद्रों का व्यवसाय था। कथित आयुर्वेद को आर्यो ने कभी नही लिखा क्योंकि वेदिक ब्राह्मणों के लिये चिकित्सा व्यवसाय एक गंदा व्यवसाय था। {जानवरों का इलाज करने की बजाय उसे काटकर खाने में ब्राह्मण भरोसा करते थे।} चरक ने पहली ईसवी शताब्दी में चरक संहिता लिखी। चरक बौध्द सम्राट कनिष्क का चिकित्सक था।(http://brahminterrorism.wordpress.com/How Brahmins Killed Buddhism In India _ Brahmin Terrorism.htm)

ब्राह्मणों ने झूठा प्रचार किया कि ब्रह्मा आयुर्वेद का निर्माता था, उसने अश्विन भाईयों को आयुर्वेद सिखाया। ब्राह्मण धर्मग्रंथों के मुताबिक :-

1) अथर्ववेद में कफ के उपचार के लिये कफ को संबोधित प्रार्थना बताई गई है कि 'जैसे मन की कल्पनायें कहीं भी जा सकती है। उसी तरह ए कफ तु फौरन उडकर दूर चला जा। जैसे तेज धार वाला तीर ज्यादा दूर तक जाता है, ए कफ तु उडकर ध ारती के उस छोर पर पहुंच जा। जिस तरह सुर्य की किरणें दूर तक जाती है, ए कफ तु भी उडकर समूद्र के पार चला जा। (Atharvaveda 6:105)

2) अथर्ववेद (3:11:2) में गंभीर बीमार को ठिक करने का मंत्र : 'अगर उसमें जीवनज्योत कमजोर होती है या छोड चुकी है, अगर वह मरने के कगार पर तडप रहा है, मै उसे मौत की गोद से छीनकर उसे सौ शिशीर ऋतु जीने के लिये मुक्त करता

हुं।' आर्यो का मानना था कि इस मंत्र को पढने से बीमार सौ सालों तक जीएगा।

3) अथर्ववेद में कहा गया है कि दर्भा यानि कुशा घास को इन्सान के साथ बांधा जाता है तो वह बहुत साल तक जीता है। अथर्ववेद (19:32:1) के मुताबिक 'सौ जोडोंकी, हिलाये न जाने वाली, हजार पत्तों वाली, उगनेवाली, दर्भा जो प्रभावशाली वनस्पति है, उसे मै तुम्हारे साथ तुम्हारी लंबी उम्र के लिये बांधता हुं।' (http://www.islamhinduism.com//Medical Science in the Vedas - Islam and Hinduism Initiative.htm)

4) अथर्ववेद में शाप से मुक्ति के लिये प्रार्थना :- 1) ' यहां, अपने घोडे की गर्दन पे जुं चढाकर शाप आया, अपनी सौ आंखों से, शाप देनेवाले को ऐसे देखता है जैसे भेडिया भेडों वाले घर में देखता है (Hitherward, having yoked his steeds, came curse, thousand-eyed, Seeking my curser, as a wolf the home of one who owns sheep.) 2) 'हमसे दूर हो ए शाप ! जैसे भस्मसात करने वाली आग तालाब से दूर रहती है। उसी पर जबर्दस्त प्रहार करो जो हमें शाप देता है, जैसे आकाश से बिजली पेड पर गिरती है।' अथर्ववेद में ऐसी कई शाप निवारक प्रार्थनायें बताई है।

5) अथर्ववेद के 10 वे कांड के 3 रे सुक्त के मुताबिक लंबी आयू, स्वास्थ्य तथा प्रसिध्दी के लिये वाराना नामक करामाती मणी का जिक्र है। अथर्ववेद (10:3:3,4) के मुताबिक 'यह टोटका, यह वाराना सभी रोगों को दूर करता है, हजार आंखों से सुनहरी चमक से प्रकाशित होता है, वह तुम्हारे शत्रुओं को जीत कर परास्त करेगा और जो तुमसे नफरत करते है उनका तुम पहले संहार करने वाले बनोगे। वाराना तुम्हे सभी जादूई प्रहारों से सुरक्षित रखेगा। तुम्हे लोगों के भय से मुक्त रखेगा। वाराना सभी दुखों तकलीफों से तुम्हारी रक्षा करेगा। कीडों को दूर रखने के मंत्र :- अथर्ववेद के दूसरे कांड के 32 वे सुक्त में कीडों को खत्म करने के लिये मंत्र है 'अत्री की तरह मै तुम्हे नष्ट करता हुं, कीडों, इल्लियों, कण्व-जमदग्नी की तरह मै चीखकर रेंगने वालों के अगस्थ्य के मंत्र से टूकडें कर देता हुं।(Atharvaveda 2:32:3)

6) नपुंसकता का उपचार का अथर्ववेद (4:4:1) का मंत्र :- 'तुम गंधर्व ने वरुण के लिये जिसका पौरुष्य खत्म हुआ था जडी खोदी थी, हम यहां लींग को उत्तेजीत करने वाली जडी खोदते है।'(You that the Gandharva dug for Varuna whose virility was dead, you here do we dig, a penis-erecting herb)

7) हृदय विकार तथा पित्त रोग के उपचार का ऋग्वेद (1:50:11,12) का मंत्र :- 'इस दिन उगते ही, ओ मित्रों वाले, उंचे स्वर्ग में जाने वाले, सुर्य मेरे हृदय विकार को दूर कर, मुझसे मेरा यह पीलापन ले लो। (11. Rising this day, O rich in friends, ascending to the loftier heaven, Surya remove my heart's disease, take from me this my yellow hue. (jaundice)) तोतों तथा स्टर्लींग पक्षियों को मेरा पीलापन हम दे देते है, या मेरा यह पिलापन हरीताला पेड को दे दो। (2. To parrots and to starlings let us give away my yellowness, Or this my yellowness let us transfer to Haritala trees.)

वेदिक ब्राह्मणों का विश्वास था कि बीमारीयों की असली वजह दुष्ट अलौकिक ताकतें है। इन दुष्ट बाधाओं को दूर करने से ही रोगियों का उपचार हो सकता है। इसलिये वेदिक ब्राह्मण दुष्ट ताकतों को दूर करने विभिन्न मंत्रों, प्रार्थनाओं, ताबिजों, मणियों तथा टोने-टोटकों का इस्तेमाल करते थे। इसतरह ब्राह्मणों के वेद चिकित्सा विज्ञान के विकास को रोकने का काम करते थे। इसलिये ये दावा करना कि वेदों में चिकित्सा विज्ञान का सारा ज्ञान है, एक कुटील झूठ के सिवा कुछ नही है। अगर वेदों में औषधी विज्ञान का

ज्ञान होता तो सारे ब्राह्मण-पंडे चिकित्सक बने नजर आते।

कुछ श्लोकों (verses) में दवा का नाम है, लेकिन उन दवाओं के साथ अलौकिक ताकतों का संबंध दर्शाया गया है। मसलन कुशा घास की गांठ (knot) दुश्मनों का विनाश करने वाली तथा उडूंब्रा की गांठ पहनने से अच्छा भाग्य मिलने की बात कही गई है। अथर्ववेद (19:34:7) के मुताबिक कोई भी नई या पूरानी औषधी जंगींडा (Janginda) वनस्पति से बने ताबीज का मुकाबला नही कर सकती। (http://www.islamhinduism.com//Medical Science in the Vedas - Islam and Hinduism Initiative.htm)

ब्राह्मणों ने विभिन्न चिजों के औषधी गुणों को लेकर बेहूदा और मनगढंत दावे किये है। ब्राह्मणों के मुताबिक गाय के गोबर की राख में औषधी गुण पाये जाते है। पश्चिम जर्मनी की प्रयोगशाला में गाय के गोबर की राख परीक्षण के लिये भेजी गई। परीक्षण में ब्राह्मणों का दावा झूठा साबित हुआ। वेदों के मुताबिक मुत्र में औषधी गुणधर्म होते है। ब्राह्मण गोमुत्र को पवित्र टॉनिक समझकर पीते थे। विज्ञान के मुताबिक शरीर के अनावश्यक तथा घातक (toxic) पदार्थो को मुत्र, पसीना, स्वासोच्छवास तथा मल के व्दारा शरीर से बाहर किया जाता है।(http://www.jesus-is-savior.com//Drinking Cow Urine and Eating Cow Dung.htm) ब्राह्मण धर्म मृत अर्धजले शरीर को तथा मृत देह की राख को नदियों में विसर्जित करने को कहता है। इस धार्मिक प्रथा से नदी के किनारे हजारों घाटों का निर्माण हुआ। यहां रोज हजारों लाशें जलती है। राख को नदियों में बहाया जाता है। कई बार प्रेतों को बिना जलाये नदियों में बहाया जाता है। इनसे तरह तरह के रोगों का निर्माण होता है। (http://hinduismexposed.wordpress.com//Unscientific Claims from Hindu Scriptures _ Hinduism Exposed.htm) ब्राह्मण धर्म के वेद-पुराणों के मुताबिक हिन्दूओं ने सबेरे सुर्य देवता की पूजा कर सुर्य को नंगी आंखों से देखना चाहिये। ब्राह्मणों के मुताबिक इससे नजर तेज होती है। इस झूठी सोच से भारतीयों में आँखों की समस्याएं औरों से ज्यादा है। भारत में अंधे लोगों की तादाद दुनियां भर में सबसे ज्यादा (2.5 million blind people and 9 million with corneal blindness) पाई गई है। (Oh You Hindu Awake ! by Dr. Chatterjee) ब्राह्मण धर्म का वैद्यकीय ज्ञान बेहद मूर्खता भरा है। ब्राह्मणों के पवित्र धर्मग्रंथ मनुस्मृति (Manusmrti 3:49) के मुताबिक जब पूरुष का वीर्य स्त्री के वीर्य से ज्यादा होता है तो लडके का और अगर स्त्री का वीर्य ज्यादा होता है तो लडकी का जन्म होता है। अगर दोनों के वीर्य की मात्रा समान है तो बच्चा हिजडा (hermaphrodite) पैदा होता है।(http://www.topix.com/WEIRDEST HINDUISM LORD INDRA LOVE FOR DOG-EATING - Topix.htm) मनुस्मृति लिखने वालों को इतना भी पता नही था कि औरतों में पूरुषों की तरह वीर्य नही होता। औरतों में हर माहवारी के वक्त उनके ओवरी (ovaries) में अंडकोष (egg) पैदा होता है। इसी अंडकोष में पुरुष के वीर्य का कोई शुक्राणु प्रवेशित होकर गर्भधारणा होती है।

भविष्य पुराण के मुताबिक 'गर्भ में स्थित जीव सब सुख-दुखः समझता है और यह विचार करता है कि 'मैने अनेक योनियों में जन्म लिया और बारबार मृत्यृ के अधिन हुआ और अब जन्म लेते ही फिर से संसार के बंधन को प्राप्त करुंगा। इस प्रकार गर्भ में विचारता और मोक्ष का उपाय सोचता हुआ जीव अतिशय दुःखी रहता है। पर्वत के नीचे दब जाने से जितना क्लेष जीव को होता है, उतना ही जरायु से वेष्ठित अर्थात गर्भ में होता है। समुद्र में डूबने से जो दुःख होता है, वही दुःख गर्भ के जल में भी होता है, तप्त लोहे के खंबे से बांधने में जीवन को जो क्लेष होता है वही गर्भ में जठराग्नि के ताप से होता है। तपाई हुई सुईयों से बेधने पर जो व्यथा होती है, उससे आठ गुणा अधि

ाक गर्भ में जीव को कष्ट होता है। जीवों के लिये गर्भवास से अधिक कोई दुःख नही है। उससे भी कोटि गुणा दुःख जन्म लेते समय होता है, उस दुःख से मुर्छा भी आ जाती है। प्रबल प्रसव वायू की प्रेरणा से जीव गर्भ के बाहर निकलता है। जिस प्रकार कोल्हू में पीडन करने से तिल निस्सार हो जाते है, उसी प्रकार शरीर भी योनियंत्र के पीडन से निस्तत्व हो जाता है। .... जन्म लेते ही बाहर की वायू के स्पर्श से पूर्वजन्मों का ज्ञान नष्ट हो जाता है और पुनः संसार के व्यवहार में आसक्त हो अनेक दुष्कर्म में रत हो जाता है ....(भविष्य पुराण p.280-81) विज्ञान के मुताबिक भ्रुण माँ के गर्भाशय में खुद को सबसे सुरक्षित और आरामदेह अवस्था में पाता है। इसलिये भविष्य पुराण लिखने वालों को गर्भाशय के बारे में कोई ज्ञान नही था यह साबित हो जाता है।

वेदों में हर किस्म का सर्वोच्च ज्ञान होने का झूठा दावा !

आर्य-ब्राह्मण दावा करते है कि पश्चिमी देशों ने उनके धर्मग्रंथों के ज्ञान से हवाई जहाज, दवाईयां, कम्प्युटर्स, इंटरनेट इ. सारी खोजें की है। हजारों वर्षो से जब ये ध र्मग्रंथ ब्राह्मणों के पास थे तो उन्होने कोई भी खोज क्यों नही की ? ब्राह्मण अच्छी तरह से जानते है कि उनके वेदों में कोई भी ज्ञान नही है। (http://hubpages.com//Plagiarism by Sanskrit Authors.htm) झूठा शोर मचाने का उनका मकसद अंधविश्वासी, अशिक्षित ब्राह्मणधर्म की मानसिक जंजीरों में कैद लोगों को मूर्ख बनाकर रखना मात्र है।

इसलिये विज्ञान के क्षेत्र में जैसे ही कोई नई खोज होती है, ब्राह्मण शोर मचाने लगते है कि यह सब तो वेदिक काल में पहले से मौजूद था। वे इसके समर्थन में वेद इ. धर्मग्रंथ के किसी श्लोक का हवाला देने लगते है। ब्राह्मण-पंडों से पूछा जाये कि क्या आज तक किसी भी ब्राह्मण पंडे ने कोई खोज की है ? जबकि हजारों सालों से वे ध र्मग्रंथों का पाठ करते रहे है। कोई पंडा टोकरी तक नही बून पाएगा। वैज्ञानिक हवाई जहाज उडने के पीछे का सारा विज्ञान समझा देगा। लेकिन जब ब्राह्मणों से पूछा जाता है कि अमुक खोज के पीछे का विज्ञान क्या है तो उनके पास कोई जवाब नही होता।

ब्राह्मण पंडों से सुर्य गर्म क्यों है ? शरीर की पेशी में डी.एन.ए. क्यों होता है ? इ. विज्ञान के मूलभूत सवाल और वेदों में इनका जवाब किस जगह है पूछा जाये तो वे कुछ भी नही बता पाते।(http://inversesquared.blogspot.in//Inverse Squared The Primitive Science of The Vedas - Introduction.htm)

ब्राह्मणों के धर्मग्रंथ धार्मिक उपन्यासों जैसे {से भी निकृष्ठ) है। अगर कोई आज से कुछ हजार सालों के बाद 'लार्ड ऑफ रिंग्स' नामक उपन्यास को धर्मग्रंथ के तौर पर पढे तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि पृथ्वी के केन्द्र में लोग रहते है, अलौकिक जीव, बौने इ. थे, वे मर चुके लोगों का इस्तेमाल अपनी सेना के तौर पर करते थे, उनमें से कुछ अमर थे। ब्राह्मण ऐसे ही निष्कर्ष अपने काल्पनिक धर्मग्रंथों से निकाल रहे है और अपने दावों को वेदिक विज्ञान का नाम दे रहे है। उनके दावों में कुछ भी वैज्ञानिक नही है।(http://sujaiblog.blogspot.in/E=mc^2 Vedic Science Vs Modern Science I.htm) हमने पश्चिमी देशों के शोधकर्ताओं के आभारी होना चाहिये कि उन्होने ब्राह्मणों के ध र्मग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। जिससे इनका सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ और वेद, पुराण इ. सभी धर्मग्रंथों का अज्ञान लोगों के सामने नंगा हो गया। इन्हे पढने के बाद स्पष्ट हो जाता है कि वेदों का कथित ज्ञान कितना बचकाना है।(http://inversesquared.blogspot.in//Inverse Squared The Primitive Science of The Vedas - Introduction.

htm) वेदों का कथित ज्ञान कितना झूठा, अंधविश्वासों से सराबोर, टोने-टोटकों से भरा और व्यर्थ है इसे जानने के लिये वेदों को पढना जरुरी है। मसलन अथर्ववेद (4:5:6-7) में चोरों के लिये एक मंत्र बताया गया है। इस मंत्र का उच्चारण करते ही जिस घर को वह लूटना चाहता है, उस घर के सारे लोग सो जाएंगे। यह मंत्र है 'मां भी सोएगी, बाप भी सोएगा, कुत्ता भी सो जाएगा, घर का मालिक भी सो जाएगा ! उसके सारे रिश्तेदार सो जाएंगे, ये सारे लोग गहरी नींद में सो जाएंगे। ए नींद, इन सब लोगों को अपनी जादू से सुला दे ! इन्हे सुर्य उगने तक सुला दे। और मै सुबह होने तक इंद्र की तरह सही सलामत जागता रहुं।' इस उदाहरण से आप समझ सकते है कि ब्राह्मणों के वेदों में कैसा ज्ञान है।(http://www.islamhinduism.com/Textual Corruption in Vedas.htm)

ब्राह्मणों ने ईसा मसिह का झूठा इतिहास पूराणों में लिख डाला :- शकाधीश शालीवाहन हिमशिखर पर गया। उसने हुण देश के मध्य स्थित पर्वत पर एक सुंदर पुरुष को देखा। उसका शरीर गोरा था और वह श्वेत वस्त्र धारण किये था। उस व्यक्ति को देखकर शकराज ने प्रसन्नता से पुछा - 'आप कौन है ?' उसने कहा - मै ईशपुत्र हुं और कुमारी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हुं। मै म्लेच्छधर्म का प्रचारक और सत्यव्रत में स्थित हूं। राजा ने पूछा आपका कौनसा धर्म है। ईसापुत्र ने कहा - महाराज सत्य का विनाश हो जाने पर मर्यादा रहित म्लेच्छ प्रदेश में मै मसीह बनकर आया और दस्युंओं के मध्य भयंकर ईसामसी नाम से एक कन्या उत्पन्न हुई। उसी को म्लेच्छों से प्राप्त कर मैने मसीहत्व प्राप्त किया। .... मेरे हृदय में नित्य कल्याणकारी ईश-मूर्ति प्राप्त हुई है। इसलिये मेरा नाम ईसामसिह प्रतिष्ठीत हुआ। (भविष्य पुराण p.274) भविष्य पुराण के उपरोक्त कथन से आर्य-ब्राह्मणों का ईसाई धर्म के प्रति घोर अज्ञान उजागर होता है।

महान विव्दान मॅक्स म्यूलर ब्राह्मण धर्म के ग्रंथों के बारे में अपने किताब की प्रस्तावना में लिखते है कि : कोई भी ऐसा सोच तक नही सकता कि इतने प्राचीन काल में समाज इतने आरंभिक अवस्था में होगा, जिससे ऐसा साहित्य उभरेगा जिसकी अनावश्यक वर्णन तथा अतार्किकता कहीं भी नही देखी जा सकती ... इस साहित्य का अध्ययन करना जरुरी है जिस तरह कोई {मनो} चिकित्सक मूर्खो की बकवास या पागल की असंबध्द बातों का अध्ययन करता है। हमने इस साहित्य को अपनी भाषा में रुपांतरित करना है और हम यह जानकर हैरान होंगे कि इन्सानी भाषा और इन्सानी ज्ञान को ऐसे {बेहुदे} कामों के लिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है। No one would have supposed that at so early a period, and in so primitive a state of society, there could have risen up a literature which for pedantry and downright absurdity can hardly be matched anywhere...These works deserve to be studied as the physician studies the twaddle of idiots and the raving of madmen. Let us only try to translate these works into our own language, and we shall feel astonished that human language and human thought should ever have been used for such purposes. (as quoted in Robson, 1905, pp. 23-24 http://www.apologeticspress.org/Apologetics Press - An Investigation of Hindu Scripture.htm) ब्राह्मणों के धर्मग्रंथ कहते है कि ब्राह्मणों ने समुद्र पार नही जाना चाहिये। ब्राह्मण आचार्यो ने घोषणा की है कि अंडा शाकाहारी भोजन है इसलिये हिंदू उसे खा सकते है। बंगाली ब्राह्मण पहले से ही मछली को पानी के फुल कहकर खाते रहे है।(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm) ब्राह्मण एक खास पेड के पत्तों को 'सोना' कहकर दशहरे के दिन आपस में बाँटते है। ज्ञान के दिवालियेपन को दर्शाने वाले ऐसे आत्म-धोखे (self-decption) के ब्राह्मण खुद तो शिकार है ही वे इसे दूसरों में भी फैलाते है।

आर्य-ब्राह्मण संभाषण योग्य भाषा तथा उसकी लिपि तक नही बना सकते उनमें अज्ञान के सिवा क्या हो सकता है ?

वेदिक ब्राह्मणों का वेदिक गणित का झूठा दावा !

पूरी के गोवर्धन मठ का शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थजी ने वेदिक गणीत की किताब लिखी। किताब का वेदों से संबंध के कोई सबूत नही है, कोरा दावा किया गया है। इस झूठे दावे के व्यापक प्रचार से देश की सरकारों तथा निजी संस्थाओं ने कथित वेदिक गणित के प्रचार-प्रसार के लिये बेशुमार धन दिया। जब प्रो. शुक्ला ने अथर्ववेद की प्रति लेकर लेखक से पूछा कि वे श्लोक कहां है। उसने जवाब दिया कि यह सुत्र सिर्फ उसके पास की अथर्ववेद की प्रति में ही है, दूसरों की प्रतियों में नही है। उसने अपनी अथर्ववेद की प्रति किसी को भी दिखाने से इन्कार किया। अथर्ववेद की ऐसी कोई विशेष प्रति थी ही नही। गणित में एम.ए. कर चुके इस स्वामी ने गणित के कथित सुत्रों का खुद ही विकास किया था। ये सुत्र माध्यमिक तथा उच्च शाला के गणितों को जल्दी हल के कुछ तरिके मात्र है जिसे उसने वेदिक गणित के नाम पर प्रचारित किया है। (Myths and Reality : On Vedic Mathematics by S. G. Dani; http://en.wikipedia.org/Bharati Krishna Tirtha's Vedic mathematics - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) कथित वेदिक गणित कुछ खास गणितों को ही जल्दी हल करता है। बाकि गणीतों में ज्यादा समय लगता है। गणित को जल्दी हल करने के लिये कुछ खास रचनाओं को भली भाँति रटना पडता है वर्ना कथित वेदिक गणित में और भी समय लगता है। {ब्राह्मण-धर्म के स्वार्थ के चलते} पढे लिखे लोग, संस्थाएं तथा कुछ सरकारें भी इस बेकार की पध्दति को जोरशोर से प्रचारित करने में लगी है। जबकि इसकी धोखाधडी और उपयोगहीनता का पर्दाफाश हो चुका है। 17 वी शताब्दी के पहले भारत में दशांश के हिस्से (fractions) की जानकारी नही थी, तब वेदों में इन सुत्रों का होना नामुमकिन है। इस किताब की प्रस्तावना में किताब के संपादक डॉ. ए. एस. अग्रवाल ने स्पष्ट रुप से कहा है कि इन सुत्रों का वेदों से कोई संबंध नही है। प्रो. एस. जी. दानी के लेख 'Myths and Reality: On 'Vedic Mathematics', Frontline, India' में भी यही सब टिप्पणियां की गई है।(http://twitscope.wordpress.com//Vedic Mathematics or Vedic Nonsense _ Twitscope.htm)

ब्राह्मणों का वेदिक खगोलशास्त्र का झूठा दावा !

वैदिक काल में खगोलशास्त्र का जरा भी विकास नही हुआ था। ब्राह्मणाज के काल में ब्राह्मणों को विभिन्न ग्रहों तक की जानकारी नही थी।(P.125, The Cambridge History of India, Vol. I) ऋग्वेद के अज्ञान की झलक आप भी देख लिजिये :- .... महान मेध ावी और हव्ययुक्त अग्नि अनेक जलों के गर्भ (सन्तान) रुप है। सुर्यरुप अग्नि समुद्र से निकलते है।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी p.95&4) अलबिनो, निन्डरथॉल आर्य काले समुद्र और कॅस्पियन समुद्र के बीच के भूभाग में रहते थे। इसलिये उन्हे ऐसा लगता था कि सुर्य समुद्र के पानी से निकलकर समुद्र के पानी में डूब जाता है।

पिता-माता (द्यावा पृथिवी) के पुत्र सुर्य है ..... (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी p.160&3) ब्राह्मणों की बचकानी सोच थी कि सुर्य की उत्पत्ति पृथ्वी से हुई है।

वेद, उपनिषद तथा गीता में 7 दिनों के सप्ताह वाली पध्दति का जिक्र तक नही है।

प्रत्येक दिन से संबंधित ग्रहों की उन्हे कोई जानकारी नही है।(http://in.answers.yahoo.com/WEEK system not found in ancient Vedic texts but spread by SAKA(scythian) MAGAs Do you know this - Yahoo! Answers India.htm) 1) वेद तथा पुराणों में दावा किया गया है कि धरती सपाट है। इस दावे को साबित करने के लिये वेदिक ब्राह्मणों ने 'जंबुव्दीप इंस्टीटयुट' नामक संस्था तक गुजरात में कायम की। 2) विष्णु पुराण के मुताबिक पृथ्वी से सुर्य 800,000 मील की दूरी पर तथा चंद्र 2,200,000 मील की दूरी पर है। यानि चंद्र सुर्य से भी ज्यादा दूर है। चंद्र की दूरी 240,000 मील की जबकि सूर्य की दूरी 93,000,000 मील की है। 3) मार्कडेय पुराण के मुताबिक धरती का भूक्षेत्र 4,000,000,000 वर्ग मील है। खगोलशास्त्र के मुताबिक यह मात्र 190,700,000 वर्ग मील है। (Oh You Hindu Awake ! by Dr. Chatterjee; http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm)

भागवत पुराण {तथा सभी धर्मग्रंथ} बार बार संपादित करने का सिलसिला दसवी तथा 11 वी शताब्दियों में भी चलता रहा है। इसलिये भागवत पुराण के 16 वे अध्याय में एक बार 'भूगोल' शब्द का उल्लेख है। लेकिन पूरे अध्याय में पृथ्वी गोलाकार होने का उल्लेख नही है। पृथ्वी को सपाट ही कहा गया है। ब्राह्मणों के मुताबिक जंबुव्दीप जिसपर मेरु पर्वत स्थिर है वह 7 तरल क्षेत्रों से घिरा है। हर तरल क्षेत्र को गोलाकार जमीन ने अलग किया है। भागवत पुराण के मुताबिक ये तरल क्षेत्र खारे पानी, शहद, दूध, दही, मक्खन इ. से भरे पडे है। धरती के पाताल लोक में बहुत बडे आकार के सर्प, दानव इ. रहते है।(Bhagavata Purana: Canto 5, Ch 16: 5-30; Ch 20, 24, 25) नाग-बौध्द राजाओं के काल में हुए विकास को ब्राह्मणवादी अपने नाम पर प्रचारित करते रहे है।

धरती गोल होने का संकेत ईसापूर्व 5 वी शताब्दी में पायथॅगोरस (Pythagoras) तथा परमेनाईडस (Parmenides) ने दिया। ईसापूर्ण चौथी शताब्दी में प्लॅटो ने कहा कि धरती किसी गोले या गेंद की तरह गोल है। उसके शिष्य ॲरिस्टॉटल ने भी धरती को गोल कहा है। इरॅस्टोथेनेस (Eratosthenes) ने खगोलशास्त्रीय गणनाओं के आधार पर धरती के circumference की गणना ईसापूर्व 240 वर्ष पहले यानि आर्यभट के लगभग 700 साल पहले ही कर ली थी। संक्षेप में आर्यभट व्दारा खगोलशास्त्र पर किताब (ईसवी 499) लिखने के पहले ही धरती गोल होने की बात स्थापित हो चुकी थी।

प्राचीन ग्रीस के पायथॅगोरस के अनुयायियों का विश्वास था कि धरती खुद के चक्कर लगाती है। यह बातग्रीक लोगों के प्राचीन खगोशास्त्र में थी। हेराक्लिडेस (Heraclides, c. 390 BC) पायथॅगोरस के अनुयायियों में पहला था जिसने धरती खुद का एक चक्कर 24 घंटे में पूरा करने की बात कही। (http://nirmukta.com/On a Hindutva Apologist's Recent Lectures at IIT Madras _ Nirmukta.htm) चीन के जिंग फँग (Jing Fang) ने पहली शताब्दी में लिखा कि हॅन राजवंश के खगोलशास्त्रज्ञ मानते थे कि सुर्य, चंद्र, तथा सभी नक्षत्र गेंद की तरह अथवा क्रासबो बुलेट की तरह गोल है। चंद्र तथा अन्य ग्रहों का अपना खुद का कोई प्रकाश नही है। वे सिर्फ इसलिये दिखाई देते है क्योंकि सुर्य के प्रकाश से वे प्रकाशित होते है। जिन हिस्सों को सुर्य प्रकाशित नही करता वे हमें दिखाई नही देते क्योंकि उन हिस्सों में अंधेरा होता है। झँग ने लिखा कि सूर्य की किरणें सभी समय चांद पर नही पडती। चंद्रग्रहण के वक्त धरती चंद्र और सूर्य के बीच में आ जाती है। जब पृथ्वी और सुर्य के बीच चंद्र आ जाता है तो सुर्यग्रहण दिखाई देता है। वांग चोंग (27–100 CE) ने दलील दी कि बारीश आकाश से नीचे आती है लेकिन आकाश पर पानी के बादल धरती के पानी की भाप से ही बनते है। उन्होने पूरे पानी के

चक्र को अचूक तरिके से समझाया। (http://en.wikipedia.org/Science and technology of the Han Dynasty - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

वेदिक काल में आण्विक अस्त्र होने का झूठा दावा !

ब्राह्मणों ने वेदिक काल में आण्विक अस्त्र, आसमान में उडने वाले रथ इ. होने का झूठा दावा किया है। आण्विक अस्त्र किसी कमरे में नही बनाया जा सकता। वेदिक ब्राह्मण आण्विक अस्त्र बनाना जानते थे तो आण्विक अस्त्र बनाने में लगने वाले आण्विक रिएक्टर, उसकी प्रयोगशालाएं, न्युक्लिअर कचरा निपटाने की जगह इ. के पुरातत्वीय अवशेष पुरातत्व विभाग को कहीं भी नही मिले है। ब्राह्मणवादियों की बनाई हुई वेब साईटस् पर झूठे दावे किये जाते रहे है। ऐसी ही एक वेब साईट में कहा गया कि सोवियत वैज्ञानिकों ने एक प्राचीन मानवकंकाल प्राप्त किया जो सामान्य से 50 गुना ज्यादा रेडिओएक्टिव था। ऐसा समाचार कभी किसी भारतीय पत्र-पत्रिकाओं में नही छपा। जांच करने पर वह समाचार मनगढंत पाया गया। भारत, पाकिस्तान अथवा ब्रिटेन की अधिकारिक वेब साईट पर या भारतीय पुरात्व विभाग की किसी भी विज्ञप्ति में नही है। ऐसा कोई समाचार मोहेंजोदारो, हरप्पा कॉम पर भी नही है। ब्राह्मणवादियों की वेबसाईट जिनके हवाले से ऐसे समाचार देती है उनका भी कहीं कोई अस्तित्व नही होता। ऐसे मनगढंत समाचार भारत की अशिक्षित और अंधविश्वासी जनता को मूर्ख बनाने के मकसद से दिये जाते है। पुरातत्व विभाग ने राजस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के अतिप्राचीन शहर खोजे है। इस क्षेत्र में आण्विक परीक्षणों से, आण्विक पावर प्लांट से तथा आणिक कचरे को यहां ठिकाने लगाने से यहां वैसे भी आण्विक रेडिएशन की मात्रा ज्यादा होती है।(http://twitscope.wordpress.com//Evidence of nuclear explosion in ancient India _ Twitscope.htm)

वेदिक काल में हवाई जहाज होने का झूठा दावा !

'भारव्दाज की वैमानिकशास्त्र' नामक किताब सुब्बाराया शास्त्री ने सन् 1923 में लिखी। इस किताब की भर्सना खुद बंगलोर के इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ सायंन्स के डिपार्टमेंट ऑफ ऐरोनाटीकल इंजिनियरिंग व मेकॅनिकल इंजिनियरिंग ने 1974 में लिखित रुप से की। (Mukunda HS et al., 1974) इंस्टीटयूट के लेखकों ने घोषित किया कि इस किताब कि जानकारी 1904 के पहले की नही हो सकती। वैमानिक शास्त्र किताब में जिन विमानों का वर्णन है वे मौजूदा विमानों की बेतुकी नकल मात्र है। किताब में वर्णन किये गए किसी भी विमान में उडने की क्षमता ही नही है। जो ज्यामितीय आकृतियां दी गई है वे विमान के उडने के लिहाज से कल्पना से भी ज्यादा भयानक है।(http://nirmukta.com/On a Hindutva Apologist's Recent Lectures at IIT Madras _ Nirmukta.htm)

ब्राह्मणों का शुन्य की खोज का झूठा दावा !

भारत की NCERT स्कूल की अभ्यास पुस्तक 'Ancient India' में दावा किया गया है कि शुन्य की खोज, दशमलव प्रणाली की खोज, पृथ्वी खुद की धूरा पर चक्कर लगाते हुये है सुर्य की परिक्रमा करती है यह खोज वेदिक संस्कृति में की गई है। ब्राह्मणों के कभी कोई शिक्षा संस्थान नही रहे है। वे सिर्फ जानवरों की बलि चढाना जानते थे।

प्राचीन माया संस्कृति के लोगों ने तथा उनके पडौसी क्षेत्रों में स्वतंत्र रुप से शुन्य की संकल्पना का विकास ईसापूर्व 36 वर्ष पहले किया था। वे अतिविशाल संख्याओं की

गणना करते थे। उन्होने बेहद अचूक खगोलशास्त्रीय निरिक्षण मामुली उपकरणों से प्राप्त किये। उन्होने सोलर वर्ष 365.242 दिनों का बताया जो वास्तव में 365.242198 इतना है। उन्होने लूनार महिनों गणना 29.5308 दिनों की की है जबकि आधुनिक गणना 29.53059 है।(http://www.storyofmathematics.com/Mayan Mathematics - The Story of Mathematics.htm) शुन्य अंक की खोज बौध्द शासन में बौध्द स्कालर्स व्दारा बौध्द शिक्षा संस्थानों में की गई है। उस वक्त बौध्द विश्वविद्यालय सारी दुनियां में प्रसिध्द थे। सारी दुनियां से छात्र इन विश्वविद्यालयों में आते थे। मौर्य साम्राज्य के काल में विदेशों में मौजूद नये विचारों तथा ज्ञान को खुशी खुशी अपनाया गया। चंद्रगुप्त मौर्य (320-297 B.C) के ग्रीक लोगों से संबंध थे। उनके दरबार में ग्रीक राजदूत मेगासथेनेस मौजूद रहते थे। पाटलिपुत्र में ग्रीस, एशिया के विभिन्न देश, इजिप्त तथा मिडल इस्ट के देशों के लोग बसते थे। भारत के व्यापारी, प्रवासी, नावीक, स्कॉलर, बौध्द भिख्खु तथा सैनिक पर्शिया, ग्रीस, एशिया मायनर, रोम, इजिप्त, उत्तर अफ्रिका, मध्य एशिया, चीन, जापान इ. देशों में जाते थे। इसलिये इन देशों के साथ ज्ञान का आदान-प्रदान धडल्ले से था। दुनियां भर में मौजूद सभी विषयों का ज्ञान गहराई की हद तक बौध्द विश्वविज्ञालयों में था। खगोलशास्त्र (astrology) चाल्डीयन (Chaldean) लोगों व्दारा प्रभावित रही है। वे प्राचीन काल के महान गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्रज्ञ रहे है। ब्राह्मणों ने बौध्द साहित्य को, श्रमण दर्शन को, बौध्द काल की शिक्षा संस्थानों के गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र इ. सभी विषयों के ज्ञान तथा तमाम खोजों को अपनी बताने का काम किया है। इन सब का संस्कृत में भाषांतर करने के बाद मूल पाली प्राकृत किताबों को नष्ट कर दिया ताकि कोई सबूत ही न बचे। यह दूनियां के इतिहास की सबसे बडी धोखाधडी थी। (googlegroups/Sanskrit is NOT a Perfect Language And Vedas are Plagiarized Works! - Google Groups.htm; THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) आर्यभट का जीवनकाल ईसवी पांचवी शताब्दी के अंत में तथा छटवी शताब्दी के आरंभ का था। यह निश्चित बात है कि आर्यभट किसी समय उच्च शिक्षा के लिये कुसुमपूरा गया था। वहां कुछ समय रहा था। बौध्द तथा ब्राह्मण दोनों ही परंपराओं में कुसुमपुरा को पाटलीपुत्र के रुप में जानते थे। भाष्कर प्रथम (CE 629) भी कुसुमपुरा को पाटलिपुत्र करार देता था। एक श्लोक में कहा गया है कि आर्यभट कुसुमपुरा का कुलपति था। तब पाटलीपुत्र में सिर्फ नालंदा विश्वविद्यालय ही था तथा वहां खगोलशास्त्र के अध्ययन के उपकरण उपलब्ध थे इसलिये यह कहा गया है कि आर्यभट नालंदा विश्वविद्यालय का कुलपति था। आर्यभट ने अपने निष्कर्षो के लिये ग्रीक माडेल्स का सहारा लिया था।(http://en.wikipedia.org/Aryabhata - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) असम के एक लेखक तथा सिनेनिर्माता अशोक शर्मा ने चुनौति देते हुए कहा है कि शुन्य की खोज असम में आर्यभट तथा ब्रह्मगुप्ता के जन्म लेने के पहले ही हो चुकी थी। दूसरी तथा तीसरी शताब्दी में असम के गोलाघाट जिले में शुन्य का उपयोग किया जाता था। पत्थर की इबारत जिसपर शुन्य है का समर्थन प्रसिध्द पुरातत्व वैज्ञानिक डॉ. एच. एन. भुयान (Dr H. N. Bhuyan) ने भी किया है। इस पत्थर के शिलालेख में 2, 3, 1, 0, 7 and 8 के अंक खुद थे। शर्मा ने ट्रीबुन को बताया कि इन अंकों को समझने का काम डॉ. ध र्मेश्वर चुटीया ने किया था। असम की प्राचीन कामरुप सभ्यता सिंधु धाटी सभ्यता जैसी प्राचीन है। कामरुप का शेष भारत से संबंध जुडने के पहले विभिन्न देशों से संबंध था। यह मुमकिन है कि असम से शुन्य का इस्तेमाल प्रचारित हुआ। कामरुप की संस्कृति की खोज पर विशेष ध्यान नही दिया गया है इसलिये इसका श्रेय कामरुप की बजाय

आर्यभट को दिया गया। हम नही जानते कि असम में शुन्य की खोज किसने की लेकिन यह निश्चित है कि शुन्य की खोज आर्यभट तथा ब्रह्मगुप्त ने नही की।(http:// www. assamtribune.com/The Assam Tribune Online.htm)

वेदिक ब्राह्मणों ने श्रमण संस्कृति के
योगशास्त्र को हडपकर खुद का घोषित किया !

ब्राह्मण लेखकों ने योग की किताबों में जो आसन दिये है वे ब्राह्मण-धर्मग्रंथों में कहीं भी नही है। प्राणायाम, नेति, कपालभारती, सुर्यनमस्कार इ. को वेदों में ढूंढना व्यर्थ है। चारों वेदों में कहीं भी योग का उल्लेख नही है। आध्यात्म की खोज विकसित सभ्यता का गुण है न कि बर्बर आर्योकी अतिप्राथमिक संस्कृति का। अधिकांश स्कॉलर्स का मानना है कि पातंजली ने किसी भी योग का सुत्रपात नही किया। भारत में योग अतिप्राचीन काल से {मोहेंजोदारो, हरप्पा इ. में} मौजूद था। हठयोग का निर्माण कानफट (split-eared) नामक मूलनिवासी नाथ संप्रदाय ने किया था। ऐसे नाथपंथी या शैवपंथी बदन पर राख मलने वाले, जाति-व्यवस्था को नकारने वाले, गांजा पीने वाले, लैंगिक रुप से उदार, शिव तथा शक्ति की उपासना करने वाले तंत्रमंत्र में भरोसा करने वाले तांत्रिक है।

नाग-द्रविड संस्कृति की सभी उपलब्धियों को ब्राह्मणों ने खुद की बताया है। (http:// answers.yahoo.com/Does any Vedic(Hindu) god ever existed historically or real - Yahoo! Answers.htm) कॅरेल वर्नर (Karel Werner) के मुताबिक बुध्दिजम के बिना पतंजली व्यवस्था को सोचा तक नही जा सकता। योग सुत्रों में इस्तेमाल शब्दावली पाली के बौध्द, सर्वस्थीवाद तथा सौतंत्रिका के विचार है। पातंजली योगसुत्र में बताये पांच यम या नियंत्रण जैन धर्म की पांच मुख्य प्रतिज्ञाएं है। जैन धर्म से संबंधित तिन शिक्षाएं भी 1) कर्म सिधान्त में रंगों का नियम, 2) जैन धर्म के केवल (kevala) तथा योग में कैवल्यम (Kaivalyam) तथा 3) अहिंसा योग में शामिल की गई है। (http://en.wikipedia.org/ Yoga Sutras of Patanjali - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ब्राह्मणों ने योग के वैचारिक दर्शन को मुख्यतः जैन धर्म तथा शैविक तंत्रपध्दति से लिया है। ब्राह्मणों ने योग का स्पष्टीकरण थीऑसॉफिकल सोसायटी के दर्शन के मुताबिक किया है। (http://marginalrevolution.com/The historical roots of yoga.htm) योग का दावा करने वाली ब्राह्मणों की कथित पट्टभी जोईस (Pattabhi Jois) की किताब अष्ठांग विन्यास पध्दति इ. प्राचिन किताबें मौजूद ही नही है। टी. कृष्णमाचार्य (1888-1989) की किताब योग कुरुंटा (Yoga Kurunta) पर आधारित मानी गई। योग कुरुंटा पाम के पत्तों पर लिखी होने तथा इस किताब को कलकत्ता की लायब्ररी में दीमकों ने खाने का दावा किया गया। बताया गया कि उसकी एक भी कॉपी नही है। दूसरी कथित प्राचीन योग की किताब 'योग रहस्य' के बारे में कहा गया कि कृष्णमाचार्य को उसके परिवार के एक हजार साल पूराने पूर्वज भूत ने तंद्रावस्था में समझाया था। ब्राह्मणों ने ऐसे आध ारहीन दावों की बदौलत योगशास्त्र पर अपनी बपौति कायम करने की कोशिश की है।

ब्राह्मण-धर्म चाहे वह प्राचीन हो, मध्ययुगीन हो या आधुनिक हो 21 वी शताब्दी के आधुनिक शारीरिक आसनों में उसका कोई योगदान नही है। मौजूदा 195 शारीरिक आसनों में से मात्र मुश्किल से 3 आसन बहुत संक्षेप में पातंजली योग सुत्र में है। नाथ शैवपंथियों ने बहुत ही कम शारीरिक आसन बताये है। 14 वी शताब्दी की हठयोग प्रदिपीका में, सत्रहवी शताब्दी की घेरांडा संहिता तथा शिव संहिता में सिर्फ 15 आसन है। इनका मकसद लंबे समय तक ध्यान के लिये आरामदायक अवस्था में बैठने से संबंधित है।

आधुनिक योग आसन 19 वी शताब्दी के अंत में तथा बीसवी शताब्दी के आरंभ के है। इसमें स्वीडन, डेनमार्क, इंग्लंड, अमेरिका इ. पश्चिमी देशों की शरीर-निर्माण (body-building) पध्दतियों, शारीरिक व्यायामों तथा करतबों को शामिल किया गया है।(http://marginalrevolution.com/The historical roots of yoga.htm) इसलिये बी. के अय्यंगार की 'लाईट ऑन योगा' नामक किताब 200 आसनों को सीखाती है।

ब्राह्मणों का गुप्त काल की कलाओं का झूठा दावा !

गुप्त शासकों ने बौध्द भिख्खुओं को नगरों से निष्काषित किया था, वे नगरों में प्रवेश नही कर सकते थे। उनकी तरह तरह से प्रताडना की जाती थी। इसलिये वे अजंता, ऐलोरा, इ. गुफाओं में छुपकर रहते थे। वहीं उन्होने बुध्द के जीवन पर आधारित बुध्द से संबंधित शिल्पों को बनाने, चित्र उकेरने तथा रंगने का काम किया। गुफाओं में रहने वाले इस बौध्द समाज ने अपने 400 सालों के गुफाओं में निवास के दौरान उन्होने बनाई हुई गुफाएं बेहतरीन शिल्पकला तथा चित्रकला की मिसाल है। कुल 29-30 गुफाओं में यह कलाकृतियां है जिन्हे बहुत ही साधारण औजारों से बनाया गया है। (http://apworldhistory101.com/Gupta Dynasty Indian History AP World History.htm) ब्राह्मण ों ने इन्ही कलाकृतियों को गुप्तकालीन कला करार देकर बौध्दों की मेहनत पर डाका डालने का काम किया है। कलाकृतियों का विकास मुख्यतः बौध्द संस्कृति में ही हुआ है। सम्राट अशोक, सातवहन, पाल राजवंश, सातकर्णी या सातवहन इ. बौध्द तथा चंद्रगुपत मौर्य, खारावेला इ. जैन सम्राटों के काल में निर्मित कलाकृतियों तथा निर्माण कामों के बारे में इसी किताब में काफी विस्तार से बताया जा चुका है।

ब्राह्मणों का संस्कृत साहित्य नाग-द्रविड साहित्य की चोरी से बना है !

ब्राह्मण राहुल सांस्कृत्यान ने स्वीकार किया है कि आर्य-ब्राह्मण नाग-द्रविडों की तरह साक्षर नही थे बल्कि वे निरक्षर थे। उसने लिखा है कि असूर (नाग-द्रविड) मुँह से एक भी शब्द न निकालते हुये अपनी बातें दूसरे असूरों (नाग-द्रविडों) को बता सकते है। पत्थर, चमडा जैसी किसी भी चिज पर नाग-द्रविड पांच-दस चित्र बनाकर इतनी बातें कह जाते है जितनी आर्य आधे-एक घंटे में नही कह सकते। दूसरा नाग द्रविड चित्रों को देखकर उसके मन की बात समझ लेता है। (राहुल सांस्कृत्यायन, पेज 64) विदेशी आर्य-ब्राह्मण ों के पुराण में उल्लेख है कि जब वेदों के लिखने की बात आयी तो विदेशी आर्य-ब्राम्हण ों के पास लिखने के लिये कोई भी नही था। तब मूलनिवासी महादेव के पुत्र गणेश को वेद के अंशों को लिखने के लिये व्यास ने राजी किया। (स्वपन के. बीस्वास, पेज 282, 57) मोहेंजोदारो, हरप्पा की संस्कृति ''नागरी'' यानी नागों की (नाग-री) संस्कृति है, ''नाग'' से ही ''नगर'' शब्द का विकास हुवा है। ''नागरी'' लिपी यानी नागों व्दारा इस्तेमाल की जाने वाली लिपी। संस्कृत कभी जनभाषा नही रही। जनभाषा होने की बात तो दूर वह सारे ब्राह्मणों की भी भाषा नही रही है। वह ब्राह्मणों के कर्मकांडों की भाषा रही है। ब्राह्मणों को बली चढाने, कर्मकांड करने, कुटील षडयंत्र रचने से ही फुर्सत नही मिलती थी। इसलिये संस्कृत में काव्य, कला, नाटक, इतिहास, तथा विभिन्न ज्ञान की शाखाओं से संबंधित अध्ययन सामग्री निर्माण होने की बात सोची भी नही जा सकती।

जैन तथा बौध्द धम्म का तमाम साहित्य स्थानीय लोगों की प्राकृत तथा पाली में था। स्थानीय भाषाओं का साहित्य जनता के बीच से उभरा और उसमें स्थानीय विविध ताओं का अपने आप समावेश होता गया। बौध्द भिख्खुओं भिक्षुणियों ने गाथाएं, चरित्र

तथा कथानक लिखे। पुष्यमित्र शुंग व्दारा मौर्य सम्राट ब्रिहद्रथ का तख्ता पलटने के बाद से तमाम प्राकृत तथा पाली साहित्य को ब्राह्मणों ने अपने हितों के मुताबिक संस्कृत में लिखना शुरु किया। गुप्त काल में यह काम बडे व्यापक स्तर पर हुआ। इसके बाद उन्होने मूल प्राकृत तथा पाली ग्रंथों को नष्ट कर दिया। संस्कृत का कथा सरीत सागर पहले प्राकृत में था। पहले 95 फीसदी से ज्यादा साहित्य प्रकृत, पाली इ. स्थानीय भाषाओं में था। गुप्त काल के बाद यह स्थिति उलट दी गई।(Forgeries of Hindu Scriptures - Google Groups.htm) इन सब को मूल संस्कृत साहित्य के रुप में प्रचारित किया गया। मूल प्राकृत तथा पाली ग्रंथ नष्ट किये जाने से मूलनिवासी साहित्य को ब्राह्मणों का साहित्य बताने में आसानी हुई। संस्कृत में जो भी साहित्य है वह मूलनिवासियों के साहित्य का ब्राह्मण हितों के मुताबिक किया भाषांतर है।(http://hubpages.com//Sanskrit Language Facts3.htm)

राजा ब्राह्मण धर्म की रक्षा करने के लिये मजबूर थे। इसलिये ब्राह्मणों ने मूलनिवासी भाषाओं के संपुर्ण इतिहास को नष्ट किया और झूठमूठ प्रचारित किया कि सारी भारतीय भाषाएं संस्कृत से विकसित हुई है। ब्राह्मणों ने प्रचारित किया कि मराठी, गुजराती, बंगाली इ. तमाम भाषाएं संस्कृत के अविकसित रुप है। ब्राह्मणों ने अपने दावे को बल देने के लिये स्थानीय भाषाओं में जानबूझकर संस्कृत के जटील शब्द मिलाने शुरु किये। संस्कृत के अक्षरों का समावेश किया जा सके इस तरह से स्थानीय शब्दों में परिवर्तन किया गया। विदेशों में सिर्फ पाली ग्रंथों के अनुवाद हुए। बौध्द धम्म के विनाश से भारत से तमिल इ. स्थानीय भाषाओं का बौध्द, जैन इ. साहित्य हमेशा के लिये विलुप्त हुआ।

वेदिक आर्य-ब्राह्मणों का बेहुदा कामशास्त्र !

[Information for this sub chapter is synthesized from : http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VII On The Means of Attracting Others to One's Self Chapter II. Of The Means of Exciting Desire, and of the Ways of Enlarging the Lingam. Miscellaneous Experiments and Receipts.htm; http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VII On The Means of Attracting Others to One's Self Chapter I. On Personal Adornment, Subjugating the Hearts of Others, and of Tonic Medicines.htm; http://www.islamhinduism.com//Medical Science in the Vedas - Islam and Hinduism Initiative.htm ; http://www.islamhinduism.com//Medical Science in the Vedas - Islam and Hinduism Initiative.htm]

आर्य-ब्राह्मणों के बेहुदे कामशास्त्र के चंद उदाहरण वात्स्यायन के कामशास्त्र तथा दिगर ब्राह्मण धर्मग्रंथों से लिये गये है।

काम-लिंगों के संबंध में नुस्खे :- पुरुषों को यह सलाह दी गई है कि अपने लींग पर कोई खोल लगा ले जिससे लींग की लंबाई तथा मोटाई बढ कर वह स्त्री-योनी में फीट बैठ सके। बाभ्रव्या के मुताबिक ऐसे खोल सोने, चांदी, तांबे, लोहे, सीसे, हाथी दांत, भैस के सींग, विभिन्न लकडियों, इ. से बनाये जाये। वात्स्यायन के मुताबिक प्रत्येक व्यक्ति की विशेष रुची के मुताबिक ऐसे खोल बनाये जाये।

जब कोई पुरुष अपने लींग को बडा बनाना चाहता है तो उसने अपने लिंग को पेडों में रहने वाले विशेष कीडों के बालों से 10 रातों तक रगडने के बाद दस रातों तक तेल से रगडना चाहिये। इसके बाद दोबारा कीडों के बालों से पहले की तरह ही रगडना चाहिये। धीरे धीरे लींग में सुजन पैदा होगी। इसके बाद खटीया के छेद से अपने लींग

को नीचे लटकता रखना चाहिये। थंडे पदार्थो का सेवन कर सुजन के दर्द को कम करना चाहिये। लींग को the plant physalis flexuosa, the shavara-kandaka plant, the jalasuka plant, the fruit of the egg plant, the butter of a she buffalo, the hastri-charma plant, and the juice of the vajrarasa plant से रगडा जाये तो एक महिने तक कायम रहने वाली लींग की सुजन पैदा की जा सकती है। उपर बताई चिजों को तेल में उबालकर रगडने से भी ऐसा परिणाम पैदा होता है जो छह माह तक रहता है। seeds of the pomegranate, and the cucumber, the juices of the valuka plant, the hastri-charma plant, and the eggplant को मध्दम आंच में तेल में भिगोकर उबाले हुए तेल को लींग से रगडने पर भी यह परिणाम पैदा होता है।

कांतुका या जलाका एक ऐसी नली है जो दोनों सीरों पर आरपार खुली होती है। वह सख्त होती है लेकिन उसके उपर नर्म मुलायम गोल गोल उभार होते है। स्त्री योनी में इनका भी इस्तेमाल किया जा सकता है। asteracantha longifolia (kokilaksha) के फल का बना हुआ मलम लगाने से हस्तीनी स्त्री की योनि को एक रात के लिये सिकोडा जा सकता है। roots of the nelumbrium speciosum, and of the blue lotus, and the powder of the plant physalis flexuosa mixed with ghee and honey को कूटकर बनाये गए मलम से मृगी स्त्री की योनी को फैलाया जा सकता है।

लैंगिक जोश पैदा करने के नुस्खे :- भेड अथवा बकरे के testicle को दूध तथा चीनी मिलाकर उबालकर पीने से लैंगिक जोश पैदा होता है।

लैंगिक रुप से आकर्षित करने की प्रार्थनाएं (Atharvaveda 6:8:) :- 1) 'जैसे कोई लता अपने हाथों से पेड को पकडती है, वैसे ही तुम मुझे अपने आगोश में ले लो ताकि तुम मेरे प्रेम में पडो, मेरी प्यारी कभी न बिछडने के लिये।' 2) 'जब उपर उठना होता है गरुड अपने पंथों को नीचे मारता है, उसी तरह मै तुम्हारे spirit को नीचे मारता (strike) हूं ताकि तुम मेरे प्रेम में पड जाओ, मेरी प्यारी कभी न बिछडने के लिये।' 3) 'सुर्य आकाश और धरती रोज चक्कर लगाता है, उसी तरह मै तुम्हारे मन के चक्कर लगाता हुं ताकि तुम मेरे प्रेम में पडो, मेरी प्यारी कभी न बिछडने के लिये।' आर्य ब्राह्मण ों का विश्वास था कि इन मंत्रों से स्त्री उसके वश में हो जाएगी।

सौत से कैसे छुटकारा पाया जाये इसके संबंध में टोटका ऋग्वेद (10:145) में बताया गया है, जिसे अथर्ववेद (10:145:2,3) में दोहराया गया है :- 1) 'देवों ने भेजे हुए विजयी पौधे के फैले हुए भाग्यशाली पत्ते, सौत को दूर उडा दे, और मेरे पति को मेरा बना दे।' (Auspicious, with expanded leaves, sent by the Gods, victorious plant, Blow you the rival wife away, and make my husband only mine.) 2) 'मै ताकतवर हुं ओ ताकतवर, ताकतवरों से ताकतवर; और वह जो मेरी सौत है छोटी औरतों (dames) से भी छोटी है।'(Stronger am I, O Stronger One, yea, mightier than the mightier; And she who is my rival wife is lower than the lowest dames.) ब्राह्मणों के मुताबिक इन मंत्रों से सौत से छुटकारा मिल जाएगा।

जादूई परिणाम पाने के नुस्खे :- अगर milk hedge plant, lanjalika plant की जडों तथा कंटक पौधे के पावडर बंदर के मल के साथ मिलाकर इसका मिश्रण जिस स्त्री पर फेंका जाएगा वह स्त्री कभी किसी से प्रेम नही करेगी।

कोई भी स्त्री ऐसे आदमी व्दारा बजाई जाने वाली बांसूरी को सुनती है जिसने अपने

शरीर पर bahupadika plant, the tabernamontana coronaria, the costus speciosus or arabicus, the pinus deodora, the euphorbia antiquorum, the vajra and the kantaka plant के रस का लेप लगाया है तो वह उसकी गुलाम बन जाती है।

कोई पुरुष white thorn apple, the long pepper and, the black pepper के पावडर को शहद में मिलाकर उसका लेप अपने लींग पर लगाकर स्त्री के साथ लैंगिक संबंध बनाता है, वह उसके मर्जी के मुताबिक चलने लगती है। जलाने ले जाये जा रहे मूर्दे पर फेंके गए फुल, vatodbhranta पौधे के पत्ते, मोर तथा jiwanjiva पक्षी के हड्डीयों के चुर्ण के मिश्रण से भी यह परिणाम प्राप्त होता है। emblica myrabolans नामक पौधे से बने मलम का शरीर पर लेप लगाने से भी औरत उसके मन के मुताबिक चलने लगती है।

अगर कोई पुरुष vajnasunhi पौधे के उगने वाले छोटे छोटे अंकुर (sprouts) के छोटे छोटे तुकडे कर उसे लाल आर्सेनिक तथा सल्फर के मिश्रण में डूबोकर रखता है, उसे सात बार सुखाता है, इस पावडर को शहद के साथ मिलाकर अपने लींग पर लगाकर जिस भी स्त्री से लैंगिक संबंध करता है वह उसके मन के मुताबिक चलने लगती है। अगर arris पौधे की जडें आम के तेल में डूबोकर उसे sisu पेड के तने में छेद बनाकर छह माह तक रखा जाये और फिर उसका मलम बनाकर लींग पर लगाया जाये तो इससे भी स्त्री उसके मन के मुताबिक चलेगी।

अदृष्य होने का नुस्खा :- an ichneumon का हृदय, तुंबी का फल (fruit of the long gourd), सांप की आँखें एकसाथ मिलाकर बिना धुंआ किये जलाकर प्राप्त की गई राख को पीसकर समान मात्रा में पानी मिलाया जाये। जो इसे अपने आंखों में लगायेगा उसे कोई नही देख पाएगा। गायब होने के और भी तरिके दुयाना ब्राह्मणा (Duyana Brahmanas) में तथा जोगाशिरा (Jogashiras) में बताये गए है।

{चेतावनी :- उपरोक्त नुस्खे घातक साबित हो सकते है, इन्हे ना आजमाये}

आर्य-ब्राह्मणों ने मंदिरों में विकृत-लैंगिकता का प्रदर्शन किया !

ईसवी दूसरी शताब्दी में लैंगिकता के शास्त्र पर कई किताबें प्रचलित थी। वात्स्यायन का कामशास्त्र इन में से एक है। ईसापूर्व पहली शताब्दी में पाये जाने वाले सामुहिक लैंगिक संबंधों को आर्य-ब्राह्मणों ने अपने मंदिरों की शिल्पकला में दर्शाया है। (Women and sexuality in ancient India From Socialismbeta http://www.wiki-site.com//Women and sexuality in ancient India - Socialismbeta.htm) ऐसे उत्तेजक मंदिर ऐसे ही समाज में बन सकते है जो समाज तथा उसकी शासन व्यवस्था इन्हे बर्दाश्त करती है और सभी लैगिकताओं {सामुहिक लैंगिक संबंध, मानवों व्दारा जानवरों से लैंगिक संबंध, अन्य लैंगिक विचलन (Perversions)} के सार्वजनिक प्रदर्शन पर भी विश्वास करती है।(http://karlomongaya.wordpress.com /The Origins of Kama Sutra Erotic Art in Ancient India _ Hello.Lenin!.htm) एक विश्व प्रसिध्द 1000 साल पहले बने ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में तरह तरह से लैंगिक संबंधों को शिल्पों व्दारा दर्शाया गया था। इसमें समलिंगी लैंगिक संबंध, तिन लोगों के बीच के लैंगिक संबंध, समुह में लैंगिक संबंध, मुख-कामुकता संबंध (oral sex) इ. लैंगिक संबंधों के सभी प्रकार मौजूद थे। यह ऐसा कोई इकलौता मंदिर नही है। एक मंदिर छत्तीसगढ में भी था।(http://sexualintelligence.wordpress.com/India's Ancient Erotic Sculpture « Sexual Intelligence.htm) खजुराहों के मंदिर लैंगिक संबंधों में लिप्त लोगों के शिल्पों की वजह से सारी दुनियां में प्रसिध्द में से कुल

85 मंदिर थे जिनमें से सिर्फ 25 मंदिरों को बचाया जा सका है। ये सभी मंदिर नौ वर्ग मील के क्षेत्र में है। खजुराहों के इन मंदिरों को 1) पूर्वी समुह 2) दक्षिण समुह तथा 3) पश्चिमी समुह इन मुख्य तीन विभागों में बाँटा गया है।(http://en.wikipedia.org/ Khajuraho Group of Monuments - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर के सामने वराह तथा देवी के मंडप है। यह खजुराहों के सबसे बडे तीन मंदिरों में से एक है। पश्चिमी समुह के मंदिरों को इन मंदिरों में सबसे प्राचीन माना जाता है जिन्हे चंदेला राजाओं ने बनवाया था। इसके दक्षिण-पूर्व गलियारे में लैंगिक विधियों के उत्तेजक शिल्प है। इसमें एक पुरुष एक घोडे के साथ लैंगिक संबंध बना रहा है। देवि-देवताओं के बाजु में उत्तेजक स्त्रियां है जो किसी न किसी लैंगिक गतिविधी में लिप्त है। पश्चिमी कोने में एक कामुक औरत कमान की तरह झुककर अपने पीछे के हिस्से को खुजा रही है। खजुराहों के सभी मंदिरों में ऐसे ही दृष्य है।(http://www. khajuraho-india.org/Lakshman Temple, Lakshman Temples Khajuraho, Lakshman Temples in Khajuraho India.htm)

कोनार्क मंदिर की दीवारों पर लैंगिकता से भरपूर शिल्प बहुतायत में है। इस मंदिर को भेंट देने के बाद कई अंग्रेजों ने लैंगिकता के प्रदर्शन पर गुस्सा तथा क्षोम जाहीर किया। लॉवेल थॉमस (Lowell Thomas) ने कोणार्क मंदिर को 'बेहद खुबसुरत' मंदिर और दुनियां की सबसे अश्लील इमारत करार दिया।(http://asi.nic.in/Mithuna Sculptures Sun Temple - Konarak - Archaeological Survey of India.htm)

सिंधु-घाटी की नाग-द्रविड सभ्यता को हडपने की वेदिक ब्राह्मणों की कुटील तिकडमें !

भारत के सभी ब्राह्मणवादियों के सहयोग से सिंधु-घाटी की नाग-द्रविड सभ्यता को झूठे सबूत गढकर जानबूझकर वेदिक {अ}सभ्यता का हिस्सा बताया जा रहा है।

{प्रो. एम.एम. देशमुख व्दारा संडासवीर की उपाधी से अलंकृत} संघपरिवार के एक आदर्श पुरुष के मुताबिक किसी भी समुदाय के लिये भारत में कोई भी सुविधा हासिल करने के लिये यह जरुरी है कि भारत उसकी पितृभूमि (पूरखों की जन्मभूमि) ही नही बल्कि पुण्यभूमि (धर्मभूमि) भी होनी चाहिये। उपरोक्त परिभाषा के मुताबिक मुस्लिम, इसाई, यहूदी भारत में किसी भी सुविधा के लायक नही है क्योंकि उनकी पितृभूमि तथा पूण्यभूमि भारत नही है।(http://www.flonnet.com/Hindutva and history.htm)

आर्य-ब्राह्मणों के हिन्दूत्व के सिधान्त के मुताबिक भारत में मुस्लिम, ईसाई युरोप में सेमाईट लोगों की तरह ही विदेशी घटक है इसलिये उन्हे अलग-थलग कर उनसे छुटकारा पाना चाहिये। जैसे हिटलर ने विदेशी यहूदियों का तथा युरोप से मुस्लिमों का संहार किया गया था वही उपाय भारत के मुस्लिमों पर भी लागू होने चाहिये अगर वे ब्राह्मण-धर्म संस्कृति को कबुल नही करते। पुरातत्वीय सबूतों के मुताबिक दलित-पिछडी जातियां भारत के मूलनिवासी है जबकि आक्रमणकारी आर्य ईसापूर्व 1500 में भारत आये

है। पितामह ज्योतिराव फुले के कथन पर आधारित दलितों का यह पक्ष है कि आर्य विदेशी ही नही बल्कि भारत के आक्रमणकारी भी है। इसलिये वेदिक साहित्य, वेदिक धर्मग्रंथ, तथा वेदिक समाज भारत की सभ्यता की बुनियाद कतई नही हो सकता।(www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm) ब्राह्मणों की खुद की परिभाषा के मुताबिक मूस्लिम-ईसाईयों की तरह ही आर्य-ब्राह्मण भी हर सुविधाओं के लिये अपात्र करार दिये जा सकते है। इसलिये आर्य-ब्राह्मण किसी भी तरह खुद को भारत के मूलनिवासी साबित करने पर तुले है। यह तभी मुमकिन है जब वे मौजूदा इतिहास के तमाम स्पष्टिकरणों को बदल दे और उन्हे अपने हिन्दूत्व {पढिये ब्राह्मणवादी} सिधान्तों के मुताबिक ढाल ले। इसके लिये उन्हे आर्यो की भारत में उपस्थिति को सिंधु-घाटी संस्कृति के भी पहले की दर्शानी होगी। सिंधु-घाटी संस्कृति ईसापूर्व 7000-1300 वर्ष के दौरान की है। जबकि तमाम पुरातत्वीय सबूतों के मुताबिक आर्यो की भारत में उपस्थिति इसापूर्व 1500 के पहले की नही है। इसलिये तमाम पुरातत्वीय, ऐतिहासिक, भाषाशास्त्रीय सबूतों के विपरित जाकर उन्हे आर्यो की उपस्थिति को ईसापूर्व 7000 वर्ष पहले की बताना होगा जो कि एक नामुमकिन बात है।(http://www.flonnet.com/Hindutva and history.htm)

सिंधु-घाटी लिपि को ब्राह्मण झूठमूठ वेदिक लिपि प्रचारित कर रहे है !

ब्राह्मणों की खुद की कोई लिपि रही ही नही। ब्राह्मण अपनी संस्कृत भाषा को विभिन्न लिपियों में लिखने पर मजबूर रहे है। इसके बावजूद आर्य-ब्राह्मण हरप्पा की लिपि को झूठमूठ वेदिक लिपि साबित करने पर तुले है।

युनायटेड न्यूज इंडिया के जुलै 1999 के जारी समाचार के मुताबिक ब्राह्मणवादी इतिहासकार राजाराम तथा नटवर झा ने दावा किया कि उन्होने सिंधु घाटी की मुद्राओं तथा हरप्पा-पूर्व लिपि को समझ लिया है। राजाराम ने यु.एन.आई. को बताया कि इन मुद्राओं की इबारत का अर्थ 'इला पवित्र धरती को घेरे हुए है' (Ila surrounds the blessed land) है। यह संकेत है कि ऋग्वेद की सरस्वती नदी पवित्र धरती यानि आर्यभूमि को घेरे हुए है। उन्होने हरप्पा की भाषा को बाद के वेदिक काल की संस्कृत करार दिया।(Frontline, Volume 17 - Issue 20, Sep. 30 - Oct. 13, 2000http://www.flonnet.com/HORSEPLAY IN HARAPPA.htm)

इंग्लीश पत्रिका फ्रंटलाईन के लेख में राजाराम तथा झा के दावे को सरासर झूठा करार दिया गया। किसी भी लिपि के हल में कुछ खास नियमों का पालन होता है ताकि दावा भाषिक विश्लेषण की कसौटी पर खरा उतर सके। हल की गई भाषा में संदर्भ की निरंतरता भी होनी चाहिये। यह सब राजाराम तथा झा के कथित हल (decipherment) में कहीं भी नही है।(http://www.flonnet.com/Hindutva and history.htm) राजाराम तथा झा के तरिके इतने लचीले थे कि उन मुद्राओं से कुछ भी अर्थ निकाला जा सकता था। राजाराम तथा झा का यह विचित्र दावा है कि सिंधु घाटी की इबारतों में लिखने की दीशा संबंधी कोई निश्चित नियम नही है। यानि जबतक आपको आपका इच्छित अर्थ नही मिल

जाता तबतक आप स्वरों को उल्टी सीधी दिशा में पढें। सेमिटिक भाषाओं में स्वरों का उच्चार कम से कम होता है। कोई भी लिपि जिसमें स्वर नही है वेदिक संस्कृत में अर्थहीन तथा निरुपयोगी साबित होगी। एक स्कॉलर के मुताबिक इन तरिकों से सिंधु-घाटी की भाषा को पुरानी नार्स भाषा या पुरानी इंगलीश भाषा भी साबित किया जा सकता है। राजाराम की किताब पर धोखाधडी के आरोप लगाये गए।

राजाराम तथा झा जिसे स्वर या अर्धस्वर (vowel or semi-vowel) का चिन्ह कहते है वह अंग्रेजी यु जैसा चिन्ह मुद्राओं में सबसे सामान्य चिन्ह है। ज्ञात इबारतों में वह लगभग 1400 बार आया है। वह इबारत के बाये में होता है। भारत के पुरातत्व विभाग ने इस बात को स्पष्ट किया है कि सिंधु घाटी के बर्तनों पर एक-दूसरे पर होने वाले अक्षर मौजूद है तथा सिंधु घाटी की लिपि को दाहीनी ओर से बाई ओर पढा जाता है। ऐसे सबूत सन 1930 से मौजूद है। यानि अंग्रेजी भाषा के यु जैसा अक्षर वास्तव में इबारत का अंतिम अक्षर है। लेकिन राजाराम तथा झा इस स्थापित सत्य को नजरंदाज करते है। वे इस बात पर अडे है कि सिंधु घाटी की लिपि बाये से दायें लिखी जाती है ताकि उसे अंतिम काल की वेदिक संस्कृत साबित किया जा सके।(Frontline, Volume 17 - Issue 20, Sep. 30 - Oct. 13, 2000http://www.flonnet.com/HORSEPLAY IN HARAPPA.htm)

ब्राह्मणों ने घोडे की नकली मुद्राएं बनाई !

वेदिक धर्मग्रंथों में अश्वमेध यज्ञ, घुडसवारों का हमला, घोडों के रथ इ. का बार बार उल्लेख है। हरप्पा की संस्कृति को वेदिक संस्कृति साबित करने के लिये यह जरुरी था कि हरप्पा में ईसापूर्व तिसरी शताब्दी में घोडे का अस्तित्व दिखाया जाये। जबकि पुरातत्व वैज्ञानिकों को रथों के अवशेष भारत के बाहर पूर्व तथा पश्चिम उराल पर्वत पर ईसापूर्व 2000 साल पहले प्राप्त हुए। इसके बावजूद राजाराम तथा झा ने सिंधु संस्कृति की घोडे की मुद्रा (horse seal) मिलने का दावा किया। इस धोखाधडी का मकसद सिंधु घाटी संस्कृति को वेदिक संस्कृति बताना था। उत्खनन में सिंधु घाटी में कहीं भी कभी भी घोडे के चित्र नही मिले थे।(http://www.atimes.com/Asia Times Online South Asia news, business and economy from India and Pakistan.htm)

सिंधु घाटी में तिसरी शताब्दी में रथ थे यह बहुत ही बेहुदा दावा है। सुरकोटाडा के मुताबिक भारतीय उपमहाव्दीप में पालतु घोडे एशियाईट घोडों के केन्द्रों से आयात किये गए। मिडो ने अजीत के. पटेल के साथ मिल कर किये शोध लेख में दावा किया कि सिंधु घाटी में या उत्तरी भारत में ईसापूर्व 2000 के पहले के काल की एक भी घोडे की हड्डी नही मिली है। जो भी घोडों के अवशेष मिले है वे हरप्पा सभ्यता के हजारों साल बाद के है। कुछ पुरातत्व वैज्ञानिकों ने सन् 1930 में हरप्पा में जो घोडे के अवशेष मिलने की बात कही है उनके स्पष्ट विवरण नही है कि हम उन्हे गधों या खच्चरों से अलग साबित कर सके।

यातायात के लिये घोडे का इस्तेमाल करने में सबसे बडी समस्या उन्हे गाडियों में जोतने की होती है क्योंकि इससे उसकी स्वासनली पर दबाव पडता है। आरंभ में घोडे सवारी के भी योग्य नही थे क्योंकि तबतक saddle तथा लगाम की खोज नही हुई थी। कई हजार साल बाद चक्के के लोहे के स्पोक, चक्के के बाहर लोहे की पट्टी का घेरा, दो चक्कों के बीच का एक्सल यानि धूरा, चक्कों को घिसने से रोकने के लिये तेल खोजा गया। मध्य एशिया की टोलियों ने इन्हे ईसापूर्व 1800 में खोजा। एक्सल तथा

स्पोक लगे हल्के चक्के सबसे पहले इजिप्त तथा मध्य-पूर्व में बने। (http://www.akhnatonsjournal.org/Akhnaton's Journal Horses, Chariots, and Aryan Migrations.htm) मोहेंजोदारो तथा हरप्पा में युनिकार्न बैल की तस्वीरें बडी तादाद में है। मोहेंजोदारो हरप्पा की मुद्राओं पर में युनिकार्न बैल एक आम प्राणी है। वेदिक संस्कृति में घोडे को बहुत महत्व दिया गया है। सिंधुघाटी संस्कृति अगर वेदिक संस्कृति होती तो वहां घोडे की मुद्रायें बहुतायत में होती न कि युनिकार्न-बुल की।(http://www.flonnet.com/Hindutva and history.htm)

राजाराम तथा झा के धोखाधडी का पर्दाफाश चंद सप्ताहों में ही हारवर्ड विश्वविद्यालय के भारत के अध्ययनकर्ता मायकल विटझेल तथा तुलनात्मक इतिहासकार स्टीव फार्मर ने किया कि राजाराम की कथित घोडे की मुद्रा टूटी हुई युनिकार्न बैल की मुद्रा का कम्प्युटर में किया गया विकृतिकरण है। अगर आप इस चित्र की मूल मूद्रा के चित्र को देखते है तो स्पष्ट हो जाता है कि वह टूटी हुई मुद्रा थी। फार्मर तथा विटझेल (Farmer and Witzel) ने इस बात को साबित किया कि राजाराम तथा झा ने टूटी हुई युनिकार्न बैल अंकित मुद्रा से घोडे की मुद्रा बनाई है। धोखाधडी के पर्दाफाश के बाद घोषित किया गया कि जो भी राजाराम के घोडे की मूद्रा को सही साबित करेगा उसे 1000 अमेरिकन डॉलर का इनाम मिलेगा। इस चुनौति को कबुल करने वाला कोई भी सामने नही आया।

सन् 1912 में 'Piltdown Man' के नाम से प्रसिध्द धोखाधडी के नाम पर इस घोडे की मुद्रा को 'Piltdown Horse' नाम दिया गया। पिल्टडाउन नाम का इंग्लंड में गांव है जहां से ऐसे कंकाल के मिलने का दावा किया गया था जो इन्सान तथा बंदरों के बीच की गायब कडी को जोड सकता है। यह कंकाल बाद में जाली साबित हुआ।(http://www.atimes.com/Asia Times Online South Asia news, business and economy from India and Pakistan.htm) राजाराम की इस धोखाधडी की घोडे की मुद्रा का मूल स्त्रोत मॅके (Mackay) की 453 क्रमांक की छोटी तस्वीर है जो अर्नेस्ट मॅके की 'Further Excavations of Mohenjo-Daro (New Delhi, 1937-38)' किताब के व्दितीय ग्रंथ की Plate XCV में दी गई है। इस तस्वीर को खोजना काफी मुश्किल था। राजाराम की किताब में जिक्र नही था कि मॅके कि किस किताब के हजारों चित्रों में वह है। कई लोगों के समन्वयित प्रयत्नों से अमेरिका की शोध लायब्ररी में चित्र को ढुंढा गया। राजाराम की धोखाधडी का पर्दाफाश दिगर विश्वविद्यालयों की लायब्ररियों से संभव नही हो सकता था। मॅके की मूल तस्वीर को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि राजाराम की कथित घोडे की मुद्रा वास्तव में टूटे हुए युनिकार्न बैल की मुद्रा है। ऐसी किसी भी मुद्रा को उचित जगह से तोडकर उसे घोडे की मुद्रा का रुप दिया जा सकता है। राजाराम ने अपनी किताब में इस बात का जिक्र तक नही किया कि यह मुद्रा टूटी मुद्रा थी। पार्पोला (Parpola) के मुताबिक राजाराम की कथित घोडे की मुद्रा वास्तव में टूटी हुई युनिकार्न बुल की मुद्रा है।

रशियन इंडोलाजिस्ट यारोस्लाव वास्सिलकोव (Yaroslav Vassilkov) राजाराम के कथित संशयास्पद कम्प्युटर इनहांसमेंट में एक पुराने समय के टेलिफोन की तरह की आकृति भी पायी जो मूल मूद्रा के चित्र में नही है। यह आकृति वहां किसने डाली यह भी एक प्रश्न है। राजाराम ने इसका कोई स्पष्टिकरण नही दिया।(Frontline, Volume 17 - Issue 20, Sep. 30 - Oct. 13, 2000http://www.flonnet.com/HORSEPLAY IN HARAPPA.htm) जैसे ही मूद्रा के मूल चित्र की राजाराम के कथित चित्र से इंटरनेट पर उसकी तुलना की गई राजाराम ने माना कि उसका चित्र कंम्प्युटर इनहॅन्समेंट है जो पाठकों की सुविधा के लिये बनाया है। चित्र में मूल आकृति बाई ओर जबकि राजाराम

की आकृति दाहिनी ओर है। इस धोखाधडी का पर्दाफाश होने के बावजूद राजाराम तथा झा यही रट लगा रहे है कि यह चित्र घोडे की मूद्रा का है। धोखाधडी को मानते ही उनके सिंधु घाटी की लिपि को हल करने का दावा भी अपने आप खारीज हो जाता है क्योंकि राजाराम तथा झा ने सिंधु घाटी की एक इबारत का 'arko-hasva or arko ha as'va' यानि 'सुर्य सचमुच घोडे जैसा है' (Sun indeed like the horse (sic)) ऐसा अर्थ निकाला है। अगर वह मुद्रा घोडे की बजाय युनिकार्न बैल की साबित हो जाती है तो उसने निकाला अर्थ भी अपने आप झूठा साबित हो जाता है। यह पर्दाफाश हो जाता है कि वे सिंधु घाटी की लिपी को हल करने का झूठा दावा कर रहे है। इनकी किताब भी झूठ का पुलिंदा साबित होती है। इसलिये नकली चित्र को घोडे की मुद्रा बताते रहना राजाराम तथा झा की मजबूरी है। ऋग्वेद को बहुत ज्यादा पूराना साबित करने राजाराम ने झूठा दावा किया है कि हल की हुई इबारतें शुक्ल यर्जुवेद से संबंध दर्शाती है।

ब्राह्मणवादी पुरातत्ववेत्ता सिंधु घाटी में यज्ञ के कुप (fire altar) भी खोजे जाने का दावा कर रहे है। इंटों के बने किसी भी चबूतरे की कुछ इंटों को हटाकर उसको यज्ञ के कुप में बदलना कोई मुश्किल काम नही है।

ब्राह्मणवादी एजेंडे के लिये झूठे सबूतों को गढा जा रहा है !

अगर हम सरसरी तौर पर भी देखे तो हमें 20 वी शताब्दी में दुनियां भर में पुरातत्व विभाग का इस्तेमाल धार्मिक तथा राजनीतिक मकसद को पूरा करने के लिये किये जाने के असंख्य उदाहरण मिलेंगे। राजनीतिक मकसद से दुनियां भर में पुरातत्व विभाग के इस्तेमाल को निम्नलिखित किताबों में विस्तार से समझाया गया है :- 1) The Politics of the Past (Gathercole and Lowenthal 1990) 2) Nationalism, Politics, and the Practice of Archaeology (Kohl and Fawcett 1995), 3) Nationalism and Archaeology in Europe (Diaz-Andreu and Champion 1996) इन किताबों में सन् 1990 से इतिहासपूर्व वांशिक समूहों की पहचान (identities) के स्थानों को निश्चित करने, उत्खनन में प्राप्त वस्तुओं के आधार पर लोगों के वांशिक प्रकार तय करने, खास समूहों की उत्पत्ति की खोज को बढावा देने, तथा आधुनिक राज्यों में मिथकों में वर्णित जगहों को निर्धारित करने के लिये पुरातत्व विभाग का इस्तेमाल किया गया। इसलिये हिन्दूत्व {पढिये ब्राह्मण ावाद} की राजनीति को वैधता प्रदान करने पुरातत्वशास्त्र (archaeology) का इस्तेमाल किया जाना आश्चर्य नही है।(Negotiating Evidence: History, Archaeology and the Indus Civilisation SUDESHNA GUHA University of Cambridge) बाबरी मस्जिद के मामले में राजनीतिक मकसद को पूरा करने के लिये पुरातत्व विभाग का इस्तेमाल किया गया जैसे कि मार्च तथा सितंबर 2003 के दौरान अयोध्या में की गई खुदाई से स्पष्ट है। झुठमुठ यह यह साबित करने कि वेदिक संस्कृति भारत की मूल संस्कृति है और आर्य-ब्राह्मण भारत के मूलनिवासी है नकली सबूत गढे जा रहे है।

झुठमुठ यह साबित करने कि सिंधु घाटी संस्कृति और वेदिक संस्कृति एक ही है, ब्राह्मणवादी पुरातत्वशास्त्री वेदों को कम से कम ईसापूर्व 4500 वर्ष तक ले जाने की कोशिश कर रहे है। इसके बावजूद वे सिंधु घाटी संस्कृति को वेदिक संस्कृति साबित नही कर सकते क्योंकि उत्तर-पश्चिमी भारत की मूलनिवासी संस्कृति ईसापूर्व 6000 साल से भी ज्यादा पूरानी है। {जैसे कि मेहरगढ के उत्खननों से स्पष्ट है।} इसलिये वेदिक संस्कृति को भारत की मूल संस्कृति कतई साबित नही किया जा सकता।(www.sacw. net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a talk by Professor Romila

Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual.htm)

विदेशी सरस्वती नदी को भारत की नदी साबित करने की कोशिशें !

ब्राह्मणवादी आर्कालाजिस्ट भारत में वेदिक सरस्वती नदी दिखाने के लिये 1980 **के दशक से काल्पनिक सबूत पेश कर रहे है। यह कल्पना की गई है कि ईसापूर्व** 3000 **साल पहले सिंधु नदी के समांतर सतलज, यमुना तथा सरस्वती बहती थी। धरती की टेक्टानिक प्लेटों में हुई हलचल से सतलज तथा यमुना का पात्र बदल गया तथा सरस्वती और उसकी सहायक नदियां सुख गई। सबूत के तौर पर उन्होने ऋग्वेद के नदीस्तृति को पेश किया और दावा किया कि ऋग्वेद ईसापूर्व पांच हजार या चार हजार साल पहले से है क्योंकि ऋग्वेद के काल में सरस्वती नदी भरपूर पानी के साथ बहती थी। उन्होने यह साबित करने की कोशिशें की कि सिंघु घाटी संस्कृति के जो भी स्थल है वे सभी कथित विलुप्त सरस्वती नदी के क्षेत्रों पर है। सन्** 2003 **के अक्तूबर में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने इसी मकसद से 'सरस्वती हेरिटेज प्रोजेक्ट' तक शुरु किया।**

ब्राह्मणवादियों ने सिंधु-घाटी सभ्यता का नामांकन 'इंदस-सरस्वती संस्कृति' किया। भारत के स्कूलों में बच्चों को पढाया जा रहा है कि ब्राह्मणों की वेदिक संस्कृति भारत के इतिहास की सबसे समृध्द, प्राचीन, और उन्नत नगर संस्कृति है। (http://www.friendsofsouthasia.org/Nobel Laureate Dr. Amartya Sen on Hindutva and Reinventing of History.htm) **रोमिला थापर ने ब्राह्मणवादियों की इस दलील को कि घग्गर प्रणाली ही सरस्वती नदी थी को झूठा करार दिया है। इरफान हबीब ने ब्राह्मणों की उपरोक्त दलीलों को कठोरता से नकार दिया है।**(http://akdcts.blogspot.in/Reflections The River Saraswati and the Aryan Debate.htm) **पुरातत्व शास्त्रज्ञों ने ब्राह्मणवादियों की राजनीति से प्रेरित दलीलों को नकारते हुए कहा है कि घग्गर-हकरा जब अस्तित्व में थी तब वह इंदस नदी की मात्र एक सहायक नदी थी। इसलिये सिंधु घाटी संस्कृति के साथ सरस्वती शब्द का जोडा जाना पूरी तरह से गलत है। घग्गर-हकरा नदी के क्षेत्र के हरप्पा क्षेत्रों की तादाद को जानबूझकर ज्यादा बताया जा रहा है जबकि घग्गर-हकरा निर्जन प्रदेश सिंधु घाटी सभ्यता के विनाश के वक्त से ही पूरी तरह से निर्जन रहा है इसलिये उसमें ज्यादा तादाद में पुरातत्वीय क्षेत्र मिल जाते है।**(http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) **ब्राह्मणवादियों की तमाम खोखली दलीलों का सटीक जवाब जब रोमिला थापर, श्री हबीब, श्री भान** (cf. Thapar 2001: 19; Habib 2000–2001; Bhan: 2001: 45–6) **इ. व्दारा दिया गया तो ब्राह्मण ावादियों ने उन्हे यह कहकर नकार दिया कि यह पश्चिमी देशों के भाषा वैज्ञानिकों तथा इतिहासकारों के दावे मात्र है।**(Negotiating Evidence: History, Archaeology and the Indus Civilisation SUDESHNA GUHA University of Cambridge)

ऋग्वेद की सरस्वती नदी विदेशी नदी होने के अकाटय सबूत !

पिछले 8000 **साल पहले से नदियों के पात्र में कैसे बदलाव आये, क्या इन बदलावों की वजह से हरप्पा की सभ्यता नष्ट हुई इसे जांचने के लिये अर्बडीन** (Aberdeen) **विश्वविद्यालय के पीटर क्लिफ्ट के नेतृत्व में भूगर्भ वैज्ञानिकों की टीम ने अध्ययन किया। सन्** 2004 **के उनके शोध लेख से यह स्पष्ट है कि घग्गर हकरा के आयसोटोप** (isotopes) **यानि रासायनिक पदार्थ हिमालय के हिमखंडों से नही आये, वे बारीश के पानी से**

उत्पन्न हुए है। इस निष्कर्ष से ब्राह्मणों के हरप्पा काल में सरस्वती नदी होने के दावों की धज्जीयां उड जाती है।(http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) इससे साबित हो जाता है कि सरस्वती नदी विदेशी नदी है।

आर्य हर निर्जिव चिज में आत्मा होने की बात पर भरोसा करते थे इसलिये ऋग्वेद में सरस्वती नदी को देवी माना गया है। इंडस नदी सरस्वती की तरह महत्वपूर्ण और अतिविशाल है लेकिन आर्यो की देवताओं में उसका कहीं भी उल्लेख नही है। उस वक्त इंदस नदी सरस्वती नदी के समांतर बहती थी। कई ऋषि जिन्होने वेदों के hymns लिखे वे सरस्वती नदी के किनारे रहते थे। तब वे इंदस नदी के प्रति अनजान क्यों है ? ऐसा तभी मुमकिन है जब सरस्वति नदी भारत की नदी नही है। (http://www.daijiworld.com/Did the Sarasvati River Exist.htm) इतिहासकारों, भाषाशास्त्र के वैज्ञानिकों की वेदों के काल की गणना ईसापूर्व 1500 वर्ष सही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वेद लिखे जाने के पहले ही सरस्वती नदी सुख चुकी थी। ऋग्वेद की सरस्वती नदी को घग्गर नदी के रुप में स्थापित करना मुश्किल है क्योंकि वेदों के मुताबिक सरस्वती बहुत विशाल नदी थी जबकि घग्गर छोटी नदी है। इससे स्पष्ट है कि सरस्वती विदेशी नदी है। (www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm)

सात मुख्य नदियाँ (सप्त सिंधु) का वर्णन अस्पष्ट है। सरस्वती तथा पंजाब की पांच मुख्य नदियों को (Sutudri, Parusni, Asikni, Vitasta, Vipas) को जोड दिया जाये तो भी एक नदी (Kubha) कम पडती है। नदीस्तुति सुक्त (RV 10.75) की इंदस के पूरब तथा पश्चिम की दस नदियों के बीच तुलना किजिये। उसी प्रकार ऋग्वेद (6.61.10) में सरस्वती को saptasvasa यानि सात बहनों वाली (she with seven sisters) कहा गया है जिससे नदियों की कुल तादाद आठ हो जाती है। ऋग्वेद (RV 10.64.8 and RV 10.75.1) में सात नदियों के तिन समूह (thrice seven wandering rivers) बताये गए है। नदियों की तादाद 99 नदियां भी बताई गई है। इस तरह सप्त सिंधु के नदियों की तादाद निश्चित नही है। (http://en.wikipedia.org/Rigvedic rivers - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

आर्य सबसे पहले बॅक्ट्रिया में ऑक्सस (Oxus) नदी के क्षेत्र में ईसापूर्व 4000 वर्ष पहले बस गए। उन्होने ऑक्सस नदी को सरस्वती नाम दिया। वहां आर्यो की तथाकथित संस्कृति का विकास हुआ। श्री गंगाराम के मुताबिक आर्यो की संस्कृति सरस्वती तथा दृष्यव्दति नदियों पर केन्द्रित थी। सरस्वती (Oxus) तथा दृष्यव्दति (Jaxartes) इक्शवाकु का प्रतिनिधित्व करती है। सरस्वती देवी को वाक्स (Vaks) कहा जाता है। सरस्वती को महाभारत में वाक्सु कहा गया है। ग्रीक शब्द ऑक्सस यह वाक्सु शब्द का अपभ्रंश है। वह बोलने (speech) से वह संबंधित है। दृष्यव्दति (Jaxartes) का अर्थ आंख की बेटी होता है। सरस्वती का संबंध वाचा से तो दृष्यव्दति का संबंध 'देखने' से है। इक्श-वाक् (sight-speech) के बीच संबंध है। विख्यात ऋषि इक्श-वाकू कश्यप ऋषि के नाती माने जाते है। ये दो नदियाँ इक्श-वाकू को दर्शाती है जबकि कश्यप कॅस्पियन समुद्र है। वेदिक काल में इसे कश्यप मीरा कहा जाता था। भूगर्भ वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि पहले ये नदियाँ कॅस्पियन समुद्र में जाकर मिलती थी। बाद में उनका पात्र बदल गया और वे अराल समुद्र से मिली। आर्यो के दक्षिण की ओर मूडने की यही वजह रही है। वेदों की राहारो रसा (Raharo Rasa) नदी वोल्गा नदी के रुप में चिन्हित है, क्योंकि वोल्गा को पुरानी स्लावोनिक (old slavonic) भाषा में रासा (Rasa) कहा जाता था। इसी से

रशिया नाम उत्पन्न हुआ।(BACTRIAN ORIGIN - Ancient history of Indo-Europeans. htm) राहुल सांस्कृत्यायन ने भी अपनी किताब 'वोल्गा से गंगा' में आर्यो के वोल्गा नदी से गंगा नदी तक के स्थानांतरण को दर्शाया है। हेलमंड नदी अवेस्टन में Haetumant तथा Haraxvaiti है। संस्कृत में वह सरस्वती है। ऋग्वेद में जैसे सरस्वती की प्रसंशा है, अवेस्टा में हेलमंड की वैसे ही प्रसंशा है। कोच्चर (Kocchar, 1999) के मुताबिक हेलमंड और ऋग्वेद के 2.41, 7.36 etc सुक्तों की सरस्वती नदी एक ही है। नदीस्तुति सुक्त (10.75) को कई शताब्दियों बाद लिखा गया था जब आर्य भारत में पहुंच चुके थे। सरस्वती गुम नदी के रुप में याद रखी गई। उसे घग्गर नदी मान लिया गया जो रेगिस्तान में विलिन हुई।

सरस्वति तथा हेलमंड नदी की भौगोलिक स्थिति समान है। दोनों नदियाँ बडे तालाब में मिलती है। हेलमंड नदी इरानियन मैदानों के उथले दलदली क्षेत्र में मिलती है। ऋग्वेद में कहा गया है कि सरस्वती समुद्र से मिलती है।(http://en.wikipedia.org/ Sarasvati River - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

आर्य-ब्राह्मणों को मूलनिवासी जबकि मूलनिवासियों को बाहरी साबित करने की ब्राह्मणवादियों की नापाक कोशिशें !

एक ओर आर्य-ब्राह्मण खुद को भारत के मूलनिवासी होने का दावा रहे है, तो दूसरी ओर आर्य-ब्राह्मण तथा उनके दलाल प्रचारित करने में लगे हुए है कि ओबिसी, दलित, आदिवासियों ने खुद को मूलनिवासी या आदिवासी बिल्कुल नही कहना चाहिये। यह आर्य-ब्राह्मणों के पाखंडी चरित्र के मुताबिक ही है। उनकी दलील है कि खुद को आदिवासी या मूलनिवासी कहना खुद की हीनता तथा मानसिक संकीर्णता को दर्शाता है।

खुद को बहुजन मिशन में समर्पित होने का दावा करने वाले कुछ बुध्दिजीवी भी आर्य-ब्राह्मणों के इस कुप्रचार में क्यों शामिल है, इसे जांचना-परखना बेहद जरुरी है। इनमें से एक बुध्दिजीवी ने हमें किताब में मूलनिवासी, आदिवासी तथा आर्य शब्द का इस्तेमाल न करने की सलाह दी। हमने उनसे प्रार्थना की कि इसके संबंध में उनकी जो भी दलीलें है उनसे वे हमें अवगत कराये। उनकी दलीलों को तथा हम मूलनिवासी, आदिवासी तथा आर्य शब्द का इस्तेमाल क्यों करते है इसे भी हम अपनी किताब में शामिल करेंगे। उन्होने उपलब्ध कराई हुई सीरी विनोद अनाव्रत व्दारा लिखी 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' नामक मराठी में लिखी किताब के अध्याय क्रमांक 5 'आदिवासी कि आदिजमाती ?' में यह दलीलें है। इनका संक्षिप्त सार आगे दिये मुताबिक है।

भारत के मूलनिवासी कौन इस सवाल का जवाब गोंड, गोवारी, नागा, मिझो इ. देने पर और ज्यादा कठिनाई की हालत पैदा होती है। ऐतिहासिक दृष्टी से मात्र गणतांत्रिक जनजातियां ही नही तो आर्य-भाषिक जनजातियां भी भारत की मूलनिवासी जातियां है। ('भारतातिल indigenous People (आदिनिवासी लोक) कोण ? या प्रश्नाचे उत्तर गोंड, गोवारी, नागा, मिझो इ. दिले तर अजून अडचणीची स्थिति निर्माण होते. ऐतिहासिकदृष्टया नुसत्या गणतांत्रिक जमातीच नव्हे तर आर्यभाषिक जमातिसुध्दा भारतातिल आदिनिवासी आहेत.') भारत में जिन जनजातियों के राज्य थे; उनका शासन तत्कालीन गण-प्रणाली के तहत होता था। इसी गणतंत्र प्रणाली की विरासत को पुनरुज्जिवीत करने से भारत को भी गणतंत्र कहा गया है। इन गणतांत्रिक टोलियों की तरह आर्यभाषिक भी भारत में टोलियों के रुप में रहते थे। देश को मिला भारत नाम भी आर्यभाषि टोलियों की स्मृति को संजोकर

रखता है। भले ही आर्यभाषिक टोलियों के लोग वेद तथा ऋचावादी थे, उनके पास भली भांति प्रस्थापित गणतांत्रिक व्यवस्था नही थी। इसके बावजूद कामों का विभाजन कर वे खुद को संगठित रखते थे। ('भारतात ज्या जमातींची राज्ये होती; त्यांचा राज्यकारभार तत्कालीन गणप्रणाली नुसार व्हायचा. त्याचा वारसा सांगत तत्सम गणतांत्रिक पध्दतीचे पुनरूज्जीवन केल्याने भारताला सुध्दा गणतंत्र असे म्हटले जाते. अर्थातच या गणतांत्रिक टोळयांप्रमाणे भारतात आर्यभाषिक हे सुध्दा टोळयाने राहत होते. देशाला मिळालेले नाव भारत हे सुध्दा त्याच आर्यभाषी टोळीची स्मृती जपणारे आहे. आर्यभाषिक टोळयांमधील लोक हे वेद, ऋचावादी असले तरी, त्यांच्यात अशा प्रकारची सुस्थापित गणतांत्रिक प्रणाली नव्हती. मात्र तरीही कार्याची विभागणी करुन एकसंघ राहण्याचा प्रकार त्यांच्यातही होता.) उपरोक्त उध्दहरणों से स्पष्ट है कि 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब से संबंधित लोग आर्यो को भारत का मूलनिवासी मानते है।

आर्यो को भारत का मूलनिवासी साबित करने के लिये इन्होने यह दलील दी है कि हम सब आदिवासी तथा साथ ही बाहरी लोग भी है। हर गांव-शहर में मूलनिवासी इस अर्थ से आदिवासी है। इतने साल से ही निवास करने वालों को आदिवासी कहा जायेगा ऐसा कोई मानदंड नही है इसलिये आदिवासी पहले निवास करने वाला यानि पूर्वनिवासी है। आदिवासी यह शब्द अकेला नही है, वह दूसरे शब्द को जन्म देता है, वह दूसरा शब्द 'बाहरी व्यक्ति' है। कोई आदिनिवासी यानि आदिवासी है तो बाहरी लोग कौन ? यह प्रश्न अपने आप पैदा होता है। जैसे कि मै {'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब का लेखक सीरी विनोद अनाव्रत} अपने पैतृक गांव का आदिवासी, मूलनिवासी हूं; लेकिन आदिजनजातीय नही हुं और नागपुर में बाहरी व्यक्ति हुं। (आपण सर्व आदिवासी आणि उपरे सुध्दा.... प्रत्येक गांव-शहरात मूलनिवासी या अर्थाने आदिवासी आहेत. मात्र अमूक वर्षापासून वास करणाऱ्यालाच आदिवासी म्हणायचे असे मापदंड नसल्याने आदिवासी म्हणजे आधी / पूर्वी निवास करीत असलेला; म्हणजेच पूर्वनिवासी. आदिवासी हा शब्द एकटा नाही, तो दूसऱ्या एका शब्दाला जन्म देतो, तो शब्द म्हणजे उपरा. कोणी आदिनिवासी म्हणजेच जर आदिवासी असतील तर उपरे लोक कोण ? हा प्रश्न आपसुकच निर्माण होतो. जसे की मी माझ्या पैतृक गावचा आदिवासी / मूळनिवासी आहे; परंतु आदिजमातीय नाही आणि नागपुरातील उपरा आहे.)

लेखक सीरी विनोद अनाव्रत के मुताबिक जंगल के अपने मूल स्थान में रहने वाले लोग बहुत कम तादाद में है। अधिकतर विस्थापित है इसलिये वे बाहरी भी है। अनुसुचित जनजातियों को मूलनिवासी कहा जाये तो वे कहां के मूलनिवासी है ? इस सवाल का जवाब सबसे पहले देना होगा। वे कहां के मूलनिवासी है ? भारत के ? गांव के ? पहाड के ? जंगल के बाहर के ? निश्चित कहां के मूलनिवासी ? आदिवासी कौन है इसकी कानून के दृष्टिकोण से कोई भी व्यवहारिक परिभाषा नही दी गई है। इसलिये अ) जो लोग जंगल में रहते है, ब) जिनमें आदिम समाज के गुणधर्म है, क) जो भौगोलिक दृष्टी से औरों से अलग रहते है, ड) अन्य समुदायों से कतराते है, तथा ई) जो बेहद पिछडे है उन्हे अनुसुचित जनजाति कहा गया है। आज उपरोक्त परिभाषा से 'जंगल' हट गया है। अनु. जनजाति तथा अनु. जातियां भी अपने ही समूदायों में शादी-ब्याह करते है, उनकी भी विशिष्टता होती है इसलिये जनजातियों तथा जातियों में कोई फर्क नही है। इसलिये इन्हे आदिवासी कहना गलत होगा। आदिवासी यह आदिवासी न होकर आदिम है। वे आज भी आदिम (Primitive) इसलिये है क्योंकि वे जंगल में रहते है। {इस किताब का लेखक भी बीजेपी ने आदिवासियों को दी हुई वनवासी कल्पना को ही अलग शब्दों में पेश कर रहा है।} ... खुद को युंही आदिजंगल निवासी (आदिवासी) कहकर अपनी

सामाजिक पहचान को सहलाते हुए जीने का मतलब अनु. जाति के लोगों ने खुद को दलित {हीन} समझते हुए जीने जैसा ही है। खुद को आदिवासी करार देना न सिर्फ हीन मानसिकता से लिपटे रहना है बल्कि यह उनकी मानसिक संकीर्णता को भी दर्शाता है।

किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत को आर्य शब्द पर सख्त ऐतराज है। वे मॅक्स म्युलर के ईसवी सन 1888 के कथन को आधार बनाते हुए कहते है कि उन्होने आर्य शब्द का इस्तेमाल भाषासमुच्चय को दर्शाने किया था न कि वंश दर्शाने के लिये। आर्यभाषिक भारत में अब जनजाति का जीवन नही जीते बल्कि वे काफी विकसित हो चुके है और सर्वोच्च स्थान पर आरूढ है। ब्राह्मण यह नाम / वर्ण सर्वश्रेष्ठ माने जाने के बावजूद ब्राह्मणों ने परिस्थिति के मुताबिक अपने पृथकता को त्यागकर वे आज 'हम सब हिंदू' ऐसी पताका लेकर घूमते है और बहुसंख्यंक लोगों का नेतृत्व कर रहे है। लेकिन हम अपने घमंड, मगरूरी में दलित तथा आदिवासीवाद के टीन के कनस्तर को बजाते घूम रहे है।

लेखक के मुताबिक हमें अपने अधिकार संवैधानिक रास्ते से ही हासिल करने है। संसदीय लोकशाही की सीमारेखा के बाहर का कोई भी रास्ता घातक साबित होगा। -- यह है लेखक सीरी विनोद अनाव्रत की दलीलों का सारांश। अब हम अपना पक्ष रख्खेंगे :-

आर्य-ब्राह्मणों ने अपने धर्म-ग्रंथों में खुद को वांशीक रुप से आर्य कहा है, न कि विशेषणात्मक रुप से। युरोप में आर्य इस शब्द का सबसे पहले उपयोग जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक वॉन स्लेगेल (Friedrich von Schlegel) ने अपनी किताब 'Über die Sprache und Weisheit der Indier ' में सन 1808 में इंडो-इरानियन तथा संपूर्ण इंडो-युरोपीयन भाषी लोगों के लिये किया था। मॅक्स म्युलर ने कॉकॅसस को आर्यो की जन्मभूमि करार दिया। आर्थर डी गोबिन्यू (Arthur de Gobineau) ने आर्यो को एक वांशीक प्रजाति माना। हेरोडोटस के मुताबिक मीड के लोग खुद को अरीओई (Arioi) यानि आर्य कहते थे। ग्रीक भाषा में यह शब्द आर्यो के लिये प्रयुक्त हुआ है। इतिहासकारों तथा स्कॉलर्स के मुताबिक अफगानिस्तान को अरियाना (Ariana) कहा जाता था। अरियाना यह शब्द आर्यो की अतिप्राचीन जन्मभूमि अरियाना वैजो (Aryanam Vaeja) का ग्रीक भाषा में उच्चारण है। आर्यो की जन्मभूमि पर्शिया (टर्की) में भी मानी गई। ईरान खुद को आर्य-राष्ट्र मानता है। अफगानिस्तान की राष्ट्रीय विमानसेवा का नाम अरियाना एअरलाईन्स (Ariana Airlines) रखा गया है।(http://matter-of-spirit.com/ARYAN.htm) थिऑसॉफिकल सोसायटी की संस्थापक हेलेना ब्लावटस्की ने आर्य वंश को सभी सभ्यताओं का जनक करार दिया। (http://matter-of-spirit.com/ARYAN.htm) ब्लावटस्की के विचारों से प्रेरित हिटलर ने आर्य शब्द का वंशवादी दृष्टी से उपयोग किया। उसने आर्यो को सबसे श्रेष्ठ वंश करार देकर दुनियां में आर्यो के वर्चस्व को कायम करने तथा नीच वंशों के उन्मूलन की योजनाएं बनाई। पुर्तगालियों तथा अंग्रेजी साम्राज्यवादियों ने भी आर्य शब्द का वंशवादी दृष्टी से उपयोग किया है। उन्होने अपनी राजनीतिक ताकत को मजबूत करने ब्राह्मण इ. सवर्ण जातियों को आर्य करार देकर अपना मित्र बनाया। पुर्तुगालियों ने वेदिक ब्राह्मण ों की चातुवर्ण की जातिव्यवस्था पर अमल किया और ईसाई चर्चो में मूलनिवासी नीच मानी गई जातियों को प्रवेश लेने पर प्रतिबंध लगा दिया। उन्होने ब्राह्मणों को वरीयता के पद दिये। यही रवैया अंग्रेजों ने भी अपनाया।(http://matter-of-spirit.com/ARYAN.htm) लेखक तथा धार्मिक नेता केशव चंद्र सेन के मुताबिक अंग्रेज तथा भारत की उच्च जातियां आर्यो की वंशज है। अंग्रेजों का भारत आना अपने बिछडे आर्य भाईयों से मिलने आने जैसा है।(www.sacw.net/Chapter 2 Communalism and History - Based on a

talk by Professor Romila Thapar _ Indian National Social Action Forum Manual. htm) भारत को गुलाम बनाकर उसके शासक होने पर विदेशी आर्य-ब्राम्हण रात दिन इतराते रहे है। खुद को युरोपियन शासकों के समकक्ष रखकर गौरवान्वीत अनुभव करते रहे है। आर्य विदेशी है इस सच्चाई को ब्राम्हणवादी तिलक, नेहरु इ॰ अपनी किताबों में बडे गर्व से लिख चुके है। (बेनि प्रसाद, p.28) स्कूल कॉलेजों की किताबों में आर्यो को गोरे रंग के, श्रेष्ठ जाति-वंश के, सभ्य तथा उनन्त सभ्यता के प्रचारित कर आर्य-ब्राह्मण ों को महीमामंडित किया जाता रहा है। सन् 1875 में एच. पी. ब्लावटस्की ने भारत में अपने सहयोगी कर्नल आल्कॉट के साथ थिऑसॉफिकल सोसायटी बनाई। थिऑसॉफिकल सोसायटी का आर्य समाज में विलय भी किया गया था। ऑल्काट तथा थिआसाफिस्टों ने प्रचारित किया कि आर्य भारत के मूलनिवासी है। उन्होने सारी दुनियां को सभ्यता सिखाई है। अंग्रेज तथा भारत की उच्च जातियां आर्य है वे एक-दूसरे से वांशिक रुप से जुडे है।(http://www.countercurrents.org/The Future Of The Indian Past By Romila Thapar.htm) उन्होने आर्य समाज तथा आर्य शब्द को लेकर अनगीनत संगठन बनाये हुए है। आर्य शब्द इतिहास की वास्तविकता है जिसे किसी भी तरह से झुठलाया नही जा सकता। 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत की यह दलील कि आर्य का मतलब भटकती टोलियां था और अब वे भटकती टोलियां नही बल्कि शासक जमात है इसलिये उन्हे आर्य कहना मुनासिब नही है, पूरी तरह से बेतुकी है।

डॉ. अम्बेदकर के अनुसार लगभग हर ब्राह्मण अपने जाति के नियमों को छोड चुका है। जूते बेचने का व्यवसाय करने वाले ब्राह्मणों की संख्या पंडे-गीरी का व्यवसाय करने वाले ब्राह्मणों से कही अधिक है। ब्राह्मणों ने अपने निर्धारित कामों को छोड दिया है। कई ऐसे व्यवसाय वे करते है जो उनके लिये प्रतीबंधित है। ऐसे सैंकडो ब्राह्मण है जो रोज जाति नियमों को तोडते है तथा शास्त्रों को रौंदते है लेकिन वे शास्त्रों के कट्टर समर्थक और जातिवाद के नियमों के पुरस्कर्ता है। उन्होने यह दोहरा चरित्र इसलिये अपनाया है क्योंकि शोषित अवाम को जातिवाद के जुएँ से मुक्त कर दिया जाये तो ब्राह्मणों की सत्ता और प्रतिष्ठा के लिये खतरा पैदा हो जायेगा।(Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 1 , P. 95)

अधिकांश ब्राह्मण अपने धर्म में बताये नियमों व्दारा निर्धारित काम की बजाय अन्य काम करते है। जूते बनाने का कारखाना चलाने वाला ब्राह्मण खुद को कभी चमार नही कहता। भंगी, चमार ने चाहे जितने वेद क्यों ना पढे हो ब्राह्मण धर्म के नियमों के मुताबिक उसे भंगी-चमार ही कहा जाता है। महार लोगों ने गाय की बोटियां सुखाकर रखना कई दशकों पहले ही छोड दिया था इसके बावजूद वे आज भी महार ही कहलाते है। राष्ट्रपति बनने के बाद भी दलित जाति खत्म नही होती तब अवस्था बदलने से आर्यो की वांशीक पहचान कैसे खत्म हो सकती है ? इसलिये आर्यो को आर्य क्यों न कहा जाये ?

आर्य वांशीक तौर से नाग-द्रविडों से अलग है। गोरी चमडी के आर्य अलबिनो-निन्डरथॉल के वंशज है यह बात अब रहस्य नही है। तमाम डी.एन.ए. शोधों से साबित हो चुका है कि आर्य एक अलग वंश है। निन्डरथॉल वंशीय लोगों की एक खास वर्चस्ववादी हिंसक मानसिकता का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट रुप से कहा है कि भारत में जाति तथा वर्ग एक दूसरे में समा दिये गए है। उच्च जातियों का आमतौर से शोषक वर्ग में जबकि पिछडी नाग-द्रविड जातियों का शोषित वर्ग में समावेश होता है। जबकि मूलनिवासी नाग-द्रविड भारत का शोषित अवाम है। नाग-द्रविडों की समता, बधुत्व और न्याय पर आधारित बहुजनवादी श्रमण संस्कृति है। जबकि आर्य शब्द बर्बर निरंकुश धार्मिक राज्यव्यवस्था (fascist Theocracy) भी दर्शाता है। यह व्यवस्था मनुस्मृति और

तलमूद के सिधान्तों से नियंत्रित है। आर्य-ब्राह्मण परजीवी शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। आर्य-ब्राह्मण विरूध्द नाग-द्रविड यह भारत का मूलभूत अंर्तविरोध है। आर्य शब्द का इस्तेमाल न करने का मतलब इस वर्ण-वर्ग के संघर्ष को ही नकार देना है। इसे नकारने का काम सिर्फ आर्य-ब्राह्मणवादी, उनके दलाल या उनके गुलाम ही कर सकते है। आर्य-ब्राह्मण अथवा प्रस्थापित वर्ण या वर्ग को शोषित अवाम का बर्बर मनमाने ढंग से दमन शोषण करने का अधिकार है इसपर विश्वास करत पूरे मन से प्रस्थापित वर्ग / वर्ण की सत्ता को मजबूत करने में विश्वास रखने वाला आर्य-ब्राह्मणवादी है। जो ऐसा किसी लालच से करता है वह आर्य-ब्राह्मणों का दलाल तथा जो किसी मजबूरी से ऐसा करता है वह आर्य-ब्राह्मणों का गुलाम है, चाहे फिर उसकी जाति या वर्ण कोई भी क्यों ना हो। इसतरह ब्राह्मणवाद वांशीक तथा मानसिक दोनों ही स्तरों पर कार्यरत है। आर्य-ब्राह्मणों को भारत का मूलनिवासी करार देने का मतलब भारत के वर्ण-वर्ग के संघर्ष को नकार देना है। ऐसा काम ब्राह्मणवादियों का दलाल या उनका गुलाम ही कर सकता है।

अगर परजीवी आर्य-ब्राह्मणों का वर्ण-वर्ग सभी नाग-द्रविड जाति-समुहों को उनकी संख्या के मुताबिक हर क्षेत्र में भागीदारी यानि प्रतिनिधित्व दें और उनका दमन-शोषण खतम कर दे तो 'आर्य' 'मूलनिवासी' 'विदेशी' इ. शब्दों के माने ही खत्म हो जाएंगे। ऐसा होना नामुमकिन है क्योंकि यह शोषक और शोषितों के बीच का अंर्तविरोध है। आर्य-ब्राह्मण विरूध्द मूलनिवासी यह अंर्तविरोध शोषण-व्यवस्था की उपज है। जबतक शोषक वर्ण /वर्ग और उसकी धार्मिक सामाजिक शोषक संस्कृति का अस्तित्व है वर्ण-संघर्ष की वजह से आर्य-ब्राह्मण शब्द का विशेष अर्थ रहेगा। आर्य-ब्राह्मणों की शोषण व्यवस्था और उसकी रक्षक संस्कृति को खत्म करके समता, बंधुत्व न्याय पर आधारित शोषण विहीन समाज व्यवस्था कायम करके ही आर्य विरूध्द मूलनिवासी के व्दंद को खत्म किया जा सकता है। अन्य कोई रास्ता नही है। इसलिये 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत की यह दलील कि आर्य भारत में कई हजार सालों से रह रहे है इसलिये मूलनिवासी है का कोई मतलब नही है। अरब, चीनी, इ. कई विदेशी जातियां कुछ शताब्दियों पहले भारत में आकर आज शोषितों की कतार में शामिल हो चुकी है। इन जातियों का नाग-द्रविड मूलनिवासियों से कोई मूलभुत संघर्ष नही है। भारत की श्रमण संस्कृति ने उन्हे खुशी से अपना लिया है। लेकिन आर्य ब्राह्मण विदेशी आक्रमण ाकारी ही नही बल्कि हमेशा से परजीवी शोषक जमात रहे है। इसलिये वे किसी भी सुरत में भारत के मूलनिवासी समाज का हिस्सा नही बन सकते। परिवार में कोई सदस्य परिवार-द्रोही निकलता है तो खून के संबंध के बावजूद उसे परिवार से निष्काषित किया जाता है। इसलिये विदेशी आक्रमणकारी आर्यो को मूलनिवासी मंजूर करना नामुमकिन है। आर्यो को मूलनिवासी साबित करने के लिये 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत ने आर्य-ब्राह्मणों की दलील को पेश किया है कि इस देश को भारत यह नाम आर्यो की टोली के नाम से मिला है इसलिये आर्य मूलनिवासी है। यह दलील भी बेतुकी है क्योंकि कोई विदेशी किसी देश पर काबिज होकर उसे अपने समुदाय का नाम देता है तो क्या वह विदेशी समूदाय काबिज देश का मूलनिवासी समुदाय बन जाएगा ?

डॉ. हीरालाल जैन इस सिधान्त को गलत मानते है कि अग्नि, वायू व ब्रह्मांड पुराण के आधार पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष भरत के नाम पर पडा है। उनके मुताबिक इन्ही पुराणों में दिगर जगहों में ऋषभ के पुत्र भारत का उल्लेख किया गया है। कुछ पुराणों में यह स्पष्ट रुप से कहा गया है कि भारतवर्ष यह नाम ऋषभ के पुत्र भारत के

नाम पर रखा गया है तथा देश अथवा वर्ष यह शब्द दुष्यंत के पुत्र भारत के साथ नही आता है।(http://creative.sulekha.com//Evolution of Shramanic Jain Religion in Indic Civilisation _ Sulekha Creative.htm) इसतरह भारत यह नाम जैन धर्म के वृषभ से संबंधित है न कि ब्राह्मण धर्म से।

'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत ने एक ओर जहां ब्राह्मणों को मूलनिवासी साबित करने की कोशिश की है तो दूसरी ओर मूलनिवासी नाग-द्रविडों को खूद को मूलनिवासी कहने पर इस थोथी दलील के आधार पर सख्त ऐतराज किया है कि अधिकांश आदिवासी भारत के एक प्रांत के जंगल क्षेत्र से विस्थापित होकर दूसरे क्षेत्र में बस गए है इसलिये वहां वे बाहरी लोग है। अनाव्रत आर्य-ब्राह्मणों की जबान में आदिवासियों को जंगल के यानि वनवासी करार दे रहे है। लेकिन जिस तरह कोई भारतीय एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाने के बाद भी भारतीय ही रहता है उसी तरह आदिवासी एक प्रांत से चाहे दूसरे प्रांत चले जाये लेकिन वे 'भारत के मूलनिवासी' ही बने रहेंगे। भारत का संविधान भी हर भारतीय को भारत में कहीं भी बसने की इजाजत देता है। इसलिये कोई भी भारत का मूलनिवासी भारत में बाहरी नही हो जाता।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 5 जनवरी 2011 में अपने निर्णय में कहा है कि जिन्हे हम अनुसुचित जातियों के नाम से जानते है वे भारत में द्रविड आने के पहले से भारत के मूलनिवासी है। सर्वाच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की इस बेंच में न्यायमूर्ति मार्कंडेय काटजू तथा न्यायमूर्ति ज्ञान सुधा मिश्रा शामिल थे। उपरोक्त निर्णय सन 2011 में अपराधिक याचिका क्रमांक 11 (Criminal Appeal No. 11 of 2011) कैलास तथा अन्य व्दारा महाराष्ट्र सरकार दायर विशेष छुट्टी याचिका क्र. (Special Leave Petition No. 10367 of 2010) के मुकदमें के दौरान आया। इसतरह सर्वोच्च न्यायालय के मुताबिक मुंडा आदिवासी जिनके वंशज आज झारखंड के छोटानागपुर, छत्तीसगढ़, ओरीसा, पश्चिम बंगाल इ., तमिलनाडू के तोडा जो नीलगीरी पर्वत पर रहते है, अंदमान व्दीप के आदिवासी तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जंगल-पर्वतों पर रहने वाले गोंड, संथाल, भील इ. आदिवासी भारत के मूलनिवासी है। भारत के सर्वाच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी कहा है कि भारत के मूलनिवासी हिन्दू नही है। (http://roundtableindia.co.in//Round Table India _ Hindus were not original inhabitants of India.htm) इन मूलनिवासी जनजातियों को राक्षस, असूर, इ. नामों से जाना गया है। भारी तादाद में उनका जनसंहार किया गया। उनके वंशजों को अपमानित किया गया नीच करार दिया गया। सदियों से उनपर तरह तरह के जुल्म ढाये गए। उन्हे उनके क्षेत्रों से भगाया गया जिससे वे जंगल तथा पर्वतों पर जा बसे और गरीबी, अशिक्षा, बीमारियों इ. के शिकार हुए। अपने तमाम उत्पीडन के बावजूद गैरआदिवासियों की तुलना में उन्होने नैतिकता के स्तर को कायम रखा है। आमतौर से वे न ही किसी को धोखा देते है और न ही झूठ बोलते है। वे उंचे चरित्र के होते है। आज उन्हे वहां से भी विस्थापित करने की कोशिशें की जा रही है। आर्यो के बहुत पहले ही द्रविड अफ्रिका से भारत आकर बसे थे। द्रविड तथा भारत के आदिवासी एक ही नाग-द्रविड संस्कृति के है।

'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत के मुताबिक दलित यह शब्द खुदकी लाचार हीनता की हालत को तथा आदिवासी यह शब्द

अविकसित आदिम (primitive) जंगली हालत को तथा संकीर्ण मानसिकता को दर्शाने वाले है, इसलिये खुद को आदिवासी तथा दलित नही कहना चाहिये। उपरोक्त दलील या तो अज्ञान पर या फिर मक्कारी पर आधारित है क्योंकि डॉ. अम्बेडकर अपनी किताबों में इस बात को स्पष्ट रुप से कह चुके है कि दलितों व्दारा अपना नाम बदल लेने से कोई फायदा नही होगा। दलितों ने अपना नाम चोखामेळा, हरिजन, सोमवंशी इ॰ कुछ भी रख लिया तो उनके हालात में या मानसिकता में कोई फर्क नही पडने वाला। अंग्रेजों ने लार्ड विलियम की अध्यक्षता में 1928 में एक कमेटी गठित कर पूरे भारत का दौरा करके सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक क्षेत्र में पिछडी जातियों की सूची बनाने का काम शुरु किया तो ब्राह्मणवादियों को लगा कि इस सूची में सारे पिछडे बहुजन समाज को शामिल कर लिया गया तो सुविधाएं ब्राह्मणों के हाथ से खिसककर बहुजनों को मिलने लगेगी और ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त हो जायेगा। इसलिए ब्राह्मण ावादियों ने बहुजन जनता को गुमराह करना शुरु किया कि डॉ. अम्बेदकर के चक्कर में मत पडो वे तुम्हे अछूत बनाना चाहते है। ब्राह्मणवादियों ने इन जातियों को ठाकुर, राजपुत, बनिया, प्रजापति, विश्वकर्मा इ॰ लिखने के लिए उकसाया। डॉ. अम्बेदकर ओबीसी जातियों को समझाते रहे कि भाई ब्राह्मणवादियों की नजर में आप शुद्र है और शुद्र ही रहेंगे फिर आप चाहे कोई भी नाम क्यों न लगाले। इसलिए मिल रही सुविध ाओं को झुठी शान के धोखे में ब्राह्मण बनियों की झोली में डालकर अपनी पीढियों का भविष्य मत नष्ट करो। लेकिन डॉ. अम्बेडकर की बात न मानकर नाई बिरादरी ने खुद को ठाकुर लिखना शुरु किया। मनुवादियों ने इनकी पहचान के लिए तय किया कि नकली ठाकुर (पिछडी जाति) अपने नाम के पीछे ठाकुर लिखेगी (जैसे बिहार के कर्पुरी ठाकुर) जबकि असली ठाकुर अपने नाम के आगे ठाकुर शब्द को लगाएंगे। कश्यप जो मल्लाह थे उन्हे राजपुत, सुनारों को बनिया, बढई को विश्वकर्मा, कुम्हारों को प्रजापति इ॰ लिखने को बाध्य किया गया। बंगाल की चांडाल जाति का नामांकन नमोशुद्र किया गया। चमारों ने खुद को रविदासीया इ. तथा भंगी / मेहतर समाज के लोगों ने खुद को वाल्मिकी तथा सुदर्शन समाज कहलाना शुरु किया। इस नामांतरण के बावजूद जब उनकी हालत में या मानसिकता में कोई बदलाव नही हुआ तो 'दलित' शब्द त्याग देने से मानसिकता बदल जाएगी यह सोच खयाली पुलाव से ज्यादा महत्व नही रखती। कई दलितों ने खुद के नाम राजकुमार, नरेश, राजेश, राजवीर इ. रखे है, क्या ये नाम ध ारण करने से उनके मन की हीनता की भावना खत्म हो गई ? नाम बदलने से नही बल्कि आर्य-ब्राह्मणवादियों को परेशान और परास्त करने की कुव्वत हासिल करने से ही दलितों के मन की हीनता की भावना खत्म होती है। ऐसी कुव्वत कांशीराम, मायावती ने पैदा की इसलिये वे फक्र से खुद को 'चमार' होने का जाहिर ऐलान करते रहे है। उनकी इसी कुव्वत की बदौलत कई ब्राह्मण मायावती की जूतियां तक खुद होकर साफ करते हुए टी.वी. पर देखे गए। पंजाब में ददराल के सभी दस वीडिओ में चमार नाम का गौरवगाण किया गया है। (देखिये हमारा वीडिओ डीविडी शीर्षक क्रमांक 65) ददराल के मुताबिक संत रवीदास ने अपने दोहों में खुद को फक्र से चमार कहा है। संत रविदास में अपनी जाति के नाम को लेकर कोई हीन भावना नही थी क्योंकि वे ब्राह्मण पंडों को बहस में परास्त कर चुके थे। ददराल के वीडिओ के जैसे वीडिओ वाल्मीकी समाज के गायकों ने भी बनाये है जिसमें उनके मन का आत्मसम्मान का सैलाब स्पष्ट नजर आता है। पूरे पंजाब में ही नही बल्कि विदेशों में भी दलित समुदायों के बीच ये वीडिओ बेहद लोकप्रिय है। रुपपाल धीर इ. कई नये गायकों के वीडिओ की तादाद लगातार बढ रही

है। इन गीतों का सिलसिलाशुरु करने का श्रेय दलित गायक एस. एस. आजाद को जाता है। अपने हित-शत्रु से दो दो हाथ करने पर उतारू होने का मतलब ही यह है कि उस दलित-बहुजन ने अपने मन की हीनता की भावना को मिटा दिया है।

जिस तरह जगजीवनराम व्दारा बनारस में सुपुर्णानंद की मूर्ति का अनावरण करने के बाद मूर्ति को गंगाजल से धोकर पवित्र किया गया था उसी तरह राजस्तान के अलवर में पितामह फुले की मूर्ति का अनावरण कांशिराम के हाथों से होने के बाद उस मूर्ति को धोने की योजना थी। यह पता चलते ही कांशिराम ने अपने भाषण में कहा था कि ऐसी किसी घटना को रोकना, उन व्यक्तियों को सजा देना मुख्यमंत्री का काम है। अगर मुख्यमंत्री अपनी जिम्मेदारी नही निभाता है, तो उस मुख्यमंत्री को और उसकी काँग्रेस पार्टी को मिट्टी में मिलाना, ये कांशीराम चमार की जिम्मेदारी है। ब्राह्मणवाद से कभी कुछ मांगकर नही बल्कि ब्राह्मणवाद को रगडकर हमें आगे बढना है। ... ब्राह्मणवाद की रगडाई जरूर होगी और चमार के हाथ से होगी। चमारों को ब्राह्मणवाद ने जानवरों की चमडी उतारने का काम दिया था, अब वो जालीम (मनुवादियों) की चमडी उतारने का काम करेंगे, इसलिये ब्राह्मणवादियों अपनी चमडी का खयाल करो। (बहुजन संगठक, 24 जुलाई 2000) इसलिये हम खुद को दलित कहे या न कहे जैसे मसले मूल मसले नही है। ऐसे सवाल ही व्यर्थ के सवाल है क्योंकि ऐसे सवालों का नतिजा शोषितों में आपस में तुं-तुं मै-मै के सिवा और मनमुटाव के सिवा कुछ नही निकलता। हमारी सबसे बडी जरुरत ब्राह्मणवाद के खिलाफ कारगर प्रतिरोधात्मक यंत्रणा विकसित करना है। लेकिन 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के लेखक सीरी विनोद अनाव्रत ने ऐसा कोई भी कार्यक्रम प्रस्तुत नही किया है, मतभेद पैदा होने वाले सवालों को उठाने के सिवा कुछ नही किया है।

सफेदपोश उच्चशिक्षित खुद को अतिविव्दान समझते है इसलिये वे एकतरह से अपनी बातों को अंतिम सत्य करार देते है। यह मानसिकता ब्राह्मणवादी मानसिकता है। जैन श्रमणों ने जोर देकर कहा कि सत्य को अलग अलग पहलुओं से समझा जाने से किसी के भी पास पूर्ण सत्य नही है। बुध्द ने अपने विचारों को कभी अंतिम नही कहा, उनकी समीक्षा के लिये लोगों को प्रेरित किया और अपनी हालातों के मुताबिक उनमें परिवर्तन तक करने की आजादी दी। इसके विपरित सफेदपोश वर्ग में यह ब्राह्मणवादी मान्यता होती है कि सफेदपोश वर्ग के अलावा कोई भी मूलनिवासियों के मिशन के नेतृत्व करने के काबिल नही है। मिशन का नेतृत्व करने को वे अपना जन्मसिध्द अधिकार मानते है। सफेदपोश खुद को अतिविव्दान समझते है इसलिये उन्हे आम आदमियों का नेतृत्व कतई बर्दाश्त नही होता। इससे उनके अहंमभाव को चोट पहुंचती है। अपने ही हाँथों में जबरन नेतृत्व केन्द्रित करना ब्राह्मणवादी फितरत है। अपनी बात औरों पर लादना भी ब्राह्मणवादी फासिस्ट मानसिकता है। यह इतिहास की सच्चाई है कि जबतक जुल्म करने वाले शोषक वर्ग को जबर्दस्त नुकसान नही होता तबतक वह जुल्म करना बंद नही करता। शोषक वर्ग का कभी हृदय परिवर्तन नही किया जा सका है। इसके बावजूद 'आंबेडकरी आणि आंबेडकरवादी' किताब के सफेदपोश लेखक सीरी विनोद अनाव्रत ने यह निर्णय सुनाया है कि अपने अधिकार संवैधानिक रास्ते से ही हासिल करने है, संसदीय लोकशाही की सीमारेखा के बाहर का कोई भी रास्ता घातक साबित होगा।

उनका यह कथन सफेदपोश वर्ग की कायरता की मानसिकता को जबरन संपूर्ण मिशन पर लादने की ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति के सिवा कुछ नही है। सफेदपोश वर्ग अपनी

कायरता से शोषितों के मिशन को संकिर्ण और संकुचित बना देता है। सफेदपोश वर्ग यह सुनिश्चित कर देता है कि ब्राह्मणवादियों व्दारा शोषितों पर अमानवी जुल्मों का सिलसिला कभी बंद ना हो सके। सफेदपोश वर्ग इंट का जवाब पत्थरों से देने का हौसला नही रखता इसलिये वह जरुरी होने पर भी ऐसे कदमों का विरोध करता है क्योंकि जैसे को तैसा वाले प्रतिरोध करने के मामले में वह नपुंसक होता है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक हम जगह जगह सभाएं आयोजित करते है, उसमें भाषण करते है, प्रस्ताव पास करते है लेकिन यह अस्पृस्यता दूर करने का रास्ता नही है। हमपर अन्याय होता है इसे दूर किया जाय यह प्रस्ताव पारित कर सरकार को भेजा गया और अगर सरकार ने कानून बनाकर हमारे लिये तालाब, कुंए, होटल, देवालय इ॰ खुले कर भी दिये लेकिन अगर उसपर अमल ही नही किया गया तो इन कानूनों का क्या फायदा ? हमारी अस्पृस्यता हमें ही खत्म करनी है। हमारे निडर और ताकतवर बनने से ही हम अस्पृस्यता को खत्म कर सकते है। इस संबंध में हमें काफी तकलीफें उठानी पड सकती है। सवर्णो से दो दो हाथ भी करने पडेंगे जिसके लिये आपने खुद में हौसला पैदा करना चाहिये। इसलिये हमें अपने हक हासिल करने के लिये हमलावर नीति को अपनाना होगा। हमलावर नीति अपनाये बिना इस जोर जबदर्स्ती के हालातों में हमारी खैर नही है। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-I p. 156-57)

अस्पृस्यों की तरह मुसलमान शांत नही रहेंगे बल्कि वक्त आने पर अपने से भी बडे गुंडे बनकर अपना सिर तोड देंगे इस बात का यकीन होने की से ही हिन्दू लोग मुसलमानों की कुचेष्ठा करने की हिम्मत नही करते। इसके विपरित अस्पृश्य यानी अपने पैर के नीचे का मामूली कीडा जानकर उसे कुचल देने का घमंड उनके मन में होने से वे हमें अपमानित करने में जरा भी नही झिझकते। अगर हमने आक्रामक नीति नही अपनाई तो हम कहीं भी टिक नही पाएंगे। हमें सतत कूचला जाता है। इसकी यही वजह है कि हमें खुद के अपमानित किये जाने पर गुस्सा नही आता। अपने उपर होने वाले अन्याय का प्रतिकार अपने पूर्वजों ने नही किया यह उनकी अपनी सबसे बडी गलती थी। अब अपमान सहन करने के दिन बित चूके है यह बात हमने संगठित होकर औरों को जता देना चाहिये। इसके बाद अछूतों की जो भी परिषद आयोजित की जाएगी उसका परिणाम मंदिर–प्रवेश, सार्वजनिक तालाबों में से पानी लेने के अधिकार को कायम करना, इ॰ बातों में ही होना चाहिये यह मेरा स्पष्ट मत है। ऐसा करने पर ही हमारा मकसद पूरा होगा। फ्रांस में उच्च वर्ग ने दमन करने की वजह से निम्न वर्ग के लोगों ने उनका कत्लेआम मचाया। इस लडाई में जो मर गये उनका जीवन व्यर्थ नही गया क्योंकि उनके जो लोग बच गए उनका जीवन आजाद हुआ। क्या ऐसा कोई धनघोर युध्द करने पर ही हमारे छीने गए इन्सानियत के अधिकार हमें हासिल होंगे या फिर इससे सौम्य किस्म के संघर्ष से हमारे अधिकार हमें हासिल होंगे ? जो दुख आम दलितों का दुख है उसपर शोक करते बैठने से कुछ नही होगा। उसपर रोते बैठने की बजाय ज्ञानी व्यक्ति ने उसके प्रतिकार में जो इलाज उसे सूझे उसे उसने अमल में लाना चाहिये। 'परि जो दूसऱ्यावरी विसंबला, त्याचा कार्यभाग बुडाला व जो प्राणपणानी कष्टत गेला, तोची भला।।' इसलिये अपना उध्दार करने के लिये हमने खुद ही तैयार होना चाहिये। यह काम एक–दो लोगों का नही है। इस काम में अनेक लोगों ने अपने सीने को ढाल बनाकर सवर्णो से अपने इन्सानियत के हक हासिल करके ही दम लेना चाहिये। अपने पूरखों ने लडाई के मैदान में तलवार के करारे वारो से अपनी कलाई की ताकत को साबित किया है; अब हमने अपने बौध्दीक ताकत से सामाजिक लडाई में अपना उंचा

मुकाम हासिल करना चाहिये। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-I p.265, 59, 27-28, 63, 20, 53)

जिस जगह पर सार्वजनिक कुंए है, तालाब है, नल है वहां हमने अपने मानवीय अधिकार कायम करने है। महाड तालाब का सत्याग्रह इसलिये नही किया गया था कि हमें कही पानी ही नही मिल रहा था। उस तालाब के पानी के बिना हमारा कूछ भी नही रुका हुआ था। हमारी लडाई सामाजिक समानता की लडाई थी। 11 मई 1938 को नागपूर में डॉ. अम्बेडकर ने समता सैनिक दल से कहा कि वे कुएं इ॰ सार्वजनिक स्थलों पर अपना अधिकार कायम करें। सवर्ण गांव के गुंडे इकट्ठा कर आप पर हमला करें तो उसका उपाय क्या है ? गांव के सार्वजनीक कुएं में पानी भरना आपकी हिम्मत पर निर्भर करता है। अपने इन्सानी हकों पर अमल करते वक्त अगर आप सवर्णो की ध मकियों से डरते है तो आप कुछ भी नही कर सकेंगे। आपके खातिर अगर मै कोंकण आया तो मुझे गोली से हलाक कर दिया जाएगा ऐसी धमकियाँ दी गई। अगर मै इन ध मकियों से डर गया होता तो आपके सामने खडा ही न होता। समता सैनिक दल का सैनिक समाज सेवा के लिये जान कुर्बान करने के लिये तत्पर निडर यौध्दा ही होना चाहिये। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-II p.244, 245, 146-47, Vol. 18-I p. 162)

14 मई 1938 को कनकवली, मुंबई की विशाल सभा में डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि महारों की 20 लाख की बस्ती है। अपने मानवीय अधिकार कायम करने में इनमें से एक लाख आदमी अगर हलाक भी हो जाते है तो क्या फर्क पडने वाला है ? मुझे बूढों की बजाय युवकों से कहना है कि अपने न्याय अधिकारों को हासिल करने के लिये आपने मरने के लिये तैयार रहना चाहिये। जो इन्सान मरने के लिये तैयार होता है वह कभी नही मरता और जो मरने से घबराता है वह पहले ही मर चुका होता है ऐसा समझना चाहिये। आप शेर की तरह बने तब आपके रास्ते में कोई भी नही आएगा। (Dr. Ambedkar :Vol. 18-II p.150, Vol. 18-III, p.363,366)

अपने राजनीतिक आन्दोलन बिना रुकावट या प्रतिरोध के चल रहे है इसकी अगर कोई वजह है तो वह अपने स्वँयसेवक संघ की आक्रामक ताकत है। मै भी अहिंसा को मानता हुं लेकिन मै अहिंसा और लीनता में फर्क करना जानता हूं। लीनता का मतलब दूर्बलता है। खुद पर दूर्बलता लाद लेना कोई सदगुण नही है। तुकाराम महाराज ने कहा है ''दया तिचे नांव भुतांचे पाळण। आणिक निर्दालन कंटकांचे।। '' यानि सब जीवितों पर प्रेम और दया लेकिन दूष्ट लोगों का नाश। अहिंसा की व्याख्या में अक्सर ही उसके दूसरे भाग को नजरंदाज कर दिया जाता है। उसको नजरंदाज कर देने से अहिंसा का तत्व हास्यास्पद बन जाता है। दूष्टों का नाश करना अहिंसा के उसूल का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसके बिना सिर्फ छिलका, कल्पनामय अव्यवहारिक सुख, अव्यवहारिक उसूल के अलावा कुछ भी नही बचता। शिल व्दारा नियंत्रित की गई ताकत हमारा आदर्श है। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-II p.429-30)

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक सच देखा जाय तो जहां तक संभव हो अहिंसा अन्यथा आवश्यकता पडने पर हिंसा ऐसी नीति सत्याग्रह को पूरा करने के लिये उचित ही नही बल्कि वह नीति के हिसाब से भी उचित है। इस देश का अवाम निशस्त्र है इसलिये उसके सामने सिर्फ अहिंसात्मक रास्ता ही बचा है। अभी दलितों व्दारा जो सत्याग्रह शुरु किया जाना है इसलिये उसे अहिंसात्मक होना जरुरी है क्योंकि यह उपाय नाकाम जबतक साबित नही होता तबतक हिंसा को अपनाया नही जा सकता। अस्पृस्यता यह इतनी ज्यादा अपमान जनक है कि इसे दूर करने के लिये कईयों की जाने गई

तो भी कोई पर्वा नही होनी चाहिये। बिस्तर पर पडे–पडे सौ साल तक सडते रहने के निरर्थक जीवन जीने से बेहतर बहादूरी की ज्योत को चंद घंटो तक जलाकर मर जाना बेहतर है। यही बात हर अछूत मां ने अपने बेटे से कहने का समय आ गया है। फिलहाल उन्हे इतना कठिन व्रत करने के लिये बाध्य नही किया जाएगा। सिर्फ उन्हे जेल जाने के लिये तैयार रहना है। इससे ज्यादा उनसे अपेक्षा नही है। अगर दलित इतना भी नही कर सकते तो वे पूरुष न होकर हिजडे है ऐसा कहना पडेगा। जिस पुरुष को अन्याय पर गुस्सा आता है और जो अपमान सहन नही करता वही पुरुष है। जिस शख्स को अन्याय और अपमान पर गुस्सा या चीढ़ नही आती वह नपुंसक है। स्पृस्यों के मन में अछूतों के बारे में प्रेम नही है तो भी उन्हे अपने आप की हिफाजत की फिक्र जरुर है। अगर अपने हिफाजत की फिक्र में उनके मन जल नही रहे है तो उन्हे जलने लगाना यह हमारे अपने हाथों में है। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-I p. 73,75-76)

हमारे खिलाफ सारी दुनियाँ है। उसका मुकाबला दो तरह से किया जा सकता है। सबसे पहली बात हमने अपने मन का डर खत्म कर देना चाहिये। जब जब भी हमपर जूल्म होगा हमने जूल्म करने वालों से दो दो हाथ करने चाहिये। जो होना होगा होगा, उससे क्यों डरना ? मुफ्त में भाषण करने या बडी बडी परिषदों का आयोजन कर बडे बडे प्रस्ताव पारित करने में कोई फायदा नही है। यह उपाय उन लोगों के खिलाफ ठिक है जिन्हे जनता के मतों की पर्वा है। लेकिन जो लोग पूरातन काल में जी रहे है उन्हे जगाने {रास्ते पर लाने} के लिये आग का स्पर्श कराना ही होगा तभी उन्हे होश आएगा। {भाषण, प्रस्ताव इ॰} कागजी खेल कितने भी साल खेले जाये तो भी इन लोगों के दिमाग में कोई प्रकाश पडना संभव नही है और उसका कोई परिणाम नही निकलेगा। अस्पृस्यता के लिये जब स्पृस्य लोगों के सीर फूटेंगे, तभी आत्मयज्ञ करने {जान देने} इतना पुण्य अस्पृस्यता का पालन में है या नही इस पर वे सोचने लगेंगे। जागृति करने का यह महत्वपूर्ण काम 'प्रतिकार योग' के अलावा दिगर अल्प उपायों से कतई पूरा नही होगा। हिन्दू समाज की हालत इसापनीति की कहानी के एक आंख वाले हिरण जैसी हो गई है। इस हिन्दू हिरण की एक आँख रुढियों की वजह से फूट चुकी है इसलिये उसकी यह फुटी आँख जिस और होती है उसे वह हिस्सा दिखाई नही देता। अपने स्वार्थ के मुताबिक अपनी फुटी आंख को उस दीशा में घुमाकर आत्मवंचना करने की कला हिन्दू समाज के इस हिरण ने हासिल की है। समाज की विषमताओं की ओर उसने अपनी फुटी हुई आँख करली है। शस्त्रप्रयोग (Surgery) के अलावा साधारण तर्क या ज्ञान की मलमपट्टी से यह रोग ठिक नही होगा यह बात अपने अनुभव से जानने समझने के बावजूद शस्त्रप्रयोग करने का मन न बनाना इसमें सच्ची काबिलियत नही बल्कि मन की कमजोरी है ऐसा हमारा मानना है। अगर यह मसला सिर्फ बुध्दिवाद से हल होने जैसा होता तो कब का सूलझ गया होता। अरे कहने पर क्यों रे कहने की, कलाई से कलाई लडाने की, रुकावटों से निपटने की, हर तरह की कार्रवाई से निपटने की तैयारी किये बिना अस्पृस्यता के कलंक को नही धोया जा सकेगा। सत्याग्रह ''सत्य'' पर सहमत पक्षों के बीच ही हो सकता है। अंग्रेजों ने यह बात मंजूर की है कि भारत के लोगों को स्वँयशासन का हक है। इसलिये अंग्रेजों और भारतीयों के बीच सत्याग्रह हो सकता है। (Dr. Ambedkar : Vol. 19 p.136, 194, Vol. 20 p.164, 59; Vol. 17-I p. 442)

क्या आर्य–ब्राह्मण हमारे आग्रह को सत्य मंजूर करते है ? इसलिये अन्याय का आपने जैसे को तैसा इस नियम के मुताबिक प्रतिकार करना सिखना चाहिये। हम मारकर मरेंगे लेकिन इस संग्राम से पलायन नही करेंगे यह हमारा पूरा निश्चय है। आज ब्राह्मणों का जितना पतन हो चुका है उतना पतन किसी भी अछूत का नही हुआ है। इसलिये सबसे पहले ब्राह्मण जाति को ठिक करने की जरुरत है। {क्योंकि} अशिक्षित गुंडों के गलत कामों की जिम्मेदारी सच पूछा जाये तो शुशिक्षित गुंडों {ब्राह्मण ावादियों} की ही है क्योंकि उनके उकसावे में आकर ही अशिक्षित लोग अत्याचार करते है। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-II p.582,567, Vol. 19 p. 200-01, 237) आग की ज्वाला को तुच्छ मानकर उसे जीभ पर लेने वालों की जीभ पर जिस तरह से फोडे आ जाते है और वह आग से दूर रहना सीख जाता है, उसी तरह से दलितों ने अगर उन्हे अस्पृस्य कहने वालों की जबान खेंच ली होती तो कोई किसी को अस्पृस्य कहने की हिम्मत नही करता। महाड परिषद का महत्व इसी वजह से है। उसने स्पृस्य लोगों को अस्पृस्यता की रुढी का एक कटू अनुभव ला दिया है। इस वजह से अब स्पृस्य लोग सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि अस्पृस्यता का पालन करना अगर धर्म है तो इस धर्म का पालन करना खतरनाक है। पहले आसानी से अस्पृस्यता का पालन करना संभव था लेकिन अब उसका पालन करने में जान पर भी बीत सकती है इस बात को कुछ लोगों ने जरुर ताड लिया होगा। क्योंकि महाड में भले ही अस्पृस्यों ने स्पृस्यों पर हाथ नही उठाया लेकिन आगे अस्पृस्य चूपचाप मार खाएंगे ऐसा समझना गलत होगा। बहिष्कृत वर्ग कोई गोबर और मोम का बना नही है। उसने अबतक लडाई में अपनी बेमिसाल बहादूरी को साबित किया है। हमारी पीठ पर दंडे बरसाने की बातें करने वालों के सीर तोडने में हम पीछे नही हटेंगे, बाद में चाहे जो भी हो। (Dr. Ambedkar : Vol. 19 p.133, 66)

भाला अखबार ने अपने 28 मार्च 1927 के अंक में महाड सत्याग्रह का हवाला देकर लिखा कि दलितों ने मंदिर और तालाब अपवित्र करना छोड देना चाहिये वर्ना उनकी पीठ तोडी जायेगी। हमने उतनी ही सख्ती से जवाब दिया कि हम ऐसा करना बंद नही करेंगे और जो हमारी पीठ तोडने की बाते करेगा हम उनके सीर फोड देंगे। इसके बाद अगले ही अंक से भाला पत्रिका का स्वर मिमियाने में बदल गया। महाड में दलितों ने जो स्पृस्यों का अन्याय सहन किया उसकी वजह यह आशा थी की अंग्रेज सरकार अस्पृस्यों के हक में कानून व्यवस्था का बंदोबस्त करेगी। लेकिन यह आशा झूठी निकली इसलिये अब दूसरे कार्यक्रमों में दलित महाड की तरह शांत नही रहेंगे बल्कि अपनी आत्मरक्षा के लिये अब उन्हे अपने हाथों में लाठिया रखनी पडेगी। ज्ञान तथा लाचारी एक होकर उसकी चिनगारी बनने के पहले ही सरकार ने अगर अपनी जिम्मेदारी नही समझी तो कलह की आग किस हद तक भडकेगी इसे नही बताया जा सकता। (Dr. Ambedkar : Vol. 19 p.102, 115)

जो भी कोई औरों को अपने से कम समझता है उसे हमने उचीत सबक सीखा देना चाहिये कि हम किसी से भी कम नही है। जिस तरह से बत्तख को पानी में डूबाकर उपर नीचे किया जाता है वैसा ही अगर कोई आपसे छुआंछूत का बर्ताव करता है तो उसे पानी में डूबोंकर उपर नीचे तबतक करिये ताकि वह दोबारा आपके साथ ऐसा बर्ताव न कर सके। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-I p. 60, 54-55)

दलितों ने स्पृस्यों के बहिष्कार की पर्वा नही करनी चाहिये। स्पृस्य और अस्पृश्य

दोनों का संबंध परस्पर जरुरत के आधार पर बना है । अछूत जो स्पृस्यों की नौकरी करते है इसके लिये स्पृश्यों पर कोई ऐहसान नही जताते। इसलिये स्पृश्यों ने ऐसा घमंड नही रखना चाहिये कि वे अस्पृस्यों को पाल रहे है। एक–दूसरे का एक–दूसरे के बिना काम रुकता है इसलिये किसी ने किसी का बहिष्कार करना संभव नही है क्योंकि यह बहिष्कार ज्यादा दिनों तक चल नही सकता। जागरुक अछूत जनता अपने इन्सानी हक और विकास की रफ्तार को रोकने वाली सारी दिक्कतों को दूर करने के लिये अपने जान को कुर्बान करने में भी पीछे नही रहेगी। जागरुक अवाम को कोई बहिष्कार की धमकी से कैसे रोक सकता है ? बहिष्कार का शस्त्र ज्यादा समय तक अमल में नही लाया सकता क्योंकि इस शस्त्र की यह विशेषता है कि उससे दुश्मन के साथ साथ इस शस्त्र का इस्तेमाल करने वाले पर भी वार पडता है। चमार तथा ढोर जाति पर सवर्णो के बहिष्कार का कोई परिणाम नही होगा। अगर उन्होने स्पृस्यों पर बहिष्कार कर दिया तो स्पृस्यों को ज्यादा नुकसान उठाना पडेगा। स्पृस्यों के जूते बनने तथा सीने बंद हो जाएंगे, खेती के लिये रस्सी इ॰ नही मिलेगी। भंगी समाज ने अगर स्पृस्यों पर बहिष्कार आयद कर दिया तो गंदगी जमा होने से सारे शहर में बीमारी फैल जाएगी। (Dr. Ambedkar : Vol. 18-I p. 90, 89, 91-92) कुछ लोग इस बात पर दलितों पर हँस सकते है कि हजारों सालों की अस्पृस्यता को दलित चुटकी बजाते ही हल करने निकले है। लेकिन हम अमल में लाएंगे वे उपाय इतने तीव्र तथा जालीम है कि उनसे स्पृस्यों के माल को ही नही बल्कि जान को भी खतरा पैदा होगा। इतने जालीम उपायों के बाद कौन शरण नही आएगा ? हमें लगता है कि दोनों योगों {बहिष्कार योग और प्रतिकार योग} की डबल गोलिबारी करने की जरुरत नही होगी। दुश्मन इतना डरपोक और कमजोर है कि बहिष्कार योग पीछे रखकर प्रतिकार योग से ही शुरु में काम चलने जैसा है और वह भी ज्यादा दिन नही करना पडेगा। रोना, भीख मांगना या औरों की दया पर निर्भर करना इससे अपने छीने गए अधिकार हासिल नही होते। उन्हे अपने तेज और पराक्रम से ही हासिल करना होगा। हमने जो प्रतिकार योग बताया है वह कठिन जरुर है। योग को प्रतियोग होगा यह भी उतना ही सच है इसे हम जानते है। लेकिन प्रतियोग से डरना नही चाहिये। सवर्ण जो भी प्रतिकार करेंगे उसका प्रतिकार करने के लिये हमने तैयारियाँ करनी चाहिये। उसके बिना कोई चारा नही है। हमारे अछूत भाईयों ने अपना तेज प्रकट करना ही होगा। इसे कदापि न भूले की हिंस्त्र प्राणियों की कभी भी बलि नही दी जाती। मुर्गी बकरियों की ही बली दी जाती है। हम भेड बकरियाँ नही है। हमारे पूर्वज शेर थे इस बात की गवाही इतिहास देता है। ऐसा नही होता तो नागेवाडी के महजूर सेटीबिन नागनाक महार में इतना तेज कहां से आया होता, जिस तेज से अपनी पाटिलकी के लिये बिना किसी कुमक लिये मुगलों के कब्जे का वैराटगढ उसने जीतकर मराठा साम्राज्य में शामिल करा दिया। खाने की पंक्ति जैसा ही समर में जातिभेद का पालन करना चाहिये ऐसा आग्रह करने वाले ब्राह्मण सरदारों की एक न चली और हिरोजी पाटनकर को कहना पडा कि ''जिसकी तलवार खंबीर (मजबूत) वह हंबिर''। हमारे पूर्वजों ने खर्डे की जंग में पठानों के हाथों से परशुराम भाउ की जान बचाने में अप्रतिम बहादूरी का इजहार किया और महारों को नीचा समझने वाले सरदारों को नीचे देखने पर मजबूर किया वह शिदनाक महार की जाति शेर नही थी ऐसा कौन कहेगा ? जिस रायनाक महार ने रायगढ़ पर मोर्चा बंदी कर 15 दिनों तक अंग्रेजों का बहादूरी से मुकाबला किया और किले की रक्षा

करते हुए अपनी जान दे दी वह रायनाक बाजी क्या भेड–बकरी की जाति का था ? पेशवाई को दफनाने वाले हमारे पूर्वज जिनके नाम कोरेगांव विजय स्तभपर लिखे है उन वीरों की जाति शेर के अलावा क्या हो सकती है ? अब हमें अपनी शेर जाति का अहसास होना चाहिये और हमने अपने जाति पर लगा लाचारी का कलंक धोने के लिये शुरु किये गए धर्म संग्राम में खडे होने के लिये सिध्द हो जाना चाहिये। (Dr. Ambedkar : Vol. 19 p.138-40)

अंग्रेजों ने गांधी जिन्ना को Cripps प्रस्तावों के जरिये खुश करने का प्रयत्न किया। Cripps प्रस्तावों में शोषितों के अधिकार नकारकर सारी सुविधाएं ब्राह्मण-बनियों के गठजोड और जिन्ना के नेतृत्व में संगठित सवर्ण मुस्लिमों में बाँटने का प्रस्ताव किया गया। लेकिन इस प्रस्ताव की बातों में अनेक अंर्तविरोध होने के कारण उसे मुस्लिम लीग और कॉग्रेस दोनों ने ही अस्वीकार कर दिया।

डॉ. अम्बेदकर अंग्रेजों के इस विश्वासघात से क्रोधित हो उठे उन्होने बम्बई के कामगार मैदान में आयोजित शोषितों की अति-विराट सभा (नवंबर 1942) को संबोधित करते हुए कहा कि : पिछडी जातियाँ एक बहुत बडे नुकसान से बच गई है। लेकिन यह खतरा कभी भी दोबारा पैदा हो सकता है। अब चाहे वह संवैधानिक रास्ता हो या असंवैध ानिक, शांती का हो या क्रांतिकारी, शांततामय या अशांती का इससे निपटने के लिए तुम्हे तैयार रहना है। उन्होने घोषित किया : तुम्हारा दोबारा Constituent Assembly से सामना होगा लेकिन तब तुम असेंबलि के अंदर नही होंगे। तुम्हे वहा कोई जगह नही मिलेगी। तुम्हारी सही जगह तुम्हारे अपने ठिकानों (Headquarters) में होगी। जहाँ तुम बम बना रहे होंगे। हाँ तुम बम बना रहे होगे ! तुम्हारे सुनने में भुल नही होनी चाहिये। हम लोग बमों का इस्तेमाल दूसरे कई लोगों से बेहतर ढंग से कर सकते है। (The depressed classes have been saved from a disaster. But the menance may raise its head again. Next time that happens you will have to be ready for action, constitutional or unconstitutional, violent or non-violent peaceful or disturbing. **HE DECLARED : YOU MAY BE FACED WITH CONSTITUENT ASSEMBLY AGAIN. YOUR PLACE WILL NOT BE INSIDE THE CONSTITUENT ASSEMBLY. YOU WILL NOT FIND ANY PLACE THERE YOUR LEGITIMATE PLACE WILL BE THEN IN YOUR OWN HEADQURTERS, MANUFACTURING BOMBS. YES BOMBS, MAKE NO MISTAKE ABOUT IT. WE CAN HANDLE HANDGRANADES BETTER THAN MANY OTHER PEOPLE** Source Material on Dr. Babasaheb Ambedkar and The Movement of Untouchables, P. 248-249) सशस्त्र संघर्ष के पितामह अय्यंकाली ने कठोर संघर्ष किया तभी अधिकार मिले।

उन्होने एक बैलगाडी और दो सफेद बैल खरीदे। बैलों के गले में बडी पितल कीं घंटिया बांध दी और सवर्णो के कानून की धज्जियाँ उडाते हुए अपनी बैलगाडी रोड से चलानी शुरु की। उस दिन अय्यंकाली ने केरल के इतिहास में सबसे पहले दलितों के मानवाधिकार का इस्तेमाल किया। बाजार में सवर्ण गुंडों ने अय्यंकाली पर हमला किया। अय्यंकाली ने उन्हे परास्त किया। उनके बैलगाडी के बैलों की घंटियाँ जोरों से सडकों पर गूंजने लगी। जब अय्यंकाली बलरामपूर के चालियार रोड पहूंचे तो वहां सवर्णो की भीड उनके ताक में थी। वहां दलितों और सवर्णो के बीच संघर्ष भडका और काफी खून-खराबा हुआ। दलितों के इस पहिले सशस्त्र संघर्ष से प्रेरणा लेकर दलित युवकों ने शहर के दिगर हिस्सों के रस्ते पर चलने के अपने हक को अंजाम दिया। इससे दलितों और सवर्णो के बीच सशस्त्र संघर्ष हुए। दलितों ने अपने छोटे छोटे सशस्त्र दल कायम

किये और अपने मानवाधिकारों की मांग उठाई।

राजा को ईश्वर का प्रतिनिधी माना जाता था। दलितों को उन्हे देखने की आजादी नही थी। दलितों ने वार्षिक पूजा उत्सव के दिन राजा की बडी तस्वीर के साथ जलूस निकाला। सजा के डर से राजा की तस्वीर हटाने की सवर्णो को हिम्मत नही हुई। उस दिन दलितों ने 1) रोड पर चलने के प्रतिबंध को तथा 2) राजा को दिखाई न पडने के प्रतिबंध को तोडने का अपराध किया था। वापसी के वक्त सवर्णो ने उनपर हमला किया लेकिन उन्हे अनुभव हुआ की उन्होने किसी प्रशिक्षित सेना को छेड दिया है। दलितों ने सवर्णो को परास्त किया। अय्यंकाली को खबरदार किया जा चुका था कि उनपर आगे और भी खतरनाक हमले होने वाले है। इसलिये उन्होने किसी मिलिटरी जनरल की तरह दलितों को समंदर के किनारे ले जाकर मछुआरों से छोटे जहाज उधार लिये और दलितों के साथ विजहिंजोम और अपने घर वेंगानूर रवाना हुए। शोषितों के बीच का यह सहयोग माओ से 25 साल और लेनिन से एक दशक पहले का है।

अय्यंकाली ने मांग की कि 1) दलितों को स्कूलों में दाखिला दिया जाये। 2) दलितों पर जब चाहे तब होने वाले अत्याचारों को फौरन बंद किया जाये। 3) दलितों को झूठे मामलों में फँसाना फौरन बंद किया जाये। 4) मजदूरों को कोडे मारना बंद किया जाये। 5) दलितों को सवर्णो की तरह शहर में कहीं भी आने-जाने की आजादी दी जाये। 6) दलितों को चाय की दूकानों में नारियल के खोल में चाय देने की प्रथा को बंद किया जाये। 7) खेत-मजदूरों के लिये काम के दौरान आराम की अवधी मिलनी चाहिये। 8) सामानों की बजाय नगदी में मजदूरी दी जाये। 9) खेत मजदूरों को स्थायी किया जाय और फसल न होने के मौसम में भी उन्हे तनख्वाह दी जाये। जमींदारों ने अय्यंकाली की मांगों को गंभीरता से नही लिया। हडताल की वजह से कंडाला, कानियापुरम, पल्लीचल, तथा मुड्डाउपारा से लेकर वाझीन्जोम तक खेतों में पूरी तरह से विराना छा गया। सवर्ण जमींदारों ने दलितों की हडताल तोडने के लिये हर तिकडम का इस्तेमाल किया लेकिन वे हडताल नही तोड सके। मजदूरों को जहां मिले वहां पीटना तक शुरु किया। कुछ मजदूरों को लालच देकर काम पर लाने की कोशिशें भी हुई। अय्यंकाली की सशस्त्र सेना ने जमींदारों के गुंडादलों का मुकाबला कर उन्हे परास्त किया और उनकी चालें नाकाम कर दी। तब जमींदारों ने खुद ही खेती करने की कोशिश की जो नाकाम हुई। तपते सुरज की गर्मी ने उन्हे बीमार बना दिया। न ही कोई मोर्चा निकाला गया, न ही पोस्टरबाजी की गई, न ही कोई लाउडस्पीकर लगाये गये, न ही कोई पर्चे बांटे गए और न ही कोई बॅनर लगाये गए। इसके बावजूद यह हडताल एक साल से भी ज्यादा अर्से तक चली। इस दौरान दलित खेत-मजदूरों को भूखे मरने की नौबत आई। अय्यंकाली पहले से ही तैयार थे। अय्यंकाली ने विजिंजोम के मछुआरों से समझौता किया था कि जबतक हडताल चलती है दलित खेत मजदूरों के हर परिवार के एक मजदूर को उनकी मछली मारने की नाव पर काम दिया जाये और पकडी गई मछली में उनका हिस्सा दिया जाये। दलित जातियों के इस आपसी सहयोग से जमींदारों को अपनी हार साफ नजर आने लगी। उन्होने तिलमिला कर हम पुलाया दलित मजदूरों पर हमले करने और हमारी झोपडियाँ जलानी शुरु की। जवाब में अय्यंकाली की कमांडो सेना ने दूर दराज के जमींदारों के कई घरों में आग लगा दी। उन्हे डर से कांपने पर मजबूर किया क्योंकि जमींदारों को किसी भी वक्त अय्यंकाली के कमांडो दस्तों के हमले का खौफ था। उन्हे अहसास हो गया कि दलितों की मांगे नही मानी गई तो उन्हे भूखा मरना पडेगा। इसलिये जमींदारों ने अय्यंकाली की मांगे मान ली। अय्यंकाली ने जमीनदारों को उनके

पास शान्ति प्रस्ताव के साथ आकर बात करने की शर्त रखी। राज्य के दीवान ने दोनों पक्षों के बीच समझौता करने अपना न्यायाधीश भेजा। दलित खेत मजदूरों की मजदूरी बढाना मंजूर किया गया। खेत-मजदूरों के लिये 6 दिन का हप्ता मंजूर किया गया। दलित बच्चों के स्कूल में दाखिले तथा दलितों के शहर में आने जाने की बात को तत्वतः माना गया लेकिन उसे कब अमल में लाया जाएगा इसका फैसला नही हुआ।

अय्यंकाली के संघर्ष का महत्व इससे स्पष्ट है कि उस वक्त तक मानवाधिकारों के संबंध में कोई दस्तावेज अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर मंजूर नही किये गये थे। उन्होने मजदूरों के हकों की बात उस वक्त उठाई जब केरल में कोई मजदूर संगठन तक कायम नही हुए थे। अय्यंकाली ने जिन प्रतिकुल हालातों में अशिक्षित, गरीब होने के बावजूद संघर्ष को कामयाब बनाया, जो मुकाम हासिल किया और सवर्णो के लिये खौफ बने वह असाधारण है। दलितों की जीत से तिलमिलाये जमींदारों ने अय्यंकाली को मारने के लिये 1000 तथा जिन्दा पकडकर लाने के लिये 2000 रुपयों की सुपारी दी। इसमें दोनों पक्षों का काफी खून बहा लेकिन वे अय्यंकाली का बाल भी बाका न कर सके। अय्यंकाली अपने बहादूरों के दल के बीच में रहते थे। उनके मुख्य अंगरक्षक धाउवाचापुरम के मशहूर गुंडे याकूब थे। इसतरह कारगर प्रतिरोध ही हमारी मुक्ति का इकलौता रास्ता है।

शोषकों के दलाल होंगे तो वे कोई ना कोई संकिर्ण मुद्दे उठाते ही रहेंगे। किताब के सफेदपोश लेखक सीरी विनोद अनाव्रत ने 'आंबेडकरी' बनाम 'आंबेडकरवादी' के भेद को बेवजह तुल देते हुए उसे मूल मसला बनाने की जानबूझकर कोशिश की है। कुछ लोग आंबेडकरी कह कर खुद को सिर्फ महार जाति तक सिमित करना चाहते है तो उन्हे ऐसा करने से रोकना हमारा मूल मसला नही है। 'मूल मसला आर्य-ब्राह्मणवादियों के दमन-शोषण के खिलाफ कारगर प्रतिरोध यंत्रणा कायम करना है।' एक समय था जब महार अपने पोटजातियों को लेकर आपस में विवाद करते थे। विवाद से सिर्फ विवाद और कटूता बढती रही। लेकिन कांशीराम ने बहुजन संकल्पना के तहत सभी जातियों को जोडने का काम करते ही यह भेद और विवाद अपने आप खत्म होते गया। अगर खुद को आंबेडकरी यानि महार समझते हुए भी अगर वे ब्राह्मणवाद के खिलाफ प्रतिरोध में उतरते है तो हमें ऐतराज नही होना चाहिये। सेना में दर्जनों अलग अलग नामों से रेजिमेंट होते है। उनके अपने अपने झंडे और गीत तक होते है। सेना में चंद जवानों के दल बनाकर उन्हे अलग नाम तक दिये जाते है। तो क्या भारतीय सेना संकिर्ण हो गई ?

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक मै इस बात पर कतई जोर नही देता कि गैरब्राह्मण समाज के मेहनतकशों ने हम अछूतों की पार्टी में शामिल होना चाहिये। उनकी अगर इच्छा है तो वे अपनी एक अलग पार्टी बनाये। लेकिन हम पूंजीपति, ब्राह्मणों, जमींदारों तथा दिगर शोषक दुश्मनों के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा तो बना ही सकते है। (Dr. Ambedkar : Vol. 17 Part III, P. 240-41, 298 Vol. 18-I p. 395)

गैरदलित अगर वे संयुक्त मोर्चा ना भी बनाये तो कम से कम आर्य-ब्राह्मणवादियों के खिलाफ कारगर संघर्ष तो चलाये, कम से कम दूर रहकर भी, प्रत्यक्ष संवाद न होने पर भी संघर्ष में तालमेल बिठाया जा सकता है। ब्राह्मण धर्म के अंधविश्वासों से ग्रसित धार्मिक शोषित समुदाय अगर 'जय बजरंग बली तोड ब्राह्मणवाद की नली' जैसे नारे लेकर अपने अधिकार वापस छीनने के लिये ब्राह्मणवाद के खिलाफ प्रतिरोधात्मक संघर्ष में उतरता है तो हमें उनका स्वागत करना चाहिये, उनकी हर संभव मदद करनी चाहिये क्योंकि ब्राह्मणवादी दमन-शोषण के खिलाफ संघर्ष करना ही मूल मसला है। आर्य-ब्राह्मणवादियों के दलाल या अज्ञानी नाग-द्रविड गौण मुद्दों में लोगों को उलझाये

रखते है। अपने अज्ञान दूर करते ही अज्ञानी सही रास्ता पकड लेता है। उसमें शारी. रिक प्रतिरोध की हिम्मत नही है तो खुद के लिये अपनी हिम्मत के मुताबिक योग्य भुमिका चुन लेता है और प्रतिरोध को मजबुत बनाता है। दलाल जानबूझकर सही रास्ता अख्तियार नही करते। ब्राह्मणवादियों के दलाल संघर्ष के दौरान ही बेनकाब होते है।

इल्युमिनॅटी की झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी त्रि-इब्लिसी साजीश को जान-समझ ले !

दुनियां के सभी आर्य-ब्राह्मण शासक ज्यादा से ज्यादा ताकतवर बनने के लिये आपस में प्रतियोगिता तथा संघर्ष करते रहे है। अंततः उन्होने अपना एक गुप्त संगठन कायम किया जिसे इल्युमिनॅटी के नाम से जाना जाता है। इल्युमिनॅटी का मकसद मनुस्मृति तथा तलमुद के कानूनों पर आधारित एक वैश्विक सरकार कायम कर मूलनिवासी नाग-द्रविडों पर कठोरता से राज करना है। इक्कीसवी शताब्दी में इल्युमिनॅटी के इन आर्य-ब्राह्मणों को 300 लोगों की कमिटी के नाम से भी जाना जाता है। फ्रिटझ स्पिंगमेयर के मुताबिक नीचे दिये हुए 13 शैतानपूजक परिवार :- 1) अस्टर परिवार (Astor), 2) बंडी परिवार (Bundy), 3) कॉलिन्स परिवार (Collins), 4) डूपोन्ट परिवार (DuPont), 5) फ्रिमन परिवार (Freeman), 6) केनेडी परिवार (Kennedy), 7) ली परिवार (Li (Chinese)), 8) ओनॅसिस्स परिवार (Onassis), 9) रॉकफेलर परिवार (Rockefeller), 10) रोथ्सचिल्ड परिवार (Rothschild), 11) रसेल परिवार (Russell), 12) वॉन डयुयन परिवार (Van Duyn), तथा 13) युरोप के मेरोविंगियन शाही परिवार (Merovingian (European Royal Families)) शामिल है। मेरोविंगियन शाही परिवार मानता है कि उसमें येशु के साथ साथ शैतान का खून भी है। इस परिवार के कई लोग अमेरिका के राष्ट्रपति बने है। इन शैतानपूजक परिवारों का धनिष्ट संबंध नीचे दिये हुए परिवारों से है। 1) रेनॉल्ड (Reynolds), 2) डिस्ने (Disney), 3) क्रुप (Krupp), तथा मॅकडोनाल्ड (McDonald) परिवार।

रोथचिल्ड ने सारे युरोप में रेलें बिछा रखी है, उसने कोयला और लोहे में निवेश किया, सुवेज नहर खरीदने के लिये इंग्लंड को आर्थिक मदद दी, रुस तथा सहारा के रेगिस्तान में तेल खोजने में मदद की, रुस के झार को कर्जा दिया, सेसिल ऱ्होडस् के हिरे के कामों में मदद की, फ्रांस को अफ्रीका में अपना साम्राज्य कायम करने में मदद दी, हॅस्पबर्ग के राजाओं को कर्जा दिया तथा वेटिकन को दिवालिया होने से बचाया। उन्होने रॉकफेलर के स्टन्डर्ड ऑयल कंपनी, कार्नेजी स्टील, तथा हेरिमॅन के रेलों के लिये आर्थिक मदद दी। वेर्नर सोम्बार्ट (Werner Sombart) ने अपनी किताब The Jews and Modern Capitalism में लिखा कि ''सन् 1820 के बाद से रोथचिल्ड युग की शुरुआत हुई। विदेशों में लूट के लिये ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार का काम शैतानपूजक परिवार समुह (Illuminati) ने शुरु कराया। ब्रिटेन को उकसाने के लिये ब्रिटिश साम्राज्य, वंश, ईसाईयत, तथा रानी का गौरव इ॰ बातों की दुहाई दी गई। ब्रिटेन दरअसल रोथचिल्ड के साम्राज्य का निर्माण कर रहा था। पूरे युरोप में एक ही ताकत है और वह है रोथचिल्ड

साम्राज्य।''

अमेरिका की निर्मिती शैतानपूजक परिवार समूह के झायनवादी - मनुवादी विश्व - साम्राज्य के मकसद को पूरा करने की गई। जन्म से ही अमेरिका शैतानपूजक परिवार समूह (Illuminati) के नियंत्रण में है। 1913 में फेडरल रिजर्व कानून को पारित किया गया। फेडरल रिजर्व शेअरधारकों की मिल्कियत के एक निजी कार्पोरेशन है। अमेरिकी संविधान की धारा एक सेक्शन आठ के मुताबिक सिर्फ अमेरिकी काँग्रेस को ही यह हक है कि वह देश की मुद्रा (करंसी) जारी करे और उसके मुल्य को नियंत्रित करे। इसके बावजूद यह कानून पारित किया गया जो अमेरिका के लिये नोट छापने का हक फेडरल रिजर्व जैसी निजी संस्था को देता है। अमेरिकी अध्यक्ष फेडरल रिजर्व बोर्ड पर 14 साल के अर्से के लिये सदस्य नियुक्त करता है लेकिन असल में वे हमेशा बँकर्स के ही लोग होते है। फेडरल रिजर्व नोट छापकर अमेरिकी सरकार को कर्जा देकर व्याज वसूलती है। अमेरिकी सरकार खुद अपने नोट छापे तो उसे यह व्याज नही देना पडेगा। इसतरह बिना कुछ किये बँकर्स अमेरिकी जनता को लूटते रहे है। अमेरिका को बँकरों के चंगुल से छुडाने राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने सरकारी मुद्रा छापने का हुक्म जारी किया। चार दिन बाद ही 14 अप्रैल 1865 में लिंकन की हत्या कर दी गई। इजरायल का अस्तित्व भी रोथचिल्ड के झायनवादी -ब्राह्मणवादी विश्व-व्यवस्था के मुख्यालय के तौर पर इंग. लैंड-अमेरिका इ॰ देशों का इस्तेमाल करते हुए कायम किया गया।

रोथचिल्ड लंदन के स्केअर सिटी या ''वर्गमील'' नामक विश्व औद्योगिक केन्द्र से अपने कारोबार का संचालन करता है। यहां ब्रिटेन के सभी प्रमुख बँकों के मुख्य कार्यालय तथा विदेशी बँकों की 385 शाखाए है। स्केअर सिटी एक सार्वभौम राज्य है तथा ब्रिटेन की तमाम राजनीति को नियंत्रित करता है। ब्रिटेन का प्रधानमंत्री, कॅबिनेट, संसद मात्र रोथचिल्ड के फ्रंट संगठन मात्र है। क्नुथ (Knuth) के मुताबिक जब इंग्लेंड की महारानी क्वेअर सिटी में प्रवेश करती है तो वह लार्ड मेयर रोथचिल्ड के अधिन होती है क्योंकि यह निजी क्षेत्र रानी या इंग्लेंड की संसद के अधिकार क्षेत्र में नही आता।

इल्युमिनॅटी शैतान-उपासक झाओनिस्ट बँकरों का संगठन है जो वर्ल्ड बँक, तथा विश्व के तमाम आर्थिक संगठनों को नियंत्रित करता है। अमेरिका इ. देशों को उसने अपने अर्थतंत्र से नियंत्रित किया हुआ है। कर्ज देकर इल्युमिनॅटी ने देशों को आश्रित बनाया। विश्वयुद पैदा किये। दोनों खेमों को कर्जा देकर भारी मुनाफा कमाया। इल्युमिनॅटी ने अमेरिका, ब्रिटेन फ्रांस इ. को नियंत्रित करने के लिये कम्युनिस्ट खेमे को बढावा दिया और उन्हे परमाणु शक्ति बनने में मदद की। सच्चा साम्यवाद इन शैतानपूजक परिवा. र-समूह के लिये भारी खतरा है। लेकिन ''नकली-साम्यवाद'' शैतानपूजक परिवार-समूह के लिये शोषण के लिहाज से एक आदर्श व्यवस्था है क्योंकि ऐसी निरंकुश शासन-व्यवस्था शैतानपूजक परिवार-समूह के प्रतिव्दंदियों को पनपने का मौका नही देती और इनकी आर्थिक सत्ता बरकरार रहती है। शैतानपूजक परिवार-समूह की आर्थिक तथा राजनीतिक सत्ता को मजबूत करने के लिये देशों के बीच युध्द होना बेहद फायदेमंद है। इसलिये वे दोनों ही धडों के बीच संघर्ष पैदा करते है। उनके एजन्ट इन देशों के बीच मतभेद पैदा करते है और उनको युध्द की हद तक बढावा देते है। वे दोनों पक्षों को भारी कर्जा देते है तथा अपने परिवार-समूह के उद्योगों से युध्द सामग्री खरीदने की शर्ते लादते है। कर्जे की रकम कब और कैसे दी जाएगी इसे नियंत्रित कर युध्द के नतिजें खुद तय करते हे। हर युध्द के बाद ये देश शैतानपूजक परिवार-समूह की आर्थिक गुलामी में और ज्यादा फँस जाते है। प्रसिध्द कवी इझरा पाउंड ने अपने व्दितीय विश्व युध्द संबंधी इटली

से होने वाले प्रसारणों में खुलेआम कहा कि बँकिंग परिवारों के मुखीया रोथचिल्डस् ने खुद के फायदे के लिये दूसरे विश्वयुध्द को अंजाम दिया, युध्दरत देशों को अपना कर्जदार बनाया ताकि देशों की नीतियों को अपने फायदे के मुताबिक ढाल सके और राष्ट्रीय पैसे पर अपना नियंत्रण कायम कर सके। (Rothschild family From Wikipedia, the free encyclopedia) विश्वयुध्द का संचालन शैतानपूजक परिवार-समूह ने इस खूबी से किया कि युरोप उनकी गिरफ्त में पूरी तरह से जकड गया। इन विश्व युध्दों में शैतानपूजक परिवार समूहों के जहाज दोनों युध्दपक्षों को माल भेजते रहे लेकिन उनका एक भी जहाज निशाना नही बना। दुनियाँ के देशों की राजनीतिक ताकतों के बीच के मतभेदों और अंर्तविरोधों का इस्तेमाल वे इस तरह से करते है कि अंतिम परिणाम और राजनीतिक संतुलन हमेशा इनके फायदे में रहे। अमेरिका सहीत दुनियाँ की सरकारें इन त्रिईब्लिसी परिवारों की इच्छाओं के आगे अपना सिर झुकाने पर मजबूर है। दुनियाँ का सारा मीडिया इन्ही शैतानपूजक परिवार-समूह के नियंत्रण में है और इन्ही की शैतानी गिरफ्त को मजबूत करने का काम करता है। सारी दुनियाँ की राजनीतिक ताकत बँकिंग व्यवसाय पर एकाधिकार जमाये हुए शैतानपूजक त्रिइब्लिसी परिवार-समूह (Illuminati) के हाथों में केन्द्रित हो चुकी है। यह शैतानपूजक परिवार-समूह दुनियाँ पर यहूदिवाद-ब्राह्मण ावाद के मुताबिक मूलनिवासी जनता को गुलामों से बदतर बनाकर राज करना चाहते है। शैतानपूजक परिवारों के गठबंधन ने दुनियाँ की अदृष्य सरकार कायम की हुई है जो अप्रत्यक्ष रुप से तमाम देशों की सरकारों को अपने मन मुताबिक नियंत्रित करती है।

वर्ल्ड बँक और संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से इल्युमिनॅटी गरीब देशों पर अपनी लूट-परस्त नीतियां जबरन लागू करती है। इन नीतियों के आडे आनेवाली सरकारों का तख्ता पलट दिया जाता रहा है। अफगानिस्तान, इराक, लिबिया इ. देशों को इल्युमिनॅटी नियंत्रित नाटो फौजों ने तथा इजरायल ने फिलिस्तीन को तबाह-बर्बाद किया। शैतानपूजक परिवार-समूह समय समय पर पैसे के बहाव को रोक देता है, शेयर बाजार में अपने फायदे के मुताबिक उतार चढाव पैदा करता है। निवेशकों की तबाही की बदौलत उसका खजाना लगातार बढते रहता है। सन् 1929 का मशहूर वाल-स्ट्रीट शेयर बाजार का क्रेश इसी शैतानपूजक परिवार-समूह का कारनामा था जिसमें उन्होने कमजोर आर्थिक ताकतों को निगलकर अपना नियंत्रण मजबूत किया।

शैतानपूजक परिवार-समूह अपनी आर्थिक सत्ता को बरकार रखने के लिये नीचे दिये हुए तरिकों का इस्तेमाल करता है :—

1) तेजी से बढने वाला आयकर :- शैतानपूजक परिवारों का पैसा आयकर-मुक्त फाउंडेशनों के जाल में सुरक्षित रहता है जबकि इस आयकर नीति की वजह से मध्यमवर्ग बडी रकम इकट्ठा कर शैतानपूजक परिवार-समूह के प्रतिव्दंदी नही बन सकते। शैतानप. ूजक परिवार-समूह फाउंउेशनों में रखे अपने पैसों का सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रचार तथा कानून सम्मत तरिकों से गैरकानूनी उपयोग में लाता है।

2) सत्ता का केन्द्रिकरण :- शैतानपूजक परिवार-समूह ज्यादा से ज्यादा सत्ता का केन्द्रिकरण चाहता है क्योंकि स्थानीय राजनीतिज्ञ सच्ची स्वायत्तता की सुरत में शैतानपूजक परिवार-समूह की आर्थिक-राजनीतिक सत्ता के लिये खतरा पैदा कर सकते है।

3) व्यापार नियंत्रण कानून :- मजदूरों की सुरक्षा के कानून, छोटे निवेशकों की सुरक्षा संबंधी कानून, उत्पादन की गुणवत्ता, उत्पादन में सुरक्षितता, पर्यावरण सुरक्षा, इ॰ कानून शैतानपूजक परिवार-समूह की प्रतिव्दंदी कंपनियों पर सख्ती से लागू किये जाते

है ताकि इन सब की पूर्ति करते हुए उनका खर्चा इतना बढ जाये कि वे प्रतियोगिता में टिक न सके। जबकि शैतानपूजक परिवार-समूह के उद्योग इन कानूनों की धज्जियाँ खूलेआम उडाते है जिन्हे शासनयंत्रणा नजरंदाज कर देती है।

4) सबसीडी, आयत-निर्यात कर /शुल्क तथा विदेशी सहायता :- विदेशी सहायता हमेशा ही इस शर्त पर दी जाती है कि ऋण लेने वाले देशों की सरकारें शैतानपूजक परिवार-समूह के उद्योगों से माल विशेषकर युध्द सामग्री खरीदें। शायद ही किसी सरकार को ऐसी खतरनाक शर्तो का विरोध करने का साहस होता है। 5) मेहनतकश वर्ग से नकली समझौता :- शैतानपूजक परिवार-समूह वामपंथी संगठनों का भी संचालन करता है जिसमें कार्यरत लोग संजीदगी से यह मानते है कि वे समाजवादी आन्दोलन के लिये काम कर रहे है जबकि वास्तव में उनके कामों का फायदा सिर्फ शैतानपूजक परिवार-समूह का होता है। इनमें से शायद ही कोई इस बात की गहराई तक पहूंच सकता है। अधिकांश तो इसके बारे में कभी सोचते तक नही। शैतानपूजक परिवार-समूह हडताल इ॰ माध्यमों से अपनी प्रतिव्दंदी कंपनियों को तबाह करते है।

शैतानपूजक परिवार-समूह की गुप्त प्रशासन यंत्रणा 1) मीडिया, 2) बँक उद्योग, 3) शिक्षा पध्दती, 4) देशों की स्थानीय तथा केन्द्रिय सरकारें, 5) सभी विज्ञान शाखाएं, तथा 6) धार्मिक क्षेत्रों में घुसपैठ कर इन क्षेत्रों में अपना नियंत्रण कायम कर चुके लोगों का समावेश होता है। इनके काम नीचे दिये मुताबिक है :-

1) मीडिया क्षेत्र :— मीडिया के नियंत्रण का मतलब अवाम की सोच को नियंत्रित करना है। मीडिया खुद को तटस्थ दर्शाते हुए शैतानपूजक परिवार-समूह के नजरिये तथा नीतियों को जायज ठहराने के लिये किताबें तथा लेख लिखते है। कई एजन्ट शैतानपूजक परिवार-समूह के खिलाफ लगे आरोपों को निरस्त करने तथा उन्हे फायदा पहूंचाने के लिये नकली रिसर्च करते है। मसलन यह साबित करने की पूरजोर कोशिशें करते है कि Divided Identity Disorder (DID) या Ritual Abuse का अस्तित्व ही नही है। सिर्फ शैतान-पूजक परिवार-समूह के समर्थक साईकिएट्रीस्टों तथा मनोवैज्ञानिकों के मतों और विचारों को शामिल कर अवाम को गुमराह और भ्रमित करते है। अपने झूठे दावों को साबित करने के लिये वे सामग्री तक को गढ लेते है और झूठ का खुलकर इस्तेमाल करते है ताकि जनता भ्रमित होकर किसी नतिजे पर न पहूंच सके।

2) पूजारी-पूजारिनों का वर्ग :— इनका काम लोगों को आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, अदृष्य ताकतों इ॰ के भ्रमजाल में उलझाकर शोषण के खिलाफ किसी भी संघर्ष के लिये नाकाबिल और शोषण-व्यवस्था का सहायक बनाना होता है। धार्मिक संस्थाओं का जाल पैदा कर गुप्तचर संस्थाओं के एजन्टों के लिये फ्रंट मुहैया कराना, शैतानपूजक परिवार-समूह की शैतान-उपासना तथा बली देने तथा मश्तिष्क नियंत्रण के प्रयोगों को कामयाब बनाने में हर तरह की मदद करना शामिल है।

3) प्रपाठक (पढनेवाले) :— इनका काम शैतानपूजक परिवार-समूह व्दारा विकसित की गई किताबों तथा गुप्त साहित्य को असरदार तथा नाटकीय अंदाज में पढना होता है ताकि सुनने वाले एकदम प्रभावित हो सके।

4) गायक (Chanters) :— ये लोग धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोगों का प्रभावित करने में असरदार किरदार निभाते है। वे धार्मिक तथा शैतानपूजा के कर्मकांडों में गीत गाते है तथा मंत्रों को पढते है।

5) शिक्षक :— इनका काम धर्म-संप्रदाय की विचारधारा में लोगों को प्रशिक्षित

करना होता हे। ये लोग तर्क से कुछ भी साबित करने या लोगों को पूरी तरह से भ्रमित करने में माहिर होते है।

6) बच्चों की रखवाली करने वाले (Child care takers) :– ये लोग शैतानपूजक परिवार-समूह की बच्चे के लिये निर्धारित भविष्य की योजनाओं तथा शैतान उपासना की नीतियों के मुताबिक शिशुओं की देखभाल करने में माहिर होते है।

7) कमांडिंग अफसर (Commanding officers) :– ये दिगर मकसद से चूने गए लोगों को उचित मिलिटरी प्रशिक्षण देने का काम करते है।

8) मनोवैज्ञानिक (Behavioral scientists) :– डॉ॰ इवेन कॅमेरॉन (Dr. Ewen Cameron) ने डॉ॰ ग्रीन (Dr. Joseph Mengele) के साथ कॅनेडा तथा अमेरिका में सेना के भूमिगत विशाल प्रयोगशालाओं में बच्चों के दिमागों पर नियंत्रण करने (mind control) के प्रयोग किये। दुनियाँ भर से बच्चों को अगुवा कर इन प्रयोगशालाओं में फर्श से लेकर छत तक बने छोटे छोटे पिंजडों में रखा जाता था। बच्चों को प्रोग्रॅमेबल (programable) तथा एक्सपेंडेबल (expendable) श्रेणियों में बांटकर एक्सपेंडेबल बच्चों को प्रोग्रामेबल बच्चों के सामने मार डाला जाता था ताकि आतंकित कर उनकी चेतना को सैकडों हिस्सों में विभाजित कर प्रत्येक हिस्से को लैंगिक गुलामी से लेकर हत्यारों तक के व्यक्तित्व में ढालने के लिये प्रोग्रॅम किया जा सके। प्रोग्रॅमेबल बच्चों को आतंकित करने के लिये उनके सामने जींदा एक्सपेंडेबल बच्चों की खाल उतारने जैसे अमानवीय तरिके अपनाये जाते थे। कई बार यह काम दूसरे बच्चों से करवाया जाता था। जब मोनार्च (Monarch) तथा (MK-ULTRA) नाम से जाने गए इन मश्तीष्क नियंत्रण के प्रयोगों का पर्दाफाश हुआ तब कॅनडा की सरकार को इन बच्चों के परिवारों को भारी मुआवजा अदा करना पडा। कॅनडा सरकार ने मात्र मान्ट्रियल में ही 7 मिलियन डॉलर की रकम मुआवजें में अदा की। इंअरनेट पर इस विषय पर भरपुर सामग्री है।

अल बेलेक (Al Bielek) नामक मश्तिष्क नियंत्रित व्यक्ति में जब उसमें विकसित व्यक्तित्वों की यादें वापस आई तो उसने बताया कि दो लाख पचास हजार मश्तिष्क नियंत्रित बच्चे मांन्टेक के लांग व्दीप में 25 विभिन्न जगहों पर विकसित किये गए थे। इनमें से कई बच्चे इस तरह से प्रोग्रॅम किये गए थे कि विशेष ध्वनी, प्रकाश या शारी. रिक क्रिया का संकेत मिलते ही उनमें छिपा विशेष व्यक्तित्व जाग जाता था और विशेष संकेत देने वाले व्यक्ति के आदेश जिसमें हत्या करने, नशीली वस्तूओं को इधर से उधर पहूंचाने, गोलिबारी करने इ॰ शामिल है का पालन करता था। इस दौरान किये कामों की बाद में उसे कोई याद नही रहती थी। उसने बताया कि वह खुद भी मांन्टूक प्रकल्प के कई कामों में मश्तिष्क नियंत्रित हालत में शामिल था। सिस्को व्हिलर (Cisco Wheeler) के मुताबिक उसने मेंगले (Mengele) की फाईलों में देखा कि अमेरिका में सन् 1968 में एक करोड एमके-अल्ट्रा (MK ultra) और मोनार्च (Monarch) मश्तिष्क गुलाम थे। अमेरिका इ॰ पश्चिमी देशों में होने वाली हत्याएं, स्कूलों में बच्चों व्दारा की जाने वाली गोलिबारी इ॰ मश्तिष्क-नियंत्रण प्रयोगों के परिणाम है। टेड बंन्डी, सन ऑफ सॅम के नाम से प्रसिध्द सिरीयल हत्यारा डेविड बर्कोविज (David Berkowitz), ओस्वाल्ड (Oswald), तिमोथी मॅकवे (Timothy McVeigh), कोलंबिया में गोलिबारी करने वाले, चॅपमॅन (Chapman), सिरहॅन (Sirhan) इ॰ लोग मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम थे जिन्हे ये हत्याएं करने के लिये प्रोग्रॅम किया गया था। बाकी मांन्टुक बच्चों को पत्रकार, रेडियो तथा टी.वी क्षेत्र, व्यापारी, वकील, डॉक्टर, न्यायाधीश, पुलिस तथा अन्य कानून व्यवस्था कायम करने वाली एजन्सियों में, मिलिटरी में, सायकिएट्रीस्ट के रुप में, मनोवैज्ञानिकों

इ॰ के रुप में विकसित किया गया ताकि उनमें प्रोग्रॅम किये हुए व्यक्तित्वों को उभारकर मश्तिष्क नियंत्रित हालात में उनसे शैतानपूजक परिवार समूह के हितों के काम कराये जा सके।

9) प्रोग्रमर्स (Programmers) :— शैतानपूजक परिवार-समूहों की कई कानूनी, गैरकानूनी कंपनियाँ तथा संगठन है। इन्हे चलाने के लिये शैतानपूजक परिवार-समूह को ऐसे मश्तिष्क नियंत्रित और प्रशिक्षित लोगों की जरुरत होती है जो कामों को काम की नैतिकता-अनैतिकता के बारे में सोचे बिना पूरा कर सके। ये प्रोग्रमर्स हर तरह के कामों के लिये प्रशिक्षित मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम पैदा करने की काबिलियत रखते है। इनमें से कई खुद भी इस काम के लिये प्रशिक्षित मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम होते है। शैतानप. ूजक परिवार-समूह के सैकडों शैतानपूजक संप्रदाय है जहां शैतानपूजक प्रथापरंपराओं को अंजाम देने के लिये, बच्चों के मश्तिष्क को प्रोग्रॅम किया जाता है। इसकी शुरुआत गर्भधारणा के वक्त से हो जाती है। मश्तिष्क नियंत्रित बच्चे में विकसित की गई हर शख्सियत एक दूसरे से स्वतंत्र होती है तथा उपरी (Front) शख्सियत इनके अस्तित्व के बारे में कुछ नही जानती। समाज में जिनका बेहद सम्मान और आदर होता है ऐसे धार्मिक, सामाजिक इ॰ क्षेत्र के कई मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम अपने शैतानी कामों को विशेष अवसरों पर स्वचलित तौर से अंजाम देते है। (http://www.mindcontrolforums.com/svali_speaks.htm)

10) बाल वेश्याएं (Child prostitutè) :— ये अधिकतर मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम होती है जिन्हे असंभव माने जाने वाली लैंगिक क्रियाओं जैसे कि जानवरों के साथ कामक्रिया करने से लेकर यौनक्रिया में ज्यादा से ज्यादा पीडा मिलने पर खुशी महसूस करने इ॰ के लिये प्रोग्रॅम और प्रशिक्षित किया गया होता है। इनका इस्तेमाल राजनीतिक नेताओं तथा अन्य ताकतवर लोगों को ब्लॅकमेल करने के लिये भी होता है। अपनी बेहद कम उम्र में ही ब्राईस टेलर (Brice Taylor) को मश्तिष्क नियंत्रित सेक्स गुलाम के तौर पर अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ॰ केनेडी, लिंडन जॉनसन, रिचर्ड निक्सन, गेराल्ड फोर्ड तथा तत्कालीन गर्वनर रोनाल्ड रीगन (जो बाद में अमेरिका का अध्यक्ष बना) को पेश किया गया था। शैतानपूजक परिवार-समूह ने उसे ''मिलियन डॉलर बेबी'' का नाम दिया हुआ था। (Mind Control: The Ultimate Terror http://www.theforbiddenknowledge.com/hardtruth/Dial%20Protected Thanks for the Memories: The Memoirs of Bob Hope's and Henry Kissinger's Mind-Controlled Sex Slave by Brice Taylor (Brice Taylor Trust, P.O. Box 655, Landrum, SC 29356, 312)

11) ब्रिडर्स (Breeders) :— ये ऐसे पति-पत्नि होते है जिनका काम बच्चे पैदा कर शैतानपूजक संगठन को सौंपना होता है। इन परिवारों को इस काम के लिये पैसे हासिल होते है। ब्रिडर्स अक्सर पीढी-दर-पीढी से इस काम को करने वाले मश्तिष्क नियंत्रित गुलाम होते है। इन बच्चौं को मश्तिष्क नियंत्रण के प्रोग्रॅमों से तरह तरह के कामों में प्रशिक्षित किया जाता है। ब्रिडर पति-पत्नि को अक्सर यह बताया जाता है कि बच्चे को शैतानपूजा में बली चढाया गया है ताकि वे उसकी खोज न करें।

12) वेश्या (Prostitutes) :— वेश्या किसी भी उम्र के स्त्री-पुरुष हो सकते है। उन्हे बचपन से कई लोगों के साथ कामक्रियाएं करने का प्रशिक्षित दिया गया होता है।

13) पोर्नोग्राफी (Pornography) :— बच्चों के अश्लील चित्रों अथवा चलचित्रों का व्यवसाय शैतानपूजक संप्रदाय में काफी बडा व्यवसाय है। इन चलचित्रों में जानवरों के

साथ यौन क्रियाओं का भी समावेश होता है तथा इनमें इस्तेमाल किये जाने वाले व्यक्ति किसी भी उम्र तथा लिंग के हो सकते है।

14) कुरियर्स (Couriers) :– इनका काम हथियार, नगदी, तथा गैरकानूनी चिजों को सीमावर्ति इलाकों से इधर से उधर ले जाना होता है। आमतौर से ये अविवाहित होते है। उनपर कोई पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी नही होती। उन्हे आग्नेय अस्तों को चलाने का तथा मुश्किल हालातों से बच निकलने का प्रशिक्षण दिया गया होता है।

15) सूचना देने वाले (Informers) :– ये लोग जानकारियाँ हासिल करने में, लोगों की बातचित को याद रखने में तथा फोटोग्राफिक यादहाश्त में माहिर होते है। हर इन्सान में फोटोग्राफीक स्मृति होती है। मिसाल के लिये कंप्युटर की-बोर्ड पर हर अक्षर कहां स्थित है इसे याद करना मुश्किल होता है लेकिन जैसे ही हम टाईप करने लगते है हमारी उंगलियाँ अपने आप उन अक्षरों पर चलने लगती है। अत्यंत आश्चर्यजनक फोटोग्राफिक स्मृति विकसित करने के लिये नवजात शिशु के ब्रेनस्टेम में बिजली के झटके दिये जाते है ताकि उसके ब्रेनस्टेम की पेशियाँ और ज्यादा विकसित हो जाये जैसे कि वजन उठाने की कसरत में हमारी मांसपेशियाँ और ज्यादा विकसित होती है। ऐसा इन्सान बडी बडी फाईलों की मालूमात को अपने मश्तिष्क में संजो सकता है।

16) प्रशिक्षक (Trainers) :– इनका काम शैतानपूजक कानूनी तथा गैरकानूनी संगठनों के लोगों को हत्या करने से लेकर वैज्ञानिक प्रशिक्षण तक देना होता है।

17) कटर्स (Cutters) :– इन्हे शैतानी पूजा-प्रथाओं में जानवरों तथा इन्सानों की बली देने, जिस्म के अंगों को त्वरीत निकालने का प्रशिक्षण दिया गया होता है। मश्तिष्क नियंत्रण प्रयोगों में बच्चों को आतंकित करने में इनकी विशेष भूमिका होती है।

18) खोजी (Trackers) :– इनका काम कुछ सदस्यों की निगरानी करना तथा उन्हे ढूंढना होता है जो अपने स्थानीय संप्रदाय या समूह को छोडने की कोशिश करते है। इन्हे कुत्तों, बंदूकों, टेसर्स का इस्तेमाल करने तथा खोज में उपयोगी सभी तकनिकों का प्रशिक्षण दिया गया होता है।

19) सजा देने वाले (Punishers) :– इनका काम संप्रदाय, समूह या संगठन के नियम तोडने वालों या विश्वासघात करने वालों को क्रूर सजाएं देना होता है।

शैतानउपासक त्रि-इब्लिसी परिवार देशों के सत्ताधारी वर्गो को आकर्षक नौकरियों, विलासिता के आधुनिकतम उपकरणों तथा कामवासनाओं की पूर्ति में इसतरह से उलझा देते है कि उन्हे अपनी व्यक्ति स्वतंत्रता के बारे में जरा भी पर्वा नही होती। त्रि-इब्लिसी परिवारों की ताकत का राज राजनीति और इतिहास में इनके गहरे ज्ञान की बदौलत है जिसे वे औरों से छुपाये रखते है। उन्होने इन विज्ञानों को अपने फायदे के मुताबिक ढालकर पेश किया है। वे अमेरिका तथा अन्य देशों की राजनीतिक पार्टियों के उम्मीदवारों का निर्धारण कर अपने पसंद के उम्मीदवारों को जीत दिलाते है। इसलिये इस बात से कोई फर्क नही पडता कि अवाम ने किसे वोट दिया है क्योंकि अवाम ने शैतानपूजक परिवार-समूह के उम्मीदवारों को ही वोट दिया होता है। वे उन लोगों को लेकर देशों की सरकारें कायम करते है जो शैतानपूजक परिवारों के हितों के लिये काम करती है। जो सरकारें उनके हितों की अनदेखी करती है उनका तख्ता पलटा जाता है।

शैतानपूजक मॅसोनिक (Masonic) परिवार-समूह के नियमों (covenant) के मुताबिक शैतानपूजक परिवार (Illuminati) जिस दर्शन को मानती है उसे "Illuminism" कहते

है। इसका मतलब है दूश्मनों के रहस्यों से वाकीफ होना। शैतानपूजक परिवार-समूह बेहद गुप्तता का पालन करते है। मिसाल के लिये Illuminati के आधुनिक संस्थापक वैशाउप्ट (Weishaupt) ने खुद के लिये स्पार्टाकस नाम धारण किया था। संगठन की नियमावली के मुताबिक शैतानपूजक परिवार-समूह कई अलग अलग फ्रंट संगठन बनाते है और इस तरह का बर्ताव करते है कि उनका आपस में कोई संबंध नही है जबकि वे पूरे समन्वयन के साथ काम करते है और उनका रिश्ता खून और गुप्तता से बंधा होता है। जो भी सदस्य इस राज के बारे में मूंह खोलता है उसे मौत मिलती है। वे अपने मकसद को कतरे कतरे से हासिल करते है ताकि होने वाले बदलाव को दूसरे जान भी न सके। वे अपने ज्ञान और तकनीक का इस्तेमाल इतनी गुप्तता से करते है कि कोई इस बात को भाँप तक नही सकता कि क्या हो रहा है। अधिकतर लोग शैतानवाद के आसानी से शिकार हो जाते है क्योंकि लोग अलौकिक ताकतों के लिये दिवाने होते है। रहस्यवाद, इन्सान तथा कुदरत में छीपी हुई ताकतों को जगाने के जबर्दस्त आकर्षण का चोला पहन कर दूनियाँ के हर धर्मो में शैतानवाद (Satanism) गहरी पैठ कर चुका है। वे देशों की सरकारें बनाते है और उन सरकारों के भीतर विरोधियों को भी स्थापित करते है। वे दोनों खेमों का संचालन करते है। हर स्तर पर मतभेद पैदा करते है। कोई नही जानता कि वह क्या करें। इस मानसिक अनिश्चितता और अराजकता की हालत में वे अपने मकसद बिना किसी रुकावट के हासिल करते जाते है। हिंसा और कामवासना में वे लोगों को इस कदर उलझा देते है कि उनकी दिमागी ताकतों में समन्वयन नही रहता। वे आपके जीवन के हर पहलूओं को नियंत्रित करते है और लोगों को यह बताते है कि आपने किस तरह से सोचना चाहिये। वे गैरयहूदियों, गैरब्राह्मणवादियों (goyim) को बडी सहानुभूति और विनम्रता से निदेशित करते है और लोग सोचते है कि वे खुद ही अपनी मर्जी से यह सब कर रहे है। वे ही हॉलिवुड को नियंत्रित करते है और लोगों की सोच को दीशा देने के लिये फिल्में बनाते है। गैरयहूदी गैरब्राह्मणवादी मूर्ख यह सोचते है कि उनका मनोरंजन किया जा रहा है, जबकि हकीकत में उनको हिंसा में आनंद लेने के अनुकूल ढाला जाता है ताकि लोग बिना किसी अफसोस के उनकी हत्याएं कर सके जिन्हे इल्युमिनॅटी ने बूरे लोगों के रुप में पेश किया है। वे अपने विभिन्न संगठनों के जरिये आपके बीच दूश्मनी पैदा करते है और आपको एकदूसरे की हत्याएं करने पर मजबूर करते है। वे आपको मजबूर कर देते है कि आप अपने ही बच्चों तक की हत्याएं कर दे। लोगों के मन में पैदा की हुई नफरत उन्हे पूरी तरह से अंधा बना देती है। लोग कभी नही देख सकते कि उनके बीच के हर संघर्ष के बाद बार बार ब्राह्मणवादी ही लोगों के हुक्मरान बन कर उभरते है। युध्दों और मूलनिवासियों की मौतों से ब्राह्मणवादी और ज्यादा धनवान बनते जाते है। अमानवीय कानून मंजूर करने के लिये ब्राह्मणवादी लोगों को आतंकवाद के हौवे से मूर्ख बनाते है ताकि जो कुछ भी थोडी सी व्यक्ति स्वतंत्रता लोगों को हासिल हुई है वह खत्म हो जाये। मूलनिवासियों से ही कुछ लोगों को सुनहरे ख्वाब दिखाकर ब्राह्मणवादी अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिये नियुक्त करते है। मूलनिवासियों को लगता है कि उनका शुमार ब्राह्मणवादियों में होता है लेकिन वे सच्चाई नही जानते। वे खुद के बनाये भ्रमों में जी रहे होते है। ब्राह्मणवादियों ने सच को उनके चेहरे के सामने इतने करीब छुपाया होता है कि मूलनिवासियों की नजर सच्चाई पर कभी केन्द्रित नही हो सकती। आजादी का भ्रम इतना बडा होता है कि उन्हे अहसास ही नही होता कि वे ब्राह्मणवाद के गुलाम है। इल्युमिनॅटी जल्द ही क्रेडिट कार्डो पर आधारित ऐसी आर्थिक प्रणाली विकसित कर लेंगे जिसमें हमेशा के लिये मूलनिवासी अपनी

औलादे सहित इल्युमिनॅटी के कर्जे के बोझ में दबकर पूरी तरह से इल्युमिनॅटी के गुलाम बन जाएंगे। तब तलमूद के उसूलों से राज करने के नये युग की शुरुआत हो जाएगी। (http://www.biblebelievers.org.au Murder by Injection Chapter 10 The Rockefeller Syndicate by Eustace Mullins)

इल्युमिनॅटी का झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी गठबंधन विश्व के 95% मूलनिवासी अवाम को जी.एम. फुड तथा संक्रमित दवाओं से शारीरिक और मानसिक रुप से निकृष्ट बना रहा है। निकट भविष्य में सुपर कंप्युटर व्दारा नियंत्रित उन्नत रोबोटों से हर क्षेत्र में काम लिया जाएगा जिससे बहुत बडी आबादी बेरोजगार हो जाएगी। इल्युमिनॅटी इस गैरजरुरी 95% मूलनिवासियों का जनसंहार करना चाहता है ताकि वे इल्युमिनॅटी के खिलाफ इन्केलाब न कर सके। इस जनसंहार की योजना के संबंध में इंटरनेट पर विशाल सामग्री मौजूद है। शैतान-उपासक झाओनिस्ट इल्युमिनॅटी नैतिकता को नही मानती और घिनौने से घिनौने दमन का अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करती है।

.....

संदर्भ सूचि

Ahmad Shah : The Bijak of Kabir, : published by the author at Hamirpurin 1917

आज का सुरेख भारत, नागपुर

Allan, J. et.al. The Cambridge shorter History of India, 1964, S.Chand & Co. Delhi.

Ambedkar B.R Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Volumes published by Govt. of Maharashtra, Edn. dept. Bombay - 32

: कामगार चळवळ, संपादक प्रदीप गायकवाड, क्षितिज पब्लिकेशन डॉ. अम्बेदकर कॉलनी, लष्करीबाग नागपुर - 440 017

: डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची अतिशय गाजलेली भाषणे : रघुवंशी प्रकाशन, 242 (ब) शुक्रवार पेठ, पुणे - 2

अम्बेडकर मिशन पत्रिका, चितकोहरा, पोस्ट अनिशाबाद, पटना - 800 002

आत्राम, व्यंकटेश '' गोंडी संस्कृतीचे संदर्भ'', 1989, श्रीमती यशोदाताई आत्राम, डॉ. आंबेडकर पुतळा, आर्वी, जिला वर्धा, महाराष्ट्र

बहुजनों का बहुजन भारत, बामसेफ व्दारा प्रकाशित, प्लाट नं. 1-7-20 अब्बास खान बिल्डींग, छोटी मस्जीद के पास, जयसिंगपूरा औरंगाबाद - 431 004

बहुजन नायक, 72, सम्यक नगर नारी रोड, नागपुर - 440 026

बहुजन संगठक, 5323, हरध्यानसींह रोड, रैगरपूरा, करोल बाग, नई दिल्ली - 110 005

बहुजन संघर्ष : रहाटे कॉलनी, जेल रोड नागपुर

बाली, एल॰ आर॰ : एल.आर. बाली, क्या गांधी महात्मा थे ? ,भीम पत्रिका पबलिकेशन नकोदर रोड, जालन्धर– 3 (पंजाब)

बाली, एल॰ आर॰ अम्बेदकर अपनाओं देश बचाओ, प्रथम संस्करण, सितम्बर 1983,भीम पत्रिका पब्लिकेशन नकोदर रोड, जालन्धर– 3 (पंजाब)

Bapson,E.J. (Editor) The Cambridge History of India, Vol. I Ancient India, Second Indian Reprint 1962, S. Chand & Co. New Delhi.

बेबाक, साप्ताहिक : मालेगांव, महाराष्ट्र,

बेनी प्रसाद, हिन्दुस्तान कि पूरानी सभ्यता, प्रकाशक हिन्दुस्तान एकेडेमी संयुक्त प्रांत, प्रयाग 1931

Bergamini, David & Editors of life, The Universe, 1964, Time Inc.

Bhagchandra Jain Bhaskar " Jainism in Buddhist Literature" 1972, Alok Prakashan, Gandhi Chauk Sadar Nagpur.

भारत अश्वघोंष, नागपुर

Bharucha, Ervad Sheriarji Dadabhai : A Brief Sketch of the Zorostrian Religion and Customs 1928 third Edn. D.B. TaraporewalaSons & Co. Kitab Mahal Bornbay Rd.

Benoy Ghose : "Iswar Chandra Vidyasagar", 1965, Publication Division, Govt. of India

Bhat M.S. Vedic Tantrism a study of Rgvidhana of Saunaka with text & translation, 1987, Motilas Banarsidas, Bugalow Rd. Jawahar Nagar Delhi - 7

भाष्कर (दैनिक) : नागपूर

भारत अश्वघोष : नागपूर

Biswas, Swapan Kumar : Gods, False-Gods & the Untouchables, Fourth Edn, 26th Jan. 1998, Orion Books, North; 387A, J&K Pocket, Dilshad Garden Delhi- 110 095.

Biswas, Swapan K. Buddhism the religion of Mohenjodaro & Harappa cities, Orien Books, North 387A, J&K Pocket Dilshad Garden Delhi - 95

Browne , E.G. A Literary History of Persia, , 1902, T.Fisher Unwin, Paternoster Square, London

Browne, E.G. Literary History of Persia, Vol. I, Cambridge University Press, 1956

Chakravarty, Chintaharan; " Tantras Studies on their religion and literature. 1963, Punthi Pustak, 136/4B, Cornwallis Street, Calcatta

चौधरी नागेश : हिन्दूत्व देश तोडणारे सुत्र, साथिदार प्रकाशन, रहाटे कॉलनी, वर्धा रोड, नागपुर - 440 022

चन्दापूरी, आर. एल. (1) नेहरु बनाम चन्दापूरी, (2) भारत में ब्राम्हणराज और पिछडा वर्ग आन्दोलन, (3) आजादी कि दूसरी लडाई, (4) आतंकवाद का जनक कौन ? (5) Chandapuri Father of Backward Class Movement, Mission Publication, Saraswati Bhawan, North Mandiri, Patna - 800 001

Dalit Voice : 109/7th Cross, Palace Lower Orchards, Bangalore - 560 003

दलित वॉयस हिन्दुस्तानी, A- 8/3, एस.एफ.एस. फ्लैट, साकेत, नई दिल्ली- 110 017

दांडेकर गो.नी. : ''श्री गाडगे महाराज''

Das, Abinas Chandra : Rgvedic India, , Motilal Banarsidas, Third revised edition Delhi, 1971

Das, Nani Gopal : Was Gandhi a Mahatma, 1999, 17, Dattabad Rd. P.O. Bidhannagar (Salt lake), Calcutta- 700 064)

Davar, F.C. : Iran & India Through the ages, Asia Publishing House, Bombay, 1962

देशमुख, मा.म. 1. रामदास आणी पेशवाई 2. शिवराज्य, 69-A, कोतवाल नगर नागपुर - 22

Devare, Dr. T.N. : A Short History of Persian Literature by 1961, Published by Mrs. Devare at Nawrosjee Wadia College Pune-1

Durant, Will : The Story of Civilization, Part I, 1935, Simon & Schuster , Inc. 630 fifth avenue, Rockefeller Center New York 20

ढाकुलकर, नाना; रक्षेंद्र, 1998, ऋचा प्रकाशन, 9 गजानन नगर, नागपुर

Encyclopedia Americana, Vol. 17 & 13

Encyclopedia Britanicca Deluxe Edition 2001 CD Rom

Frontline, Chennai, India

फुले, ज्योतीराव महात्मा फुले समग्र वांग्मय, आवृत्ती क्र॰ पांच, 1991 महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई - 32

फुले*, ज्योतीराव महात्मा फुले समग्र वांग्मय, सुधारित तृतीय आवृत्ती, 1988, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई -32

गौतम डॉ. चमनलाल : संपादक, ब्रह्माण्ड पुराण व्दितीय खंड,

गेल ऑमव्हेट (अनुण - पी.डी. दीघे) वासाहातिक समाजातील सांस्कृतीक बंड (Cultural Revolt in Colonial Society) सुगावा प्रकाशन पुणे 861/1, सदाशिव पेठ, पुणे - 30

गुप्ते, चारुशिला : संत मुक्ताई, (आला संताचा मेळा भाग 4 था), अरगडे कुलकर्णी प्रकाशन 16/224, लोकमान्य नगर पुणे

Gurung Gopal, In quest of Mangol Identity, P.O. Box 2828 Kathmandu

हमारा महानगर : मुंबई

हामिद अली, बहुपत्नित्व, भाषांतर मुबारक हुसैन मनियार, इस्लामिक मराठी पबलिकेशन्स ट्रस्ट, 326, इब्राहीम रहमतुल्लाह रोड, पायधुनी, मुंबई- 400 003

हितवाद, नागपुर

इब्राहिम खान : मुस्लिम महार, प्रकाशक नंदिनी तु. गवळी, 513 ब प्लॉट नं. 4/अ नलवडे कॉलनी सम्राटनगर, सागरमाळ, कोल्हापुर - **416 008** (महाराष्ट्र)

इंडीया टुडे : हिन्दी और अंग्रेजी

इंडीयन एक्सप्रेस

Itsvan Bakony2 : Chinese communism and Chinese Jews

Itsvan Bakony : The Jewish fifth column in Islam

Jamanadas K. : Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by , Published by Dalit E Forum

Javalakar, Dinkarrao : Deshache Dushman.

Joshi Lal Mani : Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Department of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151

जोशी, मधुकर रामदास : श्रीज्ञानेश्वर आणि ज्ञानेश्वरी श्रीज्ञानदेव चरित्र संशोधन, श्रीमाधव प्रकाशन अरविंद घोष मार्ग, रामदासपेठ, अकोला महाराष्ट्र।

कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926

कान्ति (साप्ताहीक) दिल्ली

कंगाली चंद्रलेखा ''गोंडवाना जीव जगत कि उत्पत्ती, उत्थान और पतन के पश्चात पुनरुत्थान संघर्ष'' गोंडवाना दर्शन विशेषांक 12 दिसंबर 1998, गोंडवाना विकास मंडल, मानेवाडा रोड, नागपुर - 24

कंगाली, एम. सी. : सैंधवी लिपि का गोंडी में उद्वाचन; 48 उज्वल सोसायटी, जयताला रोड नागपुर -22

Kabir and the Kabir Panth, REV. G. H. WESTCOTT, S. P. G. MISSION HOUSE CAWNPORE, 1907

Kashmiri, Dr. Dawwod : Rabies of Communalism,Khalil Zahid, Princess Building, Ibrahim Rahamatullah Rd. Mumbai - 400 003

खुल्लर, के.के. : शहीद भगतसिंह, प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली - 6

Khanpuri, Rasheed Ibrahim : Islam & Women;s Honour, Jamiah Uloomul Qur'an, Jambusar, Distt. Bharuch, Gujarat

कान्ति (साप्ताहीक) दिल्ली

कोलते, विष्णु भीकाजी, मराठी संतो का सामाजिक कार्य, मार्च, 1954, हिन्दी-ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय, बंबई -4

Kosambi D.D. : The Culture and Civilisation of Ancient India in Historical Outline, (1970) Vikas Pub., 5 Daryaganj, Ansari Rd. Delhi - 6

कोसारे, एच. एल प्राचिन भारतातील नाग, शोधग्रंथ, ज्ञान प्रदीप प्रकाशन, शिर्के रोड नयी शुक्रवारी नागपुर

कुमरे मंसाराम : मूलनिवासियों का इतिहास, जयसेवा प्रकाशन, ६ पदवाद लेआउट, सुभाष नगर, हिंगणा रोड, नागपुर - 440 022

लाल एच. व एल.के. मडावी : बिरसा मुंडा, त्रिवेणी प्रकाशन, 1/4006 रामनगर विस्तार, शाहदरा दिल्ली - 110 032

लोकमत नागपुर

लोकमत समाचार, नागपुर

मडावी,एल. के. आदिवासी स्वायत्ततेची भूमिका, 6, बीजली नगर सदर, नागपुर - 440 001

Malcolm X : Malcolm X on Afro&American History, Pathfinder, 410 West Street, New York 10014, USA

Majumdar R.C : The Sepoy Mutiny and Revolt of 1957.

Mandal, Jyotirmay : Dalit Emancipators, Harichand Guruchand Matua Mission, P.O. Box 209, Camp Amravati - 444602 (MS)

मोहिते, विर उत्तमराव, ''लेट अस बर्न अवर हिंदुइजम'', सुधिर प्रकाशन, बोरगांव (मेंघे) वर्धा

माळी, डॉ. मा.गो.,(संपादक) सावित्रीबाई फुले समग्र वांग्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य तथा संस्कृती मंडळ मुंबई - 32

मेंणसे, कृष्णा, श्री बसवेश्वर ते ज्ञानेश्वर, मुद्रक/प्रकाशक प्रकाश विश्वासराव भुपेश गुप्ता भवन, 85, सयानी रोड, प्रभादेवी मुंबई - 25

मरमट, अवन्तीका प्रसाद, (1) वेदकालिन नाग जातियों, राजाओं तथा संस्कृति कि खोज, (2) नाग संस्कृती कोश, (3) दलितायन, नागस्मृति प्रकाशन 79, अशोकनगर, उजैन, म.प्र.

मराठा मार्ग (मासिक) 1-A, हनुमान नगर, मेडिकल चौक, नागपुर- 1

Marshall, Sir John ,: "A Guide to Sanchi", Eastern Book House, 1990, ISBN-10: 8185204322

मतदार अमरावती, (महाराष्ट्र)

मिश्र सुरेश, मध्यप्रदेश के गोंड राज्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रविन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा भोपाल - **462 003**

Mujeeb, M. : World History our Heritage Asia publishing House Bombay

मुहम्मद कुत्ब, इस्लाम संदेहों के घेरे में, प्रकाशक कान्ति साप्ताहिक किशनगंज, दिल्ली - 6

नव-भारत, नागपुर

निंबाळकर, प्रा. वामन (अनुवाद), तुटलेले लोक, 1/10,MIG Colony 84, Rambagh Nagpur

Outlook English magazine

Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera : Buddhism in South India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka

पारेख, मौलाना अब्दूल करीम : गउ-रक्षा और हिन्दुस्तानी मुसलमान, प्रकाशक फरीद बुक डेपो प्रा. ली. दिल्ली।

प्रदीप कुमार मौर्य : धरती पुत्र का शोषण, कल्पज पब्लिकेशन्स, सी-३०ए सत्यवती नगर, फेस 3, अशोक विहार, नई दिल्ली 110 052

प्रदिप सोळुंके : बहुजन मानवांची बदनामी कां ? ''अव्दैत'' प्लॉट नं. 162, N-3, सिडको, औरंगाबाद

पाण्डेय, बी.एन. : इतिहास के साथ यह अन्याय !! मधूर संदेश संगम, अबूल फजल इन्कलेव, जामियानगर, नई दिल्ली - 25

पैठनकर, अ. ए., पांच संतचरित्रे, श्रीसंतवाग्मंय प्रकाशन मंदिर 1006 सदाशिव पेठ पुणे -30

Rajshekar, V.T. : (1) India's Intellectual Desert, (2) Aggression on Indian Culture (3) Grave Diggers of History (4) Christians & Dalit liberation (5) Dialogue of the Bhoodevtas (6) Mahatma Gandhi & Babasaheb Ambedkar,1989 (7) India's Muslim Problem (8) How Marx failed in India (9) Why Godse Killed Gandhi (10) Who is Ruling India ? (11) Brahminism

Rajshekhar, V.T. & M. Gopinath : Dalit Movement in India

Ramaswami, E.V. : The Salvation to Shudra Slavery,Dalit Sahitya Aca. No. 109, 7th Cross, Palace Lower Orchards, Bangalore- 3

रामनाथ डॉ. : राष्ट्रपिता गांधी या अम्बेडकर, डॉ. रामनाथ, A 708 आवास विकास, हंसपुरम नौबस्ता, कानपुर - 208 002

Ramprasad Chanda, Indo Aryan Races, 1976, Indological Book Corporation 2/7 Ansari Rd. Darya Ganj New Delhi- 110002

राठोड मोतीराज ''कबीर ज्योतिबा'', अस्तित्व प्रकाशन, वर्मा बिल्डींग, औरंगाबाद महाराष्ट्र

राजकिशोर : (संपा.) कश्मीर का भविष्य, वाणी प्रकाशन, 21-A दरियागंज, नयी दिल्ली-2

Raychoudhary, S.C. : Social Cultural and Economic History of India, , Surjit Pub. P.B. 2157 7-K, Kolhapur Road, Kamla Nagar, Delhi -7

Rhys Davis, : Gotama the Man, (1928), Lucaz & Co. Great Russell Street, London, W.C.

रत्नागिरी टाईम्स, रत्नागिरी, महाराष्ट्र

S. Dhammika : The Edicts of King Asoka An English rendering.

शर्मा, बी.बी. मूलनिवासी भारत कि आजादी और चन्दापूरी का आजीवन संघर्ष, मिशन प्रकाशन, सरस्वती भवन, उत्तरी मंदिरी, पटना- 1

सांपला, बी.आर. युग-पुरुष अम्बेडकर, प्रितम प्रकाशन संत ब्रम्हदास मार्ग, चाणन नगर, पोस्ट ऑफिस सोफी पिंड, जालन्धर, पंजाब

संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत

Stokes,Willium Lee : Essentials of Earth History, Prentice-Hall of India Pvt. Ltd. 1965

सांस्कृत्यायन, राहुल (मराठी अनुवाद व्यं. शं. वकील) : वोल्गा ते गंगा, पांचवी आवृती 1991, लोक वाग्मंयगृह भुपेश गुप्ता भवन 85 सयानी रोड, प्रभादेवी मुंबई - 400 25

शाश्त्री, सोहनलाल डॉ डॉ.साहेब अम्बेदकर के संपर्क में 25 वर्ष, तृतिय संस्करण, प्रकाशक द बुध्दिस्ट सोसाईटी ऑफ दिल्ली प्रदेश, आंबेडकर भवन नयी दिल्ली 55

Shyam Sunder, B., : Zaonist Plot to Dominate World, Dalit Sahitya Aca. No. 109, 7th Cross, Palace Lower Orchards, Bangalore- 3

श्यामसुंदर, बी. : भू देवताओं का मूनिफेस्टो, मूल भारती, बी. श्यामसुंदर मेमोरियल सोसायटी, बी. श्यामसुंदर मार्ग, गुलबर्गा - 585 105 (कर्नाटक)

तेली समाज क्रांति : 16, रेशिमबाग, उमरेड रोड, नागपुर

ठाकरे प्रबोधनकार '' देवळांचा धर्म आणि धर्माची देवळें'' सुधिर प्रकाशन गणेश नगर, बोरगांव (मेंघे), वर्धा (महाराष्ट्र)

The Weeek English Magazine

Tilak, Lokamanya Bâl Gangâdhar : THE ARCTIC HOME IN THE VEDAS

तुकडोजी महाराज (राष्ट्रसंत), ग्रामगीता, प्रकाशक प्राचार्य मधुकरराव देशमुख, अध्यक्ष श्रीगुरुदेव ग्रामगीता प्रतिष्ठान, गुरुकुंज-आश्रम, जी. अमरावती, महाराष्ट्र

त्रिवेदी, पंडित रामगोविन्द : हिन्दी ऋगवेद प्रकाशक इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन), लिमिटेड, प्रयाग 1954

The Zionist Arthshashtra : The Protocols of the learned elders of Zion

Wegener, Alfred : The Origin of Continents and Oceans , 1966, Dover Publication Inc. New York

---

जरुरी सूचना

त्रि-इब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग 1 का मकसद शोषित मूलनिवासी नाग-द. विड बहुजनों को उनके अपने सच्चे इतिहास से तथा शोषक ब्राह्मणवादियों के इतिहास से वाकिफ कराना है। त्रि-इब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग 1 का सुधारित संस्करण इतना बडा हो रहा था कि उसे भाग १ सीरीज की किताबों के तौर पर छापना पडा। शोषित बहुजनों तथा शोषक ब्राह्मणवादियों के संपुर्ण इतिहास 4 किताबों में पूरा होने की संभावना थी। लेकिन शैतान उपासक इल्युमिनॅटी के संपुर्ण इतिहास के बिना भाग 1 पूरा होना संभव नही था। इसलिये भाग 1 में इल्युमिनॅटी के संपुर्ण इतिहास से संबंधित 5 वी किताब लिखनी जरुरी है। फिलहाल इस पांचवी किताब के अभाव को दूर करने के लिये मौजूदा किताब में आखरी अध्याय में बहुत संक्षेप में इल्युमिनॅटी के स्वरुप को बताया गया है। योग्य समय पर यह पांचवी किताब छापी जायेगी ताकि त्रि-इब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग 1 उसके मूल उद्देश्य में पूरा हो सके। त्रि-इब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग २ का मकसद शोषित बहुजनों को शोषकों की तिकडमों से वाकिफ कराना तथा शोषण-व्यवस्था के खिलाफ लडने के सही तरिकों को तथा कार्यनीतियों को स्पष्ट करना है। इसलिये ५ वी किताब से ज्यादा जरुरत त्रि-इब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग २ के सुधारित संस्करण की महसूस की जा रही है। बदले हुए हालात तथा बेनकाब चेहरों के मद्देनजर भाग २ के सुधारित संस्करण की ज्यादा जरुरत महसूस की जा रही है। हमारी कोशिश भाग २ जल्द विकसित करने की है।

..... शोषित समाज जागरुकता मुहिम !

किताब की सामग्री से संबंधित से जरुरी सूचना !

1) शोषक अल्पसंख्यक ब्राह्मणवादियों ने शोषित मूलनिवासियों के सही इतिहास को छुपाने की पूरी पूरी कोशिश की है। इसलिये जरुरी था कि उपलब्ध सामग्री में से सच्चे इतिहास को व्यक्त करने वाली जानकारियों के हिससों को सावधानी से चुनकर हजारों टूकडों में बिखरी हुई जानकारियों को तर्क के आध ार पर संश्लेषित कर सही अर्थ देकर परिपूर्ण तस्वीर के रुप में पेश किया जाये। हमने पेश की हुई तस्वीर सिर्फ असल खौफनाक हालत का एक अंश मात्र है।

2) जानकारी को ज्यादा साफ और सही तौर से पेश करने के लिये हमने अपनी ओर से 'सरकार' शब्द की जगह ''सरकार पर काबिज ब्राह्मणवादी / मनुवादी; ब्राह्मण शब्द की जगह अल्पसंख्यंक ब्राह्मण, इ॰ लफ्जों तथा विशेषणों का इस्तेमाल किया है। उध्दहरण को और भी अर्थपूर्ण और स्पष्ट बनाने के लिये इन शब्दों को / अपने खुलासे के लिये हमने { } इसतरह के कंसों (**Brackets**) का इस्तेमाल किया है। इसके अलावा जो बात हमें अहम लगी उन्हे हमने अपनी ओर से उसे हायलाईट किया है।

3) यह जागरुकता किताब मेहनतकश शोषित बहुजनों के लिये है, जिनकी भाषा आम हिन्दूस्तानी भाषा यानि उर्दू मिली हुई असाहित्यीक हिन्दी है। ब्राह्मण ावादियों ने हम बहुजनों की भाषाओं में अपने शब्दों की मिलावट की है। ब्राह्मण ावादी मिलावट की ''अशुध्दियों'' को दूर करने की हमने पूरजोर कोशिश की है।

4) हममें से कोई भी खुद को साहित्यिक नही समझता। हमारा अगला कदम हमारी जागरुकता किताबों को आम मेहनतकशों की भाषा में तब्दिल करना होगा। मेहनतकश अगर ''स्टेशन'' की बजाय ''ठेसन'' शब्द को जल्दी समझते है तो हम स्टेशन लफ्ज को ठेसन में बदल देंगें, क्योकि हमारी किताबें आम शोषित बहुजनों के लिये है न कि बुध्दिजीवियों के लिये। इसलिये ब्राह्मणवादी ग्रामर (व्याकरण) को तरजीह देने वालों से गुजारीश रहेगी कि वे हमारी किताबों को उसी तरह से पढे जैसे कोई इतिहासकार प्राचीन भाषा को पढता है।

5) कोई भी इन्सान जिसकी जाति, धर्म या वंश कोई भी हो जो ब्राह्मण ों को श्रेष्ठ मानकर ब्राह्मणों / प्रस्थापित ताकतवर समूह के निरंकुश वर्चस्व को कायम करने की दिल से कोशिश करता है, वह ब्राह्मणवादी है। जो ऐसा किसी लालच में करता है वह ब्राह्मणवाद का दलाल है और जो मजबूरी में ऐसा करता है वह ब्राह्मणवाद का गुलाम है। मनु ने लिखा हुवा 'ब्राह्मणवाद' ही मनुवाद है। मनुवाद का केन्द्रक (Nucleus) 'ब्राह्मणवाद' ही है। जबकि बहुजनों के हितों और सुखों (शोषण विहीन समाज कायम करने) के लिये जद्दोजेहद करने वाला हर शख्स बहुजनवादी है। — शोषित समाज जागरुकता मुहिम !

बेमिसाल बहादुरी का प्रतीक

भीमा-कोरेगाँव क्रांति-स्तंभ

भीमा नदी के किनारे स्थित कोरेगाँव (पूना-अहमदनगर मार्ग) में ब्राह्मण-पेशवों की सेना को निर्णायक लडाई में दि॰ 1 जनवरी 1818 को अंग्रेजों की महार सेना ने अपने अभूतपुर्व बहादुरी से परास्त करके मनुवादी ब्राह्मण-पेशवा राज को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। ब्राह्मण-पेशवों की सेना में 25,000 सैनिक, व 5,000 घुडसवार थे। अंग्रेजों की महार सेना में मात्र 500 महार सैनिक और 300 घुडसवार व 5 अंग्रेज अधिकारी थे। शहीद हुए सैनिकों के स्मृति-सम्मान में यह क्रांति-स्तंभ बनाया गया है। डॉ. अम्बेदकर जब तक जीवित रहे हर साल कोरेगाँव क्रांति-स्तंभ को भेंट देते, चिन्तन करते और ब्राह्मणवाद मनुवाद के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा हासिल करते थे !

आईये, हम सभी शोषित बहुजन 1 जनवरी को
'' ब्राह्मणवादियों पर शोषित-बहुजनों की जीत''
के दिन की शक्ल में मनाये !